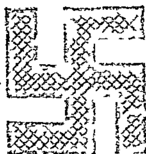
राजस्थान प्रान्तीय भगवान महावीर

२५०० वां

निर्वाण महोत्सव

महासमिति



[illegible]

श्री [illegible] जयपुर

समस्त सदस्यों द्वारा



समाज-रत्न
श्री राजरूप टांक
श्रद्धांजलि-स्मारिका

श्रहं पंचहि ठाणेहि,
जेहि सिक्खा न लब्भई !
थंभा, कोहा, पमाएणं,
रोगेणालस्स एण वा !!

श्रहंकार, क्रोध, प्रमाद,
रोग श्रौर श्रालस्य, इन
पांच कारणों से
शिक्षा प्राप्त नही होती ।

—भगवान महावीर

दिव्या-दीपिका संयुक्तांक
सत्र : 1987-88

प्रकाशक :
श्री वीर बालिका संचालक मण्डल
जयपुर



कायालय

श्री वीर वालिका शिक्षण सस्थान

कुन्दीगर भैंरू का रास्ता

जौहरी वाजार, जयपुर

फान 45250, 45194



मुद्रक फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनस

जौहरी वाजार, जयपुर-302 003

फोन 48904

।। सम्पादकीय ।।

महान् व्यक्तित्व

परम श्रद्धेय श्री राजरूप जी टांक जिन्हें हम सभी 'चाचा साहब' के नाम से सम्बोधित करते थे, पार्थिव रूप से आज हमारे बीच नहीं हैं। 27 अक्टूबर 1987 को ज्ञान पंचमी के दिन वे परम ज्योति में विलीन हो गये पर उनके महान् व्यक्तित्व का तेज और प्रकाश आत्मिक रूप से आज भी हमारा पथ प्रशस्त कर रहा है और भविष्य में भी करता रहेगा।

आज से 63 वर्ष पूर्व जैन साध्वी श्री स्वर्ण श्री जी की प्रेरणा से टांक साहब ने स्त्री-समाज में धार्मिक जागरण एवं नैतिक शिक्षण की भावना से एक पाठशाला का शुभारम्भ किया था जो उनके अनवरत स्नेहपूर्ण सिंचन, अदम्य लगन और निष्काम सेवा भावना से आज श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान के रूप में स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ दे रहा है। इस संस्थान के अन्तर्गत शिशु कक्षा से लेकर कला और वाणिज्य संकाय में स्नातक स्तर तक की अध्ययन–सुविधाएँ सुलभ हैं। श्री टांक साहब ने स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में इस संस्थान का बीज-वपन ऐसे समय में किया जब सामान्य रूप से यह मान्यता थी कि एक घर में दो कलम साथ नहीं चल सकतीं, पर टांक साहब दूरद्रष्टा थे और बड़ी बारीकी से समय की नब्ज पहचानते थे। वे बराबर यह महसूस करते थे कि जीवन एवं समाज रूपी रथ को सही रूप से चलाने के लिये स्त्री और पुरुष रूप दोनों पहियों का समान रूप से शिक्षित एवं संस्कारित होना आवश्यक है। राजस्थान जैसे पिछड़े प्रदेश में स्त्री-शिक्षा के क्षेत्रों में किया गया यह कार्य उनका ऐतिहासिक एवं युगान्तकारी कार्य था।



यह हमारा परम सौभाग्य रहा कि टाक साहब जैसे समर्पित एव सेवाभावी व्यक्ति हमें सस्था क मर्ती रूप में जीवनपर्यन्त मार्ग-दर्शन देते रहे। इनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। सामाजिक जीवन का कोइ ऐसा क्षेत्र नहीं था, जिससे व सक्रिय रूप में न जुडे हुए हों। इसका परिणाम यह हुआ कि श्री वीर बालिका शिक्षण सस्था केवल पुस्तकीय ज्ञान दान तक सीमित न रही। सामाजिक प्रगति एव जीवन-उत्थान के लिए जितने भी गुण आवश्यक हैं, उन सबके विकास पर सस्था द्वारा बराबर बल दिया जाता रहा।

श्री टाक साहब का शिष्य परिवार काफी बडा है। जा भी उनके सम्पक में आया वह उनसे प्रभावित और प्ररित हुए बिना न रहा। वीर बालिका शिक्षण सस्थान की वर्तमान एव भावी पीढी टाक साहब क सुगन्धित पुष्प और प्रदीप्त जीवन दीप से सदगुणों की महक और ज्ञान का आलाक ग्रहण कर सक इसी उद्देश्य से वीर बालिका महाविद्यालय की 'दिव्या' एव वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की 'दीपिका पत्रिका के सयुक्ताक क रूप में 'श्री राजरूप टाक श्रद्धाञ्जलि स्मारिक' का यह प्रकाशन किया गया है।

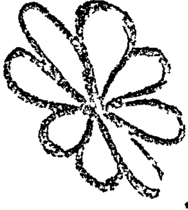
यह श्रद्धाञ्जलि स्मारिका तीन खडों में विभक्त है। प्रथम स्मरण सस्मरण खण्ड में दश और समाज क विभिन्न क्षत्रों में काय करने वाले समाजसवियों शिक्षाविदों, विद्वानों व्यवसायियों सस्था क अध्यापक अध्यापिकाओं एव छात्राओं के प्रेरक प्रसग और भावपूर्ण सस्मरण सकलित हैं। जिनमें टाक साहब के जीवन और व्यक्तित्व क पृष्ठ खुलते चलते हैं। द्वितीय 'समपण श्रद्धाञ्जलि खड' में विभिन्न समाजसेवी सस्थाओं और दश के प्रमुख व्यक्तियों के श्रद्धाञ्जलि अश एव सवदना सदेश सकलित हैं। साथ ही जयपुर नगर की विभिन्न सस्थाओं द्वारा आयाजित सावजनिक श्रद्धाञ्जलि सभा में टाक साहब क प्रति व्यक्त किय गय अश्रुपूरित हृदयोद्गार भी अभिव्यजित हैं। टाक साहब की बहुमूल्य सवाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने वाले विभिन्न अभिनन्दन पत्रों में स चयनित कुछ अभिनन्दन पत्र भी इस खड में प्रकाशित किये गय हैं। ततीय 'शिक्षण सस्था खड में श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन श्री वीर बालिका महाविद्यालय का प्रगति विवरण एव शिक्षण सस्थान में कार्यरत शैक्षणिक एव अशैक्षणिक कर्मचारियों की सूची प्रस्तुत की गइ है।

इस श्रद्धाञ्जलि स्मारिका में टाक साहब क जीवन एव वीर बालिका शिक्षण सस्थान स सम्बन्धित विशेष चित्र भी प्रकाशित किय गये हैं, जिनसे टाक साहब की पारिवारिक एव सावजनिक सेवारत जीवन झाकी क भव्य एव प्ररणादायक दशन हात हैं।

आशा है, यह स्मारिका टाक साहब की जीवन ज्याति का प्रकाश हमें सतत प्रदान कर हमारा पथ प्रदर्शन करती रहेगी।

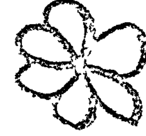


—सम्पादक मण्डल



अनुक्रमणिका

1
स्मरण-संस्मरण खण्ड

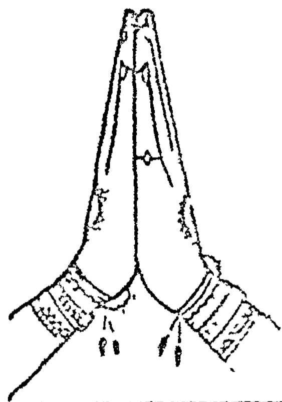


विरल-विभूति रत्न-पारखी	—श्री हीराचन्द वैद	1
सच्चे राजरूपजी थे तुम !	—कुमारी भारती शर्मा	4
पुराने साथी राजरूपजी	—श्री दौलतमल भण्डारी	5
निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्ता	—श्री देवीशंकर तिवाड़ी	7
समाज-रत्न की स्मृतियां	—श्री कलानाथ शास्त्री	9
जन्मते है योगी ऐसे	—श्रीमती शशि शर्मा	10
रत्न जगत् का ज्वाजल्यमान रत्न	—श्री ज्ञानचन्द खिन्दूका	11
श्री राजरूपजी टाक और उनका परिवार	—श्री राजेन्द्रकुमार श्रीमाल	13
संस्मरण	—श्री सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल	15
अविस्मरणीय महामानव !	—श्री शीतलचन्द कोठारी	18
प्रेरणा और प्रकाश-पुञ्ज	—डॉ. श्रीमती शान्ता भानावत	19
श्री वीर बालिका महाविद्यालय	—श्री हीराचन्द वैद, मंत्री	21
उदात्त जीवन मूल्यों के शिल्पी	—डॉ. नरेन्द्र भानावत	27
राजरूपजी का शिक्षा-प्रेम	—श्री जगन्नाथसिंह मेहता	29
राज. नेत्रहीन कल्याण सघ एव संत महापुरुप श्री राजरूपजी	—श्री माणिकलाल कानुगा	31
प्राकृत भारती और राजरूपजी	—म. विनयसागर	33
तुमसे महका यह उपवन	—श्रीमती सुधा शुक्ला	34
विश्व मानव के लिये जो प्रेरणा बनकर जिए	—श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव	35
धर्मवीर व कर्मवीर	—श्रीमती कमला श्रीवास्तव	37
श्रावकवर्य श्री राजरूपजी टांक	—प्रवर्तिनी सज्जन श्रीजी म. सा.	39
देश तथा समाज के विनम्र सेवक	—श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी	41

अनुक्रमणिका



स्व राजरूपजी एव भगवान् महावीर विकलाग सहायता समिति	—श्री कपूरचन्द पाटनी	43
जिन्हें जमाना याद करता रहेगा	—श्री तेजकरण डडिया	45
'वसुधैव कुटुम्बकम्' के जीवन्त प्रतिमान	—श्री ज्योतिकुमार कोठारी	47
अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी	—डॉ कस्तूरचन्द कासलीवाल	49
सेवामूर्ति श्री राजरूपजी टाक	—श्री कन्हैयालाल लोढा	50
गुणग्राही व्यक्तित्व के धनी	—सुश्री सरोज कोचर	51
स्वाधीनता सेनानी राजरूप टाक	—श्री सिद्धराज ढड्ढा	54
शुभ्र व्यक्तित्व निर्मल मन	—श्रीमती पुष्पलता जैन	56
विरल विभूति	—साध्वी अमितगुणा श्री	57
यादों के घेरे में	—श्रीमती पुण्यवती जैन	58
महामानव टाक साहिब	—श्रीमती इन्दरजीत कौर ओबेराय	59
मनुज सस्कृति में कभी जन्मते ऐसे रत्न दिवाकर हैं	—श्रीमती सुलक्षणा जैन	60
अनुपम सहयोगी	—श्रीमती वन्दना जैन	62
पुस्तकों के प्रति प्रेम	—श्रीमती पद्मा भार्गव	63
अनाथों के नाथ हमेशा के लिए सो गए !	—श्री रामजीलाल शर्मा	65
सेवाभावी व्यक्तित्व	—मन्जु गोयल	68
हमारे पूजनीय चाचा साहब	—कल्पना चतुर्वेदी	69
वे सूरज नूतन क्षमता के	—वन्दना	71
मनोहर अनमोल रत्न-पारखी	—राजश्री जैन	73
जिनकी आँखों में बसता था भावीजन का स्वप्न महान् !	—श्रीमती शोभा सक्सेना	76
नारी शिक्षा के प्रेमी	—पुष्पा श्रीवास्तव	77
उस अनन्त मौन का कुछ शेष है	—श्रीमती शशिबाला शर्मा	78
अनोखे व्यक्तित्व के धनी चाचा साहब	—मीना अग्रवाल	79
सर्व समभाव समयक	—कुमारी मीना जैन	81
महामना चाचा साहब	—डॉ श्रीमती सरोज शर्मा	83



अनुक्रमणिका

2
समर्पण-श्रद्धांजलि खण्ड

आचार्यों-संतों, राजनेताओं, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियो एव प्रमुख व्यक्तियो के आचार-विचार, उद्गार एवं अभिव्यक्त की गई भावनाओं का सूक्ष्म दर्शन	—	85
संस्थाओं की ओर से सवेदना-सन्देश	—	112
प्रमुख व्यक्तियों के संवेदना-सन्देश	—	113
ऐसे थे मेरे दादाजी	—दुष्यन्त टांक	118
अभिनन्दन-पत्र	—	119
समाजसेवी श्री राजरूपजी टांक	—श्री निर्मलकुमार शुक्ला	123
ऐतिहासिक यादगार	—श्री ताराचन्द जैन	124
सार्वजनिक श्रद्धांजलि-सभा में— अश्रुपूरित हृदयोद्गार	—	125

3
शिक्षण-संस्था खण्ड

श्री वीर बालिका उ. मा. विद्यालय वार्षिक प्रतिवेदन	—श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव	133
श्री वीर बालिका महाविद्यालय प्रगति-विवरण	—श्रीमती डॉ. शान्ता भानावत	139
शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों की सूची	—	152

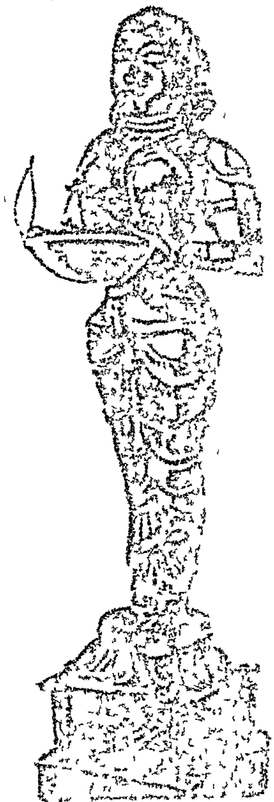
श्री वीर बालिका संचालक मण्डल
जयपुर

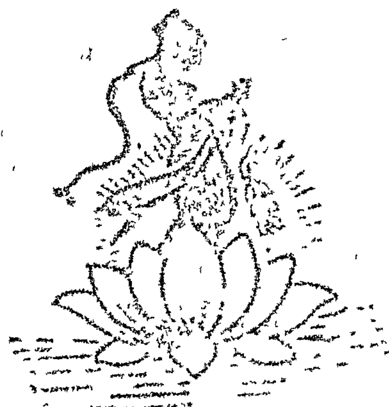


पदाधिकारी एव सदस्य

अध्यक्ष	श्री विमलचन्द सुराना
उपाध्यक्ष :	श्री प्रेमचन्द धाधिया
मत्री	श्री हीराचन्द वैद
सयुक्त मत्री	श्री दुलीचन्द टाक
कोपाध्यक्ष	श्री महावीरप्रसाद श्रीमाल
	श्री मेहरचन्द धाधया
सदस्य	श्री छुट्टनलाल बराठी
	श्री रतनचन्द कोठारी
	श्री शिखरचन्द पुगलिया
	श्री सुरेन्द्रकुमार गोलछा
	श्री मोतीलाल भडकतिया
	श्री जी एन शर्मा (विश्वविद्यालय प्रतिनिधि)
	श्रीमती कृष्णा थानवी (उप निदेशक, कालेज शिक्षा प्रतिनिधि)
	सुश्री सफिया इराकी जिला शिक्षाधिकारी (छात्रा)
पदन सदस्य	श्री तिलक राज जैन
	श्रीमती डॉ शान्ता भानावत
	श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
	श्रीमती सुलक्षणा जैन
	श्रीमती स्नेहलता वैद
	श्रीमती पुण्यवती
	श्रीमती आशा हिंगड
व्यवस्थापक	श्री केशरीचन्द सुराना

स्मरण-संस्मरण खण्ड





□ मानव सेवा के प्रति समर्पित एक महान् व्यक्तित्व—

श्री राजरूप टांक

विरल-विभूति रत्न-पारखी

□ श्री हीराचन्द बैद



श्री राजरूपजी टांक का नाम याद आते ही जयपुर नगर की सार्वजनिक संस्थाओं का सेवा कार्य व इतिहास नजरों के सामने क्रमवद्ध रूप से आने लगता है। जयपुर नगर में समाज कल्याण कार्यो में रत कौनसी संस्था रही है जिसमे श्री टांक साहब का योगदान न रहा हो। वस्तुतः उनके देह, विलय से अनेक संस्थायें अपने को नेतृत्व विहीन महसूस कर रही है। उनको श्रद्धांजलि समर्पित करते वक्त हमे उनके चहुँमुखी व्यक्तित्व के अन्दर झांककर देखना होगा। यों कहें कि उनका सार्वजनिक जीवन आदर्श तो था ही, मूल मे तो वह एक खुली किताब था—जिसको हर व्यक्ति-हर कार्यकर्ता देख-पढ़कर अपने जीवन का सही निर्माण कर सकता है। विधाता ने उनके रूप में एक ऐसे व्यक्ति को प्रदान किया था जो जीवन मे उपयोगी हर क्षेत्र मे मार्गदर्शक वन कर आगे की पंक्ति मे खड़ा दिखाई देता था।

वे एक गांव से शहर मे एक जौहरी के दत्तक आये थे। ग्राम से आने वाला एक व्यक्ति इतना सुसंस्कृत, साहित्य-प्रेमी, शिक्षा-प्रेमी हो सकता है, यह एक विशेषता ही मानी जानी चाहिये। आज से छः दशाब्दी से भी पहले जव वे मात्र 18 वर्ष के थे, उन्होंने महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कार्य में अपने आप को जोड़ दिया। उस युग में यह कार्य न केवल कठिन अपितु आश्चर्य देने वाला था। समाज में कोई लड़कियों को पढाने को राजी ही नहीं होता था। उन्होने भविष्य को जानकर अथक प्रयास किया। घर-घर जाकर लोगों को समझाया, वालिकाओं को पढ़ाने के लिये रोजाना मिठाई-नाश्ता देने की व्यवस्था की। दो अध्यापिकाओं और आठ छात्राओं से प्रारम्भ यह महिला शिक्षा संस्था आज राजस्थान की प्रमुख संस्था है जहाँ 3500 से भी अधिक छात्रायें प्रारम्भिक से स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। यह भी एक चमत्कार ही कहा जावेगा कि स्थापना से अव तक 63 वर्षो तक वे इस संस्था के मंत्री रहे। और यह भी विधि का विधान ही मानें कि संस्था के स्थापना दिवस ज्ञान पंचमी को उन्होंने देह छोड़ा। संस्था का संचालन एक वात है, पर उसमें प्राण फूंक देना दूसरी वात है। अपने जीवन के आदर्शों के अनुरूप संस्था को वनाने का स्वप्न उन्होंने संजोया। नैतिक उत्थान

के साथ ही आध्यात्मिक भावना छात्राओं में जाग्रत होवे, यही लक्ष्य उनका रहा। उन्होंने अपने 63वें वर्ष के अभिनन्दन समारोह में शिष्य परिवार द्वारा समर्पित 63 हजार की राशि अपनी इस प्रिय संस्था को तुरन्त ही दे दी और यही उद्गार प्रकट किये कि यह भाइयों की राशि बहिनों के लिये काम आवे, उससे ज्यादा इसका उपयोग क्या हो सकता है ? ऐसे पिता वीर बालिका विद्यालय को मिले, यह इस संस्था का कितना बड़ा सौभाग्य था। यह राशि जिस भावना से चाचा साहब ने अपनी पुत्री संस्था को भेंट कर दी–वह फलवती होनी ही थी। संस्था न केवल आर्थिक संकट से उबरी, बल्कि विकास का ऐसा मार्ग खुला कि विद्यालय महाविद्यालय बन गया।

पुत्रियों को संस्कारी बनाने का तो हर पिता का कर्तव्य बनता ही है, पर पुत्रों को भी अपने जीवन-निर्वाह के योग्य आदर्श व्यापारी बनाना आवश्यक है ही। इस क्षेत्र में भी वे आज के युवक जौहरियों के वास्तविक और सही पिता बने। आज जवाहरात व्यवसाय में लगे हजारों व्यक्ति उनके शिष्य हैं— उनसे शिक्षा ली है। हर प्रांत, हर जाति, हर धर्म हर योग्यता का जौहरी उनका शिष्य बनने का गौरव प्राप्त कर सका। उनके यहाँ जवाहरात शिक्षण को चलाने वाली यह पाठशाला पुरातन इतिहास के गुरुकुल जीवन की झांकी प्रस्तुत करती थी। बाहर से आने वाले छात्र को न केवल शिक्षा ही, उनसे मिली वरन् आवास, भोजन की व्यवस्था उनके घर पर निःशुल्क प्राप्त हुई। न कोई भेंट, न कोई शुल्क। क्या मिल सकता है ऐसा उदाहरण इस युग में ? न केवल अर्थोपार्जन या जीवन निर्वाह के लिये उनका ध्येय था अपितु उनका लक्ष्य हमेशा यह रहा कि मेरे पास काम सीखने वाला व्यवसाय में निष्णात हो, चारित्रवान हो, व्यवसाय के नियमों का पूर्ण पालन करने वाला हो, उसकी बाजार में साख हो, जवाहरात व्यवसाय के हर अंग का ज्ञान उसे प्राप्त हो और उन्हें बहुत सन्तोष होता था जब वे अपने किसी शिष्य की योग्यता व निपुणता के लिए कुछ भी सुनते थे।

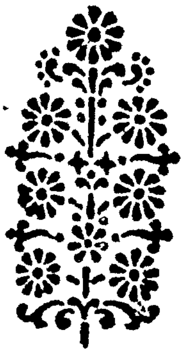
उन्होंने इस व्यवसाय को न केवल व्यापार अपितु सेवा के लिये भी उपयोग किया। अनेक औषधियां इन रत्नों से उन्होंने निर्माण कराई जिनसे कई असाध्य रोगियों पर उपयोग कर उन्हें आरोग्य लाभ प्राप्त कराया।

वे ज्वेलर्स एसोसियेशन के शीर्ष नेता रहे। इस व्यवसाय में रत लोगों के हित के लिये वे सदैव तत्पर रहते थे।

इस व्यवसाय के लिये उनकी सबसे बड़ी सेवा रत्नव्यवसाय पर लिखी उनकी पुस्तक है। (Indian Gemology) हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में यह प्रकाशित हुई। एक हिन्दी भाषी जौहरी व्यापारी द्वारा लिखित पुस्तक अमेरीका में पाठ्य पुस्तक के रूप में मान्यता प्राप्त करे, यह कितने बड़े गौरव की बात है।

आज हमारे विद्यार्थी उनके लिए नतमस्तक हैं, समर्पित हैं। उन्होंने न केवल अपने जीविकोपार्जन में ही अपने को लगाया है अपितु सार्वजनिक क्षेत्र की अनेक संस्थाओं में अपने को जोड़ा है और अनेक संस्थाओं में सेवारत हैं।

वे केवल व्यापारी व शिक्षा प्रेमी ही नहीं थे, राजनैतिक क्षेत्र में भी सदैव अग्रिम पंक्ति में रहे। वे गांधीवादी थे, जीवन भर खादी का प्रयोग किया। जयपुर राज्य के युग में वे प्रजामण्डल के संस्थापक सदस्य तो थे ही, वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे। कोई भी सभा, सम्मेलन अधिवेशन हो, सदैव भोजन व्यवस्था उनके जिम्मे रही। यह सब काम इतनी मितव्ययता से किया कि सब ही सुन्दर व्यवस्था इतनी सस्ती जानकर आश्चर्य करते थे। सन् 1948 में आजादी के बाद जयपुर में हुए कांग्रेस के अधिवेशन की भोजन व्यवस्था आज भी सब याद करते हैं। वे जयपुर राज्य की असेम्बली एवं नगरपालिका के भी निर्वाचित सदस्य रहे। उन्होंने राजनैतिक



श्री राजरूपजी साहब को सब कोई आदर और प्रेम से चाचा साहब के नाम से सम्बोधित करते थे। वास्तव में वे सबके चाचा थे। उन्होंने जितने कार्यकर्ता आज समाज को दिये हैं, वे ही उनकी गरिमा जानने के लिये सक्षम हैं।

श्री चाचा साहब के चले जाने से ऐसा मालूम हो रहा है जैसे एक मसीहा नहीं रहा, एक पिता नहीं रहा, एक नेता नहीं रहा, एक कार्यकर्ता नहीं रहा, सबको साथ लेकर चलने वाला व्यक्तित्व नहीं रहा। वे नहीं रहे पर अपने इतने स्मारक पीछे छोड़ गये हैं कि जो युग-युग तक उनको अमर बनाने में सहायक रहेंगे।

कार्यकर्ताओं को सदैव सरक्षण व सहायता प्रदान की।

समाज कल्याण कार्यों में उनका अभूतपूर्व योगदान रहा। भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण वर्ष के आयोजनों मे वे प्रमुख सहयोगी रहे। उसी अवसर पर उन्ही के निवास पर विकलागों के कल्याण हेतु श्री भगवान् महावीर विकलाग सहायता समिति के गठन का निश्चय हुआ था। वे इस समिति के अध्यक्ष भी रहे। नेत्रहीनो के कल्याण के लिये भी वे सदा जागरूक रहे। उन्होने न केवल राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ की स्थापना की वलिक जीवन के अन्तिम काल तक उसके अध्यक्ष भी रहे। आज इस संस्था का अपना भवन उनका एक स्मारक वन गया है—उन्ही का साहस था कि वगैर किसी आर्थिक संसाधन के एक वडा भवन उन्होने नेत्रहीनों के लिए क्रय कर दिया। मृत्युपरान्त अपने नेत्र भी उन्होंने दान कर दिये थे। गौ सेवा—हरिजनोद्धार के लिये भी उन्होंने खूब कार्य किया—अनाथाश्रम के वे संस्थापक थे। जयपुर शहर की शायद ही कोई संस्था हो जिसमे श्री राजरूपजी टांक की सेवायें न लिखी गई हो।

अब कुछ उनके निजी जीवन पर भी दृष्टि डालें। वे एक धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति थे। नित्य पूजन-सामायिक, प्रतिक्रमण उनके कार्यक्रम मे सम्मिलित थे। स्वाध्याय भी निरन्तर चालू रहता था, साधु-साध्वियों के व्याख्यान-श्रवण में भी उनकी उपस्थिति सदैव देखी जा सकती थी। साधु-साध्वियों की सेवा (वैयावच्च) के लिये समाज में उनकी प्रसिद्धि थी। रोग ग्रस्त साधु-साध्वियों की सेवा के लिए उनका घर हमेशा खुला हुआ था। धार्मिक साहित्य का अच्छा संग्रह उनके पास सुरक्षित था।

श्री राजरूपजी साहब को सब कोई आदर और प्रेम से चाचा साहब के नाम से सम्बोधित करते थे। वास्तव में वे सबके चाचा थे। उन्होंने जितने कार्यकर्ता आज समाज को दिये है, वे ही उनकी गरिमा जानने के लिये सक्षम हैं।

श्री चाचा साहब के चले जाने से ऐसा मालूम हो रहा है जैसे एक मसीहा नहीं रहा, एक पिता नहीं रहा, एक नेता नही रहा, एक कार्यकर्ता नही रहा, सबको साथ लेकर चलने वाला व्यक्तित्व नहीं रहा। वे नही रहे पर अपने इतने स्मारक पीछे छोड़ गये हैं कि जो युग-युग तक उनको अमर बनाने में सहायक रहेगे।

हम सब उनके बताये मार्गों पर चल सकें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने एक आदर्श हमें दिया है। काश ! हम उसे समझ सकें।

It is nice to be Important, but it is much Important to be nice. □

—मंत्री, श्री वीर बालिका शिक्षा संस्था

सच्चे राजरूपजी थे तुम !

दिव्य ज्योति हुई लुप्त,
शत शत प्रणाम तुम्हें जन-जन का ।

शत शत नमन तुम धीर-वीर को,
शत शत नमन तुम राष्ट्र-रत्न को,
कोटि प्रणाम तुम समाजसेवी को,
कोटि वन्दन तुम महान् व्यक्तित्व को ।

श्रद्धा, विश्वास-सूत्र में,
बँधे हुये थे हम तुम्हारे सहचर,
हममें, विद्यालय और देश में,
बोये थे तुमने प्रकाश के बीज अमर ।

सेवाभाव के अपार सिन्धु में,
सरस धार बनकर तेरे,
धैर्य, शील, सारल्य, नम्रता,
सत्य, प्रीति के थे तुम चेरे ।

आकाश के उज्ज्वल नक्षत्र थे तुम,
रत्नों में चमकते रत्न थे तुम,
सैंकड़ों लोगों का प्रिय,
सच्चे राजरूपजी थे तुम ।

तुम शक्ति सत्ता में बस,
नवनीत हिम के लोक थे,
तुम मानवों में उत्कृष्ट,
मानवीय भावों के साक्षात् रूप थे ।

तुम मित्र जन के, ज्योति-प्रीति के शक्ति प्रसर,
तुम मन, बुद्धि, कर्मों में समन्वय करते थे स्थापित,
तुम मरुतमान थे ज्योतित पक्षों की उड़ान भर,
ले जाते थे आत्मा की आकांक्षाओं को ऊपर ।

तुम कभी नहीं थे पीछे हटते,
जीवन था तुम्हारा अटल निश्चय,
तुम बहिरंतर के ऐश्वर्यों का
संचय करते रहते थे निश दिन ।

तुम प्रतिजन के थे अथवा थे तुम सामूहिक वैभव,
ऐहिक, आत्मिक सुख तुम जैसे पुरुषार्थी से ही था
संभव,
अमित तेज तुम, प्रभापूर्ण तुम, जनगण जीवन,
ज्योति पुञ्ज तुम, ज्योतियुक्त तुम सबके तन मन ।

दीप्त ओजवल, तव बल ओज करें हम धारण
शुद्ध मन्यु तुम, हम करें मन्यु से कलुष निवारण,
तुम चिर सह, हम सहन कर सकें धीर शांत बन,
पूर्ण बनें हम सोम, सत्य पथ करें आपसे धारण ।

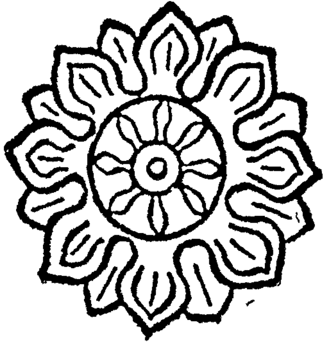
तुम सृजन-शक्ति के ज्योति चरणधर,
रंजन बनाते थे रज कण को,
जड़ में जीवन, जीवन में मन,
मन में सँवारते थे स्वमन को ।

ऐसी ज्योति वह आज बुझी,
अँधियारे में रह गये हम सब और परिजन,
लो दिव्य दीप बुझ गया आज,
मात्र स्मृति लौ बनकर रह गई मन में ।

शत शत नमन कर रही मृत्तिका,
शत शत नमन कर रही समीर,
शत-शत नमन कर रहे थे घन,
शत शत नमन कर रहा अनल ।

शत-शत नमन कर रही क्षिति,
करते हैं हम सब भी वन्दन,
कोटि-कोटि सैंकड़ों नमन,
करते हैं हम आपको अर्पित ।

—कुमारी भारती शर्मा
द्वितीय वर्ष, कला
वीर बालिका कॉलेज



सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक

पुराने साथी
राजरूपजी

□ श्री दौलतमल भण्डारी

जब मैं अपने विगत जीवन पर दृष्टि डालता हूँ तो मेरे बाल्यकाल के साथियो में सबसे पुराने साथी श्री राजरूपजी टांक को पाता हूँ। जब वे और मैं 6-7 साल के थे तो हम दोनो श्री लीलाधर जी के उपाश्रय मे जो पाठशाला थी, उसमे पढते थे। उनकी प्रतिभा तो उसी वक्त दृष्टिगोचर होती थी जैसा कि कहा गया है—"होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" शिक्षा तो उन्होने स्कूल तक ही पाई लेकिन जल्दी ही उन्होंने जवाहरात के काम मे निपुणता हासिल कर ली साथ-ही-साथ उन्होने बाल्यकाल से ही स्वयं को समाज सेवा के कार्य में लगा दिया। जवाहरात के काम मे उनका कोई सानी नही था। जयपुर शहर मे वैसे तो पन्ने का काम होता है लेकिन उनका विशद ज्ञान समस्त रत्नो के बारे मे था। उन्होने अपने ज्ञान का उपयोग अपने लिए धनोपार्जन के लिए नही किया। जयपुर मे जवाहरात के काम करने वाले नवयुवको की एक टोली खडी कर दी। आज भी जयपुर के अन्दर बड़े-बड़े प्रसिद्ध जौहरी नजर आते है जिन्होंने श्री राजरूपजी टांक से ही शिक्षा-दीक्षा ली थी। जवाहरात का काम सिखाने में उन्होंने किसी किस्म का भेदभाव नही किया और जो आया उसको उसकी लियाकत के मुताबिक जवाहरात का काम सिखाया। उनका एक मुख्य उद्देश्य यह रहा कि मेरे पास जो भी काम सीखने आये, वह कम-से-कम इतना तो सीख ले कि अपना जीवन-यापन आनन्दपूर्वक कर सके।

समाज सेवा के क्षेत्र मे उनकी प्रवृत्ति मुख्यत: बालिकाओं में शिक्षा का प्रसार करने मे थी। आज से करीब 63-64 वर्ष पहले उन्होने श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की स्थापना की जो बढते-बढते आज बालिकाओ के कॉलेज के रूप में है, जिसमें 3-4 हजार छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रही है। जयपुर शहर के परकोटे के अन्दर बालिकाओ को शिक्षा देने वाली ऐसी संस्था की स्थापना करना और विकास करना, इन सबका श्रेय श्री राजरूपजी टांक को है। शहर के अन्दर शिक्षा का इससे बड़ा योगदान और किसी महानुभाव का नही है। उन्होंने बालिकाओ को शिक्षा सुलभ करादी और साथ-ही-साथ उनका हमेशा यह ध्यान रहा कि यह शिक्षा उच्च स्तर की होते हुए भी सस्ती होनी चाहिए।

झोपड़ी से महलो तक की यात्रा

गांव के साधारण परिवार मे जन्म लेकर श्री राजरूपजी टाक अपनी लगन, अध्यवसाय, परिश्रम और सेवा भावना से जयपुर शहर ही नही, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कमठ समाजसेवी, प्रबुद्ध कार्यकर्ता एवम् रत्नव्यवसायी थे। उनका रत्न विषयक ज्ञान अनुपम था। वे रत्न-शास्त्र की अनेकानेक पुस्तको के प्रणेता थे, जिनका व्यावसायिक जगत् मे बहुत बड़ा मान है।

समस्त भौतिक सुख-साधनो से सम्पन्न होते हुए भी, उसके मद मे नही खोए। त्याग की तपोमूर्ति, सदव प्राणीमात्र की सेवा भावना एवम् उन्हें सुखी देखने के लिए, प्रत्येक पल तन, मन, धन से समर्पित रहे।

वे अपने जीवन काल मे जवाहरात उद्योग के उत्थान व विकास हेतु अपना अपूर्व ज्ञान अपने साथी सहयोगी एवम् शिष्यो मे मुक्त हस्त से वितरित करते रहे। उनसे शिक्षण व दिशा बोध पाकर आज अनेकजन रत्न व्यवसाय के विशेषज्ञ एवम् लब्ध प्रतिष्ठित व्यापारी हैं।

प्रत्येक सेवाभावी सस्था से वे सदैव जुडे रहकर, उसे हर सम्भव सहायता प्रदान करते रहे। फलस्वरूप अनेक सस्थाएँ आज विकसित होकर उनके द्वारा पोषित पावन उद्देश्यो की पूर्ति मे लगी हुई हैं। ये सस्थाएँ उनकी चिरस्थायी स्मृति रूपक हैं। उनसे आज जन-जन प्रेरणा ग्रहण कर रहा है।

उनके निधन से सावजनिक सेवा व रत्नव्यवसाय मे एक अपूरणीय क्षति हुई है।

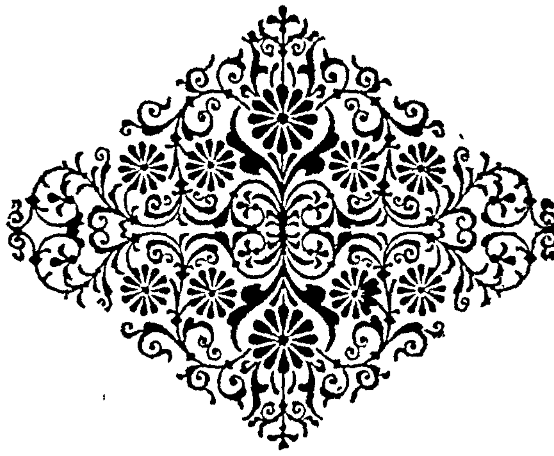
हमारी उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धाजलि समर्पित है।

—कन्हैयालाल धाटीवाला

जवाहरात मे उनका इतना विशद ज्ञान था कि उन्होने एक पुस्तक भी लिखी जिसका विमोचन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ और जिस रोज पुस्तक का विमोचन हुआ उस दिन उनके शिष्यो ने उनको 63 हजार रुपये की थली भेंट की थी, जो उन्होंने श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान को समर्पित कर दी।

सामाजिक क्षेत्र के साथ साथ उन्होने राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश किया और जयपुर राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना के समय से ही वे वर्षों तक इसके कोषाध्यक्ष के रूप मे काम करते रहे। उनकी विचारधारा गाधीवादी थी और श्रद्धेय श्री जमनालालजी बजाज के स्नेह-पात्र थे। जीवन म उन्होने सादगी को अपनाया और हर एक व्यक्ति के साथ भाईचारे का व्यवहार बनाये रखा। वे राजस्थान गो सेवा सघ के वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे। श्री महावीर विकलाग सहायता समिति के सस्थापक सदस्यो मे वह एक थे और उसके वह अध्यक्ष भी रहे। राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ के वे अध्यक्ष भी रहे। जयपुर मे कोई ऐसा क्षेत्र नही था जिसमे श्री राजरूपजी टाक ने भाग नहीं लिया हो। मानवीय सेवा करना उनका सिद्धान्त था और वह अनवरत रूप से सावजनिक सेवा मे लगे रहे। जब जब मैं उनका स्मरण करता हूँ तो मेरे सामने एक ऐसे व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत होता है जिसने समाज की निष्काम भाव से जीवन पर्यन्त सेवा की जो हम सबके लिए शिक्षाप्रद और अनुकरणीय है। भगवान् उनकी आत्मा को शाति दे और हम सबको प्रेरणा दे कि हम उनके जीवन से कुछ शिक्षा प्राप्त करके देश और समाज की सेवा कर सकें। ○

—भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय



निष्ठावान् सामाजिक कार्यकर्ता—
श्री राजरूपजी टाँक



श्री देवीशंकर तिवाड़ी

श्री राजरूपजी टांक उन इने-गिने व्यक्तियों मे से एक थे, जिन्होने जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफलता पाई। मेरा उनसे परिचय लगभग 50 वर्ष पूर्व एक मुकदमे के सिलसिले में हुआ, जो उनके विरुद्ध उस व्यक्ति ने न्यायालय मे प्रस्तुत किया था, जिससे उन्होने वर्तमान हवेली खरीदी थी। वादी का दावा था कि उसने पूरी हवेली बेची है, परन्तु हवेली के दूसरे चौक के बरन्डे की खिड़की नही बेची। उस खिड़की तक पहुँचने और उपयोग करने की उसे सुविधा प्रदान की जावे। यह वाद वर्षो न्यायालय मे चलता रहा। वाद के अंत होने पर हम एक-दूसरे के बहुत निकट आ गये और मेरा उनसे इतना निकट का सम्बन्ध हो गया कि वे मुझे अपने बड़े भाई के समान मानने लगे थे। उन्हे ऐसा विश्वास हो गया कि मुझसे अधिक उनका शुभचिन्तक जयपुर मे कोई नहीं है। राजरूपजी जवाहरात का व्यापार करते थे। व्यापार मे कई तरह की गड़बड़ियाँ हो जाया करती है। एक बार पुलिस ने उनके निवास स्थान पर छापा मारा, उस समय राजरूपजी ने अपना बहुत सा बहुमूल्य सामान अपने किसी सम्बन्धी के भरोसे न छोड़कर मेरे भरोसे छोड़ा और वह सामान मेरे पास कई महीनों तक रखा रहा।

राजरूपजी जवाहरात का व्यापार तो करते ही थे, साथ ही उन्हें गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमो मे गहरी रुचि थी। अतः वे किसी-न-किसी रूप मे गांधीजी के रचनात्मक कार्यों से जुड़े रहे। आजन्म उन्होने गौ-सेवा संघ की सेवा की और अंतिम समय तक खादी और ग्रामोद्योग की गतिविधियों से जुड़े रहे।

जयपुर मे जब प्रजामण्डल की स्थापना के पश्चात् राजनैतिक गतिविधियां चालू हुई तो वे उनसे भी जुड़ गये और प्रजामण्डल के निष्ठावान् कार्यकर्ता के रूप मे कार्य करते रहे। सन् 1948 मे अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी का जयपुर मे अधिवेशन हुआ, उस समय उन्होंने प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों के भोजन की व्यवस्था मे बहुत कुछ काम किया।

मूक वेदना के रक्षक

पीडित मानव की सुन पुकार,
रक्षा करते थे उसी काल।
हे मूक वेदना के रक्षक,
हारा था तुमसे महाकाल ॥1॥

गौ रक्षक पालक, मूक बधिर,
मानव अपग के रक्षक थे।
थे सबके पालनहार आप,
शिक्षण सस्था के पोषक थे ॥2॥

जो अभाव से त्रस्त, व्यथित,
उनके उर के ज्ञानी ध्यानी !
अब बाट जोहते वे तेरी,
कब आयेगा करुणा-दानी ॥3॥

तुम रत्न पारखी सर्वश्रेष्ठ,
मानवता के हित चिन्तक थे।
सवेदनशील, परोपकारी,
स्वाध्यायी आत्म चिकित्सक थे ॥4॥

तुम मूक वेदना सहते थे,
सबकी आँखें भर आती थीं।
साक्षात् भीष्म की शर शय्या,
स्मृति मे सबकी तर आती थी।

हे मृत्यु जयी, हे कालजयी,
छाडी हृदयो पर अमिट छाप।
स्मृति मिटेगी कभी नहीं,
चाहे मिट जायें स्वय आप ॥6॥

—श्रीमती कमला श्रीवास्तव
अध्यापिका, वीर बालिका विद्यालय, जयपुर

तत्कालीन जयपुर सरकार को एक जौहरी का राजनैतिक क्षेत्र मे काय करना अच्छा नही लगा और उस समय के अधिकारियो न समाज म इन्हें नीचा दिखान का पूरा प्रयत्न किया। तत्कालीन जयपुर मे नामी चोर और बदमाशो की पुलिस म हाजरी हुआ करती थी। प्रशासन ने राजरूपजी टाक को भी उस श्रेणी म ले लिया। और प्राय नित्य ही रात्रि म उनके निवास पर पुलिस उनकी हाजरी लेती थी।

राजरूपजी वास्तव मे एक निष्ठावान् सामाजिक कायकर्ता थे, जिनके हृदय मे गरीबो के प्रति दया थी। उन्होने राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ एव विकलाग सहायता समिति की निरन्तर सेवा की और इसके वे अध्यक्ष रहे।

राजरूपजी ने जवाहरात के धन्धे म जो कुशलता एव ज्ञान प्राप्त किया उसे वे आम जनता को देन से नही चूके। सैकडो नवयुवको को रत्न विज्ञान का प्रशिक्षण दिया, अनेक विद्यार्थी आज राजस्थान के सफल जौहरी हैं। रत्न विज्ञान के सम्बन्ध मे एक पुस्तक भी उन्होने लिखी, जिसका अग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की विदेशो मे सराहना की गई।

उनकी सबसे बडी देन, जिसे समाज कभी नही भूलेगा, वह थी—महिला शिक्षा के क्षेत्र मे। उन्होने आज के लगभग 50 वष पूव वीर बालिका विद्यालय की स्थापना की, जिसने इस समय विशाल रूप धारण कर लिया है। इस विद्यालय म प्राथमिक कक्षाओ से लेकर स्नातक तक की कक्षाएँ चलती हैं, और इस सस्था से निकली हुई सैकडो छात्राएँ आज सफल गृहिणी और माताएँ हैं।

आज राजरूपजी नही रहे, उनकी याद रह गई है। वे एक कुशल जौहरी, सच्चे मित्र, शिक्षा-प्रेमी एव निष्ठावान समाज-सेवी थे। वे अपनी छाप समाज पर छोड गये हैं, जिससे उन्हे सदा निष्ठावान सामाजिक कायकर्ता के रूप मे याद किया जायेगा। ○

—प्रमुख समाजसेवी एव शिक्षाविद
1, म्यूजियम माग, जयपुर-4

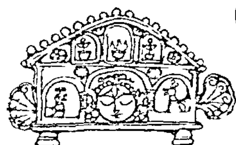


श्री [illegible]

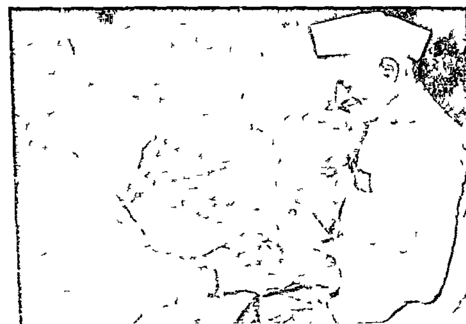
एवं धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला देवी [illegible]



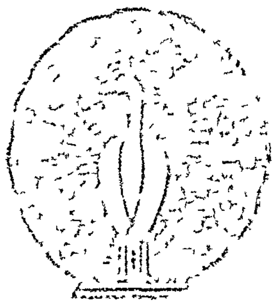
श्री राजरूप टाक
दोनो पुत्र श्री दुलीचन्द
व श्री कीर्तिचन्द टाक,
पत्नी श्रीमती मिताव
पुत्र-वधू श्रीमती शात
श्रीमती प्रमिता पौत्र
एव पौत्री भावना के



टांक-परिवार



श्री वी बालिका वि
के स्वर्ण जयन्ती म
मे भूतपूर्व छात्राओ
एकत्रित राशि की थैली
रूप श्रीमती मिता
म झोली मे ग्रहण कर
हास्य मुद्रा मे श्री र
टाक



चाचा साहब
एवम्
चाचा नेहरू

देशी राज्य लोक परिषद् के जयपुर अधिवेशन में बालकों द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू, उन बच्चों के साथ प्यारे चाचा की [illegible] ।

ा टाक के निवास स्थान पर रुला की कढ़ाई
ग की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करते हुए
धान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ।

श्री महावीर विकलांग सहायता समिति के अध्यक्ष
श्री राजरूप टांक, भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव
रेड्डी का स्वागत करते हुए— अभिनन्दन करते हुए ।

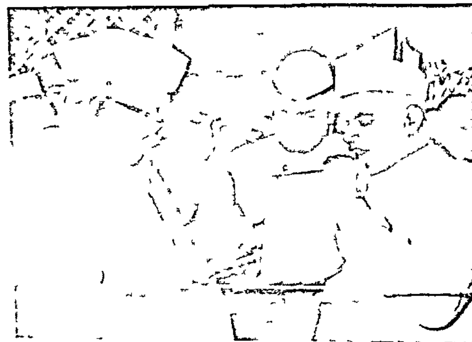
हर कार्य में सजग,
हर कार्य में अग्रणी.
श्री राजरूप टाक ने
भारत के प्रधानमंत्री
श्री मोरारजी भाई
देसाई को जवाहरात
उद्योग के संबंध में
प्रतिवेदन प्रस्तुत किया,
साथ ही समस्याओं के
निवारणार्थ उनसे
आवश्यक आश्वासन
भी प्राप्त किया।



[illegible]



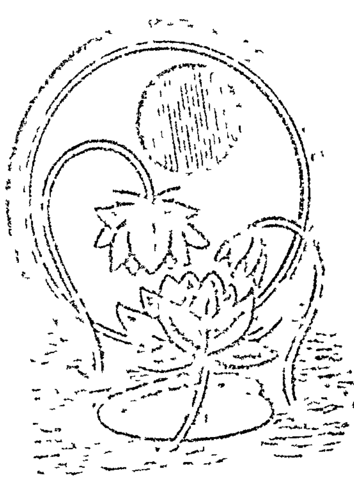
जयपुर चैम्बर ग्राफ
के समारोह पर भार
राष्ट्रपति श्री नीलम
रेड्डी—चैम्बर के पद
रियो में सुरेन्द्र कुमा
एव श्री टाक साहब



श्री टाक साहब द्वारा
पुस्तक "रत्न प्रकाश
विमोचन करते हुए
राजस्थान के राज्यप
डॉ सम्पूर्णानन्द ।



कश्मीर के यशस्वी
श्री कर्णसिंह प्रस्तुत
पुस्तक का अवलोक
हुए, उसे पढ़ते हुए

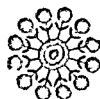


चाचा साहब की 63वीं वर्षगांठ पर उनके शिष्य-परिवार ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया की अध्यक्षता में एक विशेष समारोह का आयोजन किया ।

इसी अवसर पर उनके शिष्य परिवार ने चाचा साहब को सम्मान स्वरूप 63,000/- रु की थैली भेंट की ।

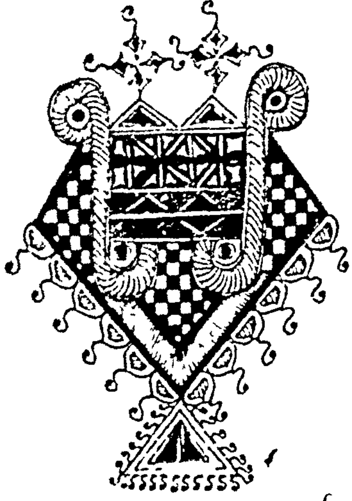
जौहरी द्रव

जयपुर के प्रसिद्ध
श्री राजमल सुराणा
श्री राजरूप टांक–राज
के महामहिम राज्यपा
हुकुमसिंह का स्वाग
अभिवादन करते हुए





भगवान महावीर के
निर्वाण कल्याणक
अवसर पर, राजस्थ
महामहिम राज्यपा
जोगेन्द्रसिंह की अ
मे एव विद्यालय की
उत्साह प्रवर्तिनी श्री
श्रीजी व मृदुभाषी श्री
प्रभा श्रीजी के सान्नि
एक विशेष समार
आयोजन मे मात



समाज-रत्न की स्मृतियाँ

• श्री कलानाथ शास्त्री

जयपुर नगर के साथ समाज-रत्न श्री राजरूप टाक की सेवाओं का 80 वर्ष का सम्बन्ध इतना गहरा है कि सहसा यह विश्वास नही होता कि वे जयपुर को तथा हम सबको छोड़ गये हैं। न केवल रत्न व्यवसाय, कामगारों के प्रशिक्षण तथा उससे सम्बन्धित साहित्य-लेखन मे विचार, हिन्दी संस्कृत, प्राकृत, धर्म, जैन विद्या आदि क्षेत्रों में कार्यरत सस्थाओं को प्रोत्साहन देने मे, नेत्रहीनों और विकलांगों की सेवा मे उनकी प्रेरणा और उनकी कर्मठता इतने लम्बे समय तक इस नगर को देखने को मिली है कि उनकी स्मृतिया सदा अमर रहेगी।

मेरा उनसे सम्पर्क मेरे बाल्यकाल से ही रहा। मेरे पिता स्व. भट्ट मथुरानाथ शास्त्री उनके मित्रो मे से थे और कहा करते थे कि राजरूपजी इस नगर के सभी पुराने परिवारो के मित्र हैं। शायद ही कोई ऐसा पुराना प्रतिष्ठित परिवार हो, जो उनके कार्यों के सम्पर्क में न आया हो। बाद मे अनेक संस्थाओ के सदस्य के रूप मे जब मैं कार्य करने लगा तो उन सब सस्थाओ के प्रेरक व्यक्तित्व के रूप मे उनसे सम्पर्क होता रहा। प्राकृत भारती संस्था जो अब प्राकृत भारती अकादमी हो गई है, जब स्थापित हुई थी तो इसके गुणग्राहक सचिव श्री देवेन्द्रराज मेहता ने कृपापूर्वक मुझे भी उन संस्था मे सहयोगी बनाया। उनकी बैठकें सदा टांक साहब की हवेली मे होती थी। प्रो. प्रवीणचन्द्र जैन ने उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसंधान सस्थान जब स्थापित किया तो उसके प्रेरको मे भी टांक साहब थे। कुछ वर्ष तक मै इस संस्था का महासचिव रहा था। मुझे याद है प्रत्येक बैठक में टाक साहब आते थे और हमे आश्चर्य होता था कि इतने व्यस्त होते हुए भी ये ऐसी हर बैठक में पहुँचने का समय निकाल लेते थे, चाहे थोड़े समय के लिए ही क्यो न हो।

जयपुर में जितने साहित्यिक, सामाजिक या धार्मिक बडे समारोह होते थे उनकी स्वागत समिति मे या प्रबन्ध समिति में टांक साहब को सम्मानित सदस्य के रूप से या संरक्षक के रूप मे शामिल किया जाता था। श्री देवीशंकर तिवाड़ी, जो स्वयं यहां के नगर जीवन के एक स्तम्भ हैं, राजरूपजी के अभिन्न मित्र थे। ये दोनो अधिकांश संस्थाओं और समितियो में साथ-साथ सम्मिलित रहते थे। मुझे ऐसी सैकड़ो बैठकों की याद आ रही है जिसमे टांक साहब शामिल होते थे और प्रत्येक कार्य को प्रोत्साहन और प्रशंसा देते थे। उनकी इन आत्मीयता और प्रशंसा से बहुत से काम बिगड़ते-बिगड़ते भी बन जाते थे।

एक बार विनोद मे उन्होंने कहा था कि इतनी संस्थाओं ने मुझे संरक्षक या कोषाध्यक्ष बनाया है और उन सबके काम के लिए मैं खुले मन से अपनी ओर से जो आर्थिक सहयोग सम्भव हुआ देता रहा हूँ। और साथ ही अन्य सम्पन्न व्यक्तियों

से चन्दा मागने भी जाता रहा हूँ। अब यह हालत हो गई है कि जब भी किसी से मिलने जाता हूँ तो वे यही समझते हैं कि किसी सार्वजनिक कार्य के लिए चन्दा मागने आया होगा। इस विनोद के साथ वे यह अवश्य कहते थे कि इसका अर्थ यह नही है कि मैं ऐसे काम के लिए जाना बन्द कर दूगा। यह काम तो मैं जीवन भर करता रहूँगा। पर चाहता यह हूँ कि मेरे साथ आप सब लोग भी रहें ताकि मैं निसकोच किसी अच्छे काम की वकालत कर सकूँ। उनकी यह परोपकारी वृत्ति जयपुर भर मे स्मरण की जाती थी। इसका परिणाम यह तो होना निश्चित ही था कि वे अजातशत्रु रहते और यही हुआ। उनकी निन्दा करने वाला कोई नही मिलेगा। ऐसा भी काई व्यक्ति नही मिलेगा जो किसी न किसी प्रसग मे सार्वजनिक जीवन मे इनके निकट सम्पर्क म नही आया हो। इतने लम्बे समय तक खुले दिल से इतनी व्यापक सार्वजनिक सेवाएँ करने वाले व्यक्ति विरले ही होते हैं। उनके उठ जाने से ऐसा लगता है कि पूरा इतिहास उठ गया है। एक अध्याय ही नही अनेक अध्याय ही समाप्त हो गये हैं।

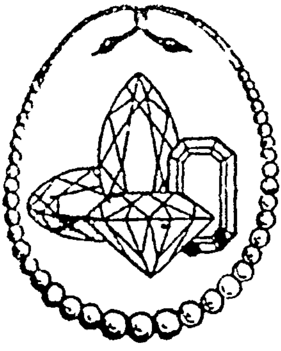
वीर बालिका विद्यालय उनके द्वारा रोपा गया ऐसा उत्कृष्ट कल्पतरु है जो गत 63 वर्षों स निरन्तर पनप रहा है और फलफल रहा है। इसका कार्य अब इतना बढ गया है कि यह महाविद्यालय भी बन गया है और अनेक शाखाओ म इसकी शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। जिस लगन से इन्होन तन-मन धन से इसे सीचा है, वह सभी सार्वजनिक जीवन मे कार्यरत व्यक्तियो के लिए अनुकरणीय है। मुझे भलीभाति याद है कि अपनी अन्तिम अवस्था मे रुग्ण होत हुए भी वे किसी प्रकार इस सस्था के ही नही अन्य सस्थाओ के भी, जिनसे व जुड़े थे, समारोहो म जाते थे और बडे स्नेह से सहयोग देते थे। उनकी वह छवि आज भी मेरी आँखो के सामन घूम जाती है। न जाने कितने एस व्यक्ति होंगे जिनकी आखो के सामने वह छवि आज भी उसी प्रकार जीवन्त होगी। निश्चय ही राजरूप टाक अमर रहेंगे। उनकी कर्मठता और उनकी समाज सेवा अमर रहेगी।

—निदेशक, भाषा विभाग, जयपुर

जन्मते हैं योगी ऐसे

रत्न से एक रत्न राशि विलग हो कर खो गयी,
धवल ज्योति, परम ज्योति मे लय हो गयी।
तीन वर्षों की थी अटल वह साधना।
फिर चल दिये थे प्राण पछी उड गगन मे।
जग सुधारक नाम पाकर,
मर करके भी जो जी गये।
स्व समर्पित निष्काम कर्मी
दीनो के सिरमौर बनकर जो जी गये।
रो उठे थे देखकर,
नारी हृदय की वेदना को,
विकल मानस छटपटाया,
विकलागो की वेदना पर,
ले लिया था प्रण उसी दिन,
नारी के उत्थान का।
शक्तिशाली हाथ बनकर,
साथ दो गसे दलितो के वे
अशावतार इव धमस्य
जन-जन के प्राणाधार बनकर जो जिये,
निरभिलाषी, विरत सुख,
तल्लीन सेवा भाव मे,
जुट गये जन-जन की सेवा मे
एकजुट प्रयास से।
मनुज संस्कृति मे
कभी मरता न ऐसा व्यक्ति है,
बदलते सक्रान्त मूल्यो मे
जन्मते हैं योगी ऐसे।

• श्रीमती शशि शर्मा
अध्यापिका, वीर बालिका विद्यालय



रत्न-जगत् का ज्वाजल्यमान रत्न

श्री राजरूप टांक

☐ श्री ज्ञानचन्द खिन्दूका

जिसने भी जन्म लिया है उसका मरण अवश्यम्भावी है किन्तु कुछ व्यक्तित्व ऐसे विलक्षण प्रतिभाशाली होते है जिनके पार्थिव शरीर के जाने के बाद भी उनके कर्तृत्व और यश की गरिमा उन्हें दीर्घकाल तक जीवित एवं उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखती है।

स्वर्गीय श्री राजरूप टांक ऐसे ही यशस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। राजस्थान के छोटे से गाँव चिडावा मे श्री माणकचन्दजी श्रीमाल के घर जन्मे श्री राजरूपजी की स्कूली शिक्षा सिर्फ आठवी श्रेणी तक ही रही, वहाँ से ये जयपुर में श्री छगनलालजी टांक के यहाँ गोद आये। जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी श्री रतनलालजी फोफलिया जैसे अनुभवी एवं रत्नपारखी गुरु से इनने रत्नव्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

यह श्री टाक की मेहनत व निरन्तर अभ्यास का ही परिणाम था कि वे अपने गुरु से प्रदत्त ज्ञान को बढाते रहे और रत्नव्यवसाय व रत्न-परीक्षा के नये क्षितिज खोलते रहे।

यद्यपि मुझे उनका विधिवत शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ तदपि उनका वात्सल्य और स्नेह मेरे कैशोर्य से ही मुझे मिलता रहा। जब वे हमारे पिताश्री एवं ख्यातिनामा जौहरी स्वर्गीय श्री मगनमलजी साहब पटोनिया व अन्य जौहरियों के साथ बैठकर पन्ने की खरड़ बनाया करते थे।

उन्होने रत्नव्यवसाय व रत्नपरीक्षा के पारम्परिक तरीके से प्राप्त ज्ञान तक ही अपने को सीमित नही रखा अपितु प्राचीन ग्रंथों एवं अर्वाचीन पाश्चात्य प्रणाली में से वे निरन्तर खोज करते रहे और अपने अनुभव को नये आयाम देते रहे। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने अपने जीवनकाल में रत्नों का अभूतपूर्व संग्रहालय निर्मित किया जो सुगमता से अन्यत्र उपलब्ध नही है।

उनका जीवन दर्शन एक निश्छल प्रवहमान धारा के अनुरूप था, जिसके तट पर जो भी आया उसे अपनी प्यास बुझाने का समान अवसर मिला और वह अपनी क्षमता के अनुसार अपने पात्र को भरकर ले गया। यही कारण था कि उन्होने बिना किसी जाति व संप्रदाय की बाधा के युवको को रत्न उद्योग मे प्रशिक्षण दिया। उनके शिष्यो की संख्या लगभग एक हजार होगी। जयपुर रत्न उद्योग का प्रमुख केन्द्र है। दुनिया के रत्न व्यवसाय के मानचित्र पर जयपुर को जो गौरवपूर्ण अग्रगण्य स्थान प्राप्त है उनमे श्री टाक का तथा इनके शिष्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि उनके अधिकांश शिष्य आज इस व्यवसाय मे शीर्ष स्थानो पर बैठे हैं।



मधुर भाषी

☐ आप एक सफल रत्नव्यवसायी थे। जयपुर में आपने काफी बड़ी संख्या में लोगों को रत्नव्यवसाय में दक्ष कर स्वावलम्बी बनाया। आप मधुर भाषी, मिलनसार, सरलस्वभावी थे। अपने सद्व्यवहार एवं आकर्षक व्यक्तित्व से आपने सभी को प्रभावित किया। आपने धार्मिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

—श्री महावीर जैन श्वेताम्बर मन्दिर, जयपुर

रत्नपारखी श्री टाक में व्यावसायिक निपुणता एवं मानवीय गुणों का अद्भुत सामन्जस्य था। व्यापार हो अथवा समाज सेवा, वे दोनों में प्रभावी रहे हैं। उनकी दानशीलता एवं कर्तव्यपरायणता का लाभ व्यापारिक संस्थाओं, शिक्षालयों एवं चिकित्सा के क्षेत्रों को समान रूप से मिलता रहा। अनाथालय हो अथवा नेत्रहीनों का स्कूल, जरूरतमन्द की मदद के लिये उनके दरवाजे सदैव खुले रहते थे। इसी से प्रभावित होकर उन्हें 'समाज रत्न" तथा "समाज भूषण" आदि उपाधियों से सम्मानित किया गया। उनके शिष्यों ने उन्हें 63,000/– की थैली भेंट की थी जिसे उन्होंने सहर्ष महिला शिक्षा के लिए अर्पित कर दिया। आखरी दान के रूप में वे अपने नेत्र भी दान कर गये जिससे किसी नेत्रहीन को लाभ मिल सके।

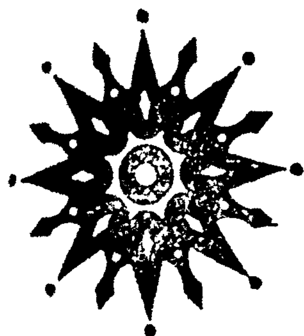
यद्यपि स्वतन्त्रता संग्राम में जेल जानेवाले स्वतन्त्रता सैनिकों की सूची में उनका नाम नहीं था, फिर भी राजनैतिक क्षेत्र में वे काफी समय तक सक्रिय भाग लेते रहे। वे जयपुर राज्य प्रजामण्डल से सम्बन्धित रहे और उन्हें सेठ जमनालाल बजाज जैसे देश भक्त का सान्निध्य प्राप्त होने का सौभाग्य मिला। वे जयपुर की प्रथम लेजिस्लेटिव असेम्बली के सदस्य निर्वाचित हुए। जयपुर नगरपरिषद् के सदस्य के रूप में भी वे जयपुर के नागरिकों की सेवा करते रहे। राजस्थान चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री, व्यापार, उद्योग मण्डल, जयपुर चेम्बर ज्वैलर्स असोसिएशन, गोसेवा संघ आदि व्यापारिक संस्थाओं के अध्यक्ष व अनेक उच्च पदों पर वे आसीन रहे।

बोलचाल में मृदुल और अत्यन्त व्यवहारकुशल, विनोदी स्वभाव के श्री टाक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। विद्वानों और सन्तजनों के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा व प्रेम था, लगता है उनके शुभाशीर्वाद से ही श्री टाक जिन्दगी की बुलन्दियों पर चढ़ते गये।

उनके द्वारा लिखित पुस्तक "इण्डियन जेमोलाजी" व "रत्नप्रकाश" का भारत में ही नहीं अपितु अमेरिका तथा यूरोपीय देशों में जो सम्मान हुआ है उससे पुरातन भारतीय रत्न विशेषज्ञता की प्रतिष्ठा बढ़ी जिसके लिए श्री टाक की जितनी प्रशंसा की जावे, थोड़ी है।

ऐसे ख्यातिनामा, रत्नपारखी, व्यवहारकुशल, समाजसेवी के निधन से जो रिक्तता आई है उसकी पूर्ति होना अत्यन्त कठिन है। मैं इनके गुणों के प्रति विनयावनत हूँ। ☐

भाई सा. श्री राजरूपजी टांक और उनका परिवार





श्री राजेन्द्रकुमार श्रीमाल 'विशारद'

जैसे उत्तम धरती और उत्तम बीज ही फलदायी उत्तम वृक्ष के मूल कारण हैं, ये उत्तम वृक्ष ही पर्यावरण की सुरक्षा करते है, सघन छाया से पथिको को शान्ति प्रदान करते है, हरीतिमा से नेत्र और मन को आनन्दित करते है और मधुर फलों से आबालवृद्ध को पोषित करते है, यही बात श्री राजरूपजी टांक के जीवन के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है ।

आपका जन्म वि. सं. 1964 मे श्रावण सुदी ss को चिड़ावा (शेखावाटी) के समाज के अग्रणी श्री माणकचन्दजी श्रीमाल के यहाँ हुआ था । उनके पूर्वज श्री सांवतरामजी ठिकाना खेतडी के दिवान थे । उन्होने तत्कालीन महाराजा अजीतसिहजी के निवास के लिए चिड़ावा मे अपने निवास स्थान मे ही एक महल का निर्माण करवाया जो आज भी श्रीमालो के मोहल्ले मे मौजूद है । उसमे पानी का प्रयोग छानकर करवाया था, यह उनकी विवेकपूर्ण अहिंसा का उदाहरण है । उन्होंने झुंझुनू मे एक वृहत् दादावाड़ी का निर्माण भी करवाया जिसकी प्रतिष्ठा उनके सुपुत्र श्री हरिनारायणजी ने कराई थी । श्री हरिनारायण जी ठिकाना सेनड़ी के कामदार रहे व फौजदारी तथा दिवानी का भार भी उनको सौंपा गया था । उनके प्रपौत्र श्री रामप्रसादजी सर्वप्रथम जवाहरात के व्यापार के लिए कलकत्ता पधारे थे । तत्कालीन खेतडी नरेश ने उनको कलकत्ता पत्र लिखा कि यह एक बहुत ही गौरव की बात है कि चिडावा से सर्वप्रथम आप जवाहरात का व्यापार करने कलकत्ता पधारे है । इससे अपने कस्बे की बहुत शोभा बढी है ।

श्री रामप्रसादजी का विवाह चाकसू के श्री हीरालालजी छगनलालजी की बहिन श्रीमती मगनबाई से हुआ था । श्री रामप्रसादजी के बडे सुपुत्र श्री किशनचन्दजी का भी कलकत्ता मे जवाहरात के व्यापार मे विशिष्ट स्थान था । उनके तीन सुपुत्र श्री भंवरलालजी, श्री छुट्टनलालजी एडवोकेट और राजेन्द्रकुमार हैं । उनके मझले सुपुत्र श्री माणकचन्द्रजी का विवाह नीमा (जि. चूरू, राजस्थान) के प्रतिष्ठित कोठारी परिवार श्री केशरीचन्द्रजी की सुपुत्री घोटा बाई के साथ हुआ था । श्री माणकचन्द्रजी बहुत ही शांत स्वभावी व धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे । वे हर वर्ष पर्युषण पर्वाधिराज पर अपनी प. पू. माताजी को कल्पसूत्र सुनाने के लिए चिड़ावा पधारते थे । किसी विशेष कारणवश वे न पधार सकते तो उनके यशस्वी सुपुत्र श्री राजरूपजी टांक कल्पसूत्र वाचन के लिए चिड़ावा पधारते, जिसको सुनने के लिए सभी वर्ग के व्यक्ति सम्मिलित होने

थे। श्री माणकचन्द्रजी के लघुभ्राता श्री लाभचन्द्र जी बीमारों को निःशुल्क दवाइयां बांटते थे। उनके अनुज श्री फूलचन्द्रजी की धर्मपत्नी ने दीक्षा अंगीकार की जो पुण्यश्रीजी के सिंघाड़े में बुद्धि श्रीजी के नाम से विख्यात हुईं। उन्होंने क्षमाकल्याणजी रचित चैत्य वन्दन चौबीसी का हिन्दी अनुवाद व चन्दकेवली (वर्धमान तप) की पुस्तकें लिखीं जिसका प्रकाशन श्री जिन हरिसागर सूरि भण्डार लोहावट से हुआ है।

श्री माणकचन्द्रजी के दो सुपुत्रियां व दो सुपुत्र थे। बड़े सुपुत्र श्री राजरूपजी अपने पिताजी श्री माणकचन्द्रजी के ननिहाल चाकसू के सेठ श्री छगनलालजी के गोद चले गए थे, उसके बाद लघु सुपुत्र श्री सुमतिचन्द्रजी का देहान्त हो गया।

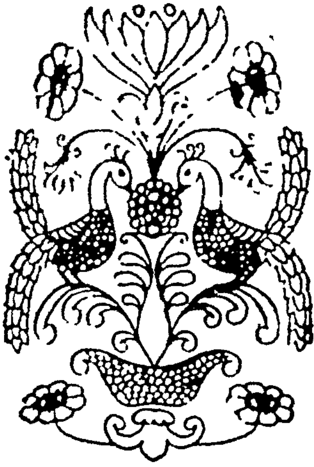
चाकसू के सेठ दिलसुखरायजी के दो पुत्र श्री हीरालालजी छगनलालजी टाक हुए जिनका जन्म क्रमशः वि. सं. 1902 व 1917 में हुआ। सं. 1940 में आप चाकसू से बम्बई पधारे तथा अपने व्यापार चातुरी से जवाहरात के कार्य में लाखों रुपयों की सम्पत्ति अर्जित की। उस समय भूलेश्वर (बम्बई) में आपकी गद्दी थी व मोती के व्यापार में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। आप सं. 1953 में बम्बई से जयपुर पधारे तथा जवाहरात का व्यापार प्रारम्भ किया। यहां भी उन्होंने काफी उन्नति की व बम्बई वाले सेठ के नाम से प्रसिद्ध थे। आप दोनों भाइयों ने श्रीमालों के मन्दिर के पास जयपुर में एक धर्मशाला बनवाई जो आज भी सभी सुविधाओं से युक्त है। इनके पूर्वजों व श्री सौभाग्यमलजी श्रीश्रीमाल के पूर्वजों ने भी चाकसू में मन्दिर व दादावाड़ी का निर्माण कराया था। जिसको श्री राजरूपजी टाक ने व्यवस्था के लिए श्री खरतरगच्छ संघ, जयपुर को सौंप दिया। श्री हीरालालजी का स्वर्गवास सं. 1963 में हुआ व उनके एक सुपुत्र श्री उमरावसिंहजी थे। श्री उमरावसिंहजी के कोई सन्तान नहीं थी। अतः उन्होंने श्री पारसचन्द्रजी को गोद लिया जो जवाहरात का कार्य कर रहे हैं।

श्री छगनलालजी का विवाह जयपुर के प्रसिद्ध जौहरी और समाज सेवी सेठ श्री केशरीचन्द्रजी भूमल की बहन (सुपुत्री श्री मांगीलालजी, मालपुरा निवासी) से हुआ था। सं. 1966 में श्री छगनलालजी का स्वर्गवास हो गया। सं. 1967 से दोनों भाइयों का परिवार अलग हो गया। अतः श्री छगनलालजी की धर्मपत्नी श्रीमती गोरा बाई ने अपने नन्दोई श्री रामप्रसादजी के पौत्र (सुपुत्र श्री माणकचन्द्रजी) श्री राजरूपजी को संवत् 1970 में गोद लिया। आपका विवाह जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी श्री केवलचन्द्रजी धाधिया की सुपुत्री श्रीमती सिताब देवी से संवत् 1980 में हुआ था। आपके पांच पुत्रियां व दो पुत्र हैं। दोनों पुत्र जवाहरात के व्यापार में अपना विशेष स्थान रखते हैं। बड़े पुत्र श्री दुलीचन्द्र का विवाह जयपुर का प्रसिद्ध घराना श्री नवरतनमल जी कर्नावट की सुपुत्री शांतिदेवी से व छोटे पुत्र श्री कीर्तिचन्द्र का श्री पारसमलजी ढढ्ढा की सुपुत्री प्रमिला से हुआ। श्री दुलीचन्द्र के पांच पुत्रियां व एक पुत्र है। पुत्र का नाम धर्मेन्द्रकुमार है। श्री कीर्तिचन्द्र के एक पुत्री व एक पुत्र है। पुत्र का नाम दुष्यन्तकुमार है।

हम सब पू. श्री भाई साहब श्री राजरूपजी टाक के पदचिह्नों पर चलें व जीवन को सफल बनावें, इन्हीं भावनाओं के साथ।

—62, गंगवाल पार्क, जयपुर

O O O



संस्मरण



श्री सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल



श्रद्धेय टांक साहब का जन्म राजस्थान मे झुंझुनू जिले मे चिड़ावा कस्वे मे हुआ था। पर वे बचपन में ही जयपुर मे मैं. हीरालालजी छगनलाल जी टांक के यहां गोद आ गये, फलत: उनकी शिक्षा-दीक्षा जयपुर मे ही हुई। जिस परिवार में वे गोद आये, वह परिवार भी मूलत: जयपुर से लगभग 36 किलोमीटर दूर चाकसू कस्वे का रहने वाला रहा है। सयोग की वात है कि इस कस्वे के ही मूल निवासी मेरे परिवार के पूर्वज भी रहे है जहां हमारी जमीन, जायदाद आदि थे। मेरे पिताजी से पूर्व परिवार चाकसू मे ही रहता था। पिताजी ही रोजगार-व्यापार की दृष्टि से जयपुर आ बसे थे। एक ही कस्वे के निवासी होने से इस युग मे आपसी भाईचारे का व्यवहार होना एक विशेषता रही है। यह प्रक्रिया मेरे वावा साहव तक खूब निभी। किसी समय चाकसू कस्वे में श्वे जैन परिवारो की संख्या काफी अच्छी रही होगी। यही कारण था कि वहा का श्वे. जैन मन्दिर और दादावाडी जैसे निर्माण में सभी का घनिष्ठ योग-दान रहा और आज भी वहां के उस समाज की वैभव पूर्ण गाथा के प्रतीक स्वरूप ये दोनों स्थान माने जाते है।

चाकसू से उठ कर आया टांक परिवार जयपुर में भी अपना गोरवपूर्ण स्थान बना सका। वर्षों पूर्व इस परिवार का निवास स्थान आजकल के धन्वन्तरी औषधालय एवं भेषजागार वाला पूरा भवन रहा है। धीरे-धीरे परिवार में विखराव आया और भाइयो में अलगाव पैदा हुआ। फलत: सब अलग-अलग रहने लगे। यही समय था जब मैं. हीरालालजी छगनलालजी के उत्तराधिकारी श्री राजरूपजी टांक ने भी अपने जीवन सग्राम में प्रवेश किया। जैसा वे अक्सर कहा करते थे—प्रारंभ में रत्न व्यवसाय में उन्हें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर वे अध्यवसायी थे। उन्होंने कठिन परिश्रम और दृढता से उनका मुकावला किया और उन पर शनैः-शनैः कावू पा लिया। रत्न व्यवसाय में उनकी गहनतर पैठ होती गई और वे प्रमुख व्यवसायी वन गये।

व्यावसायिक जीवन के इस उज्ज्वल भविष्य के समानान्तर उनके जीवन की अन्य धारायें भी अविरल गति से प्रवाहित होती रही उनमें से कति-पय प्रमुख थी जैसे : समाजसेवा की अदम्य भावना, स्वातंत्र्य प्रेम की प्रेरणादायी ललक, असहाय एवं असमर्थ युवाओं को अपने स्वय के पांवों पर खड़े होने मे समर्थ बनाने का उत्कट साहस, महिला शिक्षा एवं जनजागरण का अलख जगाने की निः-स्वार्थ लगन आदि। उन्होंने अपने जीवनकाल में इन सभी को मूर्तरूप देने और इनको कुशल क्रिया-

थे। श्री माणकचन्द्रजी के लघुभ्राता श्री लाभचन्द्र जी बीमारो को नि शुल्क दवाइया बाटते थे। उनके अनुज श्री फूलचन्द्रजी की धमपत्नी ने दीक्षा अगीकार की जो पुण्यश्रीजी के सिघाडे मे बुद्धि श्रीजी के नाम से विख्यात हुईं। उन्होंने क्षमा-कल्याणजी रचित चत्य वन्दन चौबीसी का हिन्दी अनुवाद व चन्दकेवली (वधमान तप) की पुस्तकें लिखी जिसका प्रकाशन श्री जिन हरिसागर सूरि भण्डार लोहावट से हुआ है।

श्री माणकचन्द्रजी के दो सुपुत्रिया व दो सुपुत्र थे। बड़े सुपुत्र श्री राजरूपजी अपने पिताजी श्री माणकचन्द्रजी के ननिहाल चाकसू के सेठ श्री छगनलालजी के गोद चले गए थे, उसके बाद लघु सुपुत्र श्री सुमतिचन्द्रजी का देहान्त हो गया।

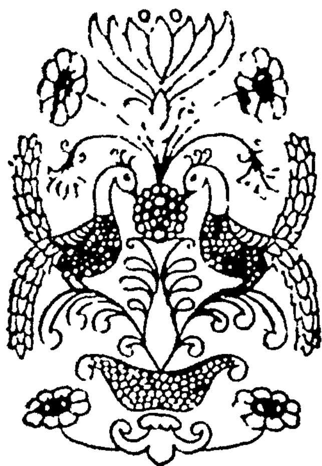
चाकसू के सेठ दिनसुखरायजी के दो पुत्र श्री हीरालालजी छगनलालजी टाक हुए जिनका जन्म क्रमश वि स 1902 व 1917 मे हुआ। स 1940 मे आप चाकसू से बम्बई पधारे तथा अपने व्यापार चातुरी से जवाहरात के काय मे लाखो रुपयो की सम्पत्ति अर्जित की। उस समय भूलेश्वर (बम्बई) मे आपकी गद्दी थी व मोती के व्यापार मे अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। आप स 1953 मे बम्बई से जयपुर पधारे तथा जवाहरात का व्यापार प्रारम्भ किया। यहा भी उन्होंने काफी उन्नति की व बम्बई वाले सेठ के नाम से प्रसिद्ध थे। आप दोनो भाइयो ने श्रीमालो के मन्दिर के पास जयपुर मे एक धमशाला बनवाई जो आज भी सभी सुविधाओ से युक्त है। इनके पूवजा व श्री सौभाग्यमलजी श्रीश्रीमाल के पूवजो ने भी चाकसू मे मन्दिर व दादावाडी का निर्माण कराया था। जिसको श्री राजरूपजी टाक ने व्यवस्था के लिए श्री खरतरगच्छ सघ, जयपुर को सौंप दिया। श्री हीरालालजी का स्वगवास स 1963 मे हुआ व उनके एक सुपुत्र श्री उमरावसिहजी थे। श्री उमरावसिहजी के कोई सन्तान नहीं थी। अत उन्होंने श्री पारसचन्द्रजी को गोद लिया जो जवाहरात का कार्य कर रहे हैं।

श्री छगनलालजी का विवाह जयपुर के प्रसिद्ध जौहरी और समाज सेवी सेठ श्री केशरीचन्द्रजी मूसल की बहन (सुपुत्री श्री मागीलालजी, मालपुरा निवासी) से हुआ था। स 1966 मे श्री छगनलालजी का स्वगवास हो गया। स 1967 से दोनो भाइयो का परिवार अलग हो गया। अत श्री छगनलालजी की धमपत्नी श्रीमती गौरा बाई ने अपने नन्दोई श्री रामप्रसादजी के पौत्र (सुपुत्र श्री माणकचन्द्रजी) श्री राजरूपजी को सवत् 1970 मे गोद लिया। आपका विवाह जयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी श्री केवलचन्द्रजी धाधिया की सुपुत्री श्रीमती सिताब देवी से सवत् 1980 मे हुआ था। आपके पाच पुत्रिया व दो पुत्र हैं। दोनो पुत्र जवाहरात के व्यापार मे अपना विशेष स्थान रखते हैं। बडे पुत्र श्री दुलीचन्द्र का विवाह जयपुर का प्रसिद्ध घराना श्री नवरत्नमल जी कर्नावट की सुपुत्री शातिदेवी से व छोटे पुत्र श्री कीर्तिचन्द्र का श्री पारसमलजी ढढ्ढा की सुपुत्री प्रमिला से हुआ। श्री दुलीचन्द्र के पाच पुत्रिया व एक पुत्र है। पुत्र का नाम धर्मेन्द्रकुमार है। श्री कीर्तिचन्द्र के एक पुत्री व एक पुत्र है। पुत्र का नाम दुष्यन्तकुमार है।

हम सब पू श्री भाई साहब श्री राजरूपजी टाक के पदचिह्नों पर चलें व जीवन को सफल बनावें, इन्ही भावनाओ के साथ ।

—62, गगवाल पाक, जयपुर





संस्मरण



श्री सौभाग्यमल श्रीश्रीमाल



श्रद्धेय टाक साहब का जन्म राजस्थान मे झुंझुनू जिले में बिडावा कस्बे मे हुआ था। पर वे बचपन मे ही जयपुर मे मै. हीरालालजी छगनलाल जी टाक के यहां गोद आ गये, फलतः उनकी शिक्षा-दीक्षा जयपुर मे ही हुई। जिस परिवार में वे गोद आये, वह परिवार भी मूलतः जयपुर से लगभग 36 किलोमीटर दूर चाकसू कस्बे का रहने वाला रहा है। सयोग की बात है कि इस कस्बे के ही मूल निवासी मेरे परिवार के पूर्वज भी रहे हैं जहा हमारी जमीन, जायदाद आदि थे। मेरे पिताजी से पूर्व परिवार चाकसू में ही रहता था। पिताजी ही रोजगार-व्यापार की दृष्टि से जयपुर आ बसे थे। एक ही कस्बे के निवासी होने से इस युग मे आपसी भाईचारे का व्यवहार होना एक विशेषता रही है। यह प्रक्रिया मेरे बाबा साहब तक खूब निभी। किसी समय चाकसू कस्बे मे श्वे. जैन परिवारो की संख्या काफी अच्छी रही होगी। यही कारण था कि वहा का श्वे. जैन मन्दिर और दादाबाड़ी जैसे निर्माण मे सभी का घनिष्ठ योगदान रहा और आज भी वहा के उस समाज की वैभव पूर्ण गाथा के प्रतीक स्वरूप ये दोनों स्थान माने जाते है।

चाकसू से उठ कर आया टाक परिवार जयपुर मे भी अपना गौरवपूर्ण स्थान बना सका। वर्षों पूर्व इस परिवार का निवास स्थान आजकल के धन्वन्तरी औषधालय एव भेषजागार वाला पूरा भवन रहा है। धीरे-धीरे परिवार में बिखराव आया और भाइयों मे अलगाव पैदा हुआ। फलतः सब अलग-अलग रहने लगे। यही समय था जब मै हीरालालजी छगनलालजी के उत्तराधिकारी श्री राजरूपजी टांक ने भी अपने जीवन संग्राम मे प्रवेश किया। जैसा वे अक्सर कहा करते थे—प्रारंभ मे रत्न व्यवसाय में उन्हें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर वे अध्यवसायी थे। उन्होंने कठिन परिश्रम और दृढ़ता से उनका मुकाबला किया और उन पर शनैः-शनैः काबू पा लिया। रत्न व्यवसाय में उनकी गहनतर पैठ होती गई और वे प्रमुख व्यवसायी बन गये।

व्यावसायिक जीवन के इस उज्ज्वल भविष्य के समानान्तर उनके जीवन की अन्य धारायें भी अविरल गति से प्रवाहित होती रही उनमें से कतिपय प्रमुख थी जैसे : समाजसेवा की अदम्य भावना, स्वातंत्र्य प्रेम की प्रेरणादायी ललक, असहाय एव असमर्थ युवाओ को अपने स्वयं के पांवो पर खड़े होने मे समर्थ बनाने का उत्कट साहस, महिला शिक्षा एव जनजागरण का अलख जगाने की निःस्वार्थ लगन आदि। उन्होंने अपने जीवनकाल मे इन सभी को मूर्तरूप देने और इनकी कुशल क्रिया-

विति का मार्ग जमकर प्रशस्त किया—उनकी यह अनूठी साधना चिरस्मरणीय रहेगी, इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते।

सामाजिक क्षेत्र का कार्यकर्ता होने के नाते मेरा सबसे पहला साक्षात्कार और सम्पर्क 'जैन नवयुवक मडल जयपुर' के मच से प्रारम्भ हुआ। देशी रियासतो की प्रजा होने के कारण राष्ट्र मे हो रही जनजागृति वाले वातावरण को बनाने का काम हम लोगो के लिए इतना सरल नही था अत सामाजिक क्रान्ति के माध्यम से, जिसकी भी इस युग में बडी आवश्यकता थी, विभिन्न समाज सुधार के कार्यक्रमो को हाथ मे लिया और उनके साथ रहकर कई प्रकार के अनुभव प्राप्त किये। प्रारम्भ से ही वे खादी पहिनते थे और रहन सहन और आचार-विचार मे सरलता, सादगी हमारे लिए सदैव उदाहरण रहे।

जीवन मे शिक्षा के क्षेत्र म काम करने का मेरा इरादा बना जिसको उन्होने सदैव बल दिया और इस सम्बन्ध मे उनका स्मरणीय साहचर्य प्राप्त होन का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रथम तो उन्होन मुझे उनके बडे पुत्र श्री दुलीचन्दजी टाक के लिए निजी शिक्षक रखना पसन्द किया। मैंने कक्षा 6 से कक्षा 10 तक 5 वर्ष उस कार्य को किया। वह युग था जब शिक्षक और विशेषकर निजी शिक्षक केवल वेतन भोगी अपने को नही माना करता था वरन् वह उस परिवार का अग बन जाता था। बालक की शिक्षा दीक्षा, देखभाल, चरित्र-निर्माण का गुरुतरभार आदेश-उपदेश आदि देन की जिम्मेदारी भी शिक्षक की ही थी। मुझे भलीप्रकार से याद है कि कई रातें मैंने छात्र के अध्ययन, परीक्षा आदि म मदद के लिए उनके घर पर ही रह कर बिताई। तब उनका व परिवार का जो सौहार्द व सौजन्य प्राप्त हुआ करता था वह सदैव स्मरणीय रहेगा। इस 5 वर्ष के कार्यकाल म उनके निकटतम सम्पर्क में आने और वैचारिक सम्पर्क के अनेक अवसर आये। वे कितने सहृदय एव करुणा की मूर्ति थे, अज्ञात रूप से किस तरह जरूरतमन्दो तक सहायता पहुँचाते थे और फिर उसका उल्लेख नही करते थे। यह अनोखी कला उन्हे याद थी। यह मानव सेवा उनसे खूब बन पाई।

उन दिनो उन्हें महिला शिक्षा की प्रेरणा प्राप्त हुई और एक प्रारम्भिक शाला के रूप मे धार्मिक शिक्षण का एक विद्यालय उन्होंने चालू कर दिया। उस विद्यालय के सम्बन्ध मे उनकी विस्तृत योजनायें थी पर शिक्षा के क्षेत्र मे काम करने वाले सहयोगी की वे बडी आवश्यकता अनुभव करते रहे होगे।

अपनी सूझबूझ से उन्होने शिक्षा विभाग से प्रारम्भिक कक्षाओ की मान्यता प्राप्त करली, अत विद्यालय स्वय मे मान्यता प्राप्त सस्था बन गया। इस बीच मे उन्होंने देवयोग से मुझ से भी चर्चा की। मैंने उनकी योजनाओं को सुना और समझा एव अपने पूरे अनुभव के आधार पर अपने स्पष्ट विचार उनके सामने रखे। हो सकता है उन्हे वे उपयोगी लगे हो। उन्होने मुझे वीर बालिका विद्यालय की कार्यसमिति मे एक सदस्य के रूप मे चयनित किया और इस सस्था से फिर 25 वर्ष तक जुडा रक्खा। उन अन्तिम वर्षों में तो मुझे सस्था का अध्यक्ष भी बनाये रखा।

इन 25 वर्षों म शनै शनै विद्यालय मिडिल, तब हाई स्कूल फिर हायर सैकण्डरी स्कूल और अन्त मे डिग्री कॉलेज का स्वरूप लेता गया। इसमे जो भी योगदान मुझ से बन पड़ा हो उसके पीछे उनका उत्साहित करते रहना और काम करा लेने की उनकी अद्भुत कला का ही प्रतिफल मानना चाहिये। इस सब मे जब जब आर्थिक समस्यायें सामने आई उन्होंने अपने प्रभाव और लगन से एव दूरदर्शिता को ध्यान मे रखते हुए सदैव हल

बहुआयामी व्यक्तित्व

सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, धार्मिक, रचनात्मक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उनकी सेवायें अविस्मरणीय तथा प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। उन्होंने प्रारम्भ से ही सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में साहसिक कार्य किया है। वे प्रत्येक व्यक्ति के दु:ख-दर्द में सहयोगी रहते थे। —श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा (जयपुर)

निकालने मे अदम्य साहस और दृढ़ता का परिचय दिया। मेरी आदत के अनुसार जो भी योजना हाथ मे ली गई उसको छोटे पैमाने पर करके जाची गई और एक वर्ष के गहन अध्ययन व अनुभव के बाद उसको विस्तृत रूप मे प्रारम्भ किया गया, फलतः असफलता आने की सम्भावना भी नहीं रही। इस प्रवृत्ति को श्री टांक साहब ने मान दिया और इसके कारण सस्था का विस्तार स्थायी एव दृढ़ता के साथ क्रमशः होता गया। मैं समझता हूँ इसका सुखद अनुभव उनको जीवन पर्यन्त रहा है। मेरे लिए यह सौभाग्य का विषय था।

हा ! यकायक संस्था की कार्यसमिति से मेरा अलग होने के निर्णय से उन्हें बड़ा अफसोस रहा होगा पर जो परिस्थितिया पैदा की गई, गलत-फहमिया घडी गई, उनको देखते हुए मुझसा अदना व्यक्ति आत्मसम्मान प्रियता के मोह को संवरण नही कर सका और निर्णय से वापस लौटने की धृष्टता नही बन पड़ी। इसकी मुझे भी आत्म-ग्लानि रहेगी।

स्वातन्त्र्य प्रेम की भावना के अन्तर्गत जयपुर राज्य प्रजा मण्डल के कार्यक्रमों में उनका सहयोगी व उदार सहायक के रूप मे सदा स्मरण किया जाता रहेगा। गांधीवादी विचारधारा के सदैव पोषक के रूप में कांग्रेस के भी वे सदस्य रहे और उसको सहयोग-सहायता सदैव देते रहे। उन्होंने अनेक कार्यकर्ताओं की सहायता, पोषण आदि के लिए प्रशंस कार्य किये।

इसी प्रकार उपर्युक्त विचारधारा असमर्थ को समर्थ बनाने की दिशा मे आज हजारों लोग उनके कारण रत्न व्यवसाय मे प्रवेश कर सके और आज वे बहुसंख्यक लोग अच्छा प्रतिष्ठित जीवनयापन कर रहे है।

उनके द्वारा किये गये उपयोगी कार्यों की कहां तक गिनती की जाय, वे वास्तव में मानव-सेवा-भावी व्यक्ति थे, यही कारण था कि अपनी व्यवहार कुशलता और सेवा भावना के कारण वे अत्यधिक लोक प्रिय हुए।

उनके जीवन के अन्तिम वर्षो में एक बार फिर उनके साथ रह कर समाज के वृहद् प्रयास को मूर्त रूप देने मे उनके संरक्षण का लाभ उठाया। जैन श्वे. समाज जयपुर की एक डायरेक्टरी बनाने का निर्णय श्री राजरूपजी साहब के घर पर 1984 मे लिया गया—उनको प्रकाशन समिति का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उन दिनो भी उनकी अस्वस्था चल रही थी अतः सक्रियता तो उनके लिए संभव नही थी पर उनका मार्गदर्शन और आशीर्वाद सदा मिलता रहा। यह वृहद् एवं कष्ट-साध्य कार्य उनके जीवनकाल मे ही सम्पन्न हो सका, इसकी उन्हे बड़ी प्रसन्नता थी।

हमारा बड़ा दुर्भाग्य रहा कि अन्तिम समय में कुछ महीनों से विशेषरूप से वे असह्य वेदना से पीड़ित रहे। वे न बोलते न देखते अधिकतर बेसुध स्थिति में ही रहते रहे, अतः जो अन्तिम सद्-प्रेरणा का लाभ उनसे मिल सकता था, उससे हम सब वंचित रह गये। वे समाज के प्रकाश-स्तम्भ रहेंगे और वर्षों अपने प्रकाश से सब को आलोकित करते रहेंगे। प्रभु ! उन्हे असीम शान्ति प्रदान करे। □

—भूतपूर्व अध्यक्ष, श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान



अविस्मरणीय महा मानव !



□ श्री शीतलचन्द कोठारी

सज्जन सच्चरित्र कमठ एवम् महान् व्यक्तियो का साथ चाहे थोडा ही रहा हो पर वह अपनी एक अमिट छाप हृदय पर छोड जाता है। समय के शनाश मे भी वह व्यक्ति अविस्मरणीय हो जाता है। श्रद्धेय स्व श्री राजरूपजी टाक ऐसे ही मेरे लिये अविस्मरणीय महा मानव के रूप मे हैं।

मेरा उनसे मिलना प्रात भ्रमण के समय हुआ करता था। अपनी शारीरिक अशक्त अवस्था से पूर्व वे नित्य ही प्रात रामनिवास बाग मे भ्रमणार्थ आया करते थे। यदाकदा हम पुलिस मेमोरियल पर भी मिल लिया करते थे। मिलते ही मुस्कराते हुए वे कुशल क्षेम पूछते—बहुत धीरे और मधुर बोलते थे। वार्तालाप मे आत्मीयभाव टपकता था जो प्रात शुद्ध समीर के अनुरूप ही जीवनदायी होता था। उनसे मिलकर एक स्फूर्ति सी प्रतीत होती थी। विनोदी प्रवृत्ति के तो वे थे ही अत उनके विनोदी वार्तालाप से भ्रमण का आनद चौगुना बढ जाया करता था। सुस्वास्थ्य के लिये हँसना भी उतना ही आवश्यक है जितनी प्राण-वायु (ऑक्सीजन)। श्री राजरूपजी टाक की सद् सगति म हमे दोनो ही भरपूर मात्रा म प्राप्त होते थे। अब उनके न होने पर प्रात कालीन वातावरण मे एक रिक्तता, एक अभाव, एक कमी महसूस होती है। एक खालीपन सा प्रतीत होता है—वे याद आते हैं, वे अविस्मरणीय हैं।

हम भ्रमणार्थी वृद प्रतिवर्ष एक जनवरी को रामनिवास बाग मे एक उत्सव आपस मे मिल बैठकर मनाया करते हैं। इस सम्मेलन मे उनका उत्साह, उनका योगदान जो निरतर बना रहा, कैसे भुलाया जा सकता है? वे इस उत्सव के प्राण थे—जीवनी-शक्ति थे। उनके कारण इस एक जनवरी के हमारे कार्यक्रम में उमग-उत्साह हँसी खुशी के चार चाँद लग जाया करते थे। उत्सव तो अब भी होंगे—घूमना भी जारी ही रहेगा किंतु श्रद्धेय राजरूप साहब टाक की कमी हृदय कचोटती ही रहेगी।

वे समाजसेवी थे, रत्नपारखी थे, साहित्य-सेवी थे यह तो उनका कृतित्व ही बोलता है। वीर बालिका महाविद्यालय उनकी कीर्तिपताका है पर इन सबसे ऊपर वे एक स्नेही और हृदय मे करुणा भरे व्यक्ति थे। मेरा तो उनसे अधिक सम्पर्क नहीं रहा, सह भ्रमण के अतिरिक्त किन्तु मेरे एक बार बीमार पडने पर वे कितनी बार पूछने आये, कितनी सहृदयता दर्शायी, क्या यह उनके व्यक्तित्व की महानता को महिमा मडित नहीं करता? करुणा की यह भावना उनके मन मे सबके प्रति थी। कैसी भी ऊँच-नीच परि-स्थिति मे वे तुरत सहयोगी के रूप मे आ खडे होते थे। स्नेह उनका स्वाभाविक गुण था।

उन्होने व्यापारी क्षेत्र म सामाजिक क्षेत्र मे, राजनीति क क्षेत्र मे, शिक्षा एवम् साहित्य के क्षेत्र म अपना सम्पूर्ण योगदान दिया है, जो उनकी महिमा और गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखेगा।

नि सदेह वे एक अच्छे व्यक्ति थे, जिनका व्यक्तित्व अच्छा बनने के लिये प्रयत्नशील व्यक्ति के लिये अनुकरणीय रहेगा।

मैं उनका शत शत वन्दन करता हूँ।

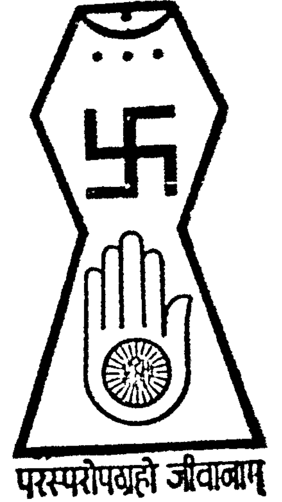
—कल्पना, 251, जौहरी बाजार, जयपुर



प्रेरणा और प्रकाश पुञ्ज



डॉ० श्रीमती शान्ता भानावत
प्राचार्या, श्री वीर बालिका महाविद्यालय



जयपुर के ही नहीं वरन् भारत के प्रमुख जौहरी, मूक समाज-सेवी एवं अनन्य शिक्षा-प्रेमी, श्रद्धेय श्री राजरूपजी टांक आज पार्थिव रूप से हमारे बीच नही है। पर उनके जीवन और चरित्र मे जो विशेषताएँ थी उनके कारण वे आज भी हमारे मन-मस्तिष्क में बसे हुए है और सदा रहेंगे। 27 अक्टूबर 87 का दिन ज्ञान पंचमी का दिन था। हम लोग श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान का स्थापना दिवस मना कर पूज्य टांक सा. के दर्शन करने उनके निवास स्थान पर गये थे। उस समय उनकी श्वास गति कुछ तेज चल रही थी पर यह स्वप्न मे भी खयाल नही था कि यह ज्ञान ज्योति 15-20 मिनट पश्चात् ही परम ज्योति मे विलीन हो जायेगी। टाक साहब को अक्सर ये शब्द गुनगुनाते हुए मैंने कई बार सुना था 'भव अनन्त भमता थकां कीधो छे शरीर सम्बन्ध त्रिविध त्रिविध करी वोसरु.......।' अपनी तीव्र श्वांस गति के साथ वे अपने दैहिक, दैविक, भौतिक तापों को मिटा कर जीवन-मुक्त पुरुष बन गये।

आज से 63 वर्ष पूर्व स्त्री शिक्षा के लिए शिक्षण संस्था स्थापित करने का विचार उनके मन में आया जो एक युगान्तरकारी कदम था। उन्होंने अपने तन, मन, धन से इस बीज को सींच कर इसे महाविद्यालय का रूप दिया। इसके पीछे उनकी कोई व्यावसायिक दृष्टि नहीं थी। मंत्री के रूप में कभी उनके मन मे अधिकार का भाव नहीं आया। वे शिक्षक एवं छात्रा वर्ग को अपना स्नेह, प्रेम और आत्म-भाव ही बांटते रहे।

वे पुस्तकीय ज्ञान से अधिक चरित्र-निर्माण को महत्त्व देते थे। कॉलेज में अध्ययनरत छात्राओं, प्राध्यापिकाओं को सदैव सादी वेशभूषा में आने की प्रेरणा देते थे। कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनो एवं फैशनेबल तड़कीले-भड़कीले वस्त्रों से उन्हे सख्त नफरत थी।

शहर के निम्न मध्यम वर्ग के प्रति उनके मन मे बड़ी सहानुभूति थी। महाविद्यालय भवन मे स्थानाभाव होने के कारण एक बार उनके सामने शहर से बाहर कॉलेज भवन के लिए जमीन लेने की बात चली तो उन्होने तुरन्त कहा—जो सम्पन्न घराने की बालिकाएँ हैं वे कही भी जाकर पढ सकती हैं पर शहर की निम्न मध्यम वर्ग की बालिकाओं के लिए शहर में कॉलेज चलाना आवश्यक है। अतः यह कॉलेज शहर के बीच ही चलना चाहिये।

श्रद्धेय टांक साहब के मन में आर्थिक दृष्टि से असमर्थ छात्राओं के प्रति काफी सहानुभूति थी। बातचीत में किसी छात्रा के लिये यदि हम यह कह

समर्पित व्यक्तित्व

आपने लगातार 63 वर्षों तक अथक परिश्रम, निष्ठा, सेवा एव निस्वार्थ भावना से सस्था के विकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आपके पितृतुल्य वात्सल्य एव आत्मीयता को प्राप्त कर सस्था ने अपनी चौमुखी प्रगति की। आप केवल शिक्षा-प्रेमी ही नही वरन् प्रमुख जौहरी व रत्न व्यवसायी, समाजसेवी, राष्ट्रीयकर्ता, गाधीवादी चिंतक व समस्त पीडित मानवता के प्रति मुक्त-भाव से समर्पित थे।

उनका समस्त जीवन देश-प्रेम, परोपकार, स्त्री-शिक्षा, गरीबो व बेरोजगारो के लिए समर्पित था।

—श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर।

देते कि वह काफी गरीब है, तो वे उस छात्रा के लिए फीस से लेकर पुस्तको तक की व्यवस्था करने के लिये तैयार रहते थे। गरीब शब्द का प्रयोग उन्हे पसन्द नही था। वे कहते किसी को गरीब न कहो। आर्थिक दृष्टि से असमर्थ व्यक्ति हो सकता है, गरीब नही।

चाचा साहब परम दयालु, सवेदनशील और करुण हृदय थे। सर्दी के दिनो मे आवश्यकतानुसार छात्राओ के लिए स्वेटर भिजवाने की पूछते रहते थे। वे वर्ग, जाति, सम्प्रदाय भाव से ऊपर उठे हुए थे। सभी धर्मों के प्रति उनके मन मे आदर भाव था। शुद्ध मन और सेवा भाव से वे दीन दुखियो की सहायता करते थे। कभी अपना नाम नही चाहते थे।

शिक्षा के साथ बढती हुई फैशन परस्ती और भौतिक चकाचौंध उन्हे कतई पसन्द नही थी। वे सदैव जीवन मे सादगी और स्वावलम्बन पर बल देते थे। महिलाएँ पढ लिख कर अपने पैरो पर खडी हो और समाज सेवा के कार्यों मे आगे बढें, इसकी वे सदैव प्रेरणा देते थे। इस भावना से सचालित जैन महिला उद्योग केन्द्र की प्रगति के बारे मे वे समय समय पर मुझसे पूछा करते थे। वहाँ की निर्मित चीजो को स्वय प्रयोग मे लेते थे।

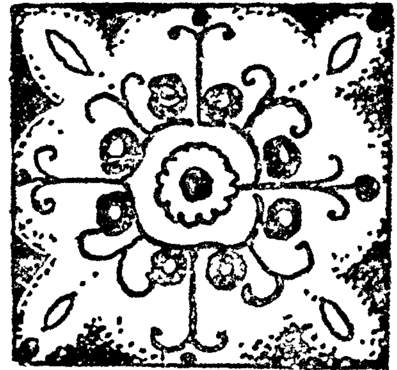
टाक साहब विनोदप्रिय स्वभाव के थे। जब कभी उनकी गद्दी पर हम उनसे मिलने जाते तो हमने उनको अपने आसपास बैठे लोगो से हँसी मजाक करते भी देखा। वे कहा करते—ससुराल का मजा तो सास के जीवित रहने तक ही है। इस सदर्भ मे मुझे उनके द्वारा कही गई एक सूक्ति याद आ रही है—

सासु जितरे सासरो,
साला जितरे सास।
साला के छोरो हुया,
हुई साख की खाक।

टाक साहब के सान्निध्य मे जीवनानुभव की कई बातें सीखने को मिलती। वे चलते फिरते अनुभव-कोष थे। उनके निधन से एक निष्ठावान शिक्षा-प्रेमी, एक कर्मठ समाज सेवी, एक प्रबुद्ध रत्न पारखी, एक उदार मानव हृदय की अपूरणीय क्षति हुई है। मैं अपनी तरफ से एव समस्त महाविद्यालय परिवार की ओर से दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करती हूँ और यही आकाक्षा रखती हूँ कि उनकी जीवन्त प्रेरणाएँ प्रकाश के रूप मे हमारा पथ आलोकित करती रहे।

□ श्री राजरूप टांक की महिला शिक्षण क्षेत्र में अनुपम देन—

श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर



आज समाज मे कल्याणकारी कार्यों के लिये नित्य ही नई-नई संस्थाओं का प्रादुर्भाव होता रहता है और यह सब सामान्य सी बात हो गई है। पर यह बात आज ही नही अपितु 6 दशाब्दि से भी अधिक पूर्व की कहानी है। वह ऐसा युग था जब बालको के शिक्षण की ओर भी नागरिको का विशेष ध्यान नही था, फिर बालिकाओ के शिक्षण की तो बात ही क्या? पर यह घटना सन् 1925 की है जब एक जैन आर्या को ऐसा भान हुआ कि भविष्य मे बालिकाओ के शिक्षण बगैर समाज बहुत पीछे रह जावेगा। और उन्होंने मानस बनाया महिला शिक्षण का और इस ओर प्रयाण करने का। मूल मे काम शुरू करना था पराश्रित बहिनो के लिये अथवा उन बहिनो के लिये जो अपने भावी जीवन को आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाना चाहती थी और इसी लिये इस संस्था का नाम 'श्राविकाश्रम' रखा गया। ये महामना थी जैन आर्याश्री श्री स्वर्णश्रीजी म. सा.। इस प्रयास मे विशेष सफलता नही मिलने पर इस संस्था को बालिकाओ के शिक्षण कार्य की ओर मोड दिया गया। प्रश्न था समाज में महिला शिक्षा की ओर रुचि जागृत करने वाले आत्मभोगी कार्यकर्ता की। सौभाग्य से 17–18 वर्ष का एक युवक इस कार्य के लिये दृष्टिगोचर हुआ जिसने इस दायित्व को वहन करने का निश्चय भी किया और अपने को समर्पित भी कर दिया। उस वक्त समाज के आगेवान थे श्री राजमलजी गोलेछा, श्री राजमलजी सुराना, श्री सोहनलालजी गोलेछा, श्री घीसीलालजी गोलेछा, श्री रूपचन्दजी लूनिया। इन सबका पूर्ण हार्दिक सहयोग मिला इस युवक को जिनका नाम था श्री राजरूप टांक।

मात्र 8 छात्राओ और 2 अध्यापिकाओ से यह पाठशाला प्रारम्भ की गई घूपियो की धर्मशाला मे। आदरणीय श्री चाचा साहब बताया करते थे कि यह कार्य उस काल मे कितना कठिन था। संरक्षको को समझाओ—फिर छोटी-छोटी बालिकाओ को पढाई के लिये प्रलोभन दो। वे कहते थे कि मैं घर-घर जाता और बालिकाओं को समझाता, संरक्षको को समझाता। बालिकाओ को घर से लाते और वापस घर पहुंचाते। धीरे-धीरे युग बदलने लगा, महिला शिक्षा की ओर रुचि जागृत होने लगी। कभी-कभी तो अध्यापिकाओ को वेतन भी देना कठिन हो जाता था—किन्तु श्री चाचा साहब के दृढ संकल्प ने कभी संस्था के स्तर को गिरने नही दिया। धीरे-धीरे बालिकाओं

☐ प्रश्न था समाज मे महिला शिक्षण की ओर रुचि जागृत करने वाले आत्मभोगी कार्यकर्ता की। सौभाग्य से 17–18 वर्ष का एक युवक इस काम के लिये दृष्टिगोचर हुआ, जिसने इस दायित्व को वहन करने का निश्चय भी किया और अपने को समर्पित भी कर दिया। उस वक्त समाज के आगेवान थे श्री राजमलजी गोलेछा, श्री घीसीलालजी गोलेछा, श्री रूपचन्दजी लुनिया। इन सबका पूर्ण हार्दिक सहयोग मिला इस युवक को जिसका नाम था श्री राजरूप टाक।

की सख्या बढने लगी। तब यह स्थान छोटा भी पडने लगा तथा एकान्त कौने म रहा हुआ भी दृष्टिगोचर होने लगा। समाज का पूर्ण सहयोग था ही। घी वालो के रास्ते म बाजार के समीप एक उपाश्रय था जो बन्द ही पड़ा था। श्री सोहनमलजी गोलेछा व श्री हमीरमलजी गोलेछा ने जिनकी व्यवस्था म यह उपाश्रय था। बडी उदारता से इस सस्था को प्रदान कर दिया और सस्था इस भवन मे आ गई। अब तक बालिकाओ की सख्या 100–150 तक पहुच गई थी, अध्यापिकाओ की सख्या भी 10 तक पहुची थी। अब तक सस्था का सारा सचालन टांक साहब ही कर रहे थे, पर अब उनका विचार हुआ कि सस्था की जडें जम चुकी हैं—भविष्य मे इस सस्था का भविष्य उज्ज्वल है अत एक तो इसका सुव्यवस्थित सचालक मण्डल बन, दूसरा राज्य सरकार से मदद (ग्राट इन ऐड) प्राप्त की जावे। सचालक मण्डल का गठन हुआ—श्री सोहनमलजी गोलेछा, श्री राजमलजी सुराना, श्री सोहनलालजी दुगड सदृश्य समाज के आगेवानो के साथ मुझ जैसे युवक को भी चाचा साहब ने जोडा, वह समय आज से 42 वर्ष पूर्व का था। राज्य सरकार से सहायता मिलने लगी। मुझे याद है उस वक्त भी यह सस्था जहा योग्य शिक्षण के लिये आदर वाली थी वहाँ इस सस्था के वार्षिकोत्सव भी काफी ख्याति पा चुके थे। राजकीय व सावजनिक स्तर पर होने वाले सास्कृतिक कायक्रमो म इस सस्था की अच्छी धाक जम चुकी थी।

ऐसे ही एक वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता के लिये सेठ श्री सोहनलालजी दुगड को आमन्त्रित किया गया। उनकी सस्था के साथ अति आत्मीयता हो चुकी थी। वे नहीं चाहते थे कि यह सस्था इस छोटे से भवन मे चलती रहे और बालिकाओ का विकास रुका रहे। सस्था का भाग्य प्रबल था-भविष्य उज्ज्वल था। यकायक एक अच्छे स्थान के लिये बातचीत आई। सेठ दुगडजी को जब यह समाचार दिया गया तो वे फतेहपुर से तुरन्त जयपुर आये। स्थान देखा, बडे प्रसन्न हुये और वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता करते हुये उस स्थान की पूरी राशि अपनी ओर मे देने की घोषणा भी की। उस उत्सव मे तत्कालीन जयपुर रियासत के कई मत्री, अधिकारी व समाज के प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। उनके द्वारा दिया गया स्थान धीरे-धीरे विकास पाता गया और आज वीर बालिका विद्यालय भवन के रूप मे आपके सामने है। क्रय करने के अगले वर्ष ही सस्था इस भवन मे आ गई। सस्था के इस भवन म आते ही मानो उसके विकास का मार्ग खुल गया और सख्या निरन्तर बढती गई—भवन का विकास होता गया और इसके बावजूद वह हमेशा छोटा पडता गया।

यह वह काल था जब देश आजादी प्राप्त कर चुका था। उस वक्त सचालक मण्डल की अध्यक्षता कर रहे थे प्रमुख सर्वोदयी नेता श्री सिद्धराजजी ढड्ढा। अब तक इस सस्था का नाम था जैन श्वेताम्बर वर्नाक्युलर गर्ल्स मिडिल स्कूल। सस्था के विकास के साथ इस सस्था को और भी अधिक

लोकप्रिय बनाने हेतु अध्यक्ष महोदय की प्रेरणा और सुझाव से संस्था का नाम श्री वीर बालिका विद्यालय कर दिया गया। नाम क्या बदला संस्था के ग्रह ही बदल गये। मिडिल से सैकण्डरी और फिर हायर सैकण्डरी तक यह सस्था गई। बोर्ड की परीक्षाओं के परिणाम शत-प्रतिशत तक पहुंचे। जयपुर नगर में इस सस्था की साख बढ़ी, सरकार और शिक्षा विभाग में भी खूब मान मिला। इस काल मे इस संस्था को प्रधानाध्यापिका के रूप में एक ऐसी महिला मिल गई जो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के पास 10 वर्ष तक रह चुकी थी। कर्मठ, सेवाभावी व बालिकाओं के लिये मातृरूपा श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा ने जिस लगन और निष्ठा से इस संस्था में कार्य किया उसके लिये समाज उनकी सेवाओं के प्रति अति कृतज्ञ है।

श्री ढढ्ढा साहब के बाद श्री पूर्णचन्दजी जैन (टूकलिया) और फिर श्री जतनमलजी लूनावत इस संस्था के अध्यक्ष रहे। उनके कार्य काल मे सस्था विकास के पथ पर अग्रसर होती रही। छात्राओ की संख्या बढी, शिक्षिका परिवार बढा, परीक्षाफल काफी उन्नत रहा। प्रतियोगिताओ मे साथ ही सांस्कृतिक समारोहो मे संस्था ने कीर्तिमान कायम किये। इसी बीच सस्था की प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवतीदेवी का असामायिक अवसान हो गया। बडा गहरा आघात सस्था को झेलना पडा। उसके बाद श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव जो श्रीमती सिन्हा के पास कार्य कर रही थी को संस्था मे प्रधानाध्यापिका का पद सौंपा गया। बड़ी लगन और निष्ठा से उन्होंने इस दायित्व को सम्हाला और आज तक बड़े साहस, सूझबूझ व योग्यता से वे संस्था का संचालन कर रही है।

संस्था को एक बहुत बड़ा लाभ मिला जब संचालक मण्डल में अध्यक्ष पद पर जाने माने

☐ यह वह काल था जब देश आजादी प्राप्त कर चुका था। उस वक्त संचालक मण्डल की अध्यक्षता कर रहे थे प्रमुख सर्वोदयी नेता श्री सिद्धराजजी ढढ्ढा। अब तक इस संस्था का नाम था जैन श्वेताम्बर वर्नाक्यूलर गर्ल्स मिडिल स्कूल। संस्था के विकास के साथ इस संस्था को और भी अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु अध्यक्ष महोदय की प्रेरणा और सुझाव से संस्था का नाम श्री वीर बालिका विद्यालय कर दिया गया।

योग्य शिक्षक, राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री सौभाग्यमलजी श्रीश्रीमाल आये। संस्था को आगे लाने में उनका अनुभव बहुत प्रभावी बना।

संस्था अपने जीवन के पचास वर्ष सफलता के साथ पूर्ण करने जा रही थी, महिला शिक्षा के प्रति समाज मे काफी जागृति आ चुकी थी, फिर भी उच्च शिक्षा के लिये अभी समाज से यह मानस नही बन पाया था कि सरकारी कालेजों मे बालिकाओ को भेजा जावे। सब ओर से दबाव आने लगा कि इस सस्था मे महाविद्यालय की कक्षाओ के शिक्षण की व्यवस्था की जाये। स्थान की कमी, आर्थिक विषमता, निष्ठावान कार्यकर्ताओ की कमी बड़ी समस्या थी। कई बार तो वेतन वितरण के लिये भी अर्थ की व्यवस्था कठिन हो जाती थी। इन सब परिस्थितियो मे भी चाचा साहब ने जो साहस प्रदर्शित किया, उसे इस संस्था का यह भाग्य ही कहें। चाचा साहब हमेशा यही कहते—संस्था का स्तर नहीं गिरना चाहिये समाज की कोई बालिका आर्थिक कारणों से पढ़ाई से वंचित नहीं रहनी चाहिये। इन सब परिस्थितियों मे संस्था के स्टाफ ने जो सहयोग दिया, उसे हम कभी भुला नहीं सकते।

☐ कई बार तो वेतन वितरण के लिये भी अर्थ की व्यवस्था कठिन हो जाती थी। उन सब परिस्थितियों में भी चाचा साहब ने जो साहस प्रदर्शित किया, उसे इस संस्था का यह भाग्य ही कहें। चाचा साहब हमेशा यही कहते—संस्था का स्तर नहीं गिरना चाहिये, समाज की कोई बालिका आर्थिक कारणों से पढाई से वंचित नहीं रहनी चाहिये। इन सब परिस्थितियों में संस्था के स्टाफ ने जो सहयोग दिया, उसे हम कभी भुला नहीं सकते।

सौभाग्य से एक अवसर ऐसा आया, जिससे इस संस्था की आर्थिक स्थिति सुधारने में चमत्कारपूर्ण घटना घटी। जयपुर के नागरिकों की ओर से श्री राजरूप टांक का सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय हुआ। इस अवसर का लाभ उठाकर चाचा साहब के शिष्य जौहरियों ने उनके 63वें वर्ष पर उनके चरणों में 63 हजार रु० की थैली भेंट करने का तय किया। रवीन्द्र रंग मंच पर आयोजित भव्य व शालीन समारोह में चाचा साहब को 63 हजार रु० की थैली भेंट की गई। उसी वक्त संस्था की प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा ने भाइयों की यह भेंट बहिनों के लिये चाचा साहब से मांग ली। समारोह में ही बड़ी उदारता से चाचा साहब ने वह थैली वीर बालिका विद्यालय को समर्पित कर दी। मानो, संस्था को छप्पर फाड़कर धन मिल गया। संस्था की आर्थिक स्थिति काफी दृढ हो गई। इससे शिक्षण को महाविद्यालय स्तर तक ले जाने का साहस संचालक मण्डल में आ गया। तुरंत ही महाविद्यालय की कक्षायें चालू करने का निश्चय कर लिया गया। स्थान की कमी सबको खल रही थी पर दूसरा कोई चारा न देखकर इसी भवन में दो शिफ्ट चलाकर आगे की कक्षायें चालू कर दी गईं। प्राचार्य पद के लिये समाज की ही एक प्रबुद्ध व सेवाभावी महिला डा० श्रीमती शान्ता भानावत की सेवायें प्राप्त करली गईं। कला संकाय की इन कक्षाओं के परीक्षा परिणाम इतने आशाप्रद रहे कि परीक्षण के लिये चालू की गई इन कक्षाओं को स्थायी बनाने का साहस आ गया, पर समस्या थी स्थान की। विभाग ने अन्यत्र भवन होने पर ही मान्यता देने की शर्त रखी। भवन की समस्या आसान नहीं थी पर संस्था व छात्राओं का भाग्य प्रबल था। विद्यालय भवन के पीछे ही एक बहुत बड़ा भवन जो सिक्तरजी की हवेली कहलाती थी के लिये प्रस्ताव आया और चाचा साहब जो इस तरह के कार्यों में कभी देर नहीं करते थे, तत्काल सौदा तय कर लिया। पचासों किरायेदार इस भवन में थे, खाली कराने की विकट समस्या थी। पर चाचा साहब का पुण्य और निष्काम सेवायें यहां काम आईं और भवन का एक बड़ा हिस्सा खाली करा कर महाविद्यालय कक्षायें यहां लाने का निर्णय संचालक मण्डल ने कर लिया।

संस्था के पचास वर्ष सं० 2032 में पूर्ण हो रहे थे। संचालक मण्डल ने विद्यालय परिवार के साथ मिलकर स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने का निर्णय लिया। इस महोत्सव के निमित्त पुरानी स्मृतियां ताजा हो गयीं—इस विद्यालय की भूतपूर्व छात्रायें जो अब माता, नानी और दादियां तक बन चुकी थीं जुट गयीं, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की सफलता के लिये—बहुत शालीन समारोह इस अवसर पर आयोजित किये गये। एक स्मारिका इस अवसर पर प्रकाशित की गई जो विद्यालय इतिहास का एक सन्दर्भ ग्रन्थ ही बन गई। इस समारोह के कारण संस्था के पुराने कार्यकर्ता पुरानी छात्रायें, पुरानी अध्यापिकायें एक साथ मिल बैठ, उन सबने संस्था को जो आत्मीयता प्रदान की वह अनूठी तो थी ही, यादगार भी थी।

इस समारोह के बाद यह संस्था बहुत ही प्रसिद्धि मे आई। धीरे-धीरे महाविद्यालय मे भी सख्या बढने लगी, आज तो यह 1300 तक पहुँच गई है। महाविद्यालय मे कला और वाणिज्य दोनों सकाय चालू है। महाविद्यालय के पास अपना एक बृहत् पुस्तकालय है, जिसका नाम श्री विचक्षण श्री जी स्मृति पुस्तकालय है। गृह विज्ञान के लिये भी सुन्दर व्यवस्था है। भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी इस महाविद्यालय को मान्यता प्रदान कर दी है और आर्थिक अनुदान भी प्रदान किया है। महाविद्यालय मे शिक्षण के अलावा भी अनेक प्रवृत्तियां चालू है। समय-समय पर बाहर के महान् विद्वानो व निष्णात व्यक्तियो के भाषणों से छात्रायें लाभान्वित होती रहती है। महाविद्यालय की कक्षाओ का परीक्षाफल भी शानदार रहता है। जयपुर शहर की चारदिवारी मे यह एकमात्र बालिका महाविद्यालय है। इससे नगर की मध्यमवर्गीय जनता को बहुत लाभ हुआ है।

नैतिक उत्थान व आध्यात्मिक क्षेत्र मे भी यह सस्था सदैव कार्यरत रही है। आज से करीब 14 वर्ष पूर्व, जब जयपुर नगर में जैन साध्वी श्री निर्मलाश्रीजी, एम. ए. का चातुर्मास था, इस संस्था मे छात्राओ के लिये एक संस्कार अध्ययन सत्र का 21 दिवसीय आयोजन किया गया था। जिसमें यहां की छात्राओ के साथ गुजरात से काफी सख्या मे आई बहिनो ने भाग लिया था। संस्था की सस्थापिका प्रेरक साध्वी श्री स्वर्णश्रीजी म० सा० के शिष्या परिवार ने जिनमे विशेषकर पूज्य श्री ज्ञानश्रीजी म० सा०, श्री विनयश्रीजी म० सा०, श्री उपयोगश्रीजी म० सा०, श्री विचक्षणश्रीजी म० सा० का वरदहस्त सदा इस संस्था पर रहा—समय-समय पर सभी ने मार्ग-दर्शन दिये, जिनसे यह संस्था सदैव सही सेवा मार्ग पर चलती रही है।

> ☐ धीरे-धीरे महाविद्यालय में भी संख्या बढ़ने लगी और आज तो 1300 तक पहुंच गई है। महाविद्याल में कला और वाणिज्य दोनों संकाय चालू है। महाविद्यालय के पास अपना एक बृहत् पुस्तकालय है जिसका नाम श्री विचक्षण श्री जी स्मृति पुस्तकालय है। गृह-विज्ञान के लिये भी सुन्दर व्यवस्था है। विश्व-विद्याल अनुदान आयोग ने भी इस महा-विद्यालय को मान्यता प्रदान कर दी है।

इस संस्था की गरिमा को यहां शिक्षण प्राप्त करने वाली छात्राओं ने अपने नये परिवारो में जाकर बढ़ाया ही पर एक ऐसी उपलब्धि इस सस्था को प्राप्त हुई जो संस्था की गरिमा व गौरव को चार चाँद लगाती है। इस संस्था मे शिक्षण प्राप्त अनेक छात्रायें आज जैन शासन की श्रमणी शाखा मे विद्यमान है। संयम-मार्ग पर आरूढ ये सब आत्मायें जैन शासन के लिये जो कार्य कर रही है, उनके लिये यह संस्था गौरव क्यो न पावे।

विदुषी साध्वी प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी, आदरणीया श्री मणिप्रभाश्रीजी, श्री शशिप्रभा-श्रीजी, श्री सुरेखाश्रीजी, श्री प्रियदर्शनाश्रीजी, श्री विमलयशाश्रीजी, श्री हेमप्रभाश्रीजी आदि साथ ही स्थानकवासी समाज मे श्री तेजकँवरजी व तेरहपंथी समाज मे श्री सूरजकँवरजी, श्री पान-कँवरजी, श्री राजकँवरजी आदि का शिक्षण इसी संस्था मे हुआ है। सस्था इन सब के प्रति नतमस्तक है।

व्यावहारिक शिक्षण के साथ छात्राओ को संगीत व नृत्य का शिक्षण भी यहां दिया जाता है। सस्था की छात्राओं का अपना बैण्ड भी है। राष्ट्रीय पर्वो पर एवं महान् पुरुषो के स्मृति दिवसो पर यहां सदैव आयोजन होते रहते है।



सेवा के लिये समर्पित

☐ स्वर्गीय श्रीमान् राजरूपजी सा० टाक जाति, धम व समाज से ऊपर उठकर मानव सेवा के प्रति पूणतया समर्पित थे। उनमे ग्रास्था कूट-कूट कर भरी थी। ग्रापका परिवार इसकी जीती जागती तस्वीर है।

—तेरापथ युवक परिषद्, जयपुर

पयु पण व महावीर जयन्ती जसे धार्मिक पर्वों पर एव सामूहिक भोजो के ग्रायोजना म यहाँ की छात्रायें भाग लती रही हैं।

एन० सी० सी० व ग्रग्निशमन, फस्टऐड, एन० एस० एस० ग्रादि की यूनिटें भी सस्था म कायरत हैं। प्रतियोगिताग्रो म यहाँ की बालिकायें सदा प्रमुख स्थान पाती रही हैं। बाहर के भ्रमण से ज्ञान बढे, इसलिय भ्रमण की भी व्यवस्था रहती है।

यहाँ की छात्राग्रो की पोशाक बडी लुभावनी व सुहावनी है। छोटी बालिकाग्रा के लिये सफेद ब्लाउज व केसरिया स्कर्ट तथा बडी बालिकाग्रो के लिये केसरिया चुन्नी व सफेद सिलवार कुरती। सामूहिक प्रायना यहाँ की विशेपता है।

सस्था म शिशु से स्नातक के शिक्षण की व्यवस्था है—(कला ग्रौर वाणिज्य विपय की) कुल कक्षायें 15 हैं तथा सैक्शन 55 ह। बालिकाग्रा की सख्या शिशु कक्षा में 195, प्राइमरी मे 748, सकण्डरी, हायर सकण्डरी म 1098, महाविद्यालय म 1200 है। कुल सख्या छात्राग्रा की 3241 है। विद्यालयम शिक्षिकाग्रो की सख्या 54 तथा महाविद्यालय मे प्रधानाध्यापिकाग्रो की सख्या 28 तथा कार्यालय व कमचारियो की सख्या 32 है।

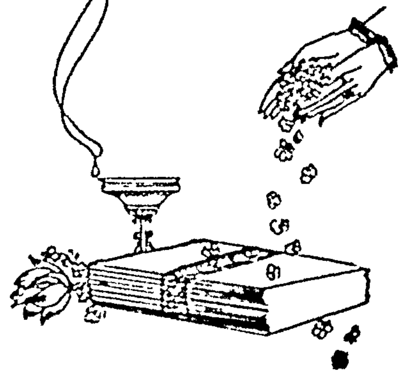
सस्था का इस वक्त वार्षिक व्यय 19,44,000 र० है। वतमान म सस्था के ग्रध्यक्ष प्रमुख व्यवसायी श्री विमलचन्दजी सुराना हैं। सस्था का स्थापना दिवस कार्तिक सु० 5 (ज्ञान पचमी) है। सस्था ग्रपने जीवन के 63 वप पूण कर रही है। यह भी विधि का विधान ही कहें कि इस सस्था के प्राण मसीहा ने पूरे 63 वप तक मत्रित्व का भार वहन कर सस्था के स्थापना दिवस पर ही ग्रपने देह का विसजन किया। ग्राज यह सस्था उनके चले जाने से ग्रन्धकार महसूस कर रही है। चाहे उनका नश्वर देह हमारे सामने नही है पर उनकी ग्रात्मा जहाँ भी होगी, वहाँ से हम सबको प्रेरणा प्रदान करगी ग्रौर वही हमारा साहस होगा, सम्बल होगा।

वीर बालिका विद्यालय शिक्षण सस्थान वास्तव मे ग्राज टाक सा० का जीवित स्मारक है। उनके प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि उनके इस जीवित स्मारक को हम खडा रखें, मजबूत बनायें, इससे ही श्री चाचा साहब की ग्रात्मा को हम ग्रपना समपण ग्रपनी सुमनाजलि प्रस्तुत करने के सच्चे ग्रधिकारी बनेंगे।

वीर बालिका विद्यालय शिक्षण सस्थान आपकी ग्रपनी है। ग्राइये, इसे मजबूत बनायें, जिससे हमारे समाज की भावी पीढी के प्रति ग्रपना दायित्व पूरा कर सकें। ☐

—हीराचन्द वैद, मत्री

उदात्त जीवन मूल्यों के शिल्पी



☐ डॉ. नरेन्द्र भानावत

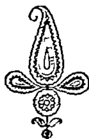
निष्ठावान शिक्षा-प्रेमी, कर्मठ समाजसेवी, विचक्षण रत्न-पारखी, उदात्त जीवन-मूल्यो के शिल्पी श्री राजरूप जी टाक पार्थिव रूप से आज हमारे बीच नही है, पर उन्होंने जीवन और व्यवहार से जन-मन पर जो छाप अकित की है, वह सदा अमर रहेगी।

टांक सा. के सेवा कार्यो की सौरभ राजस्थान मे ही नही, सम्पूर्ण भारत मे यहा तक कि विदेश मे भी परिव्याप्त है। छात्र-जीवन से ही मैं टाक सा. का निष्काम समाज-सेवी एव कुशल रत्न-व्यवसायी के रूप मे नाम सुनता रहा और जब जयपुर आने पर सन् 1963-64 मे केरल के हिन्दी छात्रो का एक दल जयपुर मे अपनी यात्रा पर आया और राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति की राजस्थान शाखा के द्वारा उनके स्वागत मे आयोजित समारोह मे श्री राजरूप जी टांक को पहली बार देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता और गौरवानुभूति हुई कि जैन समाज का एक व्यवसायी सेठ राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आन्तरिक रुचि से जुडा हुआ है। उस भेंट के बाद टांक सा. से प्रायः भेंट होती रही और उनके गरिमामय व्यक्तित्व के अनेक पक्ष फूल की पखुडियो की भांति खिलते रहे, महकते रहे।

टाक सा. अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रत्न-व्यवसायी, रत्न-प्रशिक्षक और रत्न-पारखी थे। अपनी अद्भुत प्रतिभा, अन्तर्भेदिनी दृष्टि और निर्मल चित्तवृत्ति से वे अनगढ पत्थरो मे भी प्राण फूंक देते थे, उन्हे पारस का व्यक्तित्व प्रदान कर देते थे। सचमुच जो उनके सम्पर्क मे आया, वह पारस-स्पर्श से निखरता गया। सैकड़ों व्यक्तियो को उन्होंने रत्न-पारखी बनाया और स्वावलम्बी जीवन जीने में आधारभूत सहयोग प्रदान किया।

टाक सा. का पूरा परिवेश आदर्श गुरुकुल पद्धति का परिवेश था, जहा जीवन-निर्वाह के साथ-साथ जीवन निर्माण की शिक्षा दी जाती थी। टांक सा. मूलतः शिक्षा-संस्कारप्रेमी थे। वे ग्रहणी शिक्षा के साथ-साथ आसेवनी शिक्षा के पक्षधर थे। वे मानते थे कि ज्ञान आचरण मे उतर कर ही कल्याणकारी बनता है और यह प्रयोग उन्होंने स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र मे उस समय किया, जब स्त्रियो को पढ़ाना अच्छा नहीं माना जाता था, पर टांक सा. ने दूरदर्शितापूर्वक यह अनुभव किया

उज्ज्वल रत्न



श्री राजरूप जी टाक समाज के ऐसे उज्ज्वल रत्न थे जिनका प्रकाश पाकर अनेक बालक-बालिकाओ ने युवाओ ने, तथा प्रौढो ने भी अपने जीवन का निर्माण किया है। उनकी सामाजिक सेवायें इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगी। वे श्रीमाल समाज के भी रत्न थे।

—मध्यप्रदेश श्रीमाल हितैषी सघ
उज्जैन

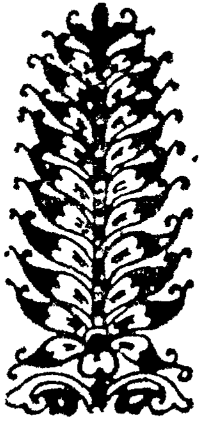
कि स्त्री जाति ही देहरी का दीपक है, जो सही मायन म प्रज्वलित हो गया तो उससे समाज और राष्ट्र, हर क्षेत्र मे आलोकित हो उठेगा। उनके द्वारा सस्थापित वीर बालिका शिक्षा सस्थान स्त्री-जाति म आतरिक वीरत्व जगाने मे सफल हुआ।

टाक सा बराबर यह कहा करते थे कि ज्ञान का सार प्रेम, करुणा और सेवा है। यद्यपि उन्होंने पुस्तकीय ज्ञान स्कूल स्तर तक ही प्राप्त किया था, पर सन्त-महात्माओ के सत्सग और नियमित स्वाध्याय से जो अनुभव प्राप्त किया, वह निज ज्ञान बनकर सेवा कार्यों के रूप मे फूट पडा। टाक सा ने बाहरी रत्नो को ही नही सहलाया-सवारा वरन् हृदय-सिन्धु मे निहित मानवीय सद्गुण रूपी क्षमा, सहिष्णुता, सहानुभूति, परोपकार जसे रत्नो से आत्म-साक्षात्कार किया, परिणाम स्वरूप व गरीबो के मददगार, नेत्रहीनो के नत्र और विकलागो के सबल अग बन सके। सब प्रकार का भौतिक सुख-वभव होते हुए भी वे उसके भोक्ता नही रहे। उनकी उपयोग-दृष्टि निमल रही। हमेशा उनका ध्यान निम्न मध्यवर्गीय परिवारो की ओर केन्द्रित रहता और वे उनके सुख-दुःख मे हमेशा सहभागी बनते।

टाक सा का भारतीय साहित्य और सस्कृति के प्रति गहरा अनुराग था। प्राचीन विद्या और कला को आधुनिक सवेदना का रग-रूप देकर उसे वतमान पीढी के समक्ष प्रस्तुत करने की उनकी भावना बराबर बनी रहती थी। राजस्थान प्राकृत भारती अकादमी के वे अध्यक्ष थे। इसके माध्यम से यह काय पूरा हो, ऐसी उनकी भावना थी।

विद्वानो के प्रति टाक सा के मन मे बडा आदर और स्नेह भाव था। लोक और शास्त्र का सुदीर्घ अनुभव और विशिष्ट ज्ञान होने पर भी वे अपन को सदा जिज्ञासु मानते रहे। जब भी मिलना होता, वे शरीर और आत्मा के भेद की बात अवश्य करते। सचमुच वे भेद विज्ञानी थे और अपने जीवन को सार्थक बनाकर परम तत्त्व के साथ अभेद हो गय। उनका जीवन हम सबके लिए खिला हुआ गुलदस्ता है, जो खुशबू ही खुशबू बाटता है।

हिन्दी प्रोफेसर
राजस्थान विश्व विद्यालय
जयपुर



राजरूपजी का शिक्षा–प्रेम

श्री जगन्नाथ सिंह मेहता
अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री राजरूपजी टांक सा. को शिक्षा व स्काउटिंग से जुडे होने के नाते उनको मुझे निकटता से देखने का सुअवसर मिला था। श्रद्धेय टाक सा. के लिये मैं केवल एक ही बात कहना चाहूंगा कि अधिकतर मनुष्य समाज के ऋणी रहते है परन्तु कुछ ऐसे विरले महापुरुष होते हैं जो समाज को इतना दे जाते है, जिससे समाज यह महसूस करने लगता है कि वह उनका ऋणी है। श्री टांक सा. का शिक्षा से बहुत प्रेम था। उनकी यह मान्यता थी कि शिक्षा ही मानव के विकास का आधार-स्तम्भ है। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने विशेष रूप से स्त्री शिक्षा के क्षेत्र मे जहां पर शिक्षा की बहुत आवश्यकता थी, आज से 63 वर्ष पूर्व श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की स्थापना की और उसको निरन्तर विकसित करने और अच्छी शिक्षा देने के लिये वे प्रयत्न करते रहे। फलस्वरूप वीर बालिका शिक्षण संस्थान प्राथमिक विद्यालय से महाविद्यालय स्तर तक विकसित हो गया। यह सब श्री टांक साहब की लगन व निष्ठा का ही परिणाम है। टांक साहब का जीवन सेवा के लिये समर्पित था। दूसरो के दुःख व पीडा से उनका मन पसीज जाता था। इसी कारण उनका स्काउटिंग व गाइडिंग से विशेष प्रेम हो गया और वे स्काउटिंग व गाइडिंग संस्थान से जुड गये। स्काउटिंग के सेवा कार्यों में उन्होने तन-मन-धन से योगदान दिया। स्काउटिंग व गाइडिंग आन्दोलन व शिक्षा जगत् उनकी सेवाओं को विस्मृत नही कर सकेगा। उनमे राष्ट्र-प्रेम व समाज-प्रेम कूट-कूट कर भरा था। वे गांधीवादी विचारक थे। देश की आजादी के लिये भी उन्होंने योगदान दिया। वे सादगी, सेवा, सहिष्णुता, सरलता की प्रतिमूर्ति थे। भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति व राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ एवं अन्य कई ऐसी पचास सेवाभावी संस्थायें है जिनसे वे जुड़े हुये थे।

सबसे अच्छा योगदान किसी भी मनुष्य का यह होता है कि वह दूसरों के जीवन को बनावे और उनमें यह क्षमता पैदा करे कि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें और समाज को अपना योगदान



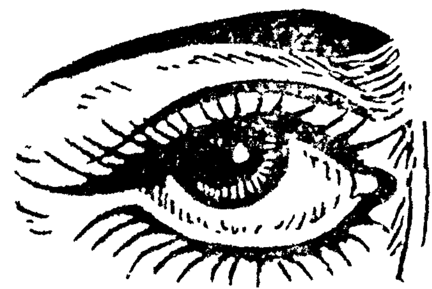
रत्न-व्यवसाय के आधार-स्तम्भ

श्री राजरूपजी टाक का जवाहरात व्यवसाय मे विशेष स्थान था, और वे रत्न व्यवसायियो मे अत्यन्त लोकप्रिय थे। वे रत्न-व्यवसाय की उन्नति के लिये सदैव प्रयत्नशील रहे। जयपुर के रत्न-व्यवसाय के वे स्तम्भ थे। आज उनके अनेकों शिष्य इस व्यवसाय मे सफलता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठ हैं। उनका सक्रिय सहयोग एसोसियेशन को सदैव मिलता रहा है। वे एसोसियेशन के अध्यक्ष व मानद मन्त्री रह चुके हैं। उनके कार्यकाल मे एसोसियेशन ने असीम प्रगति की। जौहरी ही नहीं, जयपुर की जनता इस बात से भलीभांति परिचित है कि वे प्रमुख समाजसेवी, शैक्षणिक एव जन सेवा के क्षेत्र मे सदैव अग्रणी रहे।

—ज्वैलर्स एसोसियेशन, जयपुर

दे सकें। टाक सा का सारा जीवन दूसरो के जीवन को बनाने मे व्यतीत हुआ। करीब दो हजार लोगो को रत्न व्यवसाय का शिक्षण दिया व उन्हे दक्ष व स्वावलम्बी बनाया। आज उनके शिष्य न केवल जयपुर शहर मे ही अपितु भारत वर्ष व दुनिया के कई स्थानो पर कुशल जौहरी के रूप म अपना व्यवसाय चला रहे हैं। उन्होने इडियन जेमालोजी पर अग्रेजी व हिन्दी की पुस्तकें भी लिखी जो न केवल भारत वर्ष म ही, बल्कि अमेरिका के भी पाठ्यक्रम म सम्मिलित हैं। उन्हे अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। ऐसे व्यक्ति का हमारे बीच से चले जाना वास्तव म बहुत दुखद है व समाज की बहुत बडी क्षति है जिसकी पूर्ति सम्भव नही है।

श्रद्धेय राजरूपजी टाक के लिय जितना भी कहें, उतना कम है। यदि मैं यह कहूँ कि वे एक महामानव थे तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम उनके बताये मार्ग पर चलें और पीडित मानव की सेवा कर उनके दुख को कम करने मे व शिक्षा के क्षेत्र मे अपना सक्रिय योगदान दें।



राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ एवं संत महापुरुष स्व. श्री राजरूपजी टांक

श्री माणिकलाल कानुगा

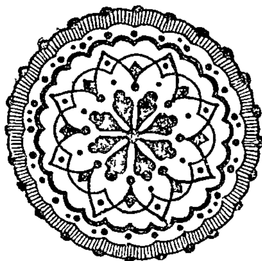
राजस्थान बनने के बाद ज्योंही मैं 30 अगस्त, 1949 को जोधपुर से जयपुर आया तो मेरे परम हितैषी श्री हजारीचद जी मेहता के सहयोग से सर्वप्रथम जयपुर के जिस महान् व्यक्ति से सम्पर्क हुआ, वे थे गांधीवादी, जौहरी एव समाजसेवी निड़ावा निवासी स्व. श्री राजरूपजी टाक। उनके चेहरे की सहज मुस्कान और उनके व्यक्तित्व को देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ। कौन जानता था कि एक दिन ऐसा आयेगा जब टाक साहब नेत्रहीन कल्याण संघ के अध्यक्ष होगे और मुझे संघ का मंत्री बनकर उनके साथ कधे से कधा मिलाकर कार्य करना पड़ेगा। स्व. श्री टाक साहब 1972 मे कल्याण संघ के अध्यक्ष बने। तब से मरण पर्यन्त उन्होंने नेत्रहीनों के कल्याण व विकास में जिस लगन व तत्परता से तन-मन-धन एव समर्पित भावना से सेवा की, वह अनुकरणीय रहेगी। 1977 के पहले नेत्रहीन बालक रहवास हेतु कभी फरगोट्या मार्केट बापू बाजार के अन्धेरे मकान मे रहते और कभी अनाथालय मे जाकर शरण लेनी पड़ती। स्व. श्री नरपतमलजी जैन (नेत्रहीन) एवं स्व. श्री भरोसीलालजी जैन (नेत्रहीन) जो टांक साहब के दायें बायें हाथ थे, ने टांक साहब का ध्यान नेत्रहीन बालकों की इस विकट रहवास समस्या की ओर आकर्षित किया। 1 फरवरी, 1978 में लंगर के बालाजी के रास्ते में तिवाड़ी जी के कारखाने का 805.43 वर्गमीटर का आधा बना व आधा खुला भवन एक लाख मे खरीद कर हमेशा के लिए समस्या का समाधान कर दिया। धन कहा से जुटाया, किसने दिया और क्या किया? यह सब विधि विधाता ही जाने या स्वयं स्व. टांक साहब। शिक्षा प्रसार के क्षेत्र मे उनके समय में राजस्थान नेत्रहीन प्राथमिक विद्यालय (विशिष्ट) खोला गया जिसमे आज 40 विद्यार्थी विद्या अर्जन कर रहे हैं। नेत्रहीनों को स्वावलम्बी बनाने हेतु कुर्सी, बैंच बनवाई व हाथकर्घा व्यवसाय प्रशिक्षण केन्द्र खोले। इन प्रशिक्षण केन्द्रो से काम सीखकर करीब 25 विद्यार्थी सारे राजस्थान मे अपना स्वरोजगार चला कर जीवनयापन कर रहे है। ऐसे अनेक रचनात्मक कार्यों मे अभिरुचि रखने वाले स्व. श्री टांक साहब नेत्रहीनों के हृदय सम्राट व मसीहा थे। उन्होंने नेत्रदान के लिए 'नेत्र बैंक' खोला। वे स्वयं पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मृत्यु के बाद अपने नेत्र दान मे देने की घोषणा की। घोषणा के अनुसार दिनांक 27 अक्टूबर, 1987 को मृत्यु होने पर उनके दोनों नेत्र निकाल लिए गये व 24 घंटो मे दोनों नेत्र दो अलग-अलग व्यक्तियों की आंखों मे सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर के प्रोफेसर डॉ कुलश्रेष्ठ एवं

डॉ ग्रार जी शर्मा द्वारा प्रत्यारोपण कर दिये गये । यह है टाक साहब का अपूर्व त्याग नेत्रहीनो के प्रति । धन एक धरोहर है, ऐसा उनका विश्वास था । गुप्त दान को वे सर्वोपरि समझते थे, जिसमे दान लेने वाले की भावना पर लेशमात्र ठेस नही पहुचे । एक नेत्रहीन कार्यकर्ता को हाउसिंग बोर्ड मे मकान मिला पर इस दरिद्रनारायण के पास पैसा देने को कहा ? यह बात उन्हे मालूम पडी । दूसरे ही दिन रकम गुप्त रूप से जमा हो गई व रसीद नेत्रहीन के पास पहुचा दी गई । उसे रसीद पाकर इतनी सात्वना मिली, जितनी सीता माता को अशोक वाटिका मे वीर हनुमान के हाथ से श्री राम द्वारा प्रेषित स्वर्ण मुद्रिका पाकर मिली थी । इसी प्रकार जहा दो अन्धे कुमार-कुमारी का विवाह रचता, वहा स्वय जाते व बिना नाम का बन्द लिफाफा आशीर्वाद रूप देकर चले आते । कोमलता इतनी थी कि अन्धे बालको की बीमारी देखकर आँखो को गीली कर बैठते । श्री भरोसी लालजी जैन (नेत्रहीन) जो कल्याण सघ की आत्मा थे व टाक साहब के अनन्य भक्तो मे से थे, वे इनकी लम्बी बीमारी से बहुत चिन्तित रहते थे । अभाग्यवश श्री जैन का टाक साहब की मृत्यु के दो महीने पहिले कैन्सर हो गया । टाक साहब की मृत्यु के दिन श्री जैन अकस्मात् सीरियस हो गये और आवेश मे अपनी धर्मपत्नी (नेत्रहीन) मे कहने लगे—'टाक साहब के जनाजे मे मैं स्वय जाऊँगा एव अपनी श्रद्धाजलि दूँगा ।" पर विधि का विधान देखिये । इधर टाक साहब की मृत्यु और उसी घडी मे श्री जैन सवाई मानसिंह अस्पताल मे भर्ती और दूसरे दिन टाक साहब की मृत्यु का समाचार सुन 28 10 87 को सवेरे 6 बजे श्री जैन साहब का स्वर्गवास । स्व श्री टाक साहब कविता व शेर के बहुत शौकीन थे। मैंने एक बार उनसे पूछा कि आप इन नेत्रहीनो की समस्या मे ज्यादा क्यो डूबे रहते हो, तो एक शेर सुना दिया—

'हम समा वफा के परवाने,
हम मरन से कब डरते हैं ।
अर जो आग लगी है इस तन मे,
उस आग से मिला करते हैं ।'

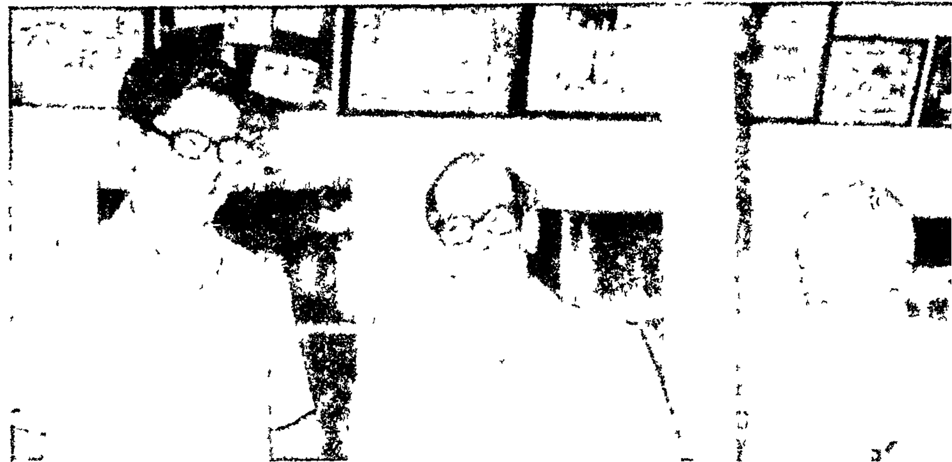
ऐसे हाथ, बात एव हृदय के धनी, सेवा करने की प्रेरणा के स्रोत स्व श्री टाक साहब की दिवगत आत्मा को नेत्रहीन परिवार व मेरा शत-शत प्रणाम व स्व श्री जैन साहब को श्रद्धाजलि ।

मन्त्री, राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ, जयपुर





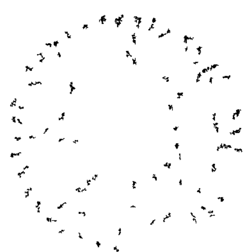
रवीन्द्र रंगमंच पर आयोजित श्री वीर बालिका विद्यालय के अभिनन्दन पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी, साथ में श्रीमती कमला, श्री गह-लोत [illegible] के भू. पू. अध्यक्ष पूर्णचन्द्र जैन एवं श्री [illegible] ।



भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष के समारोह के आयो-जन की चर्चा श्री ढढ्ढा साहब के निवास स्थान पर ही हुआ करती थी। चर्चा करते हुये श्री चन्दन मल [illegible] एवं श्री देवेन्द्र राज मेहता।



श्री [illegible] ढढ्ढा की 63वीं वर्षगांठ पर रवीन्द्र मंच पर आयोजित नागरिक अभिनन्दन समारोह में श्री वीर बालिका विद्यालय के [illegible] श्री विमलचन्द [illegible]



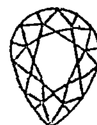


जयपुर के भूतपूर्व महाराजा श्री भवानीसिंह से मिलकर कितने प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं श्री डाक साहब।



ग्राग

राजस्थान की शिक्षा मंत्री श्रीमती कमला से गम्भीर चर्चा करते हुए, श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों की जानकारी देते हुए, श्री राजमल डाक।





प्राकृत भारती और राजरूपजी टांक

• म. विनय सागर
निदेशक–संयुक्त सचिव, प्राकृत भारती

शासनपति–परम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर के पच्चीसवी निर्वाण शताब्दी के पावन प्रसंग पर राजस्थान सरकार ने राज्यस्तर पर शताब्दी समारोह समिति की स्थापना की थी। इस समारोह समिति के एक प्रमुख सदस्य श्री राजरूपजी टांक भी थे। समिति ने साहित्यिक योजना के अन्तर्गत तीन पुस्तको के प्रकाशन का निर्णय लिया था—1. कल्पसूत्र सचित्र, 2. राजस्थान का जैन साहित्य और 3. राजस्थान की जैन कला और स्थापत्य। प्रारम्भ के दोनों ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ भी हो गया था, पर पूर्ण न हो सका था।

शताब्दी समारोह वर्ष की पूर्ति पर समारोह समिति के सचिव श्री देवेन्द्रराजजी मेहता ने श्री राजरूपजी टांक प्रभृति सदस्यों से परामर्श कर, "राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान" की स्थापना की थी। इस संस्थान का रजिस्ट्रेशन 21 फरवरी, 1977 को करवा लिया गया था। (सन् 1985 से प्राकृत भारती अकादमी) उस समय श्री टांक सा. इस संस्थान के संस्थापक सदस्य थे।

प्राकृत भारती के संस्थापन-काल से लेकर 26 अक्टूबर, 1980 के पूर्व तक, संस्थान की प्रायः समस्त बैठकें श्री राजरूपजी टांक की अध्यक्षता में ही सम्पन्न होती रही। 26 अक्टूबर, 1980 को संस्थान की साधारण सभा में श्री टांक सा. अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए और, 9 दिसम्बर, 1984 की साधारण सभा की बैठक में पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अर्थात् संस्थान के जन्म-काल से स्वयं के देहावसान तक ये अध्यक्ष पद पर ही रहे। संस्थान के संरक्षक सदस्य तो थे ही।

प्राकृत भारती से इनका अटूट, हार्दिक एवं घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे इसे अपनी ही संस्था समझते थे। यही कारण है कि वे सर्वदा इसके पोषण एवं संवर्धन में प्रयत्नशील ही नही अग्रगण्य भी रहे। उनका निरन्तर यही प्रयास रहता था, विनम्र अनुरोध रहता था कि प्रकाशन हेतु इस प्रकार के ग्रन्थो को चयन कर प्रकाशित किये जायें कि यह संस्था/अकादमी सार्वजनीन एवं सर्वश्रेष्ठ बन जाये। उनकी मिलनसारिता, विचारशीलता. सज्जनता एवं सहृदयता के कारण उनके समस्त प्रस्ताव सर्वदा सर्वसम्मति से स्वीकृत होते रहे। मैंने देखा है कि प्राकृत भारती के साथ अटूट प्रगाढता के कारण रुग्णावस्था में, उठने-बैठने की असमर्थता के क्षणो में भी वे बैठक की अध्यक्षता करने में स्वयं को सौभाग्यशाली समझते थे। उन क्षणो में कटुता की गन्ध होने पर भी वे क्षमाशील ही बने रहते थे। मूक वाणी होने पर भी जब भी मैं मिलता था, इशारो से ही प्राकृत भारती की जानकारी लेते और प्रगति सुनकर हार्दिक प्रसन्नता अनुभव करते थे।

प्रारम्भ के वर्षों में इस संस्था की आर्थिक

तुमसे महका यह उपवन

□ श्रीमती सुधा शुक्ला

नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक,
तुमसे महका यह उपवन,
उद्यम, संस्कृति मानवता की,
तुम थे एक अनोखी चितवन।
सूर्य की प्रथम किरण बनकर,
फैलाया था आंचल तुमने,
बेरोजगारी अशिक्षा की,
सीलन भरी गुफाओं में।
तुमने पिया था रोशनी को,
जीवन की हर सांस में,
अब हर एक सांस है,
रोशनी की चाह में।
जीवन की हर जटिल
पहेली को तुमने सुलझाया,
अपने जीवन को तुमने,
माटी सा खरा बनाया।
नैतिकता का मानवता से,
था एक अनोखा नाता,
जिसका भेद आज जहाँ में
कोई नहीं कर पाता।

रत्नों की जगमग दुनिया में,
कितने रत्न सजाये,
बने अवतार निरक्षरता के,
जीवन ज्योति जगाये।
भूल न पायेंगे हम तुमको,
तेरी हर यादों में,
कदम बढ़ेंगे आज हमारे,
उन स्वर्णिम राहों में।
मूक वेदना के तुम ज्ञाता
जन जन के तुम भाग्य विधाता,
जहाँ गये तुम उस दुनिया में,
एक दिन सबको जाना,
अपनी हर मंजिल को,
तेरी मंजिल तक पहुँचाना।
जला गये जो दीप शिखा,
उसको प्रज्वलित करना,
अपने जीवन को भी
तुम जैसा आदर्श बनाना।

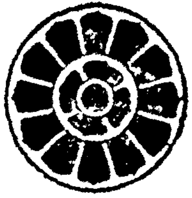
—सहायक अध्यापिका,
श्री वीर बा उ मा विद्यालय, जयपुर

स्थिति सन्तोषजनक नहीं थी। ऐसी स्थिति में जब भी आवश्यकता होती तो वे सहर्ष पूर्ति भी करते थे।

इसमें सन्देह नहीं कि श्री राजरूपजी टांक के साहित्य-प्रेम के कारण ही उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में प्राकृत भारती पल्लवित, पुष्पित होती हुई फलदायिनी सिद्ध हो चुकी है। फलतः उनके जीवन-सन्ध्या के पूर्व 38 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं।

श्री टांक सा. से मेरा व्यक्तिगत परिचय सन् 1940 से रहा है, वह भी प्रगाढ़। प्राकृत भारती के संस्थापन 1977 से मैं सम्मानीय संयुक्त सचिव रहा और वे अध्यक्ष रहे। इन दस वर्षों में मेरा सम्पर्क घनिष्ठ हो गया था। मैंने अनुभव किया कि, उनके हृदय में धर्म, सेवा और साहित्य के प्रति श्रद्धा और अटूट निष्ठा थी और वे गुणों के ग्राहक थे एवं गुणीजनों की श्लाघा करते थे।

इनके असामयिक निधन से प्राकृत भारती अकादमी की अपूरणीय क्षति हुई है। मैं अपनी ओर से तथा प्राकृत भारती के समस्त सदस्यों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। □



विश्व-मानव के लिये जो प्रेरणा बनकर जिये

• श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव

महामहिम श्री राजरूपजी टांक उन महान् विभूतियों मे से एक थे जो आदर्श एव सिद्धान्तो की मौखिक व्याख्या ही नही करते वरन् उन्हे जीवन के ठोस धरातल पर साकार रूप प्रदान करते है। आप जीवन को आन्तरिक व बाह्य अर्थात् विचार और व्यवहार, दोनों दृष्टियो से पवित्र व आदर्शमय बनाने मे विश्वास करते थे। आपने प्रारम्भ से ही अपने जीवन मे परिश्रम, सच्चाई व विनम्रता का पालन किया। अपनी सहनशीलता, सेवा व त्याग के बल पर जीवन के कठोर अनुभवो को भी स्वीकार किया और शायद इसी कारण अपने बहुपक्षीय कार्यक्षेत्र मे सामंजस्य स्थापित करने मे सफल हुए। केवल इतना ही नहीं वरन् अपने सम्पर्क मे आने वाले सभी व्यक्तियो को इतना प्रभावित किया कि आज हम सब एक ओर उनके वियोग से दुःखी है तो दूसरी ओर उनके सद्गुणो सद्भाव और सदाचरण का स्मरण हमे आत्मगौरव और आत्मचिन्तन की ओर अग्रसर करता है और पिछले पच्चीस वर्षो का अतीत सजीव हो उठता है।

टांक साहब सज्जनता, सौहार्द और स्नेह के मूर्तिमान स्वरूप थे विशेषकर उपेक्षित व पीड़ित मानव समुदाय के प्रति उनके हृदय मे अपार करुणा विद्यमान थी, जिसको उन्होंने अनेकानेक समाजसेवा, चारित्रिक विकास, नैतिक मूल्यों की स्थापना और शिक्षा के विकास के रूप मे साकार किया। आपने अनेकानेक स्मरणीय एव श्लाघनीय कार्यों मे तत्कालीन अज्ञान व अधकारपूर्ण परिस्थितियों मे नारी शिक्षा का अलख जगाया था। आज से 63 वर्ष पूर्व जब राजस्थान जैसे पिछड़े प्रदेश मे बालिकाओं की शिक्षा की कल्पना करना भी असम्भव था, उस समय अपने उच्च संस्कारो, निष्ठा, लगन तथा पूज्य साध्वी स्वर्ण श्री जी महाराज की प्रेरणा से आपने 17 वर्ष की अल्पायु मे ही श्राविका आश्रम नाम से एक बालिकाओं के शिक्षण केन्द्र की स्थापना करवाई और संचालन का समस्त भार अपने किशोर कन्धो पर वहन किया और उसका सफलतापूर्वक आजीवन निर्वाह किया। उन परिस्थितियों मे जब न तो पढने वाली बालिकाएँ ही सहजता से उपलब्ध होती थी और न पढ़ाने वाली अध्यापिकाएँ; तब आप घर-घर जाकर बालिकाओं को पढने के लिये बुलाकर लाते थे व दिल्ली, आगरा, मथुरा आदि नगर-नगर जाकर अध्यापिकाओं की खोज करते थे। निष्ठा व लगन तथा पारस्परिक सहयोग की भावना से यह विद्यालय रूपी बीज दिन पर दिन अकुरित और प्रस्फुटित होने लगा। इसके कलेवर, स्तर और स्वरूप मे भी विकास हुआ किन्तु विकास के साथ प्रशासनिक और आर्थिक कठिनाइयो का सामना करते हुए भी आपने अभिभावकों मे अधिक शुल्क लेना स्वीकार नही किया क्योंकि आपकी धारणा थी कि राष्ट्रीय विकास के लिये शिक्षा सबको सुलभ और सस्ती होनी चाहिए। गांधीवादी विचारक श्री टांक साहब का कहना था कि उनका विद्यालय मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग के लिये है, सुविधाओं या धन के अभाव मे किसी भी छात्रा को अध्ययन से वंचित न रखा जाय। इस विद्यालय के माध्यम से उन्होंने सैकड़ों निर्धन छात्राओं के जीवन को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया जो निश्चय ही दीपशिखा बनकर राष्ट्र और

समाज से अज्ञान, अंधविश्वास और अनैतिकता को दूर भगायेंगी। साथ ही आप शिक्षा के केवल पुस्तकीय स्वरूप के समर्थक न होकर उसे श्रेष्ठ आचरण, उन्नत नैतिक मूल्य, सच्ची सेवा और श्रम के प्रति निष्ठा और आदर के रूप में प्रतिफलित देखना चाहते थे। इतने अनुभवी एवं विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञाता होते हुए भी नन्ही-मुन्नी बालिकाओं के हाथों से निर्मित वस्तुओं की इतनी मुक्तकंठ से प्रशंसा करते थे कि बनाने वाली छात्राओं और मार्गदर्शन करने वाली अध्यापिकाओं का उत्साह व उमंग दुगुना हो जाता था।

औपचारिक शिक्षा से दूर होते हुए भी आप शिक्षाविद्, शिक्षाशास्त्री व एक सच्चे शिक्षक थे। इस संस्था का दीर्घ जीवन, विकसित स्वरूप और सौहार्दपूर्ण वातावरण आपके अटूट शिक्षा प्रेम का ही परिचायक है।

संस्था के विकास में आपके शिक्षा प्रेम के साथ-साथ व्यक्तित्व के महान् गुण भी सम्मिलित थे, जो आपको एक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। आज से 30-35 वर्ष पूर्व की घटना है कि अध्यापिकाओं ने उचित समय पर वेतन न मिलने के कारण आक्रोश को, शायद कुछ कठोर शब्दों में ही आपके सम्मुख प्रकट किया किन्तु क्षमामूर्ति टाक साहब ने बिना किसी प्रकार प्रतिवाद या क्रोध किये अपनी टोपी उनके सम्मुख रख दी। विनम्रता की इस सीमा के आगे सबका मस्तक लज्जा से झुक गया। ऐसे अनेक उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि आर्थिक प्रशासनिक व विभागीय कठिनाइयों के बावजूद भी आपने संस्था को प्राथमिक शाला से माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और स्नातक स्तर तक पहुँचाया।

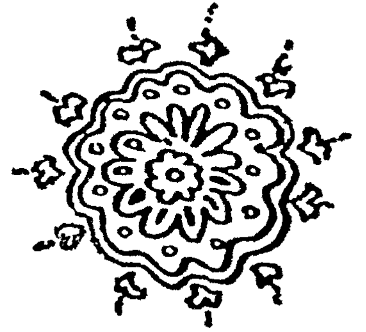
आप जयपुर और राजस्थान की लगभग 30 संस्थाओं से जुड़े रहे किन्तु आश्चर्य की बात है कि इतनी संस्थाओं के अधिकारी और संचालक रहने पर भी कहीं पर भी किसी प्रकार का विरोध या असंतोष की भावना जाग्रत नहीं हुई। इसका कारण था आपका उदार स्वभाव और आत्मवत् 'सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः' की साधना जिसने साथी कार्यकर्ताओं और अधीनस्थ कर्मचारियों को पारस्परिक स्नेह एवं सद्भाव में बाँध रखा। साधारण से साधारण व्यक्ति के सुख-दुःख में सम्मिलित होकर वे उसे आत्मबल व प्रेरणा प्रदान करते थे। आपकी इस सदाशयता एवं उदारता से संगठन, प्रेम और आत्मीयता रूपी बंधनों में बंधकर शक्तिशाली होता था। अपने कर्मचारियों या अधीनस्थों का अभिवादन वे इतनी आत्मीयता और मधुर वचनों से स्वीकार करते थे कि वे प्रसन्न और तनावमुक्त होकर कर्तव्य के प्रति समर्पित हो जाते थे।

आदरणीय टाक साहब अत्यन्त मृदु व मित भाषी थे। सामाजिक, राजनैतिक, व्यावसायिक एवं शैक्षिक क्षेत्र की विशिष्ट उपलब्धियों का सार्वजनिक रूप में प्रचार करने से वे परहेज करते थे। आप एक सच्चे और मूक सेवक थे किन्तु एक प्रगतिशील चिन्तक और सजग कार्यकर्ता। यहाँ तक कि विद्यालय में होने वाले समारोह में भी आप स्वागत, भाषण, परिचय व अन्य उपलब्धियों के विवरण से दूर रहते थे। बहुत आग्रह करने पर आभार के दो शब्द ही सबके लिए आशीर्वाद और मार्गदर्शन का सम्बल होते थे।

अन्त में जिस प्रकार सहस्र रश्मि सूर्य अपनी सहस्र रश्मियों से एक ओर तो निर्धन कुटिया के अंधकार को हरता है तो दूसरी ओर प्रति प्राणवान पदार्थ के जीवन में आशा का संचरण करके प्रखर प्रताप के साथ उदित होकर प्रखर प्रताप के साथ ही अस्त हो जाता है, उसी प्रकार महामहिम प्रखर प्रतिभा के धनी शत-शत बालिकाओं के प्यारे चाचा साहब अपने व्यवहार से, अपने अटल सिद्धांतों से, अपने प्रयासों से, अपने धर्मप्रधान विचारों से हमारे मानस पर एक ऐसी छाया अंकित कर गये, जिसे भुलाना नितान्त असम्भव है। O

—प्रधानाध्यापिका, वीर बालिका उ. मा. विद्यालय

धर्मवीर व कर्मवीर



• श्रीमती कमला श्रीवास्तव

इस शहरी कोलाहल मे, हम तुमको भूले रहते है।
एकांत क्षणों मे राजऋषि, याद आपकी आती है।।

जीवन के व्यस्त क्षणों में जब भी अवकाश मिलता है, चाचा साहब की याद में हृदय मे एक टीस-सी हो जाती है। समाज एवं व्यापारी कर्णधारों ने उन्हें अनेक प्रकार की उपमाओ से विभूषित किया है, किन्तु मैंने लगभग 4 दशको से उनके नेतृत्व में रह कर उनके व्यक्तित्व मे एक सच्चे राजऋषि के दर्शन पाये है। सतयुग की गाथायें सुनते थे कि इस धराधाम पर एक से एक बढ़कर धर्मवीर, कर्मवीर, दानी, परोपकारी, न्यायी अवतरित हुए हैं। वे सब अलग-अलग व्यक्तित्व लेकर प्रसिद्ध हुए, किन्तु हमारे चाचा साहब में ये सब गुण विद्यमान थे। वास्तव मे वे सतयुगी मानव थे।

कोई भी व्यक्ति अपनी समस्या लेकर जाता तो पहले उसका दुःख-दर्द सुनकर उचित निर्णय देते, उसकी समस्या हल करते।

एक बार, एक बूढे संस्कृत के पंडितजी ने उन्हें अपनी व्यथा सुनाकर नौकरी की याचना की। चाचा साहब ने उन्हें स्कूल भेज दिया, तत्कालीन प्रधानाचार्य श्रीमती प्रकाशवतीजी सिन्हा ने उन्हें देखा, कम्पित वाणी वृद्धावस्था देख कर वे भी द्रवित हो गईं। सेवा कार्य के लिए उन पंडितजी को असमर्थ देख कर उन्होंने चाचा साहब के पास भेजा। चाचा साहब ने उस समय आर्थिक सहायता दी और हर माह उनकी सहायता करते रहे।

एक गरीब विधवा अपने बच्चो को लेकर उनकी गद्दी पर गई, नौकरी तथा बच्चो के अध्ययन के लिए प्रार्थना की, उन्होंने उसे भी स्कूल भेज दिया। एक बार, एक अन्धे तबला मास्टर को आग्रहपूर्वक नौकरी पर रखवाया, कोई भी पीडित अपंग, निर्धन, उसे स्कूल भेज देते या स्वयं आर्थिक सहायता देते।

नित्य प्रति की जवाबदेही से तंग आकर एक दिन श्रीमती सिन्हा उनके यहाँ गईं और बोली, "भाई साहब! ये स्कूल है या अनाथालय? आप किसी भी योग्य अयोग्य को वहाँ भेज देते है।" वे बड़ी जोर से हँसे और बोले—"क्या करूँ प्रकाश बहन, मुझसे इन लोगो की पीड़ा देखी नही जाती, कोई काम हो तो दे दिया करें।" उस व्यक्ति के योग्य काम न मिलने पर वे उसकी आर्थिक सहायता करते थे।

किसी प्रकार से पीड़ित व्यक्ति उनके पास से निराश नही लौटता था। उनका द्वार सबके लिए समान रूप से खुला था। चाहे वे खाना खा रहे हों, चाहे विश्राम का समय हो, या गद्दी पर व्यावसायिक कार्य मे रत हों। देशी-विदेशी व्यापारी

समूह सबकी ओर से ध्यान हटा कर आगन्तुक से उसके आने का कारण पूछते, समस्या का समाधान करते, आज की बात कल पर नहीं टालते थे। तुरन्त निर्णय देते थे।

उनका कहना था कि "हम अपने विद्यालय को एक परिवार मानते हैं, किसी भी कर्मचारी शिक्षिका के भेदभाव या अन्याय हम बरदाश्त नहीं कर सकते।"

किसी शिक्षिका के परिवार में आकस्मिक निधन हो जाने पर घर पहुँच कर सान्त्वना देते, शिक्षिका के बच्चे या पति अस्पताल में अथवा किसी बीमारी से पीड़ित हो तो वे स्वयं घर या अस्पताल पहुँचते थे।

आप बड़े विनोदप्रिय थे किसी भी हास्य प्रसंग पर वे उन्मुक्त रूप से हँसते थे। विद्यालय में मानो उनके प्राण बसते थे। अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकाल कर वे स्कूल आते पानी आदि की व्यवस्था देखते, पंखे आदि की कमी देखकर या स्कूल सम्बन्धी हर समस्या का समाधान करते, शिक्षिकाओं की कुशलता पूछते थे। हम पुरानी शिक्षिकाओं को देखकर बड़े गर्व से कहते—'ये हमारी नींव की ईंटें हैं।" अपनी स्वाभाविक मुस्कान तथा मीठी वाणी से सभी को अपना मम भाव प्रदर्शित करते थे।

आपके दैनिक कार्यक्रम निर्धारित तथा निश्चित समय पर होते थे। प्रातः भ्रमण व अवश्य जाते थे। एक भयानक शीत में जब हम ठिठुरते हुए स्कूल आते, चाचा साहब प्रफुल्ल तथा निर्विकार भाव से एक मिनट रुककर अवश्य समाचार पूछते थे। तत्पश्चात् उपाश्रय में महाराज के दर्शन व प्रवचन का लाभ उठाकर अन्न जल ग्रहण करते थे। विद्यालय के धार्मिक, राष्ट्रीय आदि कार्यक्रमों में आप अवश्य पधारते और कार्यक्रम की समाप्ति तक मनोयोगपूर्वक समस्त कार्यक्रम देखते थे।

उनका महान् व्यक्तित्व वन्दनीय तथा सराहनीय था। इतने धनाढ्य, रत्नपारखी, लाखों शिष्यों के गुरु, शिक्षण संस्था के संचालक होकर भी वे कितने व्यवहार कुशल तथा निराभिमानी थे। अपनी वर्षगांठ तथा परिवार में वैवाहिक कार्यों में आग्रहपूर्वक हम लोगों को आमन्त्रित करते थे। बड़े प्रेम से विविध व्यंजन खिलाते और बचा हुआ भोजन अनाथालय के बालवृन्द में वितरित कर देते थे।

उनकी संवेदनशीलता की भावना तो मैंने उस दिन देखी कि बाढ़ के पश्चात् जब मैं उनके घर गई तो वे बाढ़पीड़ित व्यक्तियों के लिए भोजन, वस्त्र, बर्तन आदि की पूर्ण व्यवस्था करवा रहे थे। जीप आदि वाहनों में समस्त वस्तुयें भिजवा रहे थे। मेरे पहुँचने पर बोले—"देखो जयपुर का क्या सर्वनाश हुआ है। धन की हानि तो असह्य इतनी नहीं है पर कमलाजी चन्द्रकांता, उनकी भाजी, बेचारे तेजकुमार के दोनों तीनों भाई किस प्रकार बह गये। उस दिन वे बड़े दुःखी थे। बाद में उनके परिवार को कुछ सहायता भी दी, वे स्वयं बाढ़पीड़ित क्षेत्र में जाते थे। उन्होंने मुझसे भी पूछा, आप उसी क्षेत्र से आई हो कुछ चाहिये तो ले जाओ। पर मैंने श्रद्धापूर्वक नतमस्तक होकर मना कर दिया।

ऐसे महान् थे हमारे चाचा साहब, स्व. टांक साहब, ऐसी महान् विभूति को शत शत प्रणाम।

> हे महापुरुष तुम धन्य हो,
> किन शब्दों में दूँ श्रद्धांजलि।
> कुछ शब्द सुमन ही चुनकर,
> तुमको अर्पित की है पुष्पाञ्जलि।।

सहायक अध्यापिका
—श्री वीर बालिका विद्यालय, जयपुर

-●-

□ प्रवर्तिनी सज्जन श्रीजी म. सा.

श्रावकवर्य श्री राजरूपजी टांक



जगत् नाम ही जीवो के गमनागमन और आयुस्थिति के अनुसार कुछ काल जीवन को सुख-दुःख के हिण्डोले में झुलाने का है। अनन्तकाल से अनन्त जीव जन्म लेते, कुछ समय सुख-दुःख की अनुभूति करते, अच्छे-बुरे कर्म करते है और उस शरीर का परित्याग (मरण) करके अन्य शरीर धारण करके उपर्युक्त कार्यो की पुनरावृत्ति करते रहते है। इनमें से कोई-कोई विरल जीव विशिष्ट योग्य होकर स्व-परहित साधन करके मानव जीवन को सार्थक कर चिरकाल पर्यन्त विश्व मे आदरणीय, स्मरणीय और अनुकरणीय बन जाते हैं।

ऐसे ही विरल व्यक्तित्व के धनी श्री राजरूप जी साहब थे। पूर्व जन्म और उस जन्म मे भी वे गुणरत्नों से सुसंस्कृत बने थे। उनका जीवन धर्म, राष्ट्र, देश व समाज के लिये समर्पित था। उनके जीवन मे सर्वप्रथम स्थान धर्म का था। निद्रा त्यागते ही नवकार मंत्र का स्मरण करना, नित्य प्रभु दर्शन, सामायिक, दान प्रवृत्ति, सेवा भाव उनके नित्य नैमित्तिक कर्म थे। स्व [illegible] को भी वे धर्म की [illegible] प्रेरणा [illegible] शिक्षा देना और उन्हे अर्थ समझा कर उनकी श्रद्धा को दृढ करते रहते थे।

वे स्वय परम जिज्ञासु थे, यथा समय साधु-साध्वी, सत, महापुरुषो या विद्वद्जनो की संगति और तत्त्व ग्रन्थो का स्वाध्याय करना शौक सा ही था। उनको तत्त्वो की गहरी जानकारी थी। साथ ही ज्ञान का अभिमान नही था। सभी पूज्यजनो के साथ विनम्रता का व्यवहार, बराबर वालो के साथ उत्तम व्यवहार और छोटो के प्रति वात्सल्य भाव उनके उत्कर्ष की हार्दिक अभिलाषा उनके जीवन मे ओतप्रोत थी।

तिरेसठ वर्ष पूर्व जब स्वनामधन्या अद्भुत समाजोन्नति के कार्यों में संलग्न अध्यात्म योगिनी सुविख्यात प्रवर्तिनी महोदया श्री सुवर्ण श्री जी म. सा. का शिष्या परिवार सह जयपुर पदार्पण हुआ और यहां श्राविकाश्रम स्थापित करने की प्रेरणा की। तदनुसार यहां के गणमान्य श्रावक-वर्य श्री [illegible] सा. [illegible], [illegible] सा. [illegible], श्री [illegible] सा. [illegible], श्री [illegible] सा. [illegible], श्री [illegible] सा. टांक,



सच्चे समाज सेवी !

भाई जी का मेरे प्रति बहुत स्नेह था। वे हर व्यक्ति के सुख और दुःख में काम आते थे। स्वर्गीय भाई अभयकुमार का सहपाठी होने के नाते उन्होंने मुझे भाई का प्यार दिया। वे सच्चे समाजसेवी थे। उन्होंने हजारों नवयुवकों को जवाहरात का धधा सिखाकर काम मे लगाया। शिक्षा के प्रति उनकी विशेष रुचि थी, राजनीति मे भी उनका विशेष स्थान था। प्रजामडल के काय में भी वे आगे होकर कार्य करते थे। राजस्थान ने व जयपुर शहर ने एक विशिष्ट सेवाभावी, समाजसेवी—पर दुःख कातर—व्यक्ति को खो दिया, जिसकी पूर्ति होना मुश्किल है।

—श्री गोकुलप्रसाद शर्मा, बम्बई हास्पिटल, बम्बई

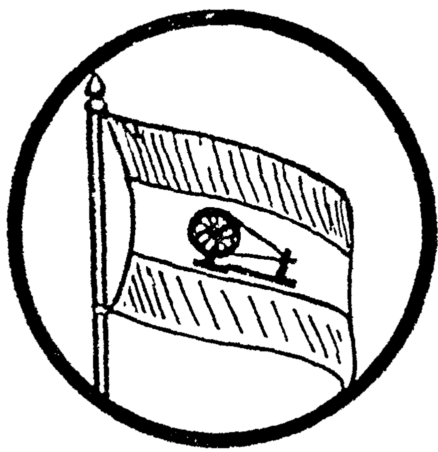
श्री रूपचन्दजी लूणिया आदि महानुभावो ने प्रेरणा को शिरोधार्य कर यहाँ उक्त सस्था की स्थापना मात्र 5 श्राविकाओं को लेकर की गई। इसी को वृहद् रूप देने की भावना से कन्याशाला बनी। अन्त मे सारा भार श्री राजरूपजी सा ने अपने ऊपर लेकर सस्था का नाम वीर बालिका विद्यालय रखा और श्री हीराचन्दजी वद को सयुक्त मत्री बना कर इसकी उन्नति मे तन, मन, धन से इतनी लगन से जुट गये कि आज वह विराट रूप धारण कर शिशु प्राथमिक, माध्यमिक और महाविद्यालय के रूप मे जन-सेवा कर रहा है। इसका सारा श्रेय राजरूपजी सा को है।

साधु-सतो की सेवा मे भी वे तन, मन, धन से तत्पर रहते थे। सामान्य आहार, पानी की सेवा से लेकर चिकित्सा कराना, औषधि स्वय के यहाँ की मूल्यवान पिष्टिया, रस रसायनादि भी बिना किसी साम्प्रदायिक भेद भाव के भेंट किया करते थे। पूज्या परम विदुषी श्री विनय श्री जी म सा से आपने धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया था। पूज्या स्व श्री विचक्षण श्री जी म सा आदि के साथ प्राय ज्ञान-चर्चा करने अवश्य आया करते थे। कई जिज्ञासाओ का समाधान पाकर परम प्रसन्न होते थे।

साधु-साध्वियो के विहार मे भी वे कई मीलो तक आते-जाते रहते थे। उनकी देव, गुरु, धर्म के प्रति अटल श्रद्धा, भक्ति, निश्छल सेवा, जिज्ञासा पूर्ण तत्त्व चर्चा, विनम्रता आदि ऐसे अनुकरणीय गुण हैं, जो हरेक व्यक्ति मे नही मिलते।

वे आज हमारे बीच नही हैं किन्तु उन्ही का पदानुसरण करने वाले उनके सुयोग्य सुपुत्र उनके स्थान की सुपूर्ति कर रहे हैं।

शासन देव उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। वे शरीर रूप मे हमारे सामने नही हैं पर उनका नाम और उनके काम चिरकाल अमर रहेंगे।□



देश तथा समाज के विनम्र सेवक

• श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी
वयोवृद्ध हिन्दी-सेवी और वरिष्ठ पत्रकार

अपने चौरासी वर्ष के जीवन-काल मे मैं लाखो ही लोगो के सम्पर्क मे आया हूँ, हजारों ही से मेरा परिचय भी हुआ है, परन्तु उनमें से बहुत थोड़ी ही विभूतियो का प्रभाव मेरे मन और मस्तिष्क पर इतना पड़ा है जितना स्व. राजरूपजी टांक के व्यक्तित्व का। शेष मे से अधिकाशत: विस्मृति के गहरे गर्त मे गिरकर लुप्त भी हो चुके है।

जयपुर के ही नही, राजस्थान के सुप्रसिद्ध तथा सम्पन्न जौहरी होते हुए भी आप जीवनपर्यन्त राष्ट्र और समाज की सेवा मे ही जुटे रहे हैं।

वर्तमान शताब्दी के चौथी दशाब्दी के दौरान राजस्थान के अन्यान्य राज्यो के साथ जयपुर राज्य में भी जनचेतना का उदय हुआ और यहाँ प्रजातन्त्र नाम से राजनीतिक संगठन की स्थापना हुई। जिसमें आपने तन, मन और धन से पूर्ण सहयोग दिया और वर्षों तक उसके कोषाध्यक्ष भी बने रहे। तदनन्तर सन् 1948 में जब प्रजामण्डल आदि के स्थान पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अस्तित्व में आई, तो आप उसमें भी उतने ही उत्साह से भाग लेते रहे। उस समय सन् 49 के लगभग जब इन पंक्तियों का लेखक उक्त कांग्रेस कमेटी का प्रधान मन्त्री मनोनीत होकर जयपुर आया तो उस हैसियत से आपसे समय-समय पर मिलते-जुलते रहने के अधिक अवसर प्राप्त हुए, और तभी मैं आपके गुणो और विशेपताओं से परिचित होने मे समर्थ हुआ था। एक समृद्ध और सम्पन्न परिवार का सदस्य और जीवन की सभी सुविधाओं से युक्त होते हुए भी आप सदैव सादा जीवन और उच्च विचारधारा का पालन करते रहे थे।

स्वयं उच्च कोटि के रत्न-पारखी और रत्न व्यवसायी होने के साथ-साथ आप रत्नो के प्रचारक भी थे। रत्न-व्यवसाय से संबंधित आपकी रचित पुस्तकें अमेरिका आदि विदेशो मे काफी लोकप्रिय हो गई थी।

इतना ही नही, आपने रत्न-व्यवसाय मे सैकड़ों ही लोगों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया था, जिससे वे स्वतन्त्र रूप से अपना धंधा कर सकें।

जहां तक आपकी सार्वजनिक प्रवृत्तियों का संबंध है, आप उनमें भी सदैव सक्रिय बने रहे। विशेषतः आप अपने द्वारा स्थापित वीर बालिका विद्यालय, भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति और राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ के,



समन्वयवादी विचारक

• श्री टाक सा० प्रमुख समाजसेवी, अद्वितीय गुणों के धारक—सहृदय, सामाजिक, समन्वयवादी विचार के प्रबल पोषक थे। समाज को मानवतावादी विचारों की ओर अग्रसर करने वाले प्रमुख प्रेरक थे।

—श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

संस्थापक सदस्य अपने जीवन के अन्त समय तक रहे थे।

अपने व्यक्तित्व, जीवन और व्यवहार में आप अत्यन्त विनम्र, उदार, दयालु, मिष्टभाषी और मिलनसार थे। जैन धर्म के प्रति आपकी अत्यन्त आस्था और पूर्ण निष्ठा थी। साथ ही आप अन्य धर्मों का भी समान रूप से आदर करते थे।

आप प्रबल समाज सुधारक भी थे, इसकी परिचायिका उस घटना को आजकल बहुत कम लोग ही जानते होंगे, जब आपने जयपुर में एक महिला को सती होने से बचाकर उसके जीवन की रक्षा की थी।

यह घटना सन् 1952 की है। उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल थे। उस समय अग्रवाल समाज के एक व्यक्ति के मर जाने पर उसकी विधवा पत्नी को सती कराने की पूरी तैयारी कर ली गई थी और उसको शवयात्रा के साथ चांदपोल बाजार के श्मशान पर बड़ी धूमधाम से ले जाया जा रहा था, पूरे मार्ग में बड़ा हुजूम था, अनेक लोग नारियल उछालते और "जय सतीमाता" के नारे साथ लगाते चल रहे थे। जब यह सूचना श्री राजरूपजी टाक को मिली तो आपने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल को फोन करके उनसे इस नृशंस नरसंहार को रुकवाने का अनुरोध किया।

पालीवालजी ने तत्काल उस ओर कड़ा कदम उठाया। आपने पुलिस के उच्च अधिकारी को यह आदेश दिया कि वह पूरी फोर्स लेकर शवयात्रा को मार्ग में ही रोक दें, और चांदपोल दरवाजे को बंद करादें। आपने यह भी ताकीद दी यदि इस कार्य में दस पांच आदमी मर भी जाते हैं तो भी महिला को बचाने के लिए ऐसा करना चाहिए। पुलिस अधिकारी ने वैसा ही किया, उसने सशस्त्र पुलिस दल द्वारा आगे बढ़ते हुए कठोर शब्दों में आदेश दिया कि "या तो समूची भीड़ छँटकर वापस लौट जाए, अन्यथा सबको गोली से भून दिया जायगा।" इस चेतावनी के मिलते ही वह जन समूह वहां से गायब हो गया। केवल मृतक व्यक्ति के परिवारजन ही उस शव को श्मशान में दाह करने को ले गये और महिला को पुलिस संरक्षण में सकुशल उसके घर पहुँचा दिया। इस प्रकार श्री टाक की सूझबूझ से उस निरीह और निर्दोष महिला की जान बच गई, जिसके लिए बाद में वह उनका धन्यवाद देती रही थी।

प्रियंवदा सदन,
अशोक मार्ग, सी स्कीम, जयपुर



स्व. राजरूपजी टांक

एवं

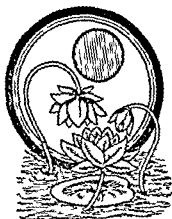
भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति

□ श्री कपूरचन्द पाटनी,
कर सलाहकार एवं समाजसेवी

आदर, प्यार एव श्रद्धा से "चाचा साहब" के नाम से सम्बोधित स्व. टाक साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। जयपुर की अनेकानेक सेवोन्मुख सार्वजनिक संस्थाओ से आप जुडे हुए थे। भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति उनमे से एक प्रमुख संस्था है।

भगवान् महावीर का 2500वे निर्वाण वर्ष बीसवी सदी मे जैन शासन की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। अहिंसा के अग्रदूत भगवान् महावीर का निर्वाण वर्ष 1973-74 मे अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अत्यन्त उल्लास के साथ मनाया गया। देश में केन्द्रीय एवं विभिन्न राज्य सरकारों ने जैन समाज एवं सरकारी प्रतिनिधियो की संयुक्त समितियाँ गठित कर पूरे वर्ष के लिए प्रभावशाली कार्यक्रम तैयार किया। जिसके लिए समुचित आर्थिक राशि भी उपलब्ध की गई। राजस्थान प्रान्त निर्वाण वर्ष मनाने मे प्रमुख रहा। भगवान् महावीर का 2500वां निर्वाण समारोह समिति का गठन किया गया जिसमे स्व. श्री राजरूपजी टांक सम्मिलित थे। राज्य सरकार ने 10 लाख की राशि इस कार्य हेतु आवंटित करने की घोषणा की। इस राशि में से 2 लाख की राशि इस शर्त के साथ अलग रख ली गयी कि जैन समाज द्वारा इतनी ही समरूप अभिदाय राशि के रूप में एकत्रित कर एक कोष की स्थापना की जाये, जिसके द्वारा विकलांगों को कृत्रिम अंग निःशुल्क उपलब्ध कराये जावे।

मुझे भी भगवान् महावीर निर्वाणोत्सव समिति का सदस्य बनने का सौभाग्य मिला था। मैं उन सदस्यों मे से था जिनका मानना था कि राज्य सरकार ने एक हाथ से 10 लाख की राशि स्वीकृत की तथा दूसरे हाथ से तुरन्त 2 लाख रुपये वापिस रख लिये। विकलांगों को कृत्रिम अग उपलब्ध कराये जाने के कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा के अभाव मे कार्यक्रम की उपादेयता मे सदेह था। किन्तु स्व. टांक साहब जिनका जौहरी बाजार स्थित निवास स्थान निर्वाण समारोह समिति की गतिविधियो का केन्द्र बन गया था तथा जो स्वय इस कार्यक्रम का संचालन करने मे अग्रसर थे, ने कहा कि विकलांग भाइयो को कृत्रिम अग उपलब्ध कराना तथा उनको आत्म-निर्भर बनाना भगवान् महावीर के सिद्धान्तो के अनुकूल होगा। सभायें, जुलूस व अन्य आयोजन होंगे जो वर्ष समाप्ति के बाद विस्मृत हो जायेंगे। विकलांगो की सहायतार्थ स्थापित कोष एक स्थायी कार्य होगा जिसके द्वारा विकलांग बन्धुओं की



नियमित स्वाध्यायी !

○ श्री टाक सा का समस्त जीवन जैन विद्या के प्रचार-प्रसार एव पीडित मानवता के लिये समर्पित रहा। वे नियमित स्वाध्यायी थे और जैन तत्त्वज्ञान को उन्होने जीवन में उतारा था। उनके लिये सच्चा ज्ञान पुस्तको मे नही, प्राणी मात्र के प्रति समभाव एव दु खियो के प्रति करुणा, सहानुभूति एव सेवाभाव मे था।

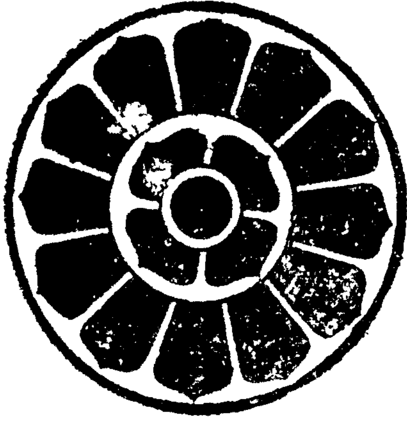
—डॉ० नरेन्द्र भानावत, महामन्त्री
श्री अखिल भारतीय जैन विद्वत परिषद्, जयपुर

निरन्तर सहायता होती रहेगी। भगवान् महावीर का 2500वा निर्वाण वर्ष अमर हो जावेगा। यह कमजोर वर्ग की सेवा का अभूतपूर्व कार्य होगा। अत सरकार द्वारा उक्त प्रस्तुत प्रस्ताव का विरोध नही किया जाना चाहिये वरन् यह स्वागत योग्य है। रही समाज द्वारा समरूप अभिदाय राशि एकत्रित करने की शर्त पूरी करने की बात। स्व टाक ने दृढता पूर्वक कहा कि समाज इस कार्य म उदारतापूर्वक सहयोग करेगा। हुआ भी यही। मानन फानन मे 2 लाख की राशि समाज म एकत्रित हो गई। इस प्रकार से भगवान् महावीर विकलाग सहायता समिति के गठन के प्रस्ताव को स्वीकृति कराने तथा क्रियान्विति म स्व टाक साहब का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

श्री भगवान् महावीर विकलाग सहायता समिति की स्थापना 30 मार्च, 1975 मे हुई। श्री राजरूपजी टाक इसके सस्थापक सदस्यो मे से थे। आप समिति मे प्रारम्भ से ही उपाध्यक्ष पद पर रहे। दिनाक 13 मई, 1984 से इन्होने अध्यक्ष के पद का भार सम्भाला तथा दिनाक 31 मार्च, 1987 तक इस पद को सुशोभित किया। इनकी निरन्तर अस्वस्थता के कारण इन्हे अध्यक्ष पद भार से मुक्त कर परम सरक्षक पद से सम्मानित किया। जिस पर यह दिवगत होने तक रहे।

श्रीमान् टाक साहब का योगदान समिति के विकलागो के सेवा कार्य मे चहुमुखी प्रगति मे अभूतपूर्व रहा है। जब तक वे स्वस्थ रहे, समिति म समय समय पर पधार कर मार्गदर्शन करते थे तथा विकलागो की समस्याओ को समझकर समाधान करते थे। उनकी अभिरुचि इस सस्था के कार्य मे स्मरणीय रहेगी। इन्होने समिति को सुदृढ करने के लिये निजी योगदान तो दिया ही, अन्य प्रयास भी किये।

भगवान् महावीर विकलाग सहायता समिति के नाम के साथ स्व श्री राजरूपजी टाक तथा उनका योगदान सदैव याद रहेगा। उसे भुलाया नहीं जा सकता। □



राजरूपजी

—जिन्हें जमाना याद करता रहेगा

• श्री तेजकरण डंडिया
प्रमुख शिक्षाविद् एव समाजसेवी

मौत उसकी है जिसका जमाना करे अफसोस ।
यों तो दुनिया में सभी आए हैं मरने के लिए ।।

स्वर्गीय श्री राजरूपजी टांक ऐसी ही हस्तियो में से एक थे, जिनको जमाना याद करता रहेगा और जिनका अभाव हमेशा खटकता रहेगा। समाजोपयोगी कौन सा ऐसा क्षेत्र है जो उनके प्रभाव से अछूता रहा हो? शिक्षा, समाज कल्याण, स्काउटिंग, विधवाओ, विकलांगों, मूक वधिरो, नेत्रहीनो की सहायता, वेरोजगारो को रोजगार, साहित्य रचना या शोधकार्य आदि सभी मे किसी न किसी रूप मे उनका योगदान रहा।

प्राथमिक स्तर से प्रारम्भ होने वाली सस्था वीर वालिका विद्यालय का आज का महाविद्यालयीय स्वरूप उनके शिक्षा प्रेम, उनकी उदारता और उनकी सूझबूझ का एक जीता जागता उदाहरण है। वे न केवल इस संस्था के मंत्री ही थे अपितु वे ऐसे व्यक्ति थे जो इसके सब कुछ होते हुए भी अपने आपको कुछ नही समझते थे। सफलता का श्रेय दूसरों को ही देना उनकी आदत वन गई थी। वे व्यवसाय से रत्न-पारखी थे और इसमे उन्होंने अद्वितीय सफलता प्राप्त की थी परन्तु व्यक्तियों को परख करने मे भी वे कम नही थे। यही कारण है कि वीर वालिका विद्यालय को उत्तम से उत्तम प्रधानाचार्यो और शिक्षको का लाभ सदैव मिलता रहा और यह संस्था निरन्तर फूलती और फलती रही।

धुन के पक्के टांक साहव जव किसी काम को करना विचार लेते थे तो उनको न अपने स्वास्थ्य का ध्यान रहता था न वाधाओ का भय। जो करना चाहते थे वो कर ही गुजरते थे।

एक वार विद्यालय की छात्राओं का एक शिविर आमेर मे लगाया गया था और टांक साहव ने मुझसे यह चाहा था कि मै शिविरार्थियो को सम्बोधन करूँ। संयोग कुछ ऐसा हुआ कि सम्बोधन के समय के वहुत पहले से ही वारिश ने अपना खूव रंग जमा रखा था। टेलीफोन व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाने से टाक साहव मे सम्पर्क नही हो सका और मै यह समझ वैठा था कि आमेर जाना स्थगित हो गया होगा परन्तु देखता क्या हूँ कि आधे घण्टे पहले ही टांक साहव की कार गेट पर मेरा इन्तजार कर रही है। वारिश होते हुए भी कार्यक्रम समय पर हो ही गया।

विद्यालय के कार्यक्रमो मे कई वार भाग लेने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। मेरे लिए यह सुखद आश्चर्य था कि टांक साहव जैसा व्यस्त व्यक्ति अस्वस्थ होते हुए भी इन कार्यक्रमो मे उपस्थित



अनुकरणीय दान !

- राजरूपजी टाक ने दोनो नेत्र मृत्यु पश्चात् केन्द्र को उपहार स्वरूप दान मे देने की कृपा की।
- यह दान जहा अनुकरणीय है, वही औरो के लिए प्रेरणास्रोत भी है। अन्तिम समय मे यह दान समाज सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

—महावीर इन्टरनेशनल नेत्र प्रत्यारोपण केन्द्र, जयपुर

रहकर शिक्षक और शिक्षार्थियो को प्रेरणा प्रदान करते थे। अपनी इस आत्मीयता से वे सहज रूप मे जन सहयोग भी प्राप्त कर लेते थे।

न केवल अपने विद्यालय के लिए अपितु किसी भी सस्था के लिए अपनी सेवाएँ देने मे उन्हे प्रसन्नता होती थी। एक बार उनकी तबियत कुछ नरम थी, मैं उनसे मिलने गया था। बातो ही बातो मे महावीर स्कूल की एक समस्या का जिक्र छिड गया। जहाँ काम अटका हुआ था, सयोग से वह व्यक्ति टाक साहब का परिचित निकला। फिर क्या था टाक साहब खडे हो गए और मेरे मना करने पर भी उनसे जाकर मिल ही लिए और समस्या हल हो गई।

टाक साहब के मन मे करुणा की भावना थी। सौभाग्य से वे सम्पन्न भी थे और उदार भी थे। परन्तु उनकी कोशिश यह रहती थी कि पात्र मे हीनता की भावना न पनपे, वह सदा पराश्रित न रहे। एक बार एक व्यक्ति किसी विधवा को सहायता दिलाने के लिये उनके पास पहुचा। टाक साहब ने सहानुभूति दर्शाते हुए कहा कि "इस प्रकार की थोडी सी आर्थिक सहायता से कब तक काम चलेगा। उसके लिए कोई काम बता देते है, वह उसे करे और अपने पैरो पर खडी हो" और ऐसा ही हुआ।

समाज के सैकडो बालक बालिकाओ को बेरोजगारी के दुष्चक्र से हटाकर रोजगार सर कर देने का श्रेय टाक साहब का प्राप्त है। आज इनके द्वारा बनाए गए ये लोग स्वय मे न केवल समर्थ है अपितु दूसरे कई लोगो को अपने समान समर्थ बना देने की एव समाजोपयोगी कार्यों मे योगदान देने की क्षमता रखते हैं।

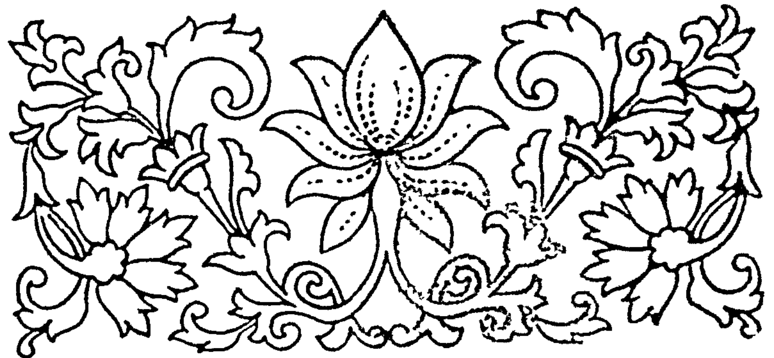
यह सच है कि श्री राजरूपजी टाक हमारे बीच मे आज नही रहे परन्तु उन्होने अपना जीवन अच्छी तरह जीया है और जो कुछ उन्होने किया है, वह चिरकाल तक उनकी याद ताजा बनाए रखेगा। कौन कहता है कि राजरूपजी टाक मर गए, वे तो अमर हो गए।

मरने वाले मरते हैं लेकिन फना होते नहीं।
वे हकीकत मे कभी हमसे जुदा होते नहीं।।

ऐसे स्व श्री राजरूपजी टाक के प्रति अपनी आदरपूर्ण श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनकी दिवगत आत्मा के लिए शान्ति प्रार्थना के साथ—

बी-18, राजेन्द्र मार्ग
बापू नगर, जयपुर-302 015

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के जीवन्त प्रतिमान



• श्री ज्योतिकुमार कोठारी

पूज्य चाचा साहिब के जीवन के अन्तिम वर्षो मे मुझे उनके साथ रहने का गौरव प्राप्त हुआ। एक ओर यह मेरा दुर्भाग्य ही था कि उनकी असाता, वृद्ध एवं रुग्णावस्था मे ही मुझे उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ, वह भी बहुत ही अल्प समय मात्र 5 वर्षो के लिए। परन्तु दूसरी ओर मेरा यह परम सौभाग्य रहा कि इस समय आपकी निकटस्थ अतरगता मिली। मेरे प्रति चा'साहब के वात्सल्य के लिये 'पितातुल्य' शब्द शायद पर्याप्त नही है। लेकिन उन्हे यदि 'मां' के स्थान पर रखा जाये तो शायद उचित मूल्यांकन होगा।

आपका सामाजिक, व्यापारिक, राजनैतिक जीवन अत्यन्त गौरवशाली था। परन्तु आपके अंतरग आध्यात्मिक जीवन के प्रकाश का ये सब एक तुच्छातितुच्छ अशमात्र ही था।

आपके आध्यात्मिक जीवन का वर्णन करने में मैं तो सर्वथा असमर्थ ही हूँ, परन्तु कहे वगैर रह भी नही सकता हूँ।

पू. आचार्य हरिभद्र सूरि ने 'ललित विस्तरा' नामक ग्रन्थ मे तीर्थंकरो के पूर्व जीवनी की विशेषता बताते हुए उन्हे "परोपकार व्यसनी कृतज्ञता पनमः" बताया है। आपको भी मानो परोपकार करने का महाव्यसन था। मैं भी सदा छाया की तरह आपके साथ रहता था। अपनी क्षुद्रवृत्ति के कारण अनेक बार उनके परोपकार के कार्यों को करने मे आनाकानी कर देता था और कह देता था कि क्या सभी का कार्य कर देना जरूरी है? पर इन वाक्यो से उन्हें महती पीड़ा होती थी। जिस प्रकार धन का लोभी व्यक्ति धन कमाने मे न्याय-अन्याय कृत्याकृत्य का विचार नहीं रखता, ऐसे ही आप परोपकार के कार्य मे धन, शक्ति यहाँ तक कि शरीर की भी परवाह नही करते थे। कई व्यक्ति उनके इन सद्गुणो का अपव्यवहार भी करते थे, उन्हें ये बात विदित भी थी। कहने पर सदा ये ही कहते—"तुम उनकी वृत्ति मत देखो, अपनी दया को देखो।" कितने महान् थे उनके ये शब्द।

आपकी सहिष्णुता भी बहुत उच्च स्तर की थी। विशाल परिवार और विशालतर शिष्य परिवार एवं विशालतम संस्था परिवार के साथ संयोग सम्बन्ध होने के कारण जीवन मे प्रतिनियत विषम वातावरण बनता रहता था, परन्तु आप इन परिस्थितियो मे भी सदा अविचल चित्त रहते थे। चाहे कैसा भी क्रोध का प्रसंग उपस्थित हो, आप क्षमामूर्ति ही बने रहते थे।

आपके जीवन के कुछ महान् प्रसंगो को मैं यहाँ स्मृतिनारण करना चाहूंगा।

(1) मैं यहाँ जयपुर आया, यहाँ न कोई परिचित, न कोई सम्बन्धी। श्री विनयसागरजी ने मेरा



सादगी एवं सरलता की प्रतिमूर्ति



सादगी एव सरलता की प्रतिमूर्ति श्री टाक साहव का व्यक्तित्व वहुमुखी था। चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो अथवा राजनैतिक क्षेत्र, सभी क्षेत्रों मे उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप देखी जा सकती है। सामाजिक क्षेत्र मे चाहे वह नेत्रहीनो से सम्बन्धित रहा हो अथवा शिक्षा का क्षेत्र हो, वीर वालिका विद्यालय की स्थापना तथा उसका वर्तमान स्वरूप उनके जीवन की वुलन्दियो की एक मिसाल है। व्यापार एव उद्योग के क्षेत्र में भी उनका जीवन पूर्णरूप से विकसित हुआ है।

—फडरेशन आॅफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्री, जयपुर

परिचय पू चासाव से दिया और उन्होने मुझे प० वगाल के गाँव अजीमगज से यहाँ वुला लिया। पहले ही दिन मुझे भोजन के लिए उन्होंने एक होटल म भेज दिया, साथ था उनका नाकर जिसन पैसे अदा किये। लौटकर आन पर उन्होन मुझसे पूछा खाना कैसा था ? मैंने सहज ही जवाव दिया कि होटलो मे मैं नहीं खा सकता हू। वहाँ का भोजन श्रावक के लिए खाने योग्य नहीं होता। उनका उत्तर था—"कल से तुम मेरे साथ खाओगे" ऐसा था उनका वात्सल्य और धर्म प्रेम।

(2) एक वार आप घर पर कई विशिष्ट लोगो के साथ किसी महत्वपूण विषय पर चर्चा कर रहे थे। इतने म कोई अत्यन्त क्रोधी व्यक्ति आकर आपको अपशब्द कहने लगा। हम सव कुछ कहते कि आपने शात रहने का सकेत किया। करीव एक घन्टे तक वे उस अवस्था म भी निर्विकार रहे। अन्त मे थक कर वह व्यक्ति वापस चला गया। उनके उद्गार थे—"अपनी सामायिक (48 मिनट का समभाव) हो गई।"

वृद्धावस्था शारीरिक व मानसिक श्रम एव असाता के उदय से आपका शरीर जीर्ण हो चुका था। परन्तु उसका आपको कोई दुख नहीं था। उन्हे सिफ एक ही दुख था कि इस शरीर से धर्म की साधना व परोपकार नहीं हो सकता। आपने जड व चेतन का भेद विज्ञान कर लिया था—अत सदा कहते थे, शरीर अपना काय करता है, पर आत्मा अपना कार्य नही करती है।

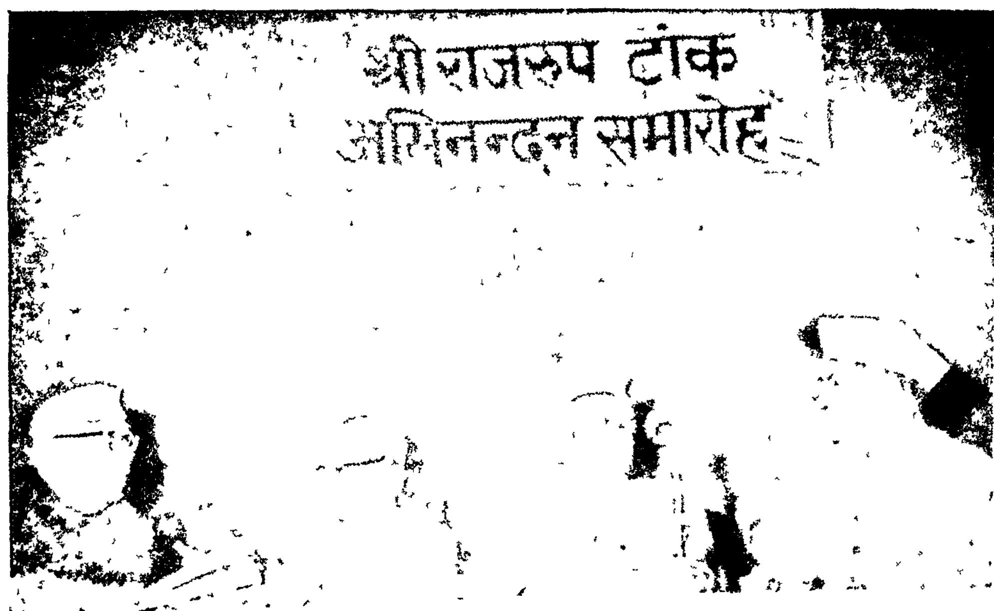
ऐसा था पू चा'साहव का दिव्य जीवन ! ☐

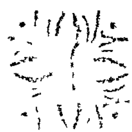
दोनों ही जयपुर के गौरव ! क्या श्री गोकुलभाई भट्ट और क्या श्री राजरूप टांक ।



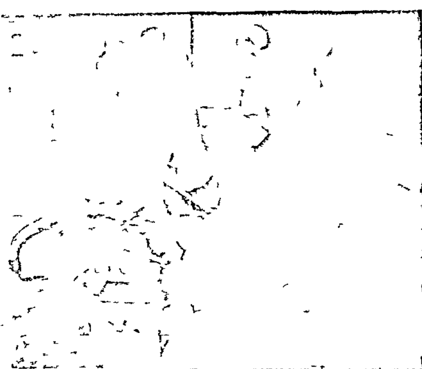


आपका अभिनन्दन समारोह राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ।

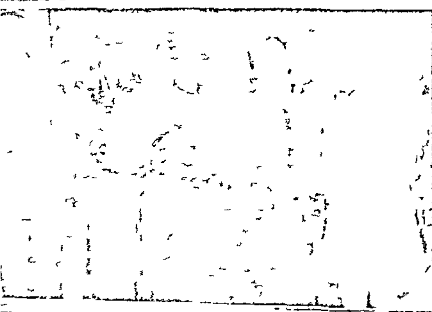








[illegible] की 63वीं [illegible] पर [illegible] सामाजिक [illegible] श्री प्रमानन्द [illegible] देनी भट।



[illegible] सामाजिक अभिनन्दन समा- [illegible] सम्मानित करते [illegible], [illegible] प्रति [illegible] श्री [illegible]।



[illegible] समारोह में [illegible] विचारक श्री राधाकृष्ण [illegible], श्री नरेन्द्र [illegible], श्री दवोशकर तिवारी आदि विद्वानों के साथ श्री राजरूप टांक।

[illegible]स्थान के राज्यपाल
[illegible] ओ. पी. मेहरा के
[illegible] मंत्रणा करते हुए
[illegible] राजरूपजी ।



[illegible]स्थान विश्वविद्यालय
[illegible] कुलपति श्री टी.
[illegible] उन्नीथान को
[illegible] की प्रगति
[illegible] निदर्शन कराते हुए
[illegible]
[illegible]
[illegible]







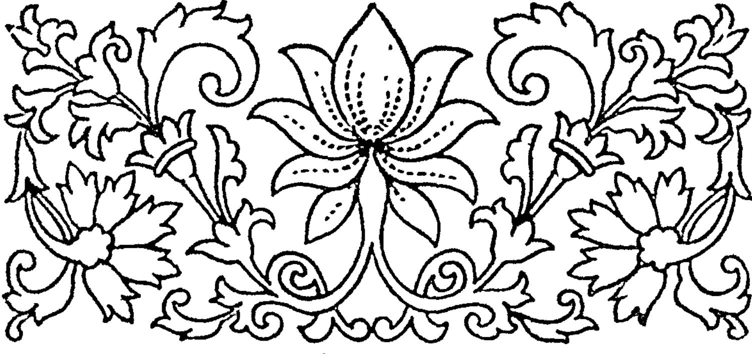
म[illegible]ालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तहत आमेर के शिविर में सातराजी की धर्मशाला के पीछे [illegible] करती हुई छात्राओ के काय [illegible] निरीक्षण करने जाते हुए श्री [illegible] साहब साथ में विधायिका सुश्री [illegible] एव प्राचार्या डॉ0 शान्ता [illegible]



बाल रश्मि सोसाइटी खोडी गॉव मे राष्ट्रीय सवा योजना इकाई की छात्राओ को सम्बोधित करते हुए श्री टाक साहब ।



महाविद्यालय के पुरस्कार वितरण समारोह में श्री टाक साहब ।



○ डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल

अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी

श्रद्धेय स्व. श्री राजरूपजी टांक देश के उन नर-रत्नों मे से थे जिनका समस्त जीवन देश, समाज एवं मानव मात्र की सेवा मे समर्पित था। वे अनेक विशेषताओं के पुञ्ज थे। उनकी दृष्टि मे न कोई छोटा था और न कोई बड़ा। अपने सहज स्नेह को वे सभी पर समान रूप से उन्ड़ेलते थे। उनका जीवन यद्यपि अनेक व्यस्तताओ से परिपूर्ण था लेकिन जो भी उनके पास किसी काम को लेकर जाता तो वे उसके लिये सहज सुलभ बन जाते और उसको सभी प्रकार का सहयोग देने में वे कभी पीछे नही हटते।

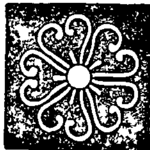
उनका निवास सामाजिक संस्थाओं की मीटिंग्स आयोजित करने के लिये प्रमुख स्थान माना जाता था। मुझे भी बीसों बार उनके यहाँ आयोजित मीटिंगो मे भाग लेने का अवसर प्राप्त होता रहता था। टाक सा. आतिथ्य के प्रेमी थे, इसलिये सभी कार्यकर्तागण उनके यहाँ जाकर उनके आतिथ्य का आनन्द लेते रहते थे। वे बड़े मधुरभाषी थे। विद्वानो, समाजसेवियो एवं कार्यकर्ताओं को वे बहुत अधिक आदर देते थे। यही कारण है उनका निवास ही नही, उनका जीवन भी सार्वजनिक जीवन बन गया था।

आदरणीय टांक सा. से मेरी प्रथम बार कब भेंट हुई, यह तो मुझे याद नही है लेकिन 25-30 वर्षों से उनका मुझे स्नेह प्राप्त होता रहा। जब कभी मीटिंगों मे वे मिलते, वे बड़ी आत्मीयता से बात करते और अपना सहज स्नेह उन्ड़ेल देते थे। वे अत्यधिक मिलनसार थे।

वे जयपुर नगर के अंगुलियों पर गिने जाने वाले सम्मानित नागरिक थे। उनकी कीर्ति एवं उनके प्रति जनसाधारण का आदर-भाव सदा उत्कर्ष को ही प्राप्त होता रहा, उसमें कभी अपकर्ष नही आ सका। वे कितनी ही संस्थाओ के संस्थापक, संरक्षक, अध्यक्ष एवं मंत्री रहे और अपने विशाल व्यक्तित्व से सभी को आगे बढाते रहे। नगर की एवं नगर के बाहर की 50 से भी अधिक संस्थाओं को योगदान देते रहना, उनके जीवन की एक बड़ी भारी विशेषता रही। आज वे हमारे बीच मे नही हैं लेकिन उनके जीवन की उपलब्धियो की इतनी बड़ी सूची है कि आगामी सैकड़ो हजारो वर्षों तक हमे उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा।

उस महान् व्यक्तित्व की धनी दिवंगत आत्मा के प्रति मैं अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूँ तथा उनकी युगों-युगो तक याद बनी रहे, यही भावना भाता हूँ। □

—अमृत कलश, किसान मार्ग, बरकत नगर, जयपुर



सेवामूर्ति श्री राजरूपजी टांक

□ श्री कन्हैयालाल लोढा

श्री राजरूप जी सा टाक के जब मैं सवप्रथम सम्पर्क मे ग्राया तो ग्रापकी सहृदयता, सज्जनता, स्नेहशीलता, सरलता व सेवाभाव से ग्रति प्रभावित हुग्रा। मैंने देखा कि ग्रापका हृदय किसी भी दु खी को देखकर करुणा स भर जाता था ग्रौर आप उसका दु ख दूर करन के लिए सक्रिय हो जाते थे। ग्राप तन मन से ही नही धन से भी उदारतापूवक उसकी पूरी सहायता करते थे। सेवा का कोई भी काय हो उसमे ग्राप ग्रपना सहयोग देने को सदा तत्पर रहते थे। किसी को ग्राजीविका दिलानी हो ग्रथवा छात्रवृत्ति देनी हो, उपचार कराना हो ग्रथवा ग्रन्य किसी प्रकार की सहायता की ग्रपेक्षा हो, ग्राप ग्रपना योगदान देने को हर समय तयार रहते थे। सेवाभाव ग्रापके जीवन का ग्रग था। ग्राप ग्रपने ग्रन्य सब काम छोडकर पहले सेवा काय करते थे। सेवामय स्वभाव होने के कारण ही ग्राप पचासो सेवाभावी सस्थाग्रो से जुडे हुए थे। कोई भी सेवा का काय सामने ग्राता ग्राप यथासम्भव उसमें सहयोग ग्रवश्य देते थे।

सेवाभाव के साथ ग्राप म ज्ञान की जिज्ञासा तथा ग्रध्यात्म की भी बडी रुचि थी। मैं जब भी ग्रापके पास जाता, ग्राप किसी न किसी प्रकार के ज्ञान व ग्रध्यात्म चर्चा छेड देत थे। वह ज्ञान निज जीवन मे कैसे उतरे, उसमे हम स्वय व ग्रन्य सब कसे लाभान्वित हो यह प्रेरणा ग्राप मे सहज ही जग जाती थी। फिर ग्राप उसे मूतरूप देने के लिए सक्रिय हो जाते। विचार को ग्राचार म उतारने, कार्यान्वित करने की ऐसी विशेपता विरलो मे ही देखी जाती है।

ग्रापने देखा कि जयपुर महानगर में ग्रान वाले धम बधुग्रो को आवास व भोजन के लिए बडी कठिनाई उठानी पडती है। इसके लिए ग्रापने एक धमशाला का निर्माण किया परन्तु ग्रापको इतने से सतोप नही था, ग्रापकी भावना थी कि यहा कोई ऐसा स्थान हो जहा ग्रागतुक बधुग्रो को ग्रावास के साथ शुद्ध, सात्विक, सादा भोजन सस्ते में मिले तथा समाज के युवक जो यहाँ कार्यरत हैं उन्हें सहयोग देकर उनके ग्रावास की व्यवस्था की जाय। इन कार्यों की पूर्ति के लिए ग्रापने प्रयास प्रारम्भ कर दिया था परन्तु ग्रापके ग्रस्वस्थ हो जान से ये काय पूण नही हो सके। ग्रब हम सब का कतव्य है कि ग्रापके इन कार्यों को सपन्न करके ग्रापकी भावना को कार्यान्वित करें। इससे ग्रापकी दिवगत ग्रात्मा को शाति व प्रसन्नता मिलेगी। यही हमारी ग्रापके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। □

ग्रधिष्ठाता, जैन सिद्धान्त शिक्षण सस्थान, जयपुर

☐ सुश्री सरोज कोचर

गुणग्राही व्यक्तित्व के धनी



27 अक्टूबर 1987 ज्ञान पंचमी का दिन। ज्ञान की आराधना करके बाजार से तीन बजे घर पहुँचने पर देखा कि सभी उदास, बेचैन एवं मौन हैं। सभी की मुख-मुद्रा को समझने में असफल होने पर मैंने अपने पूजनीय पिता श्री से पूछा—आज यह विषम स्थिति कैसे? पिता श्री ने प्रत्युत्तर दिया—पूजनीय चाचा सा. नहीं रहे।

ओह, यह क्या हो गया?
कैसे हो गया?
हृदय विदीर्ण करने वाला यह समाचार
यह वज्रपात!

नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। मेरे द्वारा इस प्रकार चीखने पर अश्रुपूरित नेत्रों से पिता श्री ने पुनः कहा—भानावत दीदी का फोन आया था। संवाद की पुष्टि के रूप में लगा कि आदरणीया आचार्या जी डॉ. भानावत दीदी का कथन असत्य नहीं हो सकता। किंकर्त्तव्यविमूढ मुझे पिता श्री पूज्य चाचा सा. के अंतिम दर्शनार्थ आटोरिक्शा में ले गये। लेकिन तब तक सब कुछ समाप्त। अंतिम दर्शन भी नहीं कर सकी। पिता श्री श्मशान भूमि की ओर अग्रसर महाप्रयाण यात्रा में शामिल होने चले गये। मैं सीढ़ियां चढने लगी। लेकिन जैसे ही ऊपर पहुँची, शून्य की ओर ताकता कमरा, एवं एक वे पंक्तियां घूमने लगीं जिन्हें मैं ही नहीं सभी चाचा साहब कहते थे और उनके लिए मैं अक्सर ये पंक्तियां दोहराती थी—

हो के मायूस तेरे दर से, कोई खाली नहीं गया।
मुरादें मिल गयी सबको, कोई खाली नहीं गया।

लेकिन आज तो सभी खाली जा रहे हैं। मूक दर्शक एवं शोकाकुल, मैं एक तरफ बैठ गयी। उनकी आत्म शांति हेतु मन ही मन में नमस्कार मंत्र स्मरण कर रही थी कि एकाएक विचार आया कि चाचा सा. के पास से आज सब खाली कहाँ जा रहे हैं, उनके पार्थिव शरीर के ही तो दर्शन नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने तो हमें जीवन को महान् बनाने हेतु बहुत ज्ञान प्रदान किया है। वे तो हमारे जीवन के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। यद्यपि चाचा सा. जन्म से जैन थे किन्तु उनके कार्य, उनके उपदेश और उनका व्यवहार किसी संकीर्णता से नहीं बधा था। जो भी उनके द्वार पर आया उसने ही उनका स्नेह और आशीर्वाद पाया। जब राजपूताना जैसे अविकसित प्रदेश में यह मान्यता

सेवामय जीवन



भाई राजरूपजी के साथ का सम्बन्ध 50 साल से भी पुराना है। उन्होंने सदा ही मुझे बड़े भाई की तरह माना। उनका पूरा जीवन सेवामय रहा। शिक्षा के क्षेत्र मे विद्यालय चलाया, अपगों के लिए पैर देने का केन्द्र बनाया, जैन समाज की सेवा तो की ही, उन्होंने सभी की सेवा की। गो-सेवा के क्षेत्र मे भी आगे रहे। राजस्थान गो-सेवा सघ के मैनेजिंग ट्रस्टी रहे। अकाल कार्यों मे सहायता दी। गाधी, विनोबा के सर्वोदय कार्यों मे उनकी सदा ही रुचि रही।

—राधाकृष्ण बजाज
अखिल भारत कृषि-गो सेवा सघ

थी कि एक घर मे दो कलम नहीं चलनी चाहिए। अर्थात् रथ के दोना पहिये रूपी स्त्री पुरुष शिक्षित नहीं होने चाहिये। पुरुष प्रधान समाज मे मात्र पुरुष ही शिक्षित हो। समाज की इस प्रकार की विषम एव दयनीय स्थिति मे परिवर्तन लाने हेतु नारी शिक्षा का अलख जगाने के लिए आपने श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान की स्थापना ही नहीं की, आजीवन मत्री पद पर आसीन रह कर पितृवत् दुलारिता, स्नेह एव आत्मीयता से इस सस्था को वट वृक्ष का रूप प्रदान किया। पू चाचा सा तो नारी शिक्षा के लिए नीव के पत्थर थे, सत्य निष्ठ कर्मयोगी थे, गुणग्राही व्यक्तित्व के धनी थे, जन हितैषी, सदाबहार व्यक्ति, अमूल्य रत्न थे। किन किन गुणो को माला मे पिरोऊ? घूमने लगे घटना चक्र।

सन् 1983 मे राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का दस दिवसीय विशेष शिविर खेडी गाव मे आयोजित किया गया। मुझ पर आपका वरदहस्त आपके प्रथम दर्शन से ही रहा, परिणामस्वरूप शिविर सम्बन्धी सम्पूर्ण योजना से अवगत कराने एव मार्गदर्शन प्राप्ति हेतु मैं आपके निवास स्थान पर गयी। वहाँ आपको अत्यधिक अस्वस्थ एव उतना ही कार्य में तल्लीन देखकर मैंने कहा—चाचा सा आपका स्वास्थ्य ठीक नही है अत आपको कार्य नही करके विश्राम करना चाहिए। आपने तत्काल कहा—उत्तम काम करते रहना चाहिये। काल की गति अत्यन्त विचित्र है। इसीलिए भगवान महावीर ने कहा था—'समय गोमय मा पमायए' उत्तम कार्य के लिए क्षण मात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। कहो कैसे आए?—यह पूछने पर उनके समक्ष मेरे द्वारा शिविर की सम्पूर्ण योजना प्रस्तुत करने पर आपने कहा—कार्य उत्तम है, लडकियो की भली भाँति देखभाल करना, कोई भी लडकी वस्त्रो के अभाव मे ठड से नहीं ठिठुरे, इसके लिए मैं वस्त्र, स्वेटर एव रजाइयो का प्रबन्ध कर दू। कितने चाहिए। उत्तम व्यवस्था हेतु यदि शिविर मे अधिक पैसा खर्च होगा तो हम प्रबन्ध कर देंगे। खाना उत्तम होना चाहिए। मैं स्वय शिविर आकर देखूगा। निर्धारित समय पर शिविर प्रारम्भ होने पर देखा कि कथनी-करनी मे अन्तर नहीं करने वाले परम पूज्य चाचा सा अत्यधिक अस्वस्थ होते हुए भी मात्र शिविर मे आये ही नही अपितु काफी समय तक रुक कर हम सभी के जीवन के विविध क्षेत्रो मे विकास करने हेतु मार्ग प्रशस्त किया।

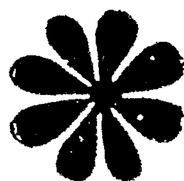
वैभव एवं विलासिता में पले आपके जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने-जानने की जिज्ञासा से आपसे मैंने एक वार पूछा—कि भौतिकता की इस चकाचौध में, वैभव एवं विलासिता में पलने पर भी आपके जीवन का प्रमुख ध्येय मानव सेवा किस प्रकार हुआ ? मुस्करा कर आपने प्रत्युत्तर दिया—कि इस शरीर रूपी मिट्टी को मिट्टी से क्या सजाना ? इस जीवन को हीरे-जवाहारात से नही सजाकर सद्गुणों से सजाना है।

वास्तव में विराट् व्यक्तित्व के धनी आपने सामान्य व्यक्ति को भी अपने प्यार से प्राणवान बनाया। स्नेह एवं अपनापन देकर दुःखी तथा संकटग्रस्त व्यक्तियों की मदद की। कार्यक्षेत्र में सबको अपने साथ लेकर चलने में आप आनन्द की अनुभूति करते। सेवा के क्षेत्र में अपने-पराये, वड़े-छोटे किसी में भी भेदभाव नही रखते। निरन्तर निष्काम भाव-सरल हृदय से सबकी सेवा करने वाले आप हमारे जीवन के प्रेरणा स्रोत है।

हम भविकों को चाहिये कि आपके द्वारा दिये गये वचनों के अनुसार अपूर्ण कार्यों को पूर्ण कर सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें। पूज्य चाचा सा. अमर हो गये। उन्होने मानव कल्याण के लिए जीवन के विविध क्षेत्रों में जो महान् कार्य किये, वे सदैव चिर-स्मरणीय रहेगे। जिन-जिन संस्थाओ से उनका सम्बन्ध रहा—उन सभी संस्थाओं मे समाज के सभी भाई-वहिन अपना सहयोग प्रदान करते रहे, जिससे ये संस्थाये पल्लवित, पुष्पति होती हुई निर्वाध गति से कार्य करें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांञ्जलि होगी। हृदय से उस महान् आत्मा के प्रति हम सभी के श्रद्धा सुमन अर्पित है। पुनश्च—

स्तुत्य है, आप साध्य है, जो अनाम है,
गति है, गणतव्य है, आप ही विराम है।
सृष्टा की शक्ति है या महाप्राण है,
नींव के पत्थर आपको शत-शत प्रणाम है।।

—प्राध्यापिका, संस्कृत विभाग
श्री वीर वालिका महाविद्यालय, जयपुर





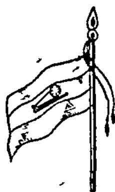
जयपुर-रत्न

व्यापारी समाज में उनकी सेवा वहुत उल्लेखनीय रही, उन्होंने कितना श्रम किया, जयपुर बाजार को एक प्रख्यात नाम दिया। चाचा साहब "जयपुर-रत्न" के रूप में हमेशा-हमेशा के लिये अमर रहेंगे, सारा समाज व परिवार उन्हें हमेशा-हमेशा के लिये याद करता रहेगा।

—विजय डायमण्ड्स, बम्बई

☐ श्री सिद्धराज ढड्ढा

स्वाधीनता सेनानी राजरूप टांक

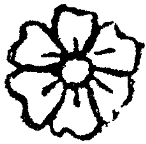


श्री राजरूपजी टाक का व्यक्तित्व इतना बहुमुखी था कि उसके किस पहलू को महत्त्व दिया जाय और किससे प्रारम्भ किया जाय, यह तय करना मुश्किल है। उनका मेरा सम्बन्ध तो सामाजिक और सावजनिक कार्यों से परे, व्यक्तिगत मैत्री का भी था। दोनो एक ही शहर के रहने वाले, एक ही समाज के अग ! लेकिन हम लोगो ने कभी अपने समाज को न सकुचित दृष्टि से देखा न समझा। समय शक्ति, साधन आदि की दृष्टि से व्यक्ति को अपने काम की मर्यादा बाधनी पडती है, यह बात अलग है लेकिन श्री राजरूपजी की दृष्टि किसी दायरे से बधी हुई नही थी। बिना किसी भेदभाव के उनकी उदारता का स्पर्श हर क्षेत्र को होता था।

फिर भी किसी एक सस्था के साथ उनका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था तो वह वीर बालिका विद्यालय। 60 वष से ऊपर हुए तब वीर बालिका शिक्षण सस्थान की स्थापना हुई थी और श्री राजरूपजी का सम्बन्ध इस काम से शुरू से ही रहा और वह अन्त तक कायम रहा। यह कहना मुश्किल है कि अगर श्री राजरूपजी की प्रेरणा, उनका अभिक्रम, उनकी मदद और उनका समथन प्राप्त न हुआ होता तो क्या इस शिक्षण सस्थान का स्वरूप आज जैसा होता ?

वीर बालिका विद्यालय के साथ साथ जिस दूसरे काम मे शुरू के दिनो मे श्री राजरूपजी का योगदान रहा, वह था जयपुर राज्य प्रजामण्डल। श्री राजरूपजी शुरू से ही गाधीजी के विचारों स प्रभावित थे। खादी का उनका व्रत था ही। प्रजा मण्डल के प्रारम्भिक दिनो मे ही उनका सम्पक स्व प हीरालालजी शास्त्री से हुआ। श्री राजरूपजी प्रजा मण्डल के एक मूक समथक और सेवक थे। सकट की हर घडी म उनकी मदद तैयार रहती थी। प्रजामण्डल जैसी राजनीतिक सस्था की गतिविधि के साथ जुडना सहज का काम तो था ही पर उसकी कमी श्री राजरूपजी मे नही थी। इस समय मुझे यह तो स्मरण नहीं है कि जयपुर राज्य प्रजामण्डल की ओर से जो सत्याग्रह हुआ था, उसमे वे शरीक हुए थे या नही। पर वे बराबर उसकी गतिविधियो से जुडे रहे, यह स्पष्ट है। वर्षों तक वे प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष भी रहे।

प हीरालालजी शास्त्री को अन्य अनेक नौजवानो की तरह हम लोग भी अपना गुरु और माग दशक मानते थे। राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से शास्त्रीजी ने जब वनस्थली का काम शुरू किया तो उसम भी श्री राजरूपजी का सक्रिय सहयोग मिलता रहा। वास्तव मे ऐसी कोई सावजनिक



वयोवृद्ध समाजसेवी

☐ आप जयपुर के वयोवृद्ध समाजसेवी, देशभक्त, प्रमुख जौहरी व कुटीर उद्योगपति थे। आपने करीब एक हजार लोगों को रत्न व्यवसाय में दक्ष कर स्वावलम्बी बनाया। जयपुर राज्य की प्रथम विधान सभा के आप सदस्य बने व नगर परिषद् के वर्षो तक सदस्य रहे। युवावस्था में ही आप प्रजामण्डल में आ गये और कई वर्षो तक उसके कोषाध्यक्ष रहे।

—जयपुर चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री

प्रवृत्ति जयपुर मे शायद नही थी जिसके साथ सम्पर्क में आने पर उन्होने उसकी मदद न की हो। जयपुर का अनाथालय, नेत्रहीन कल्याण संघ, आदि प्रवृत्तियों को उन्होंने प्रोत्साहन दिया और उनके संचालन मे मदद दी। इसी प्रकार भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के संस्थापक सदस्य और अध्यक्ष रहे।

व्यवसाय से वे जौहरी थे और उस क्षेत्र मे भी वे अग्रणी रहे। इस क्षेत्र मे उनकी दिलचस्पी केवल व्यापार तक सीमित नही रही। रत्नो के पारखी तो वे थे ही, रत्नो के शास्त्र का अध्ययन और जानकारी भी उनकी बहुत विस्तृत तथा गहरी थी। रत्नों के सम्बन्ध मे लिखी हुई उनकी पुस्तक विदेशो मे भी दिलचस्पी के साथ पढ़ी जाती है और एक संदर्भ ग्रन्थ के तौर पर उसका इस्तेमाल होता है। इस क्षेत्र मे उनका सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने इस क्षेत्र मे सैकड़ो नौजवानो को रत्न सम्बन्धी उद्योग और व्यापार मे रोजगार दिया और प्रवेश दिलाया। जयपुर के जौहरी व्यवसाय से सम्बन्धित लोगो मे आज सैकड़ो ऐसे व्यक्ति होंगे जो कृतज्ञता के साथ उनका स्मरण करते हैं। दुःखियो के प्रति करुणा श्री राजरूपजी का एक विशेष गुण था। किसी भी पीड़ित, दुःखी, विकलाग व्यक्ति को देखकर उनका दिल पसीज जाता था। राजस्थान में अकाल, अग्निकांड आदि से पीड़ित लोगो की सहायता के लिए जो राजस्थान रिलीफ सोसायटी बनी, उसकी स्थापना मे भी उनका पूरा योगदान था। वे उसके मंत्री रहे।

सार्वजनिक कार्यों और सम्बन्धो की बात से अलग, उनके जीवन का एक आकर्षक पहलू था उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध। वे बहुत खुश-मिजाज और विनोदी थे। उनके पास आकर कोई भी, चाहे छोटा हो या बड़ा या उनकी हम-उम्र, मुंह फुलाये नही रह सकते थे। वे खुद हँसते थे और दूसरो को हँसाते थे। व्यक्तिगत सम्बन्धो मे बहुत मधुर, दुःख-दर्द मे काम आने वाले एक मित्र का हृदय उन्हे मिला था। ऐसे व्यक्ति के सान्निध्य और मित्रता का अनुभव जिनको हुआ है, वे इसके साक्षी होंगे। ऐसे सब लोगो को उनकी स्मृति सुख देती रहेगी। ☐

• श्रीमती पुष्पलता जैन



□

शुभ्र व्यक्तित्व : निर्मल मन

'धन्य जन्म जगती तल तासू,
परहित सब निछावर जासू।'

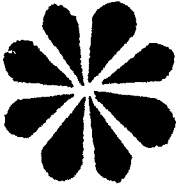
विश्व की प्रसिद्ध रत्न नगरी जयपुर के प्रसिद्ध जाने माने प्रतिष्ठित रत्न पारखियों में महकते मुस्कराते पूजनीय चाचा साहब ने परहित को जीवन का लक्ष्य बनाया। उन्होंने दीन दुखियों के जीवन में सरसता का सचार किया, लोक भावना को पहचाना और स्त्री शिक्षा जगत् में एक महत्त्वपूर्ण काय किया जो था—श्री वीर बालिका विद्यालय की स्थापना। वास्तव में सतत साधना सफलता को जन्म देती है, यही कारण है कि चाचा साहब श्री राजरूपजी टाक के अथक प्रयासों से आज श्री वीर बालिका सस्थान में लगभग 3500 छात्राएँ अध्ययनरत हैं। आपका हार्दिक सहयोग हमेशा इस सस्था को मिलता रहा जिसके परिणाम स्वरूप यह सस्था अपने चरम उत्कर्ष तक पहुँची। आज उनके आदर्श, उनके सिद्धान्त, मधुर हृदयों के उच्चासनों पर सुशोभित होंगे। आज उनकी स्मृति मात्र से हमारा मस्तक श्रद्धावनत हो जाता है।

उनका व्यक्तित्व महान् था। वे सादगी की मूर्ति थे। सफेद कुर्ता, सफेद टोपी और सफेद धोती उनके वस्त्र थे जो उनके शुभ्र व्यक्तित्व और निर्मल मन का परिचायक था। उनके चेहरे पर एक तेज, माधुर्य और गम्भीरता थी जो बरबस व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। जब कभी मैं उनसे मिली, वे हमेशा मधुर मुस्कराहट के साथ पूछते—"क्या बेटा! कोई दिक्कत तो नहीं और काय ठीक चल रहा है?" मैं हृदय से गद्‌गद् हो उठती और मन में उनके प्रति एक श्रद्धा की किरण जागृत हो उठती। इस प्रकार विनम्रता उनकी वाणी में टपकती थी। उनकी जैसी देशभक्ति, उनका सा अनुपम त्याग, उनकी सी विनम्रता, उनकी सी मृदुलता मिलना दुलभ है। उन्होंने मानव की पीड़ा को सुना और उसकी सहायता की। उनका हृदय कोमल व नवनीत समान स्वच्छ था। उनमें दयार्द्रता थी। किसी के सकट को देखकर उनके हृदय में करुणा उत्पन्न हो जाती थी। सहानुभूति उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। आहत पीड़ित तथा दीन दुखियों की सहायता करने में उन्हें आनन्द आता था। किसी को पीड़ित करना, किसी के प्रति अत्याचार करना, किसी के साथ अन्याय करना, झूठ बोलना, विश्वासघात करना, अपने कर्तव्य से मुख मोड़ना आदि दुर्गुणों से वे बिल्कुल मुक्त थे। वे परोपकार, सेवा, अहिंसा, सहनशीलता, न्यायप्रियता, सत्यवादिता, कोमलता, विनम्रता, सहानुभूति आदि सद्‌गुणों की खान थे। वे स्वय एक मशाल थे जिन्होंने जलकर दूसरों को प्रकाशित किया।

इस प्रकार उन्होंने पीड़ित, निराश एव अन्धकार मग्न मानवता के मानस को दैदीप्यमान कर सेवा, त्याग, दान एव सहयोग का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया जिससे जन-जन के मानस में मानवीय सवेदना, सहानुभूति व सद्‌भावना जागृत हो उठी।

आज वे अपने जीवन के आदर्श का जो प्रकाश स्तम्भ छोड़ गये हैं वह हमें सदव कल्याण का माग प्रदर्शित करता रहेगा।

अध्यापिका, श्री वीर बालिका विद्यालय



विरल विभूति

यूं तो दुनिया मे हर प्राणी जन्म लेता है, जीवन जीता है और मौत की गोद में समा जाता है किन्तु कुछ ऐसी विरल विभूतियाँ होती है जो मरने के बाद भी सबकी स्मृति मे आती है ।

उदारमना, विशालहृदयी श्री राजरूप जी टांक एक ऐसे उच्चतम व्यक्तित्व के धनी थे, जिनका व्यक्तित्व न केवल जयपुर के लोगों में ही अपितु अनेक के दिलों में छाया हुआ था ।

हालांकि विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों ने जिनकी यशोगाथा गाई होगी, मुझे इतना गाढ परिचय भी नही है किन्तु जयपुर प्रवास के स्वल्प परिचय की मधुर स्मृतियाँ पथ में आते ही लेखनी रुक न पाई ।

बात उस समय की है जब हम आठों साध्वियों की वर्षी तप की तपस्या चल रही थी । पारणा हेतु हम हस्तिनापुर की ओर प्रस्थान कर रही थीं, जब गुलाबी शहर (जयपुर) में प्रविष्ट हुए, सोच रहे कि यहाँ कितने मन्दिर होगे ? उपाश्रय कहाँ होगा ? कितना दूर ? इत्तफाक से उसी समय गाडी में बैठकर वे कही जा रहे थे, दृष्टिपात होते ही वे नीचे उतरे, सविनय पूछा—आप कहाँ पधार रही है ? हमने कहा, आत्मानन्द भवन । बोले, अच्छा, फिर सही मार्ग-दर्शन कराके आप चले गये, तब तक हम उनके नाम से भी परिचित नही थे । किन्तु उनकी आकृति से प्रतीत हुआ ये कोई जौहरी बाजार के जौहरी है । उस समय समता मूर्ति पूज्य विचक्षण श्री जी म. सा. अस्वस्थ थी । अतः हम १५ दिन रुके एवं प्रतिदिन दादावाड़ी मे उनके दर्शनार्थ जाया करते थे । इस बीच आप कई बार हमारे पास आये ।

वही भद्रिकता, सरलता, उदारता, करुणार्द्रता, वात्सल्यता आदि गुणों को पाया । हमने उनके जीवन को नजदीक से देखा, चूंकि उनका जीवन खाई की भांति था, अर्थात् उनमें विनम्र थे । जो झुकता है वही तो पाता है । पर्वत अकड़ होकर ऊपर रहता है, उसे झरना तालाब नहीं बना सकता किन्तु जो खाई बनकर रहता है उसे वह जल से सराबोर करके तालाब बना देता है । स्मृति पथ मे आ रही है वह प्यासी तश्तरी जो घड़े से कहती है—भैया आप सबको अपना निर्मल जल देकर संतुष्ट करते है, उनकी प्यास बुझाते है, जबकि मैं आपके निकट में रहती हूं तब भी मुझे आप बिल्कुल जल नहीं देते ?

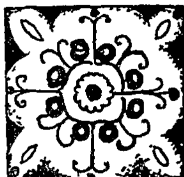
बहिन तश्तरी (Dish) की बात सुनकर भाई घड़ा बोला—बहिन मैं तो सबको देता हूं, जी भर के देता हूं किन्तु मुझे भी इस बात का दुःख है कि तू प्यासी रह जाती है, चूंकि तू मेरे सिर के ऊपर जो रहती है । बता, मै तेरी प्यास कैसे बुझा सकता हूं ?

हाँ, तो यह एक रूपक हमें दिग्दर्शन कराता है कि झुके बिना जल तो क्या कुछ भी नही मिलता, उसी प्रकार का विनम्र जीवन था हमारे श्रद्धेयरत्न श्री राजरूपजी टाक का, जो भौतिक समृद्धि में सभी प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी गुल्म वृक्ष की भांति झुके हुए विनम्र रहते थे । साधु-सतो के प्रति अपार भक्ति थी, उनके जीवन मे चाहे किसी गच्छ या सम्प्रदाय के हों, गुणानुराग से वे नतमस्तक हो जाते थे, उनकी आँखे नम जाती थी । धर्ममय जिनका जीवन था, जो मात्र कहना नही जानते, जीवन मे अपनाते भी थे । इसीलिए तो सैंकड़ों साधर्मिक बन्धुओं को उन्होंने आजीविका मे लगा दिया था । आज वो हमारे बीच नही होते हुए भी उनके गुणों की सुवास से हमे ऊर्जा प्राप्त होती है । उस दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो और हम भी सांसारिक गुणों का विकास करते हुए वे आत्मिक गुणों के, शाश्वत गुणों के उपभोक्ता बनें, यही शुभेच्छा !

—साध्वी प्रमितगुणा श्री

○ श्रीमती पुण्यवती जैन

यादों के घेरे मे



जीवन एक यात्रा है। इस यात्रा मे कितने ही लोग मिलते हैं, कुछ याद नही रहता, किन्तु कुछ असाधारण व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं, जो स्मृति पटल पर अपनी अमिट छवि अंकित कर देते है। पूज्य श्री चाचा साहब भी ऐसे ही असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। विद्यालय की प्रगति एव उन्नति आप ही के महान् प्रयासो का श्री फल है। इस विद्यालय के प्रत्येक सदस्य के साथ उनका ऐसा अपनत्व था, जिसे भुलाये नही भुलाया जा सकता।

घटना दस वर्ष पुरानी है। मई 1977 म जब मेरे पति का हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया था। मैं अचानक अथाह वेदना के सागर मे डूब गई। अपने जीवन व बच्चो के जीवन निर्वाह का गहन दायित्व था। जीवन अंधकार-पूर्ण व एकाकी हो गया था। ऐसे समय मे पूज्य चाचा साहब की संवेदना मेरे लिए वरदान सिद्ध हुई।

12 जुलाई 1977 की बात है। मैं अपने अतीत के खयालो में खोई हुई, भारी मन से विद्यालय की ओर बढ रही थी। काल के कुचक्र ने मेरे जीवन का स्वरूप, लक्ष्य और उद्देश्य ही बदल दिया था। मन मे एक झंझावात सा उठ रहा था कि अचानक एक कार के पहिये चरमराते हुए मेरे पास आकर रुके। विचार तंद्रा भग हुई, जसे ही सिर उठाकर देखा तो स्तब्ध रह गई। सामने चाचा साहब अपनी मोहनी मुस्कान के साथ कार से उतर रहे थे, पास आकर कहने लगे, "कैसी हो, कोई तकलीफ तो नही? मेरे लायक कोई काय हो ता बताना।"

इसके पश्चात् जब भी कही भी देखते, चाहे स्कूल मे या रास्ते मे सदव पूछते "कोई तकलीफ तो नही, ठीक हो।" उनका अपनापन मुझे सदव हिम्मत बधाता व मुझे ऐसा महसूस होता कि इस ससार में मरा कोई अपना है, जिसे मेरे दुःख दद का अहसास है। मन का सारा बोझ उनकी मधुर वाणी से न जाने कहा चला जाता।

आप मे एक नही अनेक महान् गुण थे। मैं उनका अपनी अल्प बुद्धि से वर्णन नही कर सकती। उनकी महानताओ को पाना मेरे लिए असम्भव है। चाचा साहब के मधुर वचनो को एव आशीर्वाद को यह विद्यालय क्या यहा का कोई सदस्य नही भुला सकता। उनके सहज, निर्मल एव पवित्र जीवन की पावन ज्योति हम अपने अन्दर प्रज्वलित करने का प्रयास करें।

यही हार्दिक श्रद्धाजलि उस महान् पुरुष के लिए होगी।

"जब तू आया जगत मे,
जग हँसा, तू रोया।
ऐसी करनी कर चला,
तू हँसा, जग रोया।"

—अध्यापिका, वीर बालिका विद्यालय

'वन्दनीय है वह दीपक जो, स्वयं बुझने से पहले दूसरे दीपक को ज्योतिर्मय कर दे ।'

समाज के अनगिनत दीपों को ज्योतिर्मय करने वाले व्यक्तित्व के धनी, कुशाग्रबुद्धि, सहृदय, समाज-सेवी तथा भारतीयता के पोषक श्रद्धेय राजरूपजी टाक के विषय में कुछ लिखना यद्यपि मेरी अकिंचन लेखनी से सम्भव नही है । फिर भी उनके अपार स्नेह तथा आशीर्वाद ने मुझे कुछ लिखने की प्रेरणा दी है, इस लेखन-लोभ का संवरण कैसे किया जाए ?

श्रद्धेय टाक साहिब के सान्निध्य में मुझे पांच वर्ष कार्य करने का अवसर मिला । इस अतराल में मैंने पाया कि टाक साहिब के सम्पर्क मे जो भी आया वह उनसे प्रभावित हुए बिना न रहा । अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओ तथा छात्राओ की प्रसन्नता के लिए कुछ भी करना उन्हें प्रिय था । वे किसी को असन्तुष्ट नही देखना चाहते थे । उनके व्यक्तित्व मे न दर्प था और न आत्मश्लाघा कराने का भाव । वे तो ऐसे संत थे जो समाज को ही सब कुछ देकर, इसे उन्नत बनाना चाहते थे । मुझे याद आ रहा है, कक्षा 11 की छात्राओं का विदाई समारोह । कक्षा 11 की छात्राओं को वे भी आशीर्वाद देने पधारे थे । विदाई कार्यक्रम के अन्त मे छात्राएँ खूब रो रही थी । उन्हें रोते देखकर मैंने कहा—अब तो तुम लोग बड़ी कक्षा में जाओगी, तुम्हे इस अवसर पर खुशी होनी चाहिए, रो क्यो रही हो ? वे बोली—दीदी ! हम यहाँ से नही जाना चाहते । मैंने सहज भाव मे टालने के लिए कहा—तो टाक साहब से कहो कि वे तुम्हारे लिए यहीं कॉलेज खुलवा दें । मेरा कहना था कि छात्राएँ टाक साहिब के पास पहुँच गई, पांव पटक-पटक कर बड़े स्नेहिल भाव से कहने लगी—हमारे लिए यहीं कॉलेज होना चाहिए, हम यहाँ से नहीं जाएंगे । छात्राओ के आँसू व विद्यालय के प्रति अपार स्नेह देखकर सरल हृदय श्री टाक साहिब ने तुरन्त निर्णय दे दिया व अगले ही सत्र मे विद्यालय ने महाविद्यालय का रूप ले लिया । कितना कठिन कार्य था, किन्तु समाज-हित के लिए वे किसी कार्य को कठिन नहीं मानते थे । महाविद्यालय के लिए सुविधाएँ जुटाने के प्रयत्नों की एक लम्बी दास्तान है, किन्तु उन्होंने जो निश्चय किया, उसे कर दिखाया ।

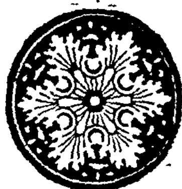
श्री वीर बालिका उ० मा० विद्यालय तथा महाविद्यालय उनकी लगन व परिश्रम का वट-वृक्ष है, जो निरन्तर समाज की सेवा करता हुआ उन्नति की ओर अग्रसर है । यहाँ के सभी कार्यकर्ता टांक साहिब के स्वप्नो को साकार करने में अपने को जी-जान से लगा कर धन्य मान रहे हैं । धन्य है वह महान् आत्मा जो अपने त्याग, श्रम व लगन से इस राष्ट्र को पुष्पित, पल्लवित व समृद्ध कर अनन्त मे विलीन हुए । अन्त मे श्रद्धा सुमन के रूप मे प्रस्तुत है कुछ पंक्तियाँ—

महामानव टांक साहिब

हे परम पूज्य !
निष्ठा, कर्मठता कार्यकुशलता के कमनीय,
कलेवर, मे शोभित तन-मन,
निस्पृह !
नीतिज्ञ, निखिलजन प्रिय, मनहर शिशुजन,
माया-ममता मे परे, नम्र अति नम्र
साक्षी है वटुको के वृन्द,
जिन्हे,
गुरु की गरिमा का ज्ञान, झुका देवें सादर शीश ।
आप थे भारत माँ के लाल,
कीजिए स्वीकृत श्रद्धा सुमन ।
यही प्रार्थना हमारी है,
यही याचना हमारी है ।

—श्रीमती इन्दरजीत कौर ओबेराय
प्रवक्ता, शिक्षा संकाय
वनस्थली विद्यापीठ

मनुज संस्कृति में कभी जन्मते ऐसे रत्न-दिवाकर हैं



• श्रीमती सुलक्षणा जैन

राजस्थान की भूमि ने कुछ ऐसी विभूतियों को जन्म दिया जिन्होंने परहित को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया तथा परहित पर सर्वस्व न्यौछावर कर दीन दुखियों के जीवन में सरसता का संचार किया। स्वर्गीय श्रीमान् राजरूप जी टांक का नाम इनमें अग्रगण्य है। इनका जन्म चिड़ावा में हुआ लेकिन नाना के यहां गोद आने के कारण उनका जीवन जयपुर में ही व्यतीत हुआ परन्तु उनका जन्म स्थान से लगाव जीवनपर्यन्त बना रहा। मुझे याद है जब हम लोग कार्यक्रम हेतु छात्राओं की एक बस के साथ झुन्झुनू गये तो आप भी हमारे साथ थे। यहीं से आप हम सब को अपनी जन्मभूमि चिड़ावा ले गये, जहां आपने हमें वह स्थान दिखाया जहां आपका जन्म हुआ था और अपने बचपन में घटित कुछ घटनायें सुनाते-2 आप आत्म विभोर हो गये।

आपका कोमल हृदय नवनीत सम था जो दयाद्रता से पूर्ण था। किसी को संकट में देखते ही आपके हृदय में करुणा का भाव उत्पन्न हो जाता था। आहत-पीड़ित तथा दीन दुखियों की सहायता करने में आपको अनोखे आनन्द का आभास होता था। आप तो आप से कोसों दूर था, कठोरता से व्यवहार करना तो आप जानते ही नहीं थे। विनय की साक्षात् मूर्ति थे, अहंकार ने तो आपको छुआ तक नहीं था। सादा जीवन, उच्च विचार आपके जीवन का लक्ष्य था। आज के इस भौतिक युग में जहां नैतिकता का पतन हो चुका है धर्म बन्धन ढीले हो गये हैं, सदाचार का स्थान कदाचार ने ले लिया है, तब भी आपका जीवन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था। आत्मबल ही आपकी शक्ति थी।

जब उद्यम और धन का संगम होता है, तो समृद्धि स्वतः पांव छूने लगती है, लेकिन आप उसकी चकाचौंध से भी विरक्त रहे। करोड़ों की सम्पत्ति के मध्य रहते हुये भी आपका जीवन त्याग और तपस्या का था। उस धन को आपने कभी ऐश्वर्य का साधन नहीं बनने दिया अपितु अनाथों के नाथ और अंधों के नेत्र बन कर उसका प्रयोग किया क्योंकि आपके हृदय में करुणा का स्रोत था, सहानुभूति थी, त्याग था, जिसका मूर्तरूप आज हमारे सामने है—अनाथाश्रम और नेत्रहीन विद्यालय। जयपुर की अनेकों संस्थाओं के आप अध्यक्ष थे। आपका अध्यक्ष होना भी उस संस्था के लिये कितने गौरव की बात थी।

निज इष्ट साधन के लिये
संसार धारा में बहे।
पर नीर से नारज सदृश उसमें,
अलिप्त बने रहे।

अपने योवन काल में आप भी गांधीजी के राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित हुये। देश प्रेम का भाव जागृत हुआ और स्वतन्त्रता सग्राम में कूद पड़े। प्रजामण्डल की स्थापना की, जिसके माध्यम मे आपने राजस्थान मे अनेक प्रशंसनीय कार्य किये।

उस समय राजस्थान मे नारी शिक्षा का अभाव था, गिने-चुने विद्यालयों में ही इस शिक्षा का कुछ प्रबन्ध था। आपने नारी शिक्षा के लिये विद्यालय की स्थापना की जहां अविद्या के अधकार मे पड़ी हुई नारी को ज्ञान के आलोक मे लाकर खडा किया,। यह वही प्राइमरी विद्यालय है जो आज कालेज का रूप धारण कर चुका है। इस स्थिति तक पहुँचने का श्रेय आपको ही जाता है क्योंकि आपके सतत प्रयासो के कारण ही यह आज विशाल वट वृक्ष के रूप में है, जिसे आपने तन, मन और धन से सीचा। अपने जीवन काल मे रत्न विद्यार्थियो द्वारा अभिनन्दन मे मिली 63 हजार की राशि आपने उसी समय विद्यालय को भेंट दे दी। ऐसी घटनायें बताती है कि विद्यालय से आपका लगाव कितना था। यह इस संस्था का सौभाग्य था कि उसे आपका सरक्षण एव मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आपके सेवा, त्याग, शिक्षा-प्रेम, दूरदर्शिता एवं वात्सल्य भाव से यह संस्था सदैव अनुप्राणित रही तथा चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर रही।

विद्यालय मे कार्यरत प्रत्येक कार्यकर्ता से आपका व्यवहार बिल्कुल परिवार के सदस्य के समान था। किसी भी सदस्य के सम्मुख कोई भी समस्या होती तो वह निःसंकोच आपको कह देता और आप बड़े ध्यान से उनकी समस्या सुनते व उसका निराकरण भी करते। बातों ही बातों मे एक दिन कार्यालय मे मुझ से हँसते हुये कहने लगे-सुलक्षणा जी ! आप इस क्षेत्र मे कैसे आई ? क्योंकि ओसवाल परिवार की समृद्ध परम्परायें तो इसकी स्वीकृति ही नही देती। यह उनके खुले मानस का परिचायक था कि जिसके कारण किसी को भी उनसे बाते करने मे संकोच नहीं होता था।

ऐसे ही मुझे याद है, जब हमारी पूर्व प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा अनुपस्थित थीं, आप विद्यालय मे आये और श्रीमती उर्मिला जी को ऑफिस में बुलाया। वह आकर आपके पास की कुर्सी पर बैठ गई तो आपने कहा-उर्मिला जी ! आप प्रधानाध्यापिका जी की कुर्सी पर क्यो नहीं बैठ रही क्योकि उनकी अनुपस्थिति मे आप ही उनका कार्य कर रही है। तो उर्मिला जी ने कहा—भाई साहिब, वह कुर्सी हमे कहा मिली है- तो आपने हँसते हुये कहा 'भई कुर्सी तो छीनी जाती है, मागने से थोड़े ही मिलती है।' यह थी उनकी विनोद-प्रियता। ऐसी कितनी ही स्मृतिया अपना आकार पाने के लिये उमड़ रही है।

संस्था के स्थापना दिवस ज्ञान पचमी के पावन पर्व पर आपके प्राणो का उत्सर्ग संस्था के लिये प्रेरणास्पद प्रसग बन गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आपने अपने आदर्शो, संकल्पो, मूल्यो एव आकाक्षाओ को इस संस्था के साथ स्थायी रूप से जोड दिया है। हमे आशा है कि आपकी निष्काम कर्मठता, त्याग, विनम्रता और मृदुलता हमे आप द्वारा स्थापित आदर्शों, मूल्यों एव आकांक्षाओं को साकार रूप प्रदत्त करने के लिये प्रेरित करती रहेगी। अन्त में प्रकृति के नियमों को शिरोधार्य कर यही कहना पड़ता है—

होता जहां पर सौख्य,
दुख भी वहां अनिवार्य है।
करती प्रकृति अविराम,
अपना नियमपूर्वक काम है।

—अध्यापिका, वीर बालिका विद्यालय

श्रीमती वन्दना जैन



अनुपम सहयोगी

"मनुष्य वही जो मनुष्य के लिए मरे।"

स्व श्री मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्ति सौजन्यता की मूर्ति आदरणीय श्री राजरूपजी सा टाक के विषय में सोलह आने सत्य है।

इन पंक्तियों को लिखते हुए जहाँ मुझे गौरव अनुभव हो रहा है वहीं दूसरी ओर संकोच लिखने में बाधक बन रहा है। अपनी इस बाल बुद्धि से श्री चाचा सा के विषय में कुछ लिखने का साहस गोस्वामीजी की इन पंक्तियों से जुटा पाई हूँ—

"जिमि बालक कह तोतरि बाता,
सुनहिं मुदित पिता अरु माता।"

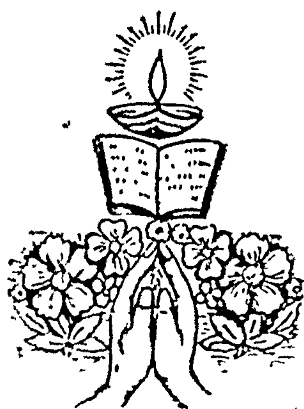
श्री चाचा सा समाज के ऐसे रत्न थे जिन्हें छोटे बड़े, अमीर गरीब, शिष्य, सेवक सभी की समान प्रशंसा व आदर प्राप्त था। यूँ तो मैं चाचा सा को काफी समय से जानती हूँ किन्तु M Phil का लघु शोध प्रबन्ध जब मैंने परम विदुषी परम पूज्या साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी म सा पर लिखा, उस सिलसिले में मेरा सम्पर्क कुछ ज्यादा ही बढ़ गया। म सा के सम्पर्क से बहुत सारी जानकारियाँ मुझे आपसे मिलीं। आपने मेरा कार्य सरल करने के लिए पुस्तकें दीं, अपने अनुभव बताए तथा अन्य जिनसे भी मुझे जानकारी मिल सकती थी, आपने बताया तथा उन लोगों को मेरा सहयोग करने का भी आग्रह किया।

किन्तु जब मैं श्री विचक्षण श्रीजी के व्यक्तित्व का अध्ययन कर रही थी तब परम पूज्या म सा व चाचा सा में साम्य नजर आता था। चाचा सा श्री विचक्षण श्रीजी म सा के सान्निध्य में रहे, इसी से व्याधि में समाधि उन्हें मिली।

मेरे अध्ययन के समय में चाचा सा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। वे चल फिर नहीं सकते थे तथापि कभी भी मैंने उनके चेहरे या मन में कष्ट का अनुभव नहीं पाया। आप उसी सहज भाव से मेरा पथ प्रदर्शन करते रहे। कभी कभी मैं संकोच में या यह सोच कर कि कहीं चाचा सा को तकलीफ न हो, मैं अपने मन की बात नहीं कह पाती थी। किन्तु उनका सरल व्यवहार देख कर मैं अपनी शंकाओं का समाधान करवा लेती थी। उन्हें देख कर ऐसा लगता था मानो कष्ट, दुःख, दर्द से वे परेशान नहीं बल्कि तकलीफें उन्हें देख कर लजाती हैं। मैं ही नहीं बल्कि जो भी अपनी समस्याएँ लेकर आता था, चाहे वे आर्थिक हों या शिक्षा सम्बन्धी या जवाहरात सम्बन्धी, वे सभी का समाधान करते थे। सभी के साथ उनका समान व्यवहार था।

चाचा सा के पास बहुत-सा कार्य रहता था पर वे हर कार्य को बखूबी पूरा करते थे। उन्हें छोटी बड़ी हर बात याद रहती थी। मुझे जब वे यह कहते कि मैं कल बताऊँगा या कल काम करवा दूँगा तब उन्होंने मेरे इस छोटे से काम को कभी भी नहीं नकारा बल्कि मेरे पहुँचने पर मुझे यही पता चला कि मेरा कार्य सम्पन्न हो गया है। आप ही के सहयोग व मार्ग दर्शन से मैं यह कार्य सफलता पूर्वक कर पाई, मैं उनकी कृतज्ञ हूँ। वे एक ऐसी सुगन्ध थे जो समाज में हमेशा महकती रहेगी।

भूतपूर्व छात्रा,
श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर



पुस्तकों के प्रति प्रेम

• श्रीमती पद्मा भार्गव

"प्रेम एक ऐसा बीज है, जो एक बार जम कर फिर बड़ी कठिनाई से उखड़ता है।"

महान् साहित्यकार श्री प्रेमचन्द का उपर्युक्त कथन श्रद्धेय चाचा साहब के व्यक्तित्व पर शत-प्रतिशत घटित होता है। आपके हृदय मे प्रेम की जड़े इतनी गहरी फैली हुई थी कि उन्होंने जीवन के अनेक पक्षो को अपने आप मे समाहित कर लिया था। जहां एक ओर दीन-दुखियों, अनाथो एवं विकलांगो के प्रति आपके हृदय मे अपार करुणा एवं प्रेम विद्यमान था, वही हीरे-जवाहरात, शिक्षा, चिकित्सा, राष्ट्रभक्ति एवं समाजसेवा के प्रति भी अगाध अनुराग विद्यमान था। इतना ही नही विभिन्न कलाओ, धर्म, दर्शन, इतिहास एव पुराणो मे भी आपकी गहन रुचि थी। फिर भला पुस्तको के प्रति आपकी उपेक्षा कैसे सम्भव थी ?

"पुस्तकें वे दर्पण है, जिनमे सन्तो और वीरो के मस्तिष्क हमारे लिए प्रतिबिम्बित होते है।"

—गिब्बन

ज्ञान के महान् आराधक शिक्षा-प्रेमी श्री टाक साहब पुस्तकों से अत्यधिक प्रेम करते थे। आपका ज्ञान अत्यन्त गहरा एवं नियमित स्वाध्याय का परिचायक था।

आप अपने घर पर एक सुन्दर पुस्तकालय की स्थापना करना चाहते थे, यद्यपि वह अपने अन्य कार्यो मे, सस्थाओं की सहायता करने मे सदैव व्यस्त रहते थे फिर भी वे सदैव यही इच्छा रखते थे कि किस तरह वह घर के पुस्तकालय मे अच्छी से अच्छी पुस्तके एकत्रित करें। वे मुझे अक्सर वीर बालिका उच्च मा. विद्यालय से बुलवा कर अपना पुस्तकालय ठीक करवाते थे और कहते थे कि जितनी भी पुस्तके कम हों आप उनकी संख्या मुझे बताइये।

जब मैंने उन्हे पुस्तके कम होने की संख्या बताई तो वह बडे खिन्न होकर बोले, "बहन जी मैं क्या बताऊ, मै उसमे अच्छी से अच्छी तथा सभी धर्मो की पुस्तकें रखना चाहता हू, लेकिन मेरी पुस्तके सुरक्षित नही रह पाती क्योंकि यह Ph D. करने वाले तथा दूसरे पुस्तके पढने के शौकीन पुस्तके ले जाते है, परन्तु वापिस नही करते।"

आप मुझे बताइये मैं जहां से भी हो सकेगा आपको पुस्तके मगवा कर दूगा।

इतना अधिक उनको पुस्तकों के प्रति प्रेम था। धर्म की तो शायद ही कोई पुस्तक हो जिसे वे न मगाते हो।। क्योंकि धर्म के प्रति उनमे आस्था बहुत अधिक थी। किसी कवि ने कहा है—

धर्म वह जो उत्थान करे।
धर्म का वास हृदय में है,



भावाञ्जलि

पूजनीय चाचा साहब समाज के उज्ज्वल रत्न, परोपकारी, सदाचारी, धर्म सहिष्णु, दानवीर व शिक्षा प्रेमी थे। उनकी छत्रछाया में न केवल बालक, युवा व वृद्ध जन फले फूले बल्कि उनके सहयोग से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक व व्यावसायिक क्षेत्रों में बनी विभिन्न संस्थायें भी अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचीं। आज उन्हीं दिव्य पुरुष के स्वर्गवास पर उनके व्यापक सम्पर्क, स्नेह और बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण अनेक श्रद्धालुओं व संस्थाओं ने विभिन्न क्षेत्रों से संवेदना संदेश भेजे, जिनसे उनके व्यक्तित्व की स्मृति युगों तक हमारे मानस-पटल पर रहेगी।

नहीं विश्वास विजय में है,
शक्ति के बल न धर्म चलता,
धर्म की पावन उज्ज्वलता
धर्म जो धैर्य प्रदान करे।

वे कहते थे धर्म की पुस्तकों को मैं जिल्द बनवाकर रखना चाहता हूं क्योंकि ऐसा साहित्य बाजार में खरीदने पर भी नहीं मिलेगा और आगे आने वाली पीढ़ी को शायद इससे कुछ लाभ हो सके।

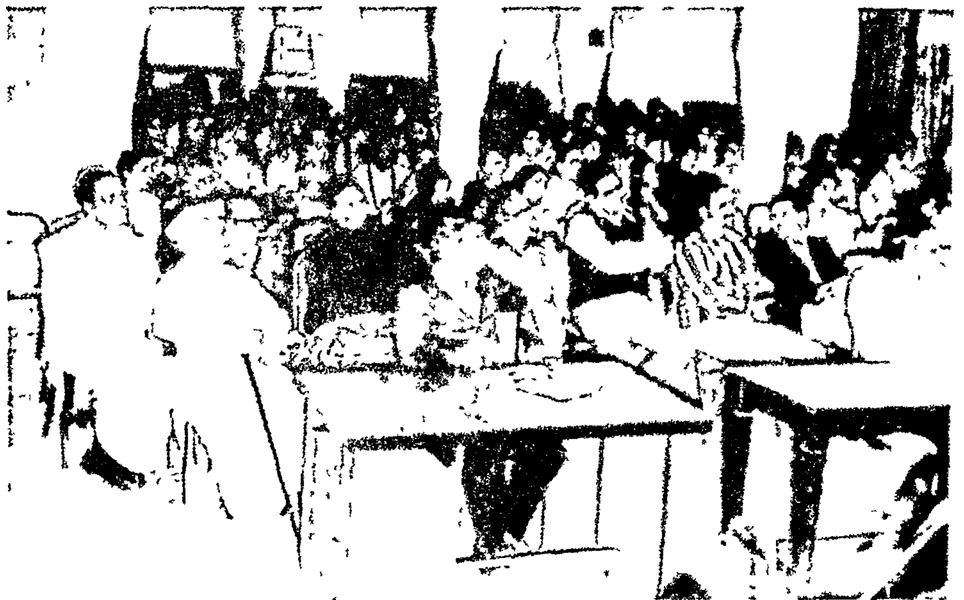
केवल पुस्तकें ही नहीं, उनसे कोई भी वस्तु मांगने पर वे मना नहीं करते थे। एक बार उन्होंने मुझे बुलाकर बहुत सारी धर्म की पुस्तकें दी और कहा, आप इसका एक अलग कक्ष बना लें और उसका अलग नाम रखें 'महावीर कक्ष'।

वे चाहते थे कि महावीर कक्ष में सभी धर्मों की अच्छी-से अच्छी पुस्तकें होनी चाहिये। वह अपने घर में जो भी सस्ती-महंगी पुस्तकें होती थी उन्हें महावीर कक्ष के लिए भेज देते थे क्योंकि उनको मालूम था कि पुस्तकालय में पुस्तकें सुरक्षित रहेंगी।

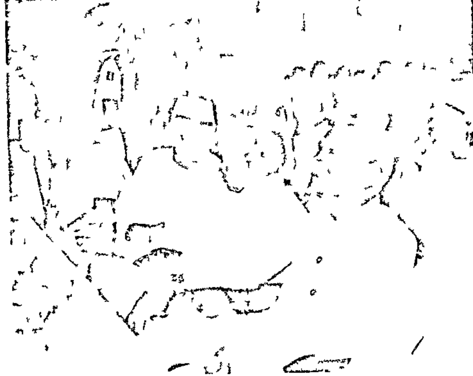
दूसरों के दुःख, तकलीफों को सुनने में भी वे बड़ी रुचि दिखाते थे। एक बार मैंने बातों ही बातों में कहा, "चाचा साहब ! हमें आलमारी की बहुत दिक्कत है, हमारे पास आलमारी नहीं है, आपकी यह आलमारी बहुत अच्छी है। उन्होंने तुरन्त नौकर को बुलवाकर उस आलमारी को श्री वीर बालिका विद्यालय में भिजवा दिया। ऐसे थे हमारे चाचा साहब श्री राजरूपजी टांक।"

—पुस्तकालयाध्यक्ष,
श्री वीर बालिका उ. मा. वि., जयपुर

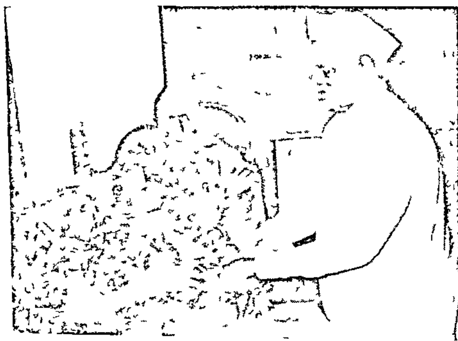












मॉ सरस्वती व
महिला-शिक्षा के लिये
समर्पित इस संस्था के
कर्णधार श्री राजरूप
टाक ने संस्था के विभि
समारोहो मे घोषणा की
कि अर्थ के अभाव से
छात्राओ के अध्ययन मे
किसी प्रकार का
व्यवधान नही आने
दिया जावेगा ।







...श्री द्वारा आयोजित
...रोह में पधार रहे हैं
...राजरूप टांक एवं श्री
... रवे नपाधाच्छ संघ
...पुर के अध्यक्ष श्री
...रचन्द मालावत ।



...जिलाधीश की राष्ट्रीय
...। योजना की जानकारी
...ाई के मध्य श्री राजरूप
...। ।

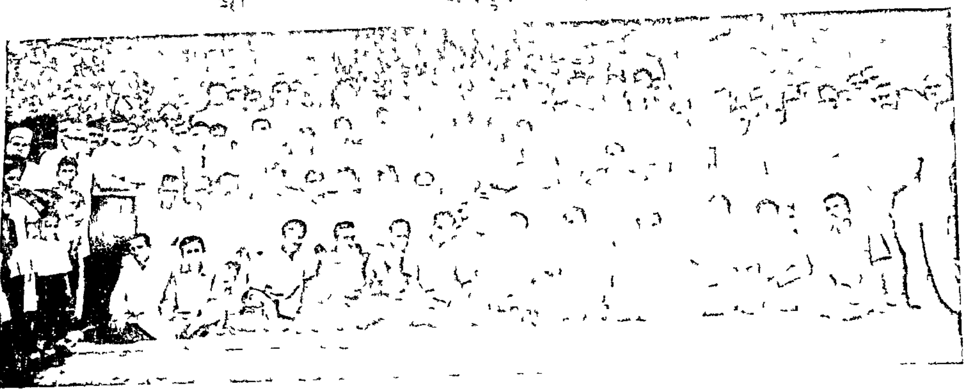




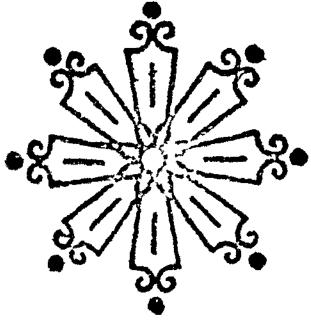
[illegible]

पूर्वी वर्ष-गांठ पर (श्रावण शुक्ला १५ वि. सं. २०२७)

श्री ... रायपुर का मिश्र परिवार



• श्री रामजी लाल शर्मा



अनाथों के नाथ हमेशा के लिए सो गए !

8 जुलाई 1984 की बात है, मेरी शारीरिक एवं आर्थिक परिस्थिति ठीक नहीं होने के कारण आगे शिक्षा अध्ययन हेतु जयपुर आया । सर्वप्रथम चौड़ा रास्ता स्थित श्री हिन्दू अनाथाश्रम जयपुर में गया । शाम का समय था, अनाथ बच्चे-बच्चियाँ एक कतार मे बैठे थे, सामने व्यवस्थापक, परिचारिका व अन्य कर्मचारीगण बैठे हुए थे । थोड़ी देर मे सफेद टोपी लगाये, धोती व कुर्ता पहने हुए, एक हाथ मे छडी लिये हुए श्री राजरूपजी टाक आश्रम मे पहुंचे । मैंने अपने परिचित बच्चो से पूछा यह कौन साहब है ? तब एक बालक एकाएक बोला– यही हमारे मालिक हैं । थोड़ी देर बाद बच्चो ने सायंकालीन प्रार्थना प्रारम्भ की·········

तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो,
तुम्ही हो बन्धु, सखा तुम्ही हो ।
तुम्ही हो साथी, तुम्ही सहारे,
कोई ना अपना, सिवा तुम्हारे ।।
तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो ।

बच्चे उक्त प्रार्थना गा रहे थे तो मैंने अपने मन मे सोचा यह प्रार्थना ईश्वर के लिए नहीं श्री राजरूपजी टाक साहब के लिए की जा रही है । सामने टांक साहब मुग्ध मुद्रा मे बैठे बच्चो की प्रार्थना सुन रहे थे । बच्चे बड़े ही सुन्दर स्वर मे गा रहे थे । तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो— प्रार्थना सभा के बाद व्यवस्थापक ने मेरा स्वयं का परिचय श्री टाक साहब को बताया । मेरी शारीरिक परिस्थितियो को देख कर श्री टांक साहब ने कहा–"मैंने सर्वाधिक प्रेम तीन प्रकार के मनुष्यों मे किया है—1. अगहीन व्यक्ति, 2. विधवा स्त्री, 3. अनाथ बच्चे । ये तीन तरह के प्राणी समाज एवं कुटुम्ब के लिए बोझ बन कर रहते हैं, लोग इनको नफरत की निगाहो से देखते है, लेकिन मेरा दृष्टिकोण लोगो से अलग है । स्वय के बच्चों व परिवार का पालन-पोषण तो दुनियां मे सभी करते हैं परन्तु सेवा का वास्तविक रूप उक्त तीन प्रकार के प्राणियों की सेवा करने मे है ।" श्री टाक साहब जैसा कहते, वैसा ही करते·······

श्री टाक साहब के निवास पर जयपुर से बाहर जाने वाला व्यक्ति आता और यह कहता कि मेरे पास किराये के लिए पैसा नहीं है—इस पर सेठ जी अपने मुनीमजी से कहते, फला जगह का किराया मालूम करो और जो किराया बतायें उससे 5 रुपये अधिक इस व्यक्ति को दे दो ।

यदि कोई व्यक्ति नौकरी या पढ़ने के लिए

रत्न-व्यवसाय
के
विश्वविद्यालय



☐ श्री राजरूपजी टाक प्रमुख जौहरी होने के साथ साथ देश-विदेश मे रत्न उद्योग एव व्यवसाय के विश्वविद्यालय के रूप मे ख्याति प्राप्त व्यक्ति थे। श्री राजरूपजी ने अपने जीवनकाल मे बिना जातिगत भेदभाव के अनेक व्यक्तियो को रत्न उद्योग एव व्यवसाय की शिक्षा दी।

—राजस्थान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री

आता तो सेठजी पूछते—कितन पढे लिखे हो—थोडा बहुत लिख सकत हो—सम्बन्धित व्यक्ति के हाँ कहने पर सेठ साहब सर्विस के लिए वीर बालिका विद्यालय मे भिजवा देत और तत्कालीन प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रकाशवती सिन्हा से कहत इनको कोई काम दे दो। जिसका एक उदाहरण मेरा स्वय का है। मुझे टाक साहब न श्री वीर बालिका विद्यालय मे कनिष्ठ लिपिक के पद पर लगाया और जब मेरा राजकीय सेवा मे जाने का अवसर आया तो मुझे नही जाने दिया और यही कहा–तेरी हर इच्छा की पूर्ति मैं स्वय करूँगा, फिर तुम सरकारी नौकरी मे क्यो जाना चाहते हो ?

यदि कोई नेत्रहीन व्यक्ति श्री टाक साहब के पास आता तो उसको राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ जयपुर मे भिजवा देत और यदि कोई अनाथ बच्चे लेकर उनके पास आता तो श्री हिन्दू अनाथाश्रम जयपुर मे भिजवा देते। सेठ साहब के सरक्षण मे बहुत सी सस्थाएँ चल रही थी जो मानव सेवा के हर काम को हर सम्भव पूर्ण करती थी—श्री टाक साहब का इन सस्थाओ से जुडने का मात्र यही कारण था कि वे किसी के दुःख को देख नही सकते थे। दुःखी व्यक्तियो की समस्याओ का समाधान करने के लिए वे किसी न किसी सामाजिक सस्था मे पदाधिकारी अवश्य रहते थे।

एक बार श्री हिन्दू अनाथाश्रम जयपुर के पदाधिकारियो की मीटिंग आयोजित की जा रही थी, जिसम सस्था की गतिविधियो से श्री टाक साहब को अवगत कराया जा रहा था। टाक साहब ने समस्त गतिविधिया ध्यान पूवक सुनी और उपस्थित सदस्यो व कर्मचारियों से कहा—मैं सस्था की समस्त काय व्यवस्था से बहुत खुश हू लेकिन मेरे दिमाग मे एक शब्द अखरता है। वह शब्द है 'अनाथ बच्चे'। सेठजी ने अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा—अनाथ कौन है, आप लोग किसको अनाथ समझते हो ? मेरी निगाह मे कोई अनाथ नहीं है। जिन बच्चो के माता पिता नही हैं, वे सब मेरे बच्चे हैं। मैं उनका पालन पोषण करूँगा। जहाँ सस्था के नाम का सवाल है, मेरी राय मे इस सस्था का नाम श्री हिन्दू अनाथाश्रम से बदल कर बाल सेवा सदन कर दिया जाय तो इसम रहने वाले बच्चो के दिमाग से यह बात निकल जायेगी कि हम अनाथ है—कुछ सदस्यो न टाक साहब की बात का समथन किया लेकिन राजकीय कठिनाइया के कारण यह सम्भव नही हो सका।

श्री राजरूपजी टाक साहब रोज सुबह बाग मे घूमने जाते थे। वहा जो भी परिचित व्यक्ति उनसे मिलता तो वे हमेशा दूसरो के दुःख-दर्द की बात किया करते थे। अनाथ बच्चो की पढाई लिखाई

ग्रौर उनको रोजगार के ग्रवसर दिलवाने के लिए हमेशा चिन्तित रहते थे ।

एक बार एक सज्जन टांक साहब को बाग मे मिला, वह भी अपनी चार पुत्रियों सहित बाग मे घूमने ग्राया था । श्री टांक साहब के पास में बैठ कर बोला—क्या सोच रहे हो सेठ साहब ? चार लड़कियाँ होने के बावजूद भी मैं ग्रापकी तरह नही सोचता । टाक साहब ने मुस्करा कर कहा—ग्रापके केवल चार लड़किया है, मेरे तो 40 लड़के-लडकिया है ग्रौर एकान्त मे बैठकर उनके भविष्य की बात सोच रहा हू । ग्रागन्तुक सज्जन ने ग्राश्चर्य से कहा—यह तो बड़ी विचित्र बात है । ग्राप ग्रपने 40 लडके-लड़किया बतलाते हो, कोई स्कूल तो नही खोल रखा है ? इस पर टाक साहब ने कहा 40 बच्चो का स्कूल हर कोई खोल सकता है लेकिन चालीस बच्चो का पालन-पोपण हर कोई नही कर सकता । ग्राखिर सेठ साहब बाग से ही उस सज्जन को उनकी चार पुत्रियो सहित ग्रनाथाश्रम मे ले गये ग्रौर कहा यह मेरे चालीस लड़के-लडकियां है । ग्राप इन्हे ग्रच्छी तरह गिन लीजिये । सुबह का समय था । बच्चे ग्रपने दैनिक कार्यक्रम के ग्रनुसार प्रार्थना के लिए एकत्रित हुए ग्रौर फिर वही प्रार्थना गाई—

तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो
तुम्ही हो बन्धु, सखा तुम्ही हो

प्रार्थना के बाद जैसे ही बच्चे टाक साहब को प्रणाम करने के लिए ग्रागे बढे—टाक साहब ने साथ में ग्राये सज्जन की तरफ इशारा करते हुए कहा—ग्राप लोग इन्हे प्रणाम करिये । इस पर सब बच्चे एक दूसरे को देख रहे थे परन्तु एक छोटा सा बालक जिसकी ग्रायु $3\frac{1}{2}$ वर्ष के लगभग थी, उस सज्जन की बड़ी लडकी के पास गया ग्रौर बोला—यह मेरी जीजी है । उस लडकी ने बच्चे को गोद मे लिया ग्रौर वह रो पड़ी ग्रौर बोली—इतने बच्चों मे यह ग्रकेला बच्चा मेरे पास ग्राया है, हो सकता है यह मेरे पूर्व जन्म का भाई है । हम चार बहिने है, हमारे कोई भाई नही है । टांक साहब यह बच्चा हमको दे दीजिये । इस पर टाक साहब ने सहर्ष वह बालक उनको दे दिया । कहने का सारांश यह है—टांक साहब ग्रनाथ बच्चों के पालन-पोपण के साथ-साथ ग्रगर कोई गोद लेना चाहता था तो बच्चो के भविष्य के लिए गोद भी दिला देते थे ।

ग्राज श्री टाक साहब के नही रहने से उनके समाज, परिवार को तो गहरा ग्राघात पहुचा ही है साथ ही ग्रंगहीन व ग्रनाथ बच्चे भी सोचने लगे है कि हमारा मालिक हमेशा के लिए सो गया जो किसी के जगाने मे भी नही उठेगा ।

ऐसी महान् ग्रात्मा को मैं ग्रपनी हार्दिक श्रद्धाजलि ग्रर्पित करता हू ग्रौर ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करे, जिससे मैं उनके उपदेशों का पालन सदैव करता रहूं ।

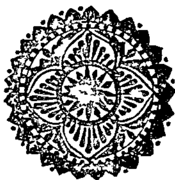
—लिपिक, वीर बालिका विद्यालय

सक्रिय कार्यकर्ता



☐ श्री राजरूपजी टांक राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षणिक व सामाजिक संस्थाओं से जीवनपर्यन्त जुटे रहे । ग्रापने राष्ट्र एवं समाज की ग्रनुपम व सक्रिय सेवा की ।

—श्री स्वर्ण सेवा संस्था, जयपुर



सेवाभावी व्यक्तित्व

असहायों के शरण दाता,
विकलांगों के थे प्राणाधार।
शत शत छोटी बालाओं में,
होता जिनका सपना साकार।
जिन्होंने शिक्षा के हीरे को,
जाना, पहचाना और परखा।
युग-युग के ज्ञान दिवाकर को,
जिसने जन जन तक पहुंचाया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुए समाज के हर क्षेत्र में अपना सहयोग देकर व लेकर अपना जीवन व्यतीत करता है। इसी प्रकार समाज के क्षेत्र में काम करने वाले और अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के व्यक्तियों का सहयोग देने में लगा देने वाले एक कर्मठ पुरुष का नाम श्री राजरूप टांक हमारे इतिहास में समादरणीय है। सभी जगह इन्हें सम्मानित किया जाता रहा है।

श्रीमान् राजरूपजी टांक का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था लेकिन बाद में एक उच्च घराने में गोद आये, जहां से इन्होंने सम्यक् शिक्षा प्राप्त की और अपना जीवन रत्नों को परखने में लगाया। ये हीरे के प्रमुख जौहरी थे। इन्हें हीरे परखने का विशेष ज्ञान था। इन्होंने हजारों नवयुवकों को रत्न व्यवसाय की शिक्षा दे कर स्वावलम्बी बनाया, जिससे समाज में इन्हें तीन बार 'समाज-रत्न' से विभूषित किया गया। जौहरी होने के साथ-साथ इनका समाज के प्रति अटूट प्रेम था। इन्होंने सदैव समाज के हर क्षेत्र में अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया। श्री राजरूप जी टांक विकलांगों की सेवा हेतु महावीर विकलांग सहायता समिति के अध्यक्ष बने और विकलांगों को स्वावलम्बी बनाया। हरिजनों के वर्ग भेद को समाप्त करने हेतु अपना सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इन्होंने नारी शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया और नारी शिक्षा हेतु वीर बालिका शिक्षण संस्था की स्थापना की, जहां आज 3500 छात्राओं को शिक्षा दी जा रही है। ये नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। ये गरीबों के हितैषी थे और संस्थाओं पर आर्थिक संकट आने पर स्वयं के पास से कार्यकर्ताओं को वेतन दिया करते थे।

श्रीमान् राजरूपजी टांक ने नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल दिया। इन्होंने इस बात पर बल दिया कि बच्चों में नैतिक शिक्षा का विकास हो। जौहरी व समाजसेवी होने के साथ ही इन्हें ज्योतिष शास्त्र का भी ज्ञान था। इसी कारण इन्होंने ज्योतिष से रत्न का क्या सम्बन्ध है, इस पर एक पुस्तक की रचना की, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। ऐसे महान् व समाज के हितैषी थे। श्री राजरूपजी टांक ने अपने कार्य को लगन व निष्ठा के साथ करते हुए 27 अक्टूबर, 1987 को हमेशा के लिये यह दिव्य आत्मा इस संसार से लुप्त हो गयी। वे अपने कर्मों द्वारा हमेशा के लिये अपनी यादों के सहारे अमर बेल की भांति अमरता को प्राप्त हो गये।

—मंजु गोयल
XIth B

हमारे पूजनीय

चाचा साहब



अनेक महापुरुषों, मनीषियों, राजनेताओ, दार्शनिको के कारण प्राचीन काल से ही भारत भूमि उर्वरा तथा मंगल विधायिनी रही है। यहाँ की विशेषता है सामान्य से अधिक की ओर बढना, यही कारण है कि अत्यन्त सामान्य परिवार एवं परिवेश मे पैदा होने वाले तथा विकसित होने वाले व्यक्ति महान् पदों तक पहुँच गए। ये सब उन व्यक्तियो ने अपनी लगन, श्रम तथा प्रतिभा के बल पर किया। ऐसे ही थे हमारे विद्यालय के महामहिम मत्री श्री राजरूपजी टांक।

राजरूपजी टांक "चाचा साहब" के नाम से प्रसिद्ध थे। उनका जयपुर मे ही नही वरन् विदेशो मे भी नाम था। हमारा विद्यालय श्री वीर बालिका विद्यालय जिससे चाचा साहब तरुण अवस्था से वृद्धावस्था तक जुड़े रहे, उन्होने इस विद्यालय हेतु अपना जीवन न्योछावर कर दिया। बीज बोने से लेकर वृक्ष बनने तक का श्रेय चाचा साहब को ही दिया जाता है। जैसा कि प्राचीन काल से ही कहा जा रहा है, हर महान् आदमी द्वारा किये गये महान् कार्यों के पीछे एक स्त्री होती है, उसी प्रकार इस विद्यालय की स्थापना के पीछे थी "साध्वीस्वर्ण श्री जी"। उनकी प्रेरणा से सन् 1925 में आठ बालिकाओं द्वारा यह विद्यालय प्रारम्भ किया गया, जहां बालिकाओ को धर्म की शिक्षा दी जाती थी। चाचा साहब उन विकट परिस्थितियों मे जब स्त्री शिक्षा को पाप माना जाता था, वे घर-घर जाकर यह आग्रह करते थे कि नारी शिक्षा उनके लिए महत्त्वपूर्ण अग है। अतः बच्चो को शिक्षित कराने के लिए विद्यालय में भेजें। धीरे-धीरे इस विद्यालय मे छात्रो की सन्ख्या बढ़ती गई। आधुनिक युग मे यह वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। चाचा साहब की मेहनत सफल हुई। वे हमेशा छात्राओ को उन्नति करने की प्रेरणा देते थे।

चाचा साहब ने इस क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों मे भी अपना योगदान दिया। [illegible] अनाथाश्रम का अध्यक्ष के रूप मे [illegible] किया। उन्होंने कई चैरिटेबल ट्रस्ट स्थापित



प्रथम विधान सभा सदस्य

• स्व श्री टाक साहब अपने जीवन काल मे विभिन्न सामाजिक ग्र व्यापारिक सस्थाओं से जुडे रहे तथा राज्य की विधानसभा के सद भी रहे। आपके द्वारा सन् 1975-76 मे राजस्थान सर्राफा सघ ने वार्षिक जनरल अधिवेशन जो कि अजमेर मे आयोजित किया ग या की अध्यक्षता भी की गयी थी।—सघ आपके विचारों से हमें लाभान्वित रहा है।

—श्री राजस्थान सर्राफा स

किये। वे विकलागो के लिए बहुत चिन्तित थे। उन्होंने महावीर विकलाग समिति को अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। वे उनकी हर जरूरत पूरी करने का प्रयत्न करते थे। यदि कोई उनके पास मदद मागने चला जाता तो उसको निराश नही लौटाते।

वे माने हुये जौहरी थे। रत्नों के सम्बन्ध मे उन्होंने एक पुस्तक लिखी जो विदेशो मे पढाई जाती है। रत्नो की परख मे प्रवीण होने के कारण उन्हें विदेशो में पुरस्कृत भी किया गया। वे अपने किये गये कार्यों से महान् बने। ज्ञान पचमी के पावन पर्व पर उन्होंने इस विद्यालय की स्थापना की व ज्ञान पचमी के दिन विद्यालय जब अपना 63 वा स्थापना दिवस मना रहा था, उसी दिन बीमार होने के कारण चाचा साहब परलोक सिधार गए। चाचा साहब अनुभवी तथा सुलझे हुए व्यक्ति थे।

विदेशो मे भारत की प्रतिष्ठा के लिए उ अनेकानेक काय किये। अपने मृदुल स्वभाव कारण उन्होंने सबका मन मोहित कर रखा इन्ही शब्दो से हम उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

"Some men are born great,
Some are made great,
Some are those on whom
Greatness is thrust upon'

अर्थात् कुछ जन्म से महान् होते हैं, कुछ परिश्रम से महान् होते हैं, कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर महानता थोपी जाती है।

—कल्पना चतुर्वेदी
XI-C

वे सूरज नूतन क्षमता के



वन्दना
XI-वी

वे प्रतिरूप नये युग के,
वे सूरज नूतन क्षमता के।
थे वे भंडार ममता के,
थे वे प्रहरी समता के।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे रहकर ही वह अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु समाज के प्रत्येक सोपान पर अपने कदम बढ़ाता है तथा उसकी सीमाओ में बँधकर प्रत्येक अच्छे-बुरे कार्य करता है। उन्ही रास्तो मे से कुछ अपने दायरे मे सिमट कर रह जाते है और कुछ अपने उस स्वहित के दायरे से बाहर निकलकर परहित के बारे मे सोचते है। ऐसे ही परहित चिन्तको मे से एक थे श्रीमान् राजरूपजी टाक।

साधारण घर मे जन्म लेने के बाद भी उन्होने मेहनत, लगन एवं निष्ठा द्वारा पत्थर से पानी निकाल दिया और उस श्रमरूपी अमृत जल से सबको सरोबार कर दिया। अपनी लगन एवं निष्ठा को कायम रखते हुए उन्होने अपने रत्न व्यवसाय को आगे बढ़ाया और उन्हे अपने परिश्रम का फल अमेरिका मे गोल्ड मेडल के रूप मे मिला। अपने व्यक्तित्व की सूक्ष्म तलवार के लिए उन्हें ऐसी म्यान मिली कि लोग उनके कार्यों को देखते रह गये। जिस प्रकार पौधा लगाते वक्त माली उसके फल की कामना नही करता, उसी प्रकार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर आपने अनेक छोटे-छोटे पौधे रूपी संस्थाओं की स्थापना की जिसने आज वटवृक्ष का रूप ले लिया है, जिसकी छाया आज अनेक पथिको तथा पक्षीजन को आनन्द पहुचा रही है। उन्ही पौधो मे से एक है श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय। नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक श्री टाक जी का स्वप्न था कि नारी भी उच्च शिक्षा प्राप्त करें एवं पुरुषो के समान कंधे से कंधा मिलाकर चल सकें।

विकलांगो के प्रबल पक्ष श्री राजरूपजी ने जीवन भर उनकी सेवा की तथा उन्हें अपना

आदर्श व्यक्तित्व

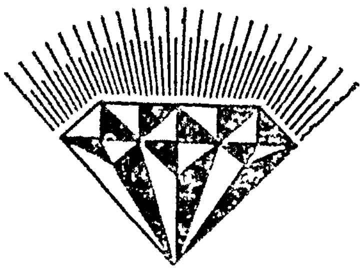


- श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान के संचालक मंडल की यह सभा संस्था के संस्थापक सदस्य, मंत्री, कर्मठ समाजसेवी, आदर्श व्यक्तित्व के धनी श्री राजरूपजी टांक के निधन पर हार्दिक शोक प्रगट करती है। इस संस्था के उत्थान व विकास में उनका अति महत्त्व का योगदान रहा है। जीवन के अंतिम क्षणों तक इस संस्था के प्रति उनका उत्सर्ग भाव हम सब के लिए अति प्रेरणाप्रद बना है।

—श्री वीर बालिका संचालक मंडल

सहारा देकर उस बात का कभी दुःख नहीं होने दिया कि वे समाज के उपेक्षित अंग हैं। यह कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज उनके ना रहने से वो सभी बेसहारा हो गये और उनके लिए इस अन्धकारमय जीवन में प्रकाश बिखेरकर स्वयं परम ज्योति में लीन हो गये। रत्न व्यवसाय में ख्याति अर्जित करने पर उन्होंने ज्योतिष एवं रत्न राशि में क्या सम्बन्ध है, इस पर एक पुस्तक लिखी, जिसका बाद में अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। गरीबों के हितैषी, नैतिक शिक्षा पर सर्वाधिक बल देने वाले श्री राजरूपजी जीवन भर परोपकार में लगे रहे।

मानव का जीवन नश्वर है, जो आया है निश्चित ही एक दिन वह जायेगा लेकिन श्रद्धेय राजरूपजी अपनी विशेषताओं के कारण हम चिर काल तक याद आयेंगे। ग्रीष्म से दग्ध संसार में जब उन बादलों की गर्जना से ही हृदय में सोते हुए अंकुर फूटने लगते थे, जिसकी मूसलाधार वर्षा से सुप्त पृथ्वी पर मानों बसन्त आ जाता था। यदि यह जीवन सुन्दर वनस्थली है तो श्री राजरूपजी चुना हुआ गुलदस्ता थे। अपने कार्यों एवं सेवाओं के द्वारा आपने जीवन रूपी इस उपवन को हरा-भरा रखा तथा उनके रहते विभिन्न प्रकार के पुष्प इसमें विकसित हुए। अपने बाद अब उपवन की देख-रेख का भार वह हम पर छोड़ गये हैं, देखना यह है कि हम उपवन की कितनी देख रेख कर पाते हैं व कितने पुष्पों को खिलने का अवसर देते हैं। जैसे सागर की थाह को नापना कठिन है, उसी प्रकार राजरूपजी के जीवन को शब्दों के गुम्फन में बांधना नितान्त असम्भव है। मानव तो मानव है, प्रयत्न करना उसका कर्तव्य है। अन्त में इन्हीं कुछ शब्दों द्वारा उस कर्मयोगी अहिंसा के पुजारी एवं समाजसेवक को नतमस्तक होकर शत शत प्रणाम करती हूँ।



मनोहर अनमोल रत्न-पारखी

• राजश्री जैन

"रूप "रूप" का ज्योति मोती की,
बनकर चमका जौहरी "राज"
उनसे सिंचित वृक्ष खडा है,
याद दिलाता उनके काज।"

जन्म-मरण हमारे जीवन का एक अद्भुत नाटक है, जो बिना लेखक के रचित हो जाता है। जब नव जीवन प्राप्त होता है तो उल्लास, उमंग मे हमारे उद्गार प्रकट होते है। मरण, मुख मुद्रा को मलीन कर जाता है, ऐसा लगता है जाने वाले के साथ हमारा सुख, चैन सब चला गया और हम गम के गहरे सागर मे डूब जाते है। जब अपना ही कोई निकटतम प्रिय हमसे बिछुड कर चिरनिद्रा मे लीन होता है तो आँखों के समक्ष 'तमस' छा जाता है।

कौन जानता था कि ज्ञान पंचमी को ज्ञान-पुष्प आरोपित करने वाला तपस्वी कृषक हमसे दूर, बहुत दूर चला जायेगा। वेदना को सहज-भाव से सहने वाला वह योगी हमसे दूर तो चला गया लेकिन हमारे कानो को एक मधुर सगीत दे गया जो सदैव प्रेरणा देता है कि—"अपने लिए नही, दूसरो के लिए जी के देखो, आनन्द आयेगा।"

समाज व नगर को सुगन्धित करने वाला वह पुष्प माली और सुगन्ध बिखेर कर हमेशा के लिए विलीन हो गया। जयपुर नगर व जैन समाज की महान् विभूति श्रीमान् राजरूपजी टाक के बारे मे अगर मैं लिखने की कोशिश करती हूं तो समझ लीजिये कि सूर्य को चिराग दिखा रही हूं। वे कर्मठ थे, जो दिन-रात परहित के लिए जागृत रहते थे। वे ऐसे मूक स्तम्भ थे जो सम्पर्क मे आने वाले हर व्यक्ति को प्रेरित करते थे।

इसी माली ने एक ऐसी पुष्प-वाटिका की रचना की थी जो शताब्दियो तक महकती रहेगी। मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मै इनकी पुष्प-वाटिका मे कुछ समय के लिए पुष्पो की सुगन्ध के मध्य क्रीडा कर सकी। वो पुष्प और उनकी सुगन्ध मुझे आज तक पथ दिखा रहे है। सदियो का इतिहास हमे बताता है कि जिस बाग का माली परोपकारी हो तो उसमे खडे वृक्ष, पुष्प, लताएँ आदि हमेशा परोपकार करते है। बाबा साहब द्वारा रचित वीर बालिका मे अध्यापिकाएँ रूपी लताएँ, कार्यकर्ता रूपी वृक्ष, विद्यार्थी रूपी प्रसून, सभी मुझे अपनी भीनी-भीनी महक से आल्हादित करते रहते है। उनकी तीव्र जिज्ञासा रहती थी कि वह विद्यालय बढ-चढ करे। वे विद्यालय के कार्यों मे एकाग्रचित्त होकर भाग लेते थे। यहाँ के शिक्षक परिवार भी हमेशा उनके मार्गदर्शन से लाभ लेते थे। वे पिता, भाई, गुरु, सखा, हितैषी सभी रूपो मे थे। वे [illegible]

उन्नति के पथ पर अबाध गति से बढता जाएगा, क्योंकि मानवता की नव कोपलो को ज्ञान के जल से सींचकर देशभक्त, विद्वान् तथा नताओ रूपी सुमनो को विकसित कर उनको परोपकार, सहानुभूति, सप्रेम भावना, सहृदयता के सुगन्धित रग म रग कर समाज को चार चाद लगाने के लिए तैयार रहता है। उन्होंने वीर बालिका विद्यालय को इतनी लगन, परिश्रम व नियमितता से सिंचित किया कि वह आज एक घना वृक्ष बन कर सबको सुखद छाया प्रदान करता है। इस विद्यालय की नीव इतनी मजबूत कर गये कि इसको कोई आधी तूफान, अकाल बाढ भी नष्ट ना कर सकेंगे।

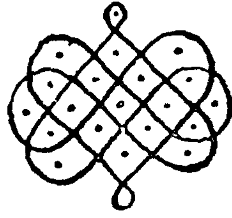
म चाचाजी को अधिक निकट से तो नही परन्तु थोडा बहुत अवश्य जानती थी। वे हमेशा मुझे प्रेरणा देते रहते थे। उनको देखकर मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि वे कमवीर पुरुष अपना सुख त्याग कर दूसरो की प्रसन्नता के लिए सभाओ म उपस्थित रहते थे। कई बार धार्मिक सस्कार डालते थे। मेरी सास्कृतिक क्षेत्र म रुचियो व प्रतिभाओ की दिल खोल कर प्रशसा तथा सराहना करते थे। मेरा कोई नाटक वे देखते और उसके बाद जब मिलते तो उसी नाम से पुकारते थे जो भूमिका मे नाटक म निभाया करती थी। मुझे बहुत खुशी होती है कि मैं ऐसे प्रबुद्ध, सेवारत, कमठ व्यक्ति की इतनी समीपता पा सकी। चाचा नहरू की तरह वे जगत् चाचा बन गये। बच्चे, बूढे, युवक सभी उन्हें चाचाजी कहते थे।

न केवल शिक्षा के क्षेत्र मे यह सन्त आगे थे वरन् धार्मिक गुणो से भी सम्पन्न थे। धन धान्य से परिपूर्ण होने के साथ आप निधनो व असहायो की पीडा के ममज्ञ थे। आप अति व्यवहारकुशल थे। वृद्ध के साथ वृद्ध, युवक के साथ युवक, बालक के साथ बालपन की झलकियाँ अनेक बार आपके अद्भुत व्यक्तित्व मे मैंने पाई।

व एक अच्छे राजनीतिज्ञ कहलाए। दूसरो को सहारा देकर उठाना ही उनके जीवन का लक्ष्य था। आप महावीर विकलाग सहायता समिति मे भी अध्यक्ष थे। कोढियो के लिए आपने एक आश्रय स्थल बनवा रखा है। अन्धो मे कला-प्रतिभा को पहचान कर आपने उसे उजागर किया। जाने कितने अन्धो, लगडो लूलो, कोढियो, असहायो के सहारा बने। ना केवल निकटवर्ती व्यक्ति का वरन् बाहर से आने वाले धमबन्धुओ के लिए धमशाला बनाई। मन्दिरो की देख-रेख की। मैंने अपनी जानकारी तक उनको सबसे अच्छा जौहरी देखा है। ये ना केवल हीरे जवाहरात के पारखी थे वरन् मानव-मन के भी अद्भुत पारखी थे। वे कहते थे—

"जीवन तो वैसे ही बन्धु, कष्टो का इतिहास है,
साहस का अश्व थाम ले, पतझड भी मधुमास है,
युद्ध जीतता वही व्यक्ति साहस जिसके पास है।"

जीवन से दुखी, बोझिल, पीडित व्यक्ति उनके पास मलीन मुख मुद्रा लेकर जाता और कुछ देर बातें करके लौटता तो चेहरे पर जोश, खुशी झलकती थी। मैं सोचती थी कि यह अद्भुत ब्रह्मा बिना पाच तत्त्वो के किस प्रकार इनके जीवन से मधुमास भर देता है। उनके हृदय मे जीव मात्र के लिए दया थी। वे पशु-पक्षियो को भी आराम देने के लिए तत्पर रहते थे। आपकी वाणी मे जादू था। ये उच्चकोटि के वक्ता थे। बिहारी की तरह इनके वक्तव्य भी नावक के तीर थे। वह महान् आत्म-ज्ञान का दीपक स्थान-स्थान पर जन मे मन को प्रभु भक्ति, प्रेम, ममता और सत्य के अलौकिक प्रकाश से भर देते थे। चाचा साहब प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने धार्मिक आदर्शों की प्रतिष्ठा कर राजनीति के क्षेत्र मे सफलता प्राप्त की थी। उनकी दृढता हमारा प्रेरणा स्तम्भ है। आपके नेतृत्व मे अनेक सस्थाएँ प्रगति के पथ पर अग्रसर हुई। आपने जिस किसी की सहायता की, उसको स्वय के परो पर खडे होने की प्रेरणा दी। आपने जो भी सस्थाएँ प्रारम्भ की



सौम्य पुरुष

☐ श्रेष्ठीवर्य श्री राजरूपजी साहब टांक का देहावसान दिनांक 27 अक्टूबर, 1987 को हो गया, इसका गहरा दुःख हुआ। आप अभूतपूर्व राष्ट्रभक्त, सेवाभावी, धर्म परायण, विश्वविख्यात रत्न-पारखी, कर्तव्यनिष्ठ, सौम्य पुरुष, कर्तव्य-परायण शिक्षा प्रेमी होने के साथ-साथ गुरुदेव के परम उपासक थे।

आपने विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं के प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित किया था।

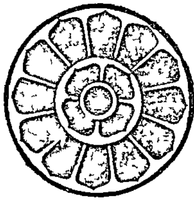
आपका दादा श्री जिनदत्त सूरिश्वरजी की पुण्य भूमि अजमेर स्थित दादावाड़ी में भवन निर्माण, शिक्षण छात्रवृत्ति, निराश्रित सहायता. निवृत्ति आश्रम, पूजा-सेवा एवं स्वामी वात्सल्य में सदैव अविस्मरणीय सहयोग रहा था।

—श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर

वहां पर अच्छे कार्यकर्ता खड़े किये जो उनके अधूरे स्वप्नों को पूरा करने को लगे है।

आपके तन मे व्याधि, मन में समाधि थी। मृत्यु के कुछ दिन पूर्व आपका स्वास्थ्य वहुत खराव रहा था। लेकिन आप मूक साधना मे लीन रहते थे। साहसी पुरुष की तरह सभी कष्टों को समभाव से सहते रहे। आखिर उन्होने कष्टों पर विजय प्राप्त कर ली और चिर निद्रा मे निहित हो गये। आज ऐसे महान् कर्मवीर हमारे मध्य नही है लेकिन उनकी यादें, वाते, कृतियाँ, निरस्मरणीय वन गईं। हमारा कर्तव्य है कि हम आपके आदर्शों पर चल कर नव निर्माण करे। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा हम सवको यह शक्ति दे कि उनके मार्ग पर चलकर उनके द्वारा चालू कार्यों को आगे बढ़ावें। मैं उन महान् योगी के चरण-कमलों में शत-शत वन्दन के साथ उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

—भूतपूर्व छात्रा
श्री वीर बालिका विद्यालय



जिनकी आँखो मे बसता था भावीजन का स्वप्न महान्

• श्रीमती शोभा सक्सेना

एक लम्बे अतराल के पश्चात् जसे ही विद्यालय परिसर की परिधि मे पहुँची, उसी क्षण मुझे ऐसा अहसास हुआ, मानो विद्यालय का प्रत्येक अस्तित्व कुछ दुख भरी व्यथा को अपने नीरव-भाव से व्यक्त कर रहा हो। वातावरण की स्तब्धता ने मन के द्वार पर दस्तक दी, आशका ने पट खोले और एक दुख भरी वेदना हमारे सामने उभर कर आई। हमारे पूज्य, प्यारे, विद्यालय के आधार स्तम्भ, समाज के कणधार, नारी जागृति के भविष्यदृष्टा श्रीमान् राजरूपजी टाक हम इस असार ससार म छोडकर असीम अतराल म कही विलुप्त हो गय। कुछ क्षण के लिए ऐसा अहसास हुआ, माना अपन शरीर का कोई महत्त्वपूण अग कट कर अलग हो गया हो।

मैं भूल नही पाती उन क्षणा को जब जब विद्यालय मे किसी समारोह का आयोजन होता था। परिवार पालक पिता की भाति उनकी उपस्थिति अनिवाय रूप मे होती थी तथा जिस प्रकार एक पिता स्नहासिक्त भाव से अपने फलते फूलते परिवार को देखकर खुशी से झूम उठता है। उसी प्रकार अपने बालिका परिवार को उत्तरोत्तर बढते हुए देख कर, स्नेहासिक्त हाथ मस्तक पर रखकर पूछा करते थे—कोई दुख तो नही। तब ऐसा आभास होता था माना सभी पीडा धुल चुकी हो।

मुझे याद आता है। आज से तीन वष पूव का समय, जब वे असाध्य राग से ग्रस्त होकर भी टैक्सी के द्वारा विद्यालय के स्थापना दिवस समारोह मे उपस्थित हुए। अपनी अपार वेदना को एक चिर परिचित मुस्कान से मानो छिपाते हुए बोल उठे थे—सब कुछ ठीक तो है, कही कोई कमी तो नही।

शतशत बालिकाओ का मन उनकी इस बात से प्रसन्नता से खिल उठता था।

आज फिर विद्यालय मे एक समारोह का आयोजन था। सम्पूर्ण विधिया पूववत् थी परन्तु सभी की आँखें कही कुछ तलाश रही थी। किसी को देख पाने का असफल सा प्रयास कर रही थी। वह तलाश थी पूज्य चाचा साहब की।

नारी जागृति के क्षेत्र मे महान् प्रयास करने वाले जन-जन के सहायक को आज भला हम कैसे भूल सकते हैं? जो इस अनन्त सृष्टि मे नाशवान् शरीर से मरकर भी अपने महान् कम भाव से अमर हो गये।

आप जग से जो गये,
अजेय इसान की तरह॥
मरण के इस रण मे,
अमरण आकण तनी कमान की तरह॥

—अध्यापिका, श्री वीर बालिका विद्यालय



नारी-शिक्षा के प्रेमी



हमारी इस विद्यालय रूपी बगिया को महकते कई वर्ष हो गये, भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्पो से सुगन्धित इस बगिया के माली को काल के क्रूर हाथो ने हमारे बीच से उठा लिया। जिस प्रकार एक माली अपने द्वारा सिजोंए पुष्पों को देख कर मन ही मन पुलकित होता है उसी प्रकार इस विद्यालय परिवार (श्री वीर बालिका) का संरक्षण करने वाले थे, हमारे चाचा साहब (श्री राजरूपजी टाक)। अपने जीवन काल मे आप विभिन्न शैक्षिक संस्थाओ से जुड़े रहे, पर वीर बालिका, तो आपके लिए परिवार स्वरूप थी। इस सस्था को फलता-फूलता देख कर आप ऐसे प्रसन्न होते थे जैसे माता-पिता अपनी सन्तान की प्रगति को देख कर फूले नहीं समाते है।

आप स्त्री-शिक्षा के पक्षधर थे। श्री वीर बालिका सस्था इसी उद्देश्य से स्थापित हुई कि शहर की छात्राएँ इससे लाभान्वित हो सके। वे चाहते थे कि छात्राओ का सर्वागीण विकास हो। शिक्षा के साथ-साथ उनमे अनुशासन, आध्यात्मिकता, परोपकार, त्याग जैसे गुणो का बीजारोपण हो, जिस सस्था के संस्थापक का समस्त जीवन ही प्रकाशवान हो, एक जाज्वल्यमान नक्षत्र ही नही, आभाशील शशि सा शीतल तथा आलोकपुंज, रवि सा प्रखर और तेजोमय हो। उसके द्वारा संचालित सस्था तो अपने आप मे एक आदर्श होगी।

आप छात्राओ की हर सुविधा का ध्यान रखते थे। जो छात्राये उन्हें आर्थिक स्थिति से पिछड़ी नजर आती, उनकी मदद वे ऐसे करते थे कि उन छात्राओ को यह आभास न हो पाये कि वे अन्य छात्राओ से कमजोर है। वे उनके लिए यूनिफार्म, फीस, स्वेटर, पुस्तको आदि का पहले ही प्रबन्ध करा देते थे। कोई भी छात्रा पैसो के अभाव में अशिक्षित न रह जाये, यही चिन्ता उन्हे सालती रहती थी।

आप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जौहरी थे पर हृदय से अत्यन्त सरल, उदार व मृदुभाषी थे। जो भी उनके सम्पर्क में आता, उनके इन सद्गुणों की एक अमिट छाप अपने साथ ले जाता।

स्वर्गीय चाचा सा० जब भी विद्यालय के किसी उत्सव मे पधारते थे, सबका मन श्रद्धा से भर उठता था। वे विद्यालय के हर उत्सव मे आते थे और मनोयोगपूर्वक पूरा उत्सव देखते थे। यहाँ के संचालक तथा शिक्षिकाओ की प्रशंसा करते, तथा कलाकारो को अपने पास से पुरस्कृत करते थे।

राजरूपजी एक महान् दिव्यात्मा पुरुष थे। उन पर भगवान महावीर, बुद्ध व गांधी की छाप थी। राजस्थान उनके त्यागमय जीवन को सदा याद रखेगा। उनका जीवन सदा हमारा मार्ग-दर्शन करता रहेगा।

—पुष्पा श्रीवास्तव

अध्यापिका, श्री वीर बालिका विद्यालय

उस अनन्त मौन का कुछ शेष है

□ श्रीमती शशिबाला शर्मा

श्वेत वस्त्रों से आच्छादित, श्वेत पर्यक पर अवस्थित, अर्ध मीलित नेत्रों से साधक किसी गहन समाधि में तल्लीन, गहन वेदना रूपी गरल के घूँट को छक कर पीते हुए उन कालजयी, धर्म प्राण, प्रातःस्मरणीय श्रीमान् राजरूपजी टाक धारणात् धर्म की उक्ति के जीवन्त प्रतिमान थे।

अपने अधखुले अधरों से जीवन के अवसान काल में जो धर्म प्राणमयी शिक्षा देना चाहते थे वह शिक्षा मानवीय सृष्टि के लिए महानतम शिक्षा थी, परन्तु काल के क्रूर पंजों ने मध्य में ही उनकी इस अमिट अभिलाषा को दबाने का प्रयास किया, परन्तु उनके हृदयोदगार आज भी उनकी कर्मस्थली में कार्यरत प्रति व्यक्ति के कमठ हाथों से निकल कर मुखरित हो रहे हैं। उनके प्रत्येक प्रयास ने उपनिषद् के उस महान् मन्त्र को चरितार्थ किया है—"चरवेति चरेवेति।" इसी का परिणाम था कि वह अपने आप में एक अनुपम दृष्टान्त थे।

जैन धर्म से सम्बद्ध होकर भी उस महा प्राण को धर्मों और वर्गों की प्राचीरें किसी सीमा में बाँध नहीं सकीं। धर्म की सार्वभौमिक एवं चिरन्तन सत्ता के रूप में स्वीकारते हुए उन्होंने उस महान् धर्म को स्वीकारा, जो विश्व के समस्त धर्मों में सर्वोपरि है। वे उस महान् मानवतावादी धर्म के समर्थक रहे, जिसमें वाक् ताव की पीड़ा तीक्ष्ण शर की पीड़ा से कहीं अधिक होती है। इसी का परिणाम था कि वह जन जन के मानस की पीड़ा के सहायक तो बने परन्तु उनके अन्तस् की अन्तनम भावना यही रही कि कहीं किसी मानस को ठेस न लगे, कहीं किसी की वेदना अभावों के झंझावात में टूट कर बिखर न जाये।

"दशक धर्म लक्षण" की अनुपालना में रत वह अपरिग्रही यद्यपि लक्ष्मीपति रहे परन्तु अपरिग्रह के सिद्धान्त को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने अपना जीवन एक जीवन्मुक्त सन्यासी की भांति व्यतीत किया। निश्छल चरित्र, कर्म काण्डों की कट्टरता से करोड़ों मील दूर, उन कर्मयोगी की जीवन शाला कर्मों के बँधन से कुछ इस प्रकार बद्ध थी कि उन्होंने "खुद जियो औरों को भी जीने दो" के इस महामन्त्र को कर्म भूमि में उतारते हुए अनेक जीवन से हारे, निराशा के गहन अंधेरे में डूबते-उतरते लोगों को स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षित करके इस उक्ति को यथार्थ सिद्ध कर दिखाया कि—

"अन्ने क्षणिका तृप्ति, यावत् जीव च विधया।"

जिस प्रकार एक प्रज्ञावान व्यक्ति मथित दधि से नवनीत को ग्रहण करता है उसी प्रकार "सार-सार समृद्र कृत्य" के कथनानुसार उन्होंने धर्म की गूढ़तम शिक्षा को ही ग्रहण किया। धर्म में उत्पन्न विकृतियों को उन्होंने दूर से ही त्याग दिया।

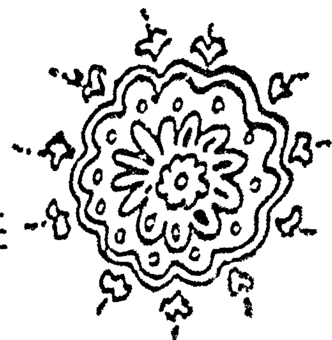
जीवन की सही शिक्षा, नैतिक सदाचरण की शिक्षा है, इस सिद्धान्त के समर्थक श्रीमान् चाचा साहब ने शिक्षा के अन्तर्गत धार्मिक शिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया।

और अंत में यह कष्ट तो शरीर का धर्म है, कर्मों का अनुबन्ध है, मानव जीवन की नियति है, ऐसा मानते हुए वह महान् आत्मा छक कर हर पीड़ा, हर वेदना को पीती रही उसके। मुख से उफ न निकला। वे सृष्टि से विलग हो गये परन्तु अपने सिद्धान्तों से विलग कभी नहीं हुए। आज उनके सिद्धान्त, उनके देखे गये स्वप्न हमारे लिए एक चुनौती बनकर खड़े हैं। उनकी स्मृति हमारे लिए तभी सही सिद्ध होगी, जबकि हम उनके स्वप्न को साकार कर दिखायेंगे।

व्याख्याता, श्री वीर बा उ मा विद्यालय, जयपुर

अनोखे व्यक्तित्व के धनी

चाचा साहब



भारत की पावन भूमि पर अनेक महान् पुरुषों ने जन्म लिया उनमे से बहुमुखी प्रतिभा के धनी चाचा साहब एक थे। सादा जीवन व उच्च विचार के धनी श्री टाक साहब राष्ट्रीय विचार धारा के सर्व-धर्म समभावी कर्मठ समाजसेवी थे। धार्मिक सहिष्णुता का भाव आपकी रग-रग मे व्याप्त था। चाचा साहब भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की धर्मनिरपेक्षतावादी नीति के समर्थक थे। चाचा साहब प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति हिन्दू हो या मुसलमान, उसे अपना शिष्य बनाते थे।

चाचा साहब का जन्म श्रावण बदी 15 सम्वत् 1964 को चिडावा राजस्थान मे माणकचन्द श्रीमाल के यहाँ हुआ था। मात्र 6 वर्ष की उम्र मे ही वे अपने पिता के नाना श्री छगनलालजी टाक के यहाँ गोद आ गये थे।

चाचा साहब ने कक्षा 8 तक नियमित अध्ययन किया तत्पश्चात् 14 वर्ष की आयु मे ही भारत स्वतन्त्रता आन्दोलन मे कूद पड़े। आपने प्रजा-मण्डल की स्थापना मे सहयोग दिया एवं इसके कोषाध्यक्ष भी रहे। आपने भारत की आजादी आन्दोलन मे सक्रिय रूप से भाग लिया। आप जयपुर राज्य की प्रथम विधान सभा के निर्वाचित सदस्यो मे से एक थे।

श्रद्धेय चाचा साहब देश-विदेश के सुप्रसिद्ध जौहरियों मे थे। आप रत्न परखने की कला में दक्ष थे। आपने इण्डियन जेमोलोजी (Indian Gemology) पर अग्रेजी और हिन्दी मे एक पुस्तक लिखी जो अमेरिका की एक संस्था जी. आई. ए. के पाठ्यक्रम में है।

चाचा साहब को रत्न-व्यवसाय के लिए 3 बार पुरस्कृत किया गया। 2 वर्ष पूर्व अप्रेल में इण्डियन जेम्स एण्ड डायमण्ड व कलर एसोसियेशन अमेरिका न्यूयार्क में आपको आपकी उल्लेखनीय सेवाओ के लिए स्वर्ण पदक द्वारा सम्मानित किया गया। आपको लेख मे Dean of Jaipur Gem-Dealers की उपाधि से सम्बोधित किया गया।

यह तो आम बात है कि किसी अध्यापक के शिष्य हो, परन्तु किसी व्यवसायी के शिष्य होना बड़ी बात है। चाचा साहब ने सैकडो लोगो को रत्न-व्यवसाय का प्रशिक्षण देकर उन्हे न केवल अपने पैरों पर खडा किया वरन् उन्हे श्री सम्पन्न बनाकर समाजसेवा के क्षेत्र मे भी अग्रसर किया। आपने रत्न-व्यवसाय की शिक्षा हेतु अपने घर पर ही एक केन्द्र की स्थापना की। चाचा साहब स्वयं निष्णात रत्न पारखी थे।

श्रद्धेय श्री राजरूपजी टाक महिला शिक्षा के क्षेत्र मे भी सक्रिय रहे। आप जयपुर नगर मे महिला शिक्षा की मशाल प्रज्वलित करने वालों मे

राष्ट्र भक्त



• वह स्वय एक सस्या थे। न जाने कितनी सस्थायें उनके द्वारा सचालित व अनुप्रेरित थीं। वे एक महान् धार्मिक महानुभाव थे। वे एक महानतम समाज सेवक, परोपकारी राष्ट्रभक्त थे। उनकी सेवायें चिरकाल तक जन-जीवन के हर पहलू मे स्मरण की जाती रहेंगी।

—श्री अखिल विश्व जैन मिशन,
निवाई (टोंक)



से एक थे। इसका जीवत उदाहरण श्री वीर बालिका विद्यालय है। जिसकी स्थापना 63 वष पूव साध्वी श्री स्वण श्रीजी के उपदेशो से प्रेरित होकर की गई थी।

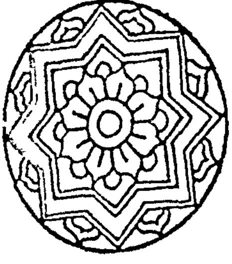
दु खी, पीडित व विकलाग व्यक्ति को देखकर आपका हृदय पसीज जाता था। आपने विकलागों की सेवा हेतु 'महावीर विकलाग सहायता समिति' की स्थापना की व इसके सस्थापक एव अध्यक्ष रहे। आपने नेत्रहीनो के कल्याण हेतु 'राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ' को अपना सहयोग दिया तथा अतिम समय तक अध्यक्ष पद पर रहे। आपको पीडितो का मसीहा भी कहा जाता था।

महामहिम चाचा साहब धार्मिक व अध्यात्म प्रिय व्यक्ति थे। सभी धर्मों के प्रति आपके मन मे आदर का भाव था। जैन धम के नियमो के आप पालन कर्ता थे। आप सादगी, सेवा, सहिष्णुता व सरलता की प्रतिमूर्ति थे। आप गाधीजी के अनन्य भक्त थे। खादी आपका बाना व सेवा आपका व्रत रहा है। आपके "वसुधैव कुटुम्बकम्" के विचार थे अर्थात् आप सारे ससार को अपना परिवार समझते रहे थे।

चाचा साहब ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने एक ही क्षेत्र मे नही वरन् अनेक क्षेत्रा मे वचस्व प्राप्त किया। इतिहास पढने व लिखने वाले व्यक्ति तो बहुत होते हैं, परन्तु अपना इतिहास स्वय बनाने वाले व्यक्ति बहुत कम होते हैं। इतिहास बनाने वाले व्यक्तियों मे ही चाचा साहब की गणना की जाती हैं।

यही महान् व्यक्तित्व स्वास्थ्य खराब होने के कारण दिनाक 27 10 87 को ज्ञान पचमी के दिन परलोक सिधार गये, यह सभी लोगो के लिए बडे शोक की घटना है। हमारे समाज का एक सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया।

—मीना अग्रवाल, XIth C



सर्व समभाव समर्थक

□ कुमारी मीना जैन
XI C

चाचा साहब का नाम लेते ही ऐसा अनुभव होने लगता है मानो किसी वीतराग, शान्त एवम् सरल संन्यासी का नाम लिया जा रहा हो और सहसा एक भोली-भाली निश्छल, निष्कपट, निर्दोष, सौम्य मूर्ति सामने आ जाती है। भागीरथी के पवित्र जल के समान उनका पुनीत एवम् अकृत्रिम आचरण आज भी हमारे हृदय को पवित्र बना रहा है। वह उन निःस्पृही व्यक्तियों में से थे, जो वैभव एव विलासिता के रहते हुए भी पूर्ण विरक्त होते हैं : चाचा साहिब गीता में वर्णित अनासक्त कर्मयोग की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रमुख समाजसेवी, राष्ट्रभक्त एवं देश के ख्याति प्राप्त प्रमुख जौहरी श्री राजरूपजी टांक का कार्तिक शुक्ला 5 (ज्ञान पंचमी) मंगलवार, दिनांक 27–10–87 को मध्याह्न मे उनके निवास स्थान जयपुर में स्वर्गवास हो गया।

श्री राजरूपजी टाक की मृत्यु से हमारे देश ने एक अमूल्य रत्न को खो दिया है जिसे कई वर्षों तक प्राप्त करना कठिन है।

चाचा साहब का जन्म श्रावण वदी 30 सवत 1964 को चिड़ावा राजस्थान के प्रमुख व्यवसायी श्रीमाल के यहाँ हुआ। 6 वर्ष की उम्र में ही राजरूपजी टांक जयपुर की प्रमुख फर्म 'श्री हीरालाल छगनलाल' के यहाँ गोद आ गये। यहाँ इन्होने जयपुर के प्रमुख जौहरी व रत्न-पारखी श्री रतनलालजी फोफलिया को रत्न-परीक्षा के लिए अपना गुरु वनाया और अल्पकाल में ही ये गुरु की कृपा और अपनी प्रतिभा के वल पर रत्न-परीक्षकों में दक्ष गिने जाने लगे। इसके वाद इन्होंने जवाहरात के उद्योग को अपना प्रमुख कार्यक्षेत्र बनाया। शीघ्र ही आप अपनी बुद्धि चातुर्य से विदेशों मे प्रमुख रत्न-पारखी के रूप से पहचाने जाने लगे।

विदेशों से इनके पास परीक्षा के लिये रत्न भेजे जाने लगे। इन्होंने रत्नों पर Indian Gemology नामक पुस्तक लिखी। जिनकी ख्याति पूरे विश्व में फैली। अमेरिका मे तो इसे पाठ्यक्रम विषय के रूप मे प्रमुख स्थान मिला है, जो जवाहरात व्यवसाय के लिये गौरव की बात है।

राजरूपजी टाक ने विभिन्न प्रान्तों व जातियों



कर्मठ समाजसेवी

☐ स्व श्री राजरूपजी टाक साहब के निधन से राजस्थान का एक महान एव कर्मठ समाजसेवी, धर्मनिष्ठ, शिक्षाप्रेमी व्यक्तित्व का अभाव हो गया है। टांक साहब राजस्थान और मुख्यतया जैन समाज की एक विशिष्ट हस्ती थे। अनेक मानवीय गुणों से अलकृत टांक साहब का अनेक शिक्षण सस्थाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध था।

—श्री पदमावती जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय

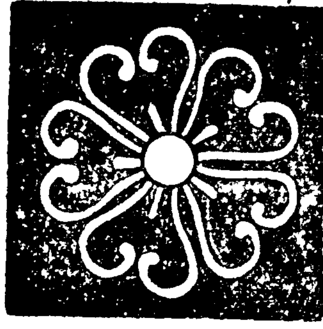
के विद्यार्थियो का रत्न-व्यवसाय का प्रशिक्षण दिया। इनके द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करन वाल करीब 1000 विद्यार्थी थ। जिनमें अनेक ने इस व्यवसाय में कीर्तिमान स्थापित किया। राजरूपजी टाक ज्वेलर्स एसोसियशन के अध्यक्ष भी रह।

राजरूपजी टाक जवाहरात की शिक्षा महिलाओ को भी देना चाहते थे। उनका कहना था कि महिलाए पुरुषो से आगे बढ सकती हैं। लेकिन महिलाओ का जवाहरात की शिक्षा देन के सपने को वे साकार नही कर सके।

जौहरी राजरूपजी टाक का जवाहरात के क्षेत्र में प्रमुख योगदान रहा है। जिस प्रकार दीपक अधेरे में प्रकाश फैलाकर उजाला कर देता है उसी प्रकार चाचा साहब ने अनेक को जवाहरात का ज्ञान देकर उनके जीवन को देदिप्यमान कर दिया।

चाचा साहब का 2 वष पूव ही अमरिका के न्यूयार्क नगर में रत्न व्यवसाय की सस्था द्वारा स्वण पदक मे सम्मानित किया गया। भारतीय रत्न निर्यात सवद्धन परिषद् द्वारा रत्नो के सर्वोच्च निर्यात के कारण आपको तीन बार सम्मानित किया गया। विदेशी भी आपसे अति प्रभावित हुए हैं। अमेरिका के 'माडन ज्वेलस' नामक पत्रिका के सम्पादक श्री हायर हूष्ठ तो आपस जयपुर मिलने को आये और अपनी पत्रिका में चाचा साहब के सम्बन्ध में लेख लिखते हुए चाचा साहब को Dean of Jaipur Gem Dealers से सम्बोधित किया।

चाचा साहब प्रमुख रत्न-पारखी व जौहरी थे लेकिन वे तो हमारे लिए एक रत्न से बढकर अमूल्य रत्न थे, उस अमूल्य रत्न के प्रकाश का साया हमारे सिर पर नही रहा लेकिन उनके आदश सदा हमारे हृदय में दीपक के समान प्रकाश देत रहगे। ☐



☐ डॉ. श्रीमती सरोज वर्मा

○

महामना चाचा साहब

निरन्तर प्रवहमान, गतिशील इस सृष्टि में मानव आता है और चला जाता है किन्तु कुछ महामानव इस छोटी-सी जीवन-यात्रा मे इस संसृति के अनन्त मार्ग पर अपने श्रेष्ठ कर्मो के ऐसे चरण-चिह्न छोड़ जाते है, जो पथ-प्रदर्शक प्रकाश-स्तंभ बनकर भावी सतति का मार्ग प्रशस्त करते रहते है। चाचा साहब ऐसे ही महामानव थे।

सीधी-सादी वेशभूषा, धवल खादी के वस्त्र और मन भी वैसा ही धवल। सादा जीवन और उच्च विचार की जीवन्त साकार प्रतिमा थे वे। उनका व्यक्तित्व प्राचीन और नवीन का सुन्दर समन्वय था। एक ओर वे प्राचीन भारतीय संस्कृति और धर्म के पुजारी थे तो दूसरी ओर गांधीजी के क्रांतिकारी विचारो के पोषक, शोषित वर्गों के पक्षधर। एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप मे उन्हे सदैव कार्य मे संलग्न देखा जा सकता था। उनके व्यक्तित्व मे कुछ ऐसा अपनापन था कि कोई भी अभावग्रस्त व्यक्ति उनके पास नि.सकोच पहुँच जाता था। अनेक बार ऐसा हुआ कि वे ऐसे जरूरतमद लोगों को काम पर रख लेते थे जिनकी कोई आवश्यकता नही होती थी और अपने पास से उन्हे आर्थिक सहायता देते थे, जिससे व्यक्ति-विशेष के अहम् को ठेस न लगे।

पूज्य चाचा साहब के सान्निध्य मे रहकर, एक शिक्षिका के रूप मे उन्हे निकट से देखने के अनेक अवसर मुझे मिलते रहे है। सन् 1955 मे वीर बालिका स्कूल मे हाई स्कूल की छात्राओ के लिए अग्रेजी की शिक्षिका के रूप मे मेरी नियुक्ति हुई थी। उनकी महानता एव निरभिमानता के प्रथम दर्शन मुझे तभी हुए। सभी शिक्षिकाओ को वे पूर्ण सम्मान देते थे। वे सस्था के सस्थापक है, सरक्षक है, ऐसा अहम् उनमे कभी नही था। मुझे स्मरण है उनकी पुत्रियों की शिक्षिका होने के नाते मैने यह कभी अनुभव नही किया कि वे अपनी सन्तान के लिए कोई विशेष सुविधाओ की अपेक्षा रखते हो।

चाचा साहब की इस महान् सफलता मे चाची का भी सक्रिय योगदान रहा है। मुझे याद है, स्कूल में प्राय. वे आया करती थीं। हम अध्यापिकाओ के साथ उनका व्यवहार अत्यन्त वात्सल्यपूर्ण और स्नेहपूर्ण रहा करता था। अपने हाथ से बनी स्वादिष्ट वस्तुएँ खिलाने का उन्हे बहुत शौक था। उन्ही दिनो (1956-57) सांगानेर मे एक सामाजिक शिविर लगा था। उस शिविर मे चाची भी आई थी। शिविरार्थियों के प्रति उनका वात्सल्यपूर्ण व्यवहार मुझे याद भी याद है। अपने हाथ से [illegible] बना [illegible]

जब तक सबको परोस नहीं लेती थीं तब तक उन्हें अच्छा नही लगता था। चाचीजी और चाचा साहब के इस स्नेह ने ही कदाचित उस समय में सबको बाध कर रखा। चाचा साहब के सद्गुण उनकी सन्तानों में यथावत हैं। उनके सुपुत्र और सुपुत्रियां सभी बड़े विनीत, विनम्र, मृदुभाषी एव व्यवहार-कुशल हैं।

महिला शिक्षा को वे बहुत महत्त्व देते थे। वे प्राय कहा करते थे कि लडकी के हाथ में पूरे परिवार की बागडोर होती है। भावी सतति का निर्माण वही करती है अत उसका शिक्षित होना आवश्यक ही नही, अनिवार्य है। इसी विचारधारा से प्रेरित वे महामना सदैव महिला शिक्षा के लिए जूझते रहे। रूढ़ियों से ग्रसित जिस समाज में रह कर इस सुकृत्य के लिए उन्होंने जो सघर्ष किया, उसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती। सन् 1925 से आज तक जो अथक, सतत, एकनिष्ठ प्रयास उन्होंने किया, उसी का पुण्य फल वीर बालिका शिक्षा सस्थान है जहा आज हजारों छात्राए शिक्षा लाभ कर रही हैं।

इस सस्था की सफलता का श्रेय उन्होंने कभी अपने पर नहीं लिया। वे यही कहा करते थे कि यह सब आप लोगों का ही प्रयास है। मैं तो बिना पढा लिखा व्यक्ति हूँ। वे ऐसे निरभिमानी व्यक्ति थे।

सामान्य-जन का हित ही उनके लिए सर्वोपरि था। बहुत से व्यक्ति उन्हें कहा करते थे कि जितना रुपया आपने खर्च करके महाविद्यालय, शहर के बीच में बनवाया है उतने व्यय में आप शहर के बाहर सुदर व आकर्षक स्थान पर महाविद्यालय, भवन का निर्माण करवा सकते हैं। इसके लिए हर बार वे यही कहते थे कि यह कॉलेज शहर के सामान्य-जन की कन्याओं के लिए है जो दूर जाकर ज्ञानोपार्जन नहीं कर सकतीं। सामान्य-जन के लिए इतना सोचने वाला अन्य कौन हो सकता है? हरिजन सस्थाएं, विश्राम, अनाथाश्रम, नेत्रहीन विद्यालय, गोशाला, महावीर विकलाग समिति इत्यादि अनेक सस्थाओं में उन्होंने मूक समाज सेवी की भाति कार्य किया है। यह वर्ग उनका सदा सर्वदा ऋणी रहेगा।

उनका अधीनस्थ कर्मचारी वर्ग क्या कभी उनके व्यक्तित्व की सदाशयता को भूल सकता है! उनमें इतना अपनत्व था कि सभी बिना किसी भेदभाव के अपनी समस्याएँ उनसे नि सकोच कहा करते थे और सदैव पिता का सा आश्वासन तथा बड़े भाई का सा सहयोग प्राप्त करते थे। एक प्रकार का सात्विक वातावरण उन्हें सदैव घेरे रहता था और ऐसा अनुभव होता है मानो वही उनके समस्त शिव-सकल्पों एव सफलताओं का आधार था।

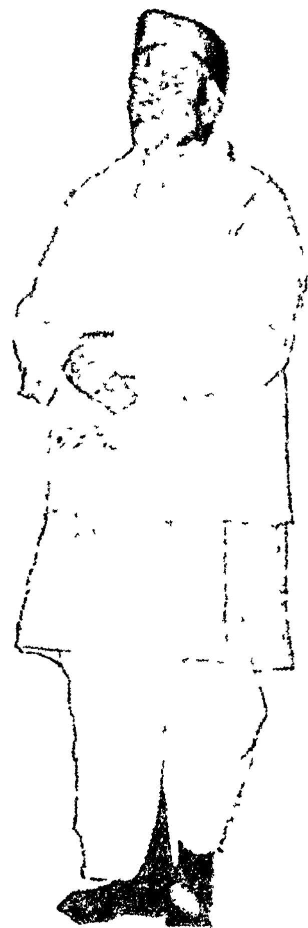
उनमें अदम्य साहस था, विषम आर्थिक परिस्थितियों में भी वे अडिग रहते थे। सौभाग्य से उन्हें आदरणीय हीराचन्दजी भाई साहब जैसे कर्मठ एव एकनिष्ठ सहयोगी भी प्राप्त थे, जिन्होंने उन्हें सदैव अनवरत सहयोग दिया। अपनी सूझबूझ एव दक्षता से चाचा साहब विषम स्थिति का कोई न कोई समाधान निकाल ही लेते थे। हम लोगों को ऐसा लगता था कि हर समस्या का समाधान उनके पास है।

चाचा साहब आज हमारे बीच नहीं हैं, ऐसा लगता ही नही, वे अमर हैं। एक प्रकाश स्तम्भ की भाति वे सदा सर्वदा अपने शुभ कर्मों द्वारा हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे। हृदय की अपार श्रद्धा सहित नत-मस्तक होकर अन्त में मैं यही कहूँगी—

हे! युग द्रष्टा, हे! युग सृष्टा,
दो युग युग तक हमको प्रकाश तुम।
नत मस्तक सब आज खड़े,
करते तुमको शत-शत प्रणाम हम॥

—हिन्दी प्राध्यापिका, वीर बालिका कॉलेज

श्री राजरूप टांक के सम्बन्ध में—



आचार्यों-संतों, राजनेताओं, साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों एवं प्रमुख व्यक्तियों के आचार-विचार, उद्गार एवं अभिव्यक्त की गई भावनाओं का सूक्ष्म दर्शन—

महाजन के अनुरूप

सुश्रावक श्रीमान् राजरूपजी सा. टांक का दु:खद समाचार जाना। वे एक चलती-फिरती स्कूल की तरह से थे। उनके जीवन प्रसगो से आने वाले पीढ़ी के जवानों को प्रेरणा लेनी चाहिये। वे एक सुन्दर-सज्जन-धर्म श्रद्धालु व्यक्ति थे। अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। देश के उद्योग विशेषकर जवाहरात के व्यवसाय में उनका अच्छा योगदान रहा है। एक महाजन के अनुरूप उनका व्यावहारिक जीवन रहा है।

उनके चले जाने से जैन श्वेताम्बर श्री संघ, जयपुर को बहुत योग्य व्यक्ति की कमी हुई है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होना सम्भव नही दिखता है।

उनकी आत्मा को परमशांति मिले, यही शासन देव से नम्र प्रार्थना है।

—आचार्य पद्मसागर सूरि, बम्बई

धन्य जीवन

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान के प्राण, समाज-रत्न श्रावक, कुल-भूषण श्री राजरूपजी साहब टांक, जो विश्व के विख्यात जौहरी थे, मानव मात्र की सेवा तन-मन-धन से करते-करते आयुष्य समाप्त करके सेवा के क्षेत्र मे अपूर्व उदाहरण बन गये। मेरे बिछुड़े हुए सेवा प्रेमी मेरी याद सतावे।

खरतरगच्छ के एक महान् डायमण्ड का वियोग सदा खटकता रहेगा। हमारे बचपन के साथी ने अपना जीवन सार्थक बनाया, योग्यता प्राप्त सज्जनों को प्रेक्टीकल ज्ञान दे गये, धन्य जीवन।

—आचार्य जिन उदयसागर सूरि, जबलपुर

देव, गुरु, धर्म के उपासक

तत्त्व रमण शुचि ध्यान भणी जे आदरे ।
ते समता रस धाम स्वामि मुद्रा वरे ॥
—श्रीमद् देवचन्द्रजी

तत्त्व की रमणता की झलक जिस महानुभाव के चेहरे पर सदव प्रतीत होती थी, जिन आज्ञा के प्रति पूर्ण समर्पित भाव को जिन्होंने अपने जीवन में उतारा था, साधु-साध्वियों की शिक्षा एव औषध आदि के लिये आप सदैव तत्पर रहते थे । गच्छ और समाज के आप महारत्न थे । उन महानुभाव का अभाव हमारे मन को सदैव उदास बनाता है ।

ऐसे पुण्य आत्मा, शासन के रत्न, पुण्य श्लोक श्रीमान् राजरूपजी सा टाक की परम पुनीत आत्मा शीघ्र शाश्वत सुख को प्राप्त करे, ऐसी परम कृपालु जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता हुआ, मैं इस महान् दिवगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ ।

—जयानन्द मुनि, इन्दौर

अपूरणीय क्षति

समाज रत्न श्री राजरूपजी टाक की स्मृति मे स्मृति विशेषांक प्रकाशित हो रहा है, जानकर प्रसन्नता हुई । श्री टाक साहब का जीवन व्यापक उपयोगिता लिए हुए था । जैसे नदी का पानी, वृक्ष का फल व सूर्य का प्रकाश सबके लिए होता है, वैसे ही श्री राजरूपजी साहब का शरीर, बुद्धि, धन, अधिकार आदि जीवन की समस्त शक्तियाँ समाज, शहर, प्रान्त आदि के लिए काफी उपयोगी थी ।

उन्होंने अपने जीवन मे अनेक संस्थाओं के सक्रिय कार्यकर्ता रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान की । वीर बालिका महाविद्यालय के सर्वाङ्गीण विकास मे, प्रारम्भ से लेकर ख्याति प्राप्त अवस्था तक मे उनका विशेष योगदान रहा ।

पारिवारिक, सामाजिक, व्यापारिक क्षेत्र मे प्रमुखता एव यश अर्जित करने के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र मे भी वे अग्रणी रहे । जिन दर्शन, गुरु भक्ति, स्वाध्याय, सामायिक आदि शुभ प्रवृत्तियाँ उनकी दैनिक चर्या मे प्रमुख कर्तव्य थी ।

मैंने उनको अपने साध्वी जीवन के इक्तीस वर्ष मे अनेक बार देखा ही नहीं, विशेष परिचय भी रहा—कई बार स्वाध्याय प्रवृत्ति मे उनके विचारो की गहराई ज्ञात होती थी । शिक्षा व चिकित्सा मे वे विशेष रूप से भावनाशील थे । विनय विवेक उनकी प्रवृत्तियो मे प्रत्यक्ष परिलक्षित होता था । मैं टाक साहब के व्यक्तित्व को जब अनेक प्रकार से व्यापक उपयोगी अनुभव करती हूँ तब मुझे जयपुर सघ के मध्य उनका देह विलय एक अपूरणीय क्षति महसूस होता है । उनकी सद्गत आत्मा को चिर शान्ति, सहज आत्म सुख प्राप्त हो—ऐसी शुभकामना ।

—साध्वी मणिप्रभा श्री

अमृत पुरुष थे

परम पूज्य गुरुदेव स्व. आचार्य भगवन्त श्री जिन कान्तिसागर सूरीश्वरजी म. सा. के प्रति उनका समर्पण भाव व लगाव अद्वितीय था। वे एक कर्मठ कार्यकर्ता, समाज नेता व विशिष्ट सूझ-बूझ के धनी थे। उनका पूरा जीवन परोपकार के प्रति समर्पित था। मध्यवर्गी स्वधर्मी बन्धुओं के लिये वे साक्षात् अमृत पुरुष थे। उनका सम्पूर्ण जीवन आदर्श था।

उनकी स्मृति मे प्रकाशित हो रही यह स्मारिका उनके जीवन के हर नयनाभिराम पहलू को प्रकाशित करेगी व आने वाली पीढ़ी को नया प्रकाश देगी। मैं यही कामना करता हूँ।

—मुनि मणिप्रभ सागर

स्व-पर प्रकाशक 'चा.' सा.

गुलाबी नगरी (जयपुर) के जाने-माने जौहरी, जिन्हें लोग 'चा.' साहब के नाम से जानते हैं। वे जयपुर के ही नही अपितु समस्त जौहरी समाज के रत्न-पारखियों मे सर्वोत्कृष्ट पारखी ज्ञाता थे। भारत मे ही नही अपितु विदेश मे भी उन्हें रत्न-पारखी विशिष्ट जौहरी के रूप में सम्मानित किया गया—जिस सम्मान को 'चा.' सा. की अस्वस्थता के कारण उनके सुयोग्य पुत्र श्री दुलीचन्द जी ने स्वीकारा।

'चा.' सा. जिनके जीवन के दोनों पक्ष सम थे। स्व-पर कल्याण मानो उनके जीवन का शृंगार था। जिनेन्द्र भक्ति, जिन-वाणी-वाचना (स्वाध्याय), उसकी गहराई मे गोते लगाना, उन पर गम्भीर चिंतन, साधु-साध्वियो के साथ धर्मगोष्ठी उन्हे प्रिय थी, समाज कल्याण मे भी उनका विशिष्ट योग रहा—समाजसेवा में जिन्होने विशेष रूप से श्री वीर बालिक महाविद्यालय सम्भाला तथा अन्य कई सस्थाओ को भी सम्भाला, कितने ही बन्धुओ को जिन्होने रत्न-पारखी बना—अर्थोपार्जन योग्य बनाया। उनका जीवन स्व-पर प्रकाशक, दीपक तुल्य था—मात्र स्व या मात्र पर ही को न अपनाते हुए समान रूप से दोनो मे जीवन जीते हुए। जयपुर का अमूल्य रत्न, कोहिनूर हीरा (आज) समाज के बीच से उठ गया पर उसका प्रकाश आज हजारो में जगमगा रहा है। वे स्व पर रोशनी छोड़ गये। जैन समाज के धार्मिक क्षेत्र मे भी उनके तुल्य अध्यात्म रत निमग्न व्यक्ति इने-गिने ही मिलेगे—उनका जीवन सभी के लिए प्रेरणास्पद बने....इसी मगल कामना के साथ।

—विचक्षण पद रेणु साध्वी विद्युत् प्रभाश्री
वीर बालिका विद्यालय की (भूतपूर्व छात्रा) बीना टांक

धर्मप्रियता प्रशंसनीय थी

श्री राजरूपजी टांक का स्वर्गगमन का पत्र मिला। शासन की सेवा, धर्मप्रियता प्रशंसनीय थी। उनकी आत्मा को शान्ति मिले।

—साध्वी देवेन्द्र श्री, हाटपिपल्या

आदमी की पहचान सूरत नही,
हृदय का विस्तार है !

गुलाब विकसित होता है। उसका आकार और रूप-रग जन-मन को मोहित करता है। उसकी सौरभ मन मस्तिष्क को ताजगी देती है। यदि उसमे से सुगन्ध निकाल दी जाय तो रग रूप का क्या मूल्य हो सकता है ? कुछ भी नही।

यही स्थिति व्यक्ति की है। शरीर कितना ही मनोज्ञ क्यों न हो ? सुगठित भी हो, क्या मूल्य है उसका ? मूल्य होता है इन्सान की इन्सानियत का, मानव की मानवता का, व्यक्ति के व्यक्तित्व का।

श्रीमान् राजरूपजी सा टाक ने जो ख्याति प्राप्त की है, उसका सकल श्रेय उनकी सतत अध्ययनशील प्रवृत्ति, चिन्तन मनन एव ज्ञानवर्धन की पिपासा को है। करुणा एव प्रेम की साक्षात् मूर्ति ही थे। वे ज्ञान, स्नेह व वात्सल्य के समुद्र थे। उनके जीवन म कभी उफान-उत्तेजना का नहीं देखा। उनके तेजस्वी चेहरे पर हर क्षण मधुर मुस्कान रहती थी। हृदय के कण-कण मे धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी।

आप देश के सुप्रसिद्ध जौहरी थे। रत्नों के पारखी तो थे ही, अध्यात्म साधना में भी भेद विज्ञान के पारखी थे। समाजसेवी व उदार हृदयी थे। सभी धर्मों के प्रति आपके मन मे समान आदर था। आप मे सादगी, सेवा भावना और सरलता थी।

आप अपने जीवन काल मे भगवान् महावीर विकलाग सहायता समिति के अध्यक्ष थे। राजस्थान नेत्रहीन कल्याण सघ के अध्यक्ष थे। आपकी विचारधारा गाधीवादी थी। प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष भी थे। आप कमठ कार्यकर्ता थे।

व्यक्ति के शरीर पर काल का प्रभाव पडता है, जीर्ण होना यह शरीर पुद्गल का स्वभाव है। विचार, चिन्तन, ज्ञान विज्ञान आत्मा का धर्म है। आत्मा का न जन्म होता है और न कभी मृत्यु, जो जन्म लेता है वह अवश्य मरता है।

समाज रत्न श्रीमान् टाक सा के नश्वर शरीर के न रहने से सार्वजनिक सेवा आदि का अभाव खटकता रहेगा।

आदमी की पहचान सूरत नहीं उसका सद्व्यवहार है।
शस्त्र की पहचान चमक नहीं, उसकी धार है ॥
तुम मानो या न मानो मेरी बात—
धार्मिक की पहचान, उपासना नहीं, हृदय का विस्तार है ॥

—विचक्षण शिशु साध्वी सुदर्शनाश्री

स्व-जीवन धन्य

मृत्यु ध्रुव सत्य है—जाना निश्चित है, जाने के पहले तैयारी करके जाना है खाली हाथ नही जाना है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण समाजसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता श्री राजरूपजी टांक हैं। श्री टाक साहब खाली हाथ नही गये है—पूरी तैयारी के साथ रवाना हुए है। वे समाज-रत्न स्थूल शरीर से हमारे समक्ष नही रहे किन्तु इनके कीर्तिस्तम्भ रूप, जन-सेवा, राष्ट्र-सेवा, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक क्षेत्र मे सच्ची लग्न, सच्चे त्याग से किये हुए कार्य युगो-युगो तक चिर-स्थायी रहेगे। चिरकाल तक करोड़ो जिह्वा श्रद्धान्वित होकर इस मृत्युञ्जयी समाज-रत्न के गीत गायेगी।

आज वे हमारे बीच मे से उठ गये, उसका सभी को दुःख है। परन्तु मैं उनके परिवार एवं मित्र वर्ग से कहूँगी कि श्री टांक साहब की मृत्यु को शोक एवं मातम में नही बदले। आवश्यकता इस बात की है कि उन्होंने अपने स्वजीवन को समाज की सेवा में अर्पित करके धन्य बनाया है, अतः हम यह समझने का प्रयत्न करे कि आप क्या थे, अपने देश, जाति, धर्म, शिक्षा एवं समाज के लिये आपने क्या किया। उनकी उच्च भावनाओ को साकार रूप देकर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना हम सबका कर्तव्य है। यही उन्हें हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि हो सकती है। उनकी आत्मा परम दिव्यता को प्राप्त करे, इसी मगल कामना के साथ।

—साध्वी चन्द्रप्रभा श्री

कामना

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री राजरूपजी टांक को पुण्य स्मृति में श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मै प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

—शिवचरण माथुर
मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर

दुःखियों के प्रति संवेदनशील

स्व. श्री टांक जयपुर के हर क्षेत्र की संस्थाओ से जुडे हुए थे। उन्होंने अपने जीवन मे हजारों लोगो का दुःख दर्द सुना, समझा व सहयोग दिया। उनके द्वारा रत्न-व्यवसाय पर लिखी गई पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुकी है। श्री टांक के निधन से सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में तथा उनसे जुडी संस्थाओं के जीवन मे एक रिक्तता सी आ गई है। जिसकी निकट भविष्य मे पूर्ति होना असम्भव सा लगता है। स्व. श्री टांक के जीवन से हम सबको प्रेरणा लेकर उनका अनुसरण करना ही उनके प्रति हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—गिरिराजप्रसाद तिवारी
अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा, जयपुर

प्रत्येक को प्यार दिया

श्रद्धेय श्री राजरूपजी टाक के व्यक्तित्व से हमे हमेशा समाजसेवा की प्रेरणा मिलती रहेगी। श्री टाक ने जीवन भर गाधीवादी विचारधारा के अनुरूप काय किया और धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र मे अपनी सेवा व सहिष्णुता से समाज के "प्रत्येक व्यक्ति को प्यार" दिया और उसके विकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। श्रद्धेय टाक साहब के निधन से जो कमी आई है उसकी पूर्ति अत्यन्त कठिन है। जिन सस्थाओ से वे जुडे रहे, यदि वे श्री टाक साहब द्वारा बताये हुये माग पर अग्रसर होती रह तो अवश्य ही अपन लक्ष्य को प्राप्त कर सकगी। श्रद्धेय श्री टाक साहब को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

—किशन मोटवानी

उपाध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा, जयपुर

गौरवमय जीवन

श्री राजरूपजी टाक को मैं बहुत लम्बे समय से जानता हूँ। क्योकि वे काग्रेसी एव एक महान् समाजसेवी व्यक्ति थे। मेरा और उनका बहुत लम्बे अर्से तक सम्पक रहा। राजस्थान का मैं काग्रेस का बहुत लम्बे अर्मे तक अध्यक्ष था, तब उनसे मेरी बहुत बातें होती रहती थीं। जयपुर जसे शहर का सगठन चलान मे सक्रिय थे। पर मुझे इस बात का पूरा ज्ञान था कि राजनीति भी उनकी किसी पद को हासिल करने की नही थी, बल्कि लोगो की सेवा करने के लिए थी। वे ज्यादातर समाज हित मे चलने वाली सस्थाओ का सचालन करने मे ही अपना समय लगाते थ। श्री टाक साहब द्वारा स्थापित और सचालित श्री वीर बालिका शिक्षण सस्थान, जो उन्होने 63 साल पहले शुरू किया वह छोटा सा अकुर आज कितना बडा पौधा बन गया कि आज उसमें साढे तीन हजार छात्राएँ पढती हैं। उम्र भी ईश्वर कृपा से उन्होने अच्छी प्राप्त की क्योकि वे ईश्वर के भक्त थे। उन्हाने करीब 50 सावजनिक सस्थाओ का सचालन करने का भार वहन किया। उनका गौरवमय जीवन रहा है। यहाँ तक कि उन्हान मरने के बाद भी अपने नत्र नेत्रहीन लोगो के लिए द दिय। कितना ऊँचा दर्जा उनके ख्यालातो का था। यह सब कुछ उनकी आज्ञा से ही उनके परिवार वाला ने किया। मैं भी इस अवसर पर स्वर्गीय आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

—नाथूराम मिर्धा

विधायक एव प्रदेशाध्यक्ष (लोकदल), जयपुर

स्वय मे जनसेवी सस्था

स्व श्री राजरूप टाक जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सस्थापक सदस्य थे और जीवन पयन्त जनसवा म लगे रहे। स्व श्री टाक का आदश जीवन हम सभी को, जो सावजनिक क्षेत्र मे कायरत है, युगो युगो तक प्रेरणा देता रहगा। मेरी विनम्र राय म स्व श्री टाक व्यक्ति न होकर स्वय म एक जनसेवी सस्था ही थे। उनकी पावन स्मृति मे मेरे शत शत प्रणाम।

—अशोक गहलोत

अध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी, जयपुर

एक नई दिशा दी

श्री राजरूपजी टांक से मेरा निकट का सम्पर्क रहा है। वे जयपुर नगर के विकास के सम्बन्ध में बहुत चिंतित रहते थे। जवाहरात उद्योग को उन्होंने एक नई दिशा दी है। इस उद्योग मे काम करने वाले व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था कर उन्होने इस उद्योग को न केवल व्यापक ही बनाया बल्कि इस उद्योग के कारण जयपुर नगर की ख्याति को भी और आगे बढ़ा दिया। सामाजिक क्षेत्र मे भी वह बहुत ही अग्रणी रहे है।

उनके निधन से बहुत बड़ी क्षति हुई है। मै उनकी आत्मा की शाति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

—भैरोंसिह शेखावत

नेता, प्रतिपक्ष, राजस्थान विधान सभा

मिलनसार व्यक्ति थे

स्वर्गीय श्री राजरूपजी टाक स्वतन्त्रता सेनानी थे। आपने आजादी की लडाई मे प्रजा-मण्डल मे रहकर भाग लिया था। आप प्रजामण्डल को आर्थिक सहायता देते और दिलवाते भी थे। आपसे मेरा परिचय उसी समय जयपुर में हुआ था।

आप सुप्रसिद्ध जौहरी, शिक्षा-प्रेमी, समाजसेवी एव मिलनसार व्यक्ति थे। आप पीडितो के प्रति खास सहानुभूति रखते थे। आपने रत्नो पर पुस्तक भी लिखी है जो अमरीका मे प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है।

आपसे मेरे मधुर सम्बन्ध मृत्युपर्यन्त बने रहे। समाज को आपके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये।

—कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी

सम्पादक, दैनिक नवज्योति, जयपुर

नेता खो दिया

उनके जाने से समाज के एक पथ-प्रदर्शक वरिष्ठ नेता एवं धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व को खो दिया। उनके स्थान की पूर्ति होना अब सम्भव नही है।

—विजयसिह नाहर

पूर्व सांसद, भूतपूर्व उप मुख्यमंत्री, पश्चिमी बंगाल

पूर्ति होना बड़ा कठिन है

श्री राजरूपजी सा. टाक एक महान् विभूति थे। उन्हें मैंने कई सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों एवं उत्सवों में देखा। वे अपनी निःस्वार्थ सेवा की छाप छोड़ गये हैं।

उनके देहावसान से जैन समाज की जो हानि हुई है, उसकी पूर्ति होना बड़ा कठिन है।

—[illegible] जैन

सदस्य, लोकसभा

सच्चे श्रावक

श्री राजरूपजी टाक सच्चे मायने म श्रावक थे, जिन्होने जीवन पर्यन्त समाज की समस्याओं के बार म सोचा और उनके निराकरण के उपाय किये। अनेक सस्थाओ को आपने अपने तन मन धन स सींचा जो आपकी सच्ची स्मारक है। इन सस्थाओ को भलीभाति चलाना और इनम नये आयाम जोडना हम सबकी जिम्मेवारी है और उनके द्वारा निर्मित परम्पराओ को जो कि उन्होने निजी एव सावजनिक जीवन मे समाज के सामन रखी, उन पर चलते रहना ही उनके प्रति एक सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

—जे के जैन
निदेशक, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर

सक्रिय योगदान

भाई श्री राजरूपजी मेरे समकालीन समाजसेवी महान् एव उच्चकोटि के व्यक्तित्व वाले धार्मिक एव अध्यात्मप्रिय व्यक्ति थे। अपने सभी साथियो के साथ उनका आत्मीय प्रेम एव सद्भाव था। वे जीवनपर्यन्त राष्ट्रीय विचारो से ओत प्रोत रहे और जयपुर नगर मे चलने वाली कोई भी जन हितकारी सस्था शायद ही है जिसम रुचि लेकर उसे यथा सम्भव योगदान नहीं दिया हो। राष्ट्रीय स्तर एव जयपुर राज्य प्रजामण्डल के तत्वावधान मे चलाये गये सभी आन्दोलनों म उनका सक्रिय योगदान रहा। अपने व्यवसाय की उन्नति मे तो सदैव लगे रहे और रत्न-व्यवसाय से जुडे असख्य लोगो ने उनके अनुभव से लाभ उठाया और जयपुर का नाम ऊँचा किया। वीर बालिका शिक्षण सस्थान जैसी उच्चकोटि की सस्था की स्थापना उनके त्याग एव अनवरत परिश्रम का ज्वलन्त उदाहरण है, जो जयपुरवासियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा। मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि भाई श्री राजरूपजी की स्मृति मे उनकी सेवाओ के अनुरूप जयपुर मे कोई उच्च कोटि का स्मारक बनाया जाये ताकि आने वाली पीढ़ियो के लिए वह सदैव एक ज्योतिर्बिम्ब का काय करता रहे।

—वशीलाल लुहाडिया
कार्यकारी अध्यक्ष, राज प्रदेश स्वतत्रता सैनिक सगठन, जयपुर

A Gentleman

Shri Raj Roopji was a gentleman to the core and endeared himself to every one who came in Contact with him We in the podar family had as you know special feeling and sentiments for him

—Kantikumar R Podar
Podar Chambers Jaipur

Kind Hearted

If I Correctly remember, I was his third student. Prior to me were Parashji Dagha and Shantichandji Kala, who were also sitting with me then there with him for lessons. He was very open, Kind hearted and generously helpful to all us and to every body in his life time.

—Rasiklal Chimanlal Mehta

सादा जीवन उच्च भावना

भाई श्री राजरूपजी टांक जयपुर नगर के प्रमुख जौहरी, समाजसेवी, शिक्षा प्रेमी, सद्धर्म-श्रद्धालु, राष्ट्र हितैषी, धनिक वर्ग के किन्तु "सादा जीवन, उच्च विचार वाले" निराभिमानी व्यक्ति थे।

सामाजिक क्षेत्र मे रूढियो और गलत परम्पराओ के वे विरोधी थे। जहाँ तक मुझे स्मरण है, सहपाठी तो हम नही थे। उम्र मे वे मेरे से कुछ बडे, लेकिन "हम उम्र" से ही थे। सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति के समर्थक होने के कारण हम परस्पर नजदीक आये। जैन नवयुवक मण्डल के वे कोषाध्यक्ष तथा मैं मंत्री के रूप मे, मानद सहयोगी हम वर्षो रहे होगे। बाद मे, भिन्न क्षेत्र होते हुए भी पचास से अधिक वर्ष यह मित्रता पूर्ण सहयोग हमारा चला।

व्यापार-व्यवसाय मे व्यवहार-शुद्धि के वे पक्के हिमायती थे। जवाहरात के धंधे मे सैकड़ो किशोर और तरुणों को उनकी "गद्दी" से प्रशिक्षण मिला। शिक्षा क्षेत्र में सामान्य पाठशाला से महाविद्यालय तक एक संस्था को पहुँचाने के लिए निरन्तर तन-मन-धन से वे आजीवन सहायक, संरक्षक रहे। सैकड़ों, हजारों "वीर बालिकाएँ" इस संस्था की देन हैं।

श्री राजरूपजी अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्य, विशेषतया कोषाध्यक्ष रहे।

श्री राजरूपजी सही अर्थ मे रत्न-पारखी थे—पन्ना, माणक-पन्ना आदि के तो मानव गुणों के भी। रत्न-पारखी के रूप मे उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति होना, जयपुर नगर के लिए गर्व की बात है।

ऐसे व्यक्ति की रिक्तता की पूर्ति होना सहज तो सम्भव नही लगता है।

उनका जीवन समाज के, विशिष्ट धर्म की सही दिशा में चलने की प्रेरणा दे, यही हार्दिक कामना है।

—पूर्णचन्द जैन
प्रमुख सर्वोदयी विचारक एवं समाजसेवी, जयपुर

A Great Humanist

With the demise of Raj Roopji Saheb the country has lost a great scion He was a multifaceted personlity He was a teacher a statesman a social worker and above all a great humanist He was a freedom fighter, an educationist (he started a Girls High School and took keen interest in it), an administrator a Gandhian crusading for the decentralised economy

His greatest contribution was to spread the knowledge and keep it flowing It was a guru-disciple tradition In spite of busy schedule he would always spare a few hours to impart knowledge about gems to those who came to learn I believe if ever Ivan Elich the great Chilean educationist promoted the idea of de-schooling the school it would have been due to his seeing Indian tradition of passing the knowledge to disciples Students would learn much more at the feet of such Gurus than they would have learned in the best of the schools

He was a GEM EXCELLENCE amongst the gem merchants of this country The trade owes much to this great man in our business

—Kanti Lal Chordia

अदम्य इच्छा शक्ति

स्वर्गीय श्री राजरूपजी टाक ने पिछले 63 वर्षों की दीर्घ अवधि मे महिला शिक्षा जगत् म जो योगदान दिया, वह चिर-स्मरणीय रहेगा। आपने वीर बालिका शिक्षण सस्थान के माध्यम से महिला शिक्षा के अन्तगत एक नई दिशा प्रदान की। आपने इस सस्थान को प्राथमिक शिक्षा से महाविद्यालयी शिक्षा स्तर का जो स्वरूप प्रदान किया उससे वतमान मे लगभग 3500 छात्राएँ लाभान्वित हो रही हैं। आपका यह योगदान निश्चय ही एक महान् व्यक्तित्व की अदम्य इच्छा शक्ति का परिणाम है।

स्वर्गीय श्री राजरूपजी टाक केवल शिक्षा क्षेत्र मे ही अग्रणी नहीं रहे, अपितु शारीरिक रूप से विकलाग व्यक्तियो के प्रति भी आपका हृदय द्रवित रहा, जिसके परिणामस्वरूप महावीर विकलाग समिति की स्थापना हुई जो "जयपुर फुट" बना कर आज सम्पूर्ण विश्व मे प्रख्यात है।

मैं व्यक्तिगत रूप से उस बहु आयामी व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करती हूँ। उनके द्वारा प्रतिपादित काय निरन्तर गतिशील रहें, यही मेरी कामना है।

—सुश्री घी प्रवा

सयुक्त निदेशक (महिला) शिक्षा, अजमेर वृत्त, जयपुर

उनकी बड़ी इज्जत थी

श्रीमान् राजरूपजी टांक के साथ हमारा तीस बरस का सम्बन्ध रहा है। हमने उनके साथ हरीविहार धर्मशाला, पालीताणा और अखिल भारतीय खरतरगच्छ सघ के कार्यो मे साथ-साथ काम किया। वे दीर्घ-दृष्टि और सरल-स्वभावी थे। वे सबका मन जीत लेते थे। हमारे सघ मे उनकी बड़ी इज्जत थी। उनकी कमी को पूरा करना मुश्किल है। उनका हमारे पर बहुत प्रेम था, वह हमेशा याद आता है। उनकी आत्मा को गुरुदेव शान्ति देवे।

—शान्तिलाल पारख

प्रमुख, श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ जैन संघ, वडोदरा

सरल हृदयी

मेरा टांक साहब से सम्पर्क भूतपूर्व जयपुर राज्य के प्रजामण्डल तथा प्रवर्तित कांग्रेसी नेता के रूप मे हुआ था और उसके बाद उनके साथ स्नेह एव सम्पर्क उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। मैंने उनमे एक विशेष गुण यह देखा कि वे दूसरो की बातो को बड़े आराम से तथा आदरभाव से सुनते थे और अपने से बनती सहायता, चाहे वह किसी रूप मे हो, करने को उद्यत रहते थे। ऐसे सरल-हृदयी व्यक्ति समाज मे बहुत कम मिलते है और ऐसे व्यक्तियो की सेवा से समाज का सम्मान बढ़ता है। अहिंसा को उन्होंने अपने जीवन का अंग बनाया। वे मृदुभाषी और परिग्रह से लिप्त होते हुए भी जीवनयापन मे अपरिग्रही थे। वे जैन-दर्शन के ज्ञाता थे और आध्यात्मिक दृष्टि से मोक्ष प्राप्ति के लिए आराधना एवं साधना करते थे।

—पुखराज सिंघी

सेठ कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी, सिरोही

सच्चा स्मारक

स्वर्गीय श्री राजरूपजी टांक ने अपने जीवन-काल मे लम्बे समय तक राष्ट्र, समाज और धर्म की निःस्वार्थ सेवा की। आज भी उनका महान् कार्य ही उनका सच्चा स्मारक है। वे जवाहरात के बड़े व्यापारी और रत्न-परीक्षा के बड़े पण्डित थे। उनकी जवाहरात पर लिखी हुई पुस्तक को अमरीका मे मान्यता दी गई। उन्होंने लगभग 2-3 हजार व्यक्तियों को जवाहरात का धन्धा सिखाया। शिक्षा के क्षेत्र में भी वीर बालिका शिक्षा संस्थान, जयपुर की स्थापना की। राजस्थान [illegible] कल्याण संघ, जयपुर की स्थापना मे आपका सक्रिय योगदान रहा।

—दौलतसिंह जैन

मंत्री,

श्री अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ, दिल्ली

लोकसेवी महापुरुष

श्री टाक साहब बडे सात्विक तथा लोकसेवी महापुरुष थे। सादा जीवन एव उच्च विचार उनके जीवन का आदर्श रहा। वे लोकप्रिय, मृदुभाषी एव मिलनसार थे। क्रोध तथा अभिमान से सदा दूर रहते थे। उनका जीवन धार्मिक एव आध्यात्मिक था। प्रारम्भ से ही मानव सेवा एव विशाल दृष्टिकोण को लेकर अग्रसर होते रहे। उन्होंने साहित्यिक, राजनीतिक एव सामाजिक क्षत्रो मे अपनी प्रतिभा, नि स्वार्थ सेवा तथा परोपकारिता का अद्भुत परिचय दिया।

भगवान् महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव बहुत ही शालीनता से सम्पन्न होने म आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। राष्ट्रोद्धार के कार्यो मे भी आप सदैव अग्रणी रहे हैं। युवको को स्वावलम्बी बनाने की दिशा म आपने हजारो युवको का रत्न व्यवसाय का शिक्षण देकर उन्हे स्वरोजगार म लगाया। आपका समस्त जीवन सेवाकार्यो मे व्यतीत हुआ। अनकानेक सस्थाओं न आपका सम्मानित किया 'समाजरत्न' आदि उपाधियों से विभूषित किया।

—रतनलाल छाबडा

मन्त्री राजस्थान जैन सभा, जयपुर

अनूठा व्यक्तित्व

श्रद्धेय टाक सा का बडा ही विशाल दृष्टिकोण रहा। जिस-जिस सस्था को आपने आशीर्वाद रूप वरद हस्त प्रदान किया, वे सब सस्थाएँ आज फल फूल रही है और जन मानस की सेवा कर रही हैं।

श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, अजमेर को भी आपका पूर्ण सरक्षण मिलता रहा। आपने छात्रवृत्ति योजना, दादा मेला एव भोजनशाला को अत्यन्त स्नेह से अपनाया तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। दादा मेला, 1986 के शुभ अवसर पर अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन खरतरगच्छ महासघ के अध्यक्ष श्रीमान् मोहनचदजी सा ढड्ढा की अध्यक्षता म श्री जिनदत्तसूरि मण्डल,, अजमेर द्वारा आपका हार्दिक अभिनन्दन कर मान पत्र प्रदान किया गया।

श्री जिनदत्त विचक्षण जैन निवृत्ति आश्रम, दादावाडी, अजमेर मे भी आपका सक्रिय योगदान रहा। श्री टाक सा के अनूठे व्यक्तित्व एव तदनुरूप कृतित्व का गुणगान करने मे ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। आज उनके नही रहने से धम, समाज सेवा के कार्यो मे एक बडी कमी हो गई है जो निकट भविष्य म पूरी नही हो सकेगी। हमारी सच्ची श्रद्धाजलि तो यही रहेगी कि हम उनके सादगी एव समताधारी जीवन से सीख लेवें तथा उनके चरण चिह्नो पर चलकर धम, समाज एव जनहितकारी सेवा कार्यों मे सक्रिय तन, मन, धन से निष्काम योगदान देते रह।

—अमरचन्द लूणिया

अध्यक्ष,

श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाडी, अजमेर

अभिलाषा

विविधता में एकता की भावना को प्रत्यक्ष रूप मे प्रकट करने वाले इस महामानव ने जयपुर में इतने जौहरी पैदा कर डाले कि यह गुलावी नगरी जौहरियों की नगरी कहलाने लगी। जात-पांत व ऊँच-नीच का भेद-भाव न रखते हुए जो भी सीखने आया, उसे जवाहरात व्यवसाय मे योग्य बनाने वाले इस मनीपी से मै अत्यधिक प्रभावित था। जहाँ भी वे मिलते, अनायास ही उनके चरण-स्पर्श हेतु मस्तक झुक जाता था। उनकी कार्य-पद्धति, प्रसंग-सृष्टि, जीवनादर्श, मधुर-मुस्कान आदि अद्भुत गुणो को हम जीवन में उतार सकें, यही अभिलापा है।

—एच० के० पोद्दार

प्रधान सम्पादक, राजस्थान व्यापार उद्योग पत्रिका

राष्ट्रप्रेमी और समाजहितैषी

रत्न-पारखियों में अग्रणी स्व. सेठ राजरूपजी टांक अपने ढग के एक वेजोड इन्सान थे। वे सरलता, सादगी और साधुता की प्रतिमूर्ति होने के साथ-साथ राष्ट्रप्रेमी और समाजहितैषी मानव थे। सादा जीवन और उच्च विचारो के प्रतीक थे। उनका जीवन अनुकरणीय था। वे अनेक मानवीय गुणों से अलकृत आदर्शोन्मुख व्यक्ति थे। उनका जीवन कल्याणकारी मानव का जीवन था।

स्वहित और विकास का ध्यान रखने के साथ-साथ जनकल्याण और राष्ट्रोत्थान की भावना से भी ओतप्रोत थे। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष के रूप मे टाक साहब ने जयपुर मे जन जागरण और राजनैतिक चेतना का प्रसार करते हुए, राजस्थान मे स्वतत्रता की लहर उत्पन्न करने मे अपनी विचारधारा के बल पर उत्कृष्ट राष्ट्रभक्त और जनसेवक का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था।

शिक्षा के प्रति आपके हृदय में अनन्य अनुराग था। शिक्षा के प्रचार और प्रसार मे आपने अपने जीवन का पर्याप्त समय लगाया। वीर वालिका शिक्षण सस्था वालिकाओं की अनुपम सेवा कर रही है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातक कक्षाओं का पठन-पाठन इस सस्था के माध्यम से हो रहा है। यह टांक साहब के जीवन की एक विशिष्ट उपलब्धि है। अनेक शिक्षण सस्थाओ के आप पदाधिकारी और परामर्शक थे, इससे लगता है कि मूल मे टांक साहब सच्चे शिक्षक थे।

टाक साहब निष्ठावान् कार्यकर्ता ही नही अपितु कर्मठ नेता भी थे। भारत जैन महामण्डल, अखिल विश्व जैन मिशन, अहिंसा इन्टरनेशनल आदि संगठनो मे आपको उच्च स्थान प्राप्त था। रत्नपारखी के रूप मे आपका सम्मान यूरोप और अमेरिका आदि मे भी हुआ। इससे पता लगता है कि वास्तव मे टांक साहब वेजोड इन्सान थे।

टाक साहब ने किसी विश्वविद्यालय की कक्षाओं मे अध्ययन करके डिग्रियां नहीं प्राप्त की थीं, पर हिन्दी और अग्रेजी का आपको अच्छा ज्ञान था। विचार व्यक्त करने मे माधुर्य और प्रसाद गुणों का पुट हमेशा उनकी भाषा मे रहता था।

—माणिकचन्द्र जैन

श्री पदमावती जैन बालिका उ. मा. विद्यालय, जयपुर

आदर्श और यथार्थ का समन्वय

स्व सेठ राजरूपजी टाक का नाम राजस्थान की राजनीति के उन्नायकों मे बड़े गौरव के साथ याद किया जाता है। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के अग्रणी नेता स्व हीरालालजी शास्त्री और कपूरचन्द्र जी पाटनी, श्री टाक साहब की कार्यक्षमता और सहयोगात्मक भावना की बड़ी इज्जत करते थ। टाक साहब का अदम्य उत्साह और सूझबूझ वास्तव मे प्रशंसा की वस्तु मानी जाती थी। विद्यालयो मे आपने केवल कक्षा 8 तक अध्ययन किया था, किन्तु आप हिन्दी और अग्रेजी दोनो भाषाओं मे अपने विचार प्रकट कर सकते थे।

जवाहरात के क्षेत्र मे तो आपका नाम सदा अमर रहेगा। आपने सैकडो नवयुवको को रत्नो का ज्ञान प्राप्त कराके उनका मार्ग प्रशस्त किया। वास्तव मे टाक साहब का जीवन आदर्श और यथार्थ का समन्वयात्मक जीवन था। उनके निधन से जयपुर की कई सामाजिक और शिक्षण संस्थाओं को बड़ा धक्का लगा है। वीर बालिका शिक्षण संस्थान के तो वे प्राण थे।

—त्रि ना गुप्ता

प्राचार्य, अग्रवाल कॉलेज, जयपुर

उल्लेखनीय विभूति

अनेक मानवीय गुणो से विभूषित व्यक्ति के विषय मे क्या लिखा जाय, कुछ समझ मे नहीं आता। स्व टाक साहब की गणना राजस्थान की उल्लेखनीय विभूतियों मे की जाती है। वे राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत, शिक्षाप्रेमी, मानव कल्याण की भावना से परिपूर्ण मानव थे। उनका जीवन एक प्रकार से सच्चे संत पुरुष का जीवन था। संत विनोबा भावे ने लिखा है कि वास्तविक संत वह है जो समाज से कम से कम लेता है और अधिक से अधिक समाज को देता है। श्रद्धेय राजरूपजी साहब टाक सरलता, त्याग, उदारता और साधुता की प्रतिमूर्ति थे। उनका समग्र जीवन देशहित, समाजोत्थान और शिक्षा के विस्तार और विकास मे समर्पित रहा। शिक्षण संस्थाओं और मुख्यत महिला शिक्षा के क्षेत्र मे तो वे अग्रणी रहे। वीर बालिका शिक्षण संस्था के तो वे प्राण स्वरूप रहे।

—सुमित्रा छाबडा

प्रधानाध्यापिका, श्री पदमावती जैन बालिका उ मा वि, जयपुर

शिक्षा-प्रेम का जीता जागता उदाहरण

शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे सेवा का हो, चाहे स्काउटिंग का हो, चाहे खादी ग्रामीण उद्योग का हो, महावीर विकलांग का हो चाहे नेत्रहीनो का हो—वे तन मन, धन से उनके साथ लगे रहे और सबकी मन से सेवा की। वे स्वय मे एक संस्था थे। वीर बालिका विद्यालय व महाविद्यालय उनके शिक्षा-प्रेम का जीता जागता उदाहरण है।

—जगन्नाथसिंह मेहता

अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

वयोवृद्ध प्रमुख समाजसेवी, जयपुर ही नही सम्पूर्ण भारत के मूर्धन्य जौहरी, राष्ट्रभक्त, स्वनामधन्य श्री राजरूपजी टाक, जो अब हमारे बीच नही रहे है, का जीवन वस्तुतः हर मानव के लिए प्रेरणास्रोत बन गया है। उन्होंने आजन्म अपने अथक परिश्रम, सेवा, त्याग व दानवीरता से जन-समुदाय के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। अल्प आयु मे ही हीरे, रत्नो, जवाहरातो के व्यवसाय में मूर्धन्य स्थान प्राप्त कर लेना आप जैसे पारखी की व्यवसाय के प्रति अटूट निष्ठा का ही परिचायक है। जयपुर नगर के एक प्रमुख जौहरी श्री छगनलालजी टांक के घर गोद आए इस छोटे से लाल ने अपने को मूल्यवान हीरे-जवाहरातो से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध किया। जिस कुशलता से आपने एक हजार से अधिक शिष्यो को अपने प्रभावी प्रशिक्षण से कुशल जौहरी बनाया व उनका विश्वास जीता, इससे उनकी लोकप्रियता का सहज ही ज्ञान हो जाता है।

श्री राजरूपजी टांक सा. का जीवन अदम्य साहस का भी प्रतीक है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व जब स्वतन्त्रता आन्दोलन में संलग्न क्रान्तिकारियों की धरपकड़ का काम जोरो पर था और अंग्रेज सरकार की दृष्टि मे किसी भी क्रान्तिकारी को शरण देना कानूनी अपराध तो था ही साथ ही अपनी मृत्यु को घर बैठे बुलावा देने जैसा था, फिर भी परम साहसी टाक साहब ने राष्ट्रभक्ति का परिचय देते हुए अनेक क्रान्तिकारियों को अपने भवन में संरक्षण प्रदान किया। जयपुर राज्य मे जब प्रजामण्डलो का निर्माण हुआ तो श्री टांक साहब प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष बनाए गए। राजस्थान विधानसभा के वे सदस्य भी निर्वाचित हुए थे।

स्वर्गीय टांक साहब जीवन भर विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक एवम् व्यापारिक संस्थाओ मे उच्च पदो पर प्रतिष्ठित व कार्यरत रहे। यह उनकी बहुमुखी प्रतिभा ही थी कि भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति, महावीर इण्टरनेशनल, राजस्थान नेत्रहीन कल्याण संघ, अखिल भारतीय खरतरगच्छ सघ, जयपुर खरतरगच्छ संघ, ज्वैलर्स एसोसिएशन, राजस्थान प्राइवेट शिक्षा सघ व अन्य कई सघो के प्रमुख संचालको मे वे अग्रणी रहे। आपको 'समाज-रत्न' व 'समाज-भूषण' की उपाधियो से भी अलकृत किया गया था। समाज सेवा आपके जीवन का मूलमन्त्र था। आपने हर अभावग्रस्त की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझा।

COMMENDABLE

He has lived a full life and useful too for the trade of gems and jewels. His services in the social field was also commendable.

Arjun Kotwani
Advocates & Tax Consultants
7-JHA-44, Jawahar Nagar, Jaipur-302 004

लोहे की लकीर

"भाईजी" सच्चे अर्थो मे प्रवीण जौहरी थे, जिन्ह केवल बेजान मणि-माणिक्यो की ही नहीं, आदमी की भी सच्ची परख थी, उनकी कसौटी पर परीक्षण के दौर से गुजरी किसी भी वस्तु की उनके द्वारा आकी गई "कीमत" लोहे की लकीर मानी जाती रही—दुनिया म यह सौभाग्य विरले ही पाते हैं। "भाईजी" उनमे से एक थे।

उनकी प्रतिभा को न केवल उनके गृह नगर जयपुर, राजस्थान प्रान्त और भारतवर्ष ने ही आका अपितु मुल्क की सरहदा के पार अमरिका, इगलैण्ड और जापान जैसे देशो मे उनकी प्रतिभा सम्मानित हुई। इस सन्दर्भ मे व भारती के सच्चे सपूत साबित हुए।

जहां तक समाज और राष्ट्र का उनकी देन का प्रश्न है, उनके द्वारा स्थापित और कुशलता एव निष्ठापूवक सचालित सस्थाग्रा का प्रश्न है—अगर गिनाने लगू तो फेहरिस्त बहुत लम्बी हो जायेगी—अलबत्ता उन्होने अपने पीछे वे जीवन्त स्मारक छोडे हैं जो समय के फलक पर न केवल अमिट रहेंगे बल्कि आन वाली पीढिया के लिय प्रकाश स्तम्भ का काम करेंगे।

वे सही मायना मे "दीनबन्धु" थे—दीन हीना की सहायता करते समय "अहसान" का बोध उनके पास तक नही फटका—वे ता आजीवन इसे अपना कतव्य मानकर निभाते चले गय—एक फ्रेंच लोकोक्ति स्मरण हो आती है—"देते समय नजरें झुकाये रखो ताकि लेने वाले की शम न देख सको" इस लोकोक्ति को उन्होंन अपन जीवन मे चरिताथ किया। उनके द्वारा किये गये गुप्तदान की साक्षी दीन दलितो की वे बस्तिया हैं—जो उनकी पदचाप तक पहचानती थी—ऐसे 'औघडदानी" सदियो शताब्दियो बाद ही पदा होते हैं।

—जौहरी रूपचन्द बैद
लाडनू

सहृदय

श्री राजरूपजी व्यापारी होते हुए तपस्वी, मनस्वी, सहृदय व्यक्ति थे। वे सत्यनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, सदाचारी, तथा जनहित में ही कार्यरत रहे।

—के सी जोशी, I R S
38, अशोक नगर, इलाहाबाद

उत्कृष्ट शिक्षा-प्रेमी

स्मृति अंक के रूप मे किसी संस्था द्वारा अपनी स्मारिका का प्रकाशन बड़ा ही श्लाघनीय कार्य है । इससे उस संस्था के प्रति उस व्यक्ति विशेष के लगाव तथा उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में उत्कृष्ट शिक्षा-प्रेमी होने के भाव की पुष्टि होती है ।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि अपने पोषक श्री राजरूपजी टांक के बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करने के लिए श्री वीर बालिका शिक्षण संस्था एक स्मृति अंक का प्रकाशन कर रही है। यह एक सराहनीय कदम है और प्रेरणास्पद भी क्योंकि इससे बालिकाओं के जीवन निर्माण मे एक नई चेतना जागृत होगी। यह स्मृति अंक सुन्दर व अनुकरणीय होगा—ऐसा मेरा विश्वास है।

जिस निष्ठा व लगन से श्री राजरूपजी टांक ने इस संस्था के निर्माण व विकास में योग दिया है—वह स्तुत्य योग्य है । यद्यपि एक उत्कृष्ट जौहरी और शिक्षा-प्रेमी के रूप में श्री टांकजी आज शरीर से हमारे बीच नही है किन्तु श्री वीर बालिका जैसी उत्कृष्ट शिक्षण संस्था महिलाओ में शिक्षा का प्रकाश फैलाते रहने के लिए जयपुर नगर में सजीव रूप से खड़ी है, जो उनकी स्मृति को सदा ताजा बनाये रखेगी ।

दिवंगत विभूति को शत-शत प्रणाम !

—बलवीर सिंह
जिला शिक्षा अधिकारी, जयपुर

मृदु भाषी

श्री राजरूपजी टांक मृदुभाषी एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति थे । निस्वार्थ समाजसेवा की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी ।

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ मे मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य पिछले 15 वर्षों में कई बार मिला । वे इन शिक्षण संस्थाओं के विकास के बारे में हमेशा चिन्तित रहते थे और इनके विकास के मार्ग में आई किसी भी बाधा को तुरन्त हल करने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे । ऐसे समाजसेवी को मेरी सादर श्रद्धाञ्जलि ।

—आर. के. गर्ग
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

सेवाभावी

अपने शरीर से संस्थाओं की अधिक से अधिक सेवा करने की अभिलाषा से वे औषधियों को निरन्तर एक धर्म से सेवन किया करते थे । इसका मैं विरोध करता था लेकिन उनकी सेवा की भावना को सुनकर मुझे मौन होना पड़ता था । अन्त में जो होना था हुआ । आज आपका नश्वर देह नहीं रहा और न किसी का कहना मानता है किन्तु आज आप अमर हैं जब तक इन संस्थाओं का अस्तित्व रहेगा ।

--धर्मनारायण मुणोत, जयपुर

रचनात्मक कार्यकर्ता

स्व० श्री राजरूपजी मेरे पुराने साथियों में एक घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने प्रजामण्डल व कांग्रेस के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक कमठ और रचनात्मक कार्यकर्ता के रूप में निष्काम सेवा भाव से सार्वजनिक कई कार्य, जैसे हरिजनोद्धार, गरीबों की सहायता, विकलांग सहायता, समाजसेवा, नारी शिक्षा प्रसार आदि बहुत से कार्य बड़ी लगन और उत्साह के साथ किये थे। आपने आजादी की लड़ाई में बड़ा भारी योगदान दिया, आप गाँधीवादी विचारधारा के अधिक समर्थक रहे हैं। कार्यों में सार्वजनिक संस्थाओं के धन के उपयोग का बहुत खयाल रखते थे।

आप देश के सुप्रसिद्ध जौहरी और रत्न-पारखी थे, रत्न व्यवसाय में आपसे कई व्यक्तियों ने रत्न शिक्षण प्राप्त किया तथा रत्नों के सम्बन्ध में एक पुस्तक भी लिखी है।

—हनुमानप्रसाद शर्मा
गोविन्दगढ़, जयपुर

एक विशाल कल्पवृक्ष

स्व० श्री राजरूपजी टाक केवल एक साधारण नागरिक या व्यक्ति नहीं थे। वे स्वयं में एक विशाल कल्पवृक्ष और संस्थान थे। उन्होंने अपने दीर्घ-जीवन काल में राष्ट्र, धर्म, व्यापार, समाज, जाति और शिक्षा के क्षेत्र में निस्वार्थ सेवा की। वे गाँधी विचारधारा के मानने वाले थे। प्रजामण्डल की स्थापना के साथ वर्षों उसके कोषाध्यक्ष भी रहे। श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान के विकास में उनका बड़ा योगदान रहा।

—गुलाबचन्द जैन
स्वतन्त्रता सेनानी, दिल्ली

बहुआयामी व्यक्तित्व

पूज्य चाचा साहब श्री राजरूपजी टाक का व्यक्तित्व बहुआयामी है। कहते हैं लक्ष्मी और सरस्वती का वर होता है परन्तु वे तो इस असंभाव्य के भी विलक्षण संगम थे। वे इन दोनों के पुन्ज थे, इसीलिए उन्होंने जीवन भर दानों को जीभर लुटाया। जिसे भी छुआ उसे सोना बना दिया और जो भी उनके सान्निध्य में बैठा उसे सरस्वती की निर्मल धारा में अवगाहन करा दिया। सबसे विशेष बात जो उनमें थी, वह यह थी कि उन्होंने अपने कल्याण के साथ-साथ सुन्दर समाज का निर्माण भी कर दिखाया—ऐसा समाज जो उनके ऋणों से युगों-युगों तक उऋण नहीं हो सकेगा। वे धर्म, जाति, पंथ और सम्प्रदाय निरपेक्षता के सच्चे प्रतीक थे। उन्होंने गृहस्थ में रह कर ही संयासी का सा जीवन व्यतीत किया। उनके एवं उनके परिवार की कीर्तिमय सुवास समय के साथ साथ बढ़ती रहे, इसी मंगल कामना के साथ।

—शान्तिस्वरूप गुप्ता
उपनिदेशक (खादी) जिला उद्योग केन्द्र, कोटा–324007

त्यागमूर्ति को नमन

मेरा परिचय श्रद्धेय राजरूपजी टांक से जुलाई, 1970 मे हुआ। उनके सरल स्वभाव और चमकते हुये व्यक्तित्व से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। मेरा टांकजी से सम्बन्धित फर्म हीरालाल छगनलाल टांक से आयकर विभाग के अधिकारी के नाते सरकारी सम्बन्ध था। इसी के माध्यम से मेरा टांकजी के सुपुत्र श्री दुलीचन्दजी तथा परिवार के अन्य लोगो से सम्पर्क हुआ। ऐसी परिस्थिति मे प्रायः लोग व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करने मे डरते या हिचकते हैं। लेकिन मैंने देखा कि राजरूपजी की स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा और व्यवहार की कोमलता मेरे सरकारी काम मे सहायक ही रही है। इसलिए मेरे सम्बन्ध टांक परिवार से वेधड़क व्यक्तिगत हो गये, जो आज तक चल रहे हैं। श्रद्धेय राजरूपजी टाक की महानता थी कि उन्होने कभी अपने तथा फर्म के काम के लिए मुझसे जिक्र तक नही किया। जिस व्यक्ति में इतना संयम हो, आत्मविश्वास हो और सत्य-निष्ठा हो उसका काम स्वय होता है और वह नमन का पात्र है।

राजनीति मे सक्रिय होकर भी उन्होंने किसी पद की अपेक्षा नही की। समाजसेवी, त्यागी व दानी होते हुए भी कभी व्यर्थ की प्रशसा या ख्याति पाने की इच्छा नही की। ऐसे त्याग-मूर्ति पर जयपुर को ही नही बल्कि सारे देश को गर्व होना चाहिए।

—डा० मोहनसिंह विश्वेन
कारपोरेट टैक्स प्लानिंग एडवाइजर, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

पुण्य श्लोक

पुण्य श्लोक श्री राजरूपजी टाक सच्चे मायने मे समाजसेवी थे, जिन्होंने सदा ही गरीबों की सहायता की। वे एक बड़े जौहरी थे। वे रत्न-पारखी ही नही वरन् आदमियो की परीक्षा करने वाले थे। उन्होंने समाज की जीवन में बहुत सेवायें की जिसका ज्वलत उदाहरण वीर बालिका विद्यालय, नेत्रहीन कल्याण सघ जैसी संस्थायें उनकी सदा ही आभारी रहेगी। चाचा राजरूपजी टांक अन्धों के मसीहा थे। वे एक महान् फल एव छाया से युक्त वृक्ष के समान थे, जिनकी छाया मे अनाथ, नेत्रहीन व बे-सहारा बालक-बालिकाओ को सहायता व अध्ययन का मार्ग मिलता था। उनके न रहने से बड़ा अन्धकार सा हो गया है। भगवान ऐसा व्यक्ति और दे कि प्रकाश हो। वे शरीर से ही नही रहे पर अपने कार्यो से सदा अजर अमर हैं।

—द्वारकेशलाल भट्ट
(नेत्रहीन मानव), जयपुर

जैन समाज के गौरव

धार्मिक वृत्ति और निष्काम सेवा भावना से युक्त स्व० श्री राजरूपजी टाक जयपुर जैन समाज के गौरव थे। उनकी स्वर्गीय आत्मा के प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

—विरधीलाल सेठी
वयोवृद्ध समाजसेवी, जयपुर

भले इन्सान

नियम है विधाना का, सभी आकर चले जाते।
मगर कुछ लोग हैं ऐसे, जो जाकर भी नहीं जाते।
वे अवतार होते हैं और विद्वान् होते हैं।
दयालु, लोकप्रिय, सत्यपाल, भले इन्सान होते हैं।
वे रहते पास हैं हरदम, मगर न देख पाओगे।
टटोलोगे जो दिल अपना, तो उनको दिल में पाओगे।

—छैल बिहारी
होस्टल वार्डन, नेत्रहीन कल्याण संघ, जयपुर

आदर्श महानुभाव

परमश्रद्धेय श्री राजरूपजी टांक से मेरा निकट सम्बन्ध लगभग पच्चीस वर्षों से था। उनकी प्रसिद्धि ही उनसे सम्पर्क करने का कारण बनी। मुझे जयपुर के एक व्यापारी ने एक सौदे में गलत बता कर कीमती भुगतान कर दिया था, जिसकी कोई लिखा पढ़ी का सबूत मेरे पास नहीं था। केवल विश्वास पर ही लेन देन हुआ था। इतने में व्यापारी की नियत बदल गई थी। मेरे साथियों ने श्री राजरूपजी टांक का नाम बतलाया और विश्वास दिलाया कि वे ही ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति हैं जो बिना लिखा-पढ़ी के इस मामले को सुलझा सकते हैं। मुझको आश्चर्य हुआ कि उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से उस व्यापारी ने अपनी गलती स्वीकार की और हजारों रुपये का मुझे पेमेंट वापस दिला दिया। उनके स्नेह और प्रेम के अनेक प्रकरण मेरी स्मृति में भरे हैं जिनको लेखनीबद्ध करने में एक पुस्तिका का रूप हो जावेगा।

मैं श्री टांकजी को एक धर्मनिष्ठ, आदर्श महानुभाव के रूप में वन्दना करता हुआ हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

—त्रिलोकचन्द्र सेठ, बरेली

कर्मयोगी

परम श्रद्धेय श्री राजरूपजी टांक कर्मयोगी थे। काम करने में उनका विश्वास था। सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पित भाव से कार्य कर उसे हिमालय की ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया। चाहे शिक्षा क्षेत्र हो, व्यवसाय हो, राजनैतिक हो, धार्मिक हो, हिंदी-प्रचार हो, गौवंश का संवर्धन हो, नेत्र सेवा हो, विकलांग सेवा हो, मन्दिरों एवं दादाबाड़ियों का निर्माण हो आदि। जिस संस्था के सदस्य एवं पदाधिकारी बने, अपने कर्तव्यों का पूर्ण निर्वाह किया, काम में विश्वास किया, फल की इच्छा नहीं की।

—हजारीमल बांठिया, कानपुर

निस्वार्थ सेवा

श्री राजरूपजी टांक जयपुर की जानीमानी उन हस्तियो मे से थे जिनसे राजस्थान का समस्त संस्था जगत् परिचित था । प्रदेश के परमार्थ के क्षेत्र में काम करने वाली जो भी संस्था उनके पास आती थी, वह कभी भी निराश नहीं लौटती थी। 50 से अधिक संस्थाओ से तो वे सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे । जयपुर के प्रमुख रत्न-व्यवसायी होते हुए भी स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान जयपुर प्रजा मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता और कोषाध्यक्ष रह कर उन्होने सचमुच साहस का परिचय दिया था। देश की आजादी के बाद कांग्रेस के सत्ताधारी नेताओ तक ने धीरे-धीरे खादी और विशेषतया गांधी टोपी पहनना छोड़ दिया था। पर टांक साहब अन्तिम समय तक खादी और गांधी टोपी पहनते रहे ।

टांक साहब के देहान्त से जयपुर के सार्वजनिक जीवन को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है । उनकी निस्वार्थ सेवा के लिये उन्हें न केवल जयपुर का जैन समाज एवं उनके द्वारा शिक्षित और दीक्षित लगभग 2000 रत्न-पारखी वरन् राजस्थान भर का संस्था-परिवार उन्हें वर्षों तक स्मरण करता रहेगा।

—बी. एल. पानगड़िया, जयपुर

शुभ चिन्तक

अनोखे व्यक्तित्व, बहु अनुभवी, सरल स्वभावी एवं अन्तर्राष्ट्रीय शुभ चिन्तक श्री राजरूपजी टांक से गत अनेक वर्षों से अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ की बैठकों के अन्तर्गत परिचय रहा। बहुत समीप से उनकी कार्यप्रणाली, मधुर भाषा एवं आतिथ्य सेवा से अत्यन्त प्रभावित हुआ । अनेक धार्मिक कार्यक्रमों एवं अजमेर दादावाडी के प्रसंगो मे मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिला। खरतरगच्छ की गतिविधियों, संगठन, उद्देश्यो, कार्यों में विशेष रुचि रही।

—राजेन्द्र नाहटा, भोपाल

समय और अनुशासन के पक्के

श्रद्धेय श्री राजरूपजी टांक उन महान् विभूतियों मे से एक थे, जो गुणो की खान कहे जा सकते है । उनकी उदारता और प्रेम बड़े से लेकर छोटे मानवो के दिल को स्पर्श कर जाता था। उन्होंने उनके सम्पर्क मे आए हुये हरेक व्यक्ति की तन-मन-धन से सेवा करके हमारे समक्ष एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होने समाज, धर्म और शिक्षण क्षेत्र मे अमूल्य सेवायें प्रदान कर अपना नाम रोशन कर दिया है।

आप समय और अनुशासन के पक्के अनुयायी थे । आज के समय-चक्र मे आप हमारे साथ नहीं है, लेकिन आपके बताये हुये आदर्शो को अपनाते हुये अपना जीवन मानव-सेवार्थ तल्लीन कर दें—यही आपको आज के दिन सच्ची और बहुमूल्य श्रद्धाञ्जलि होगी । आपने अन्तिम समय मे संथारा करके हम सबको रोशनी की एक नयी राह दिखाई है—जो हमें हर समय प्रेरित करती रहेगी।

—भगवानजी भाई वीरपाल शाह, अहमदाबाद

स्वतन्त्रता सेनानी

खरतरगच्छ मे हिन्दुस्तान के जाने-माने अगेवान एव जयपुर के विख्यात जौहरी तथा स्वतन्त्रता सेनानी, जयपुर जैन समाज के सिरमौर वयोवृद्ध श्री राजरूपजी टाक हमारे बीच नहीं रहे।

आपने अनेक जैन अजैन बन्धुओ को जवाहरात का प्रशिक्षण देकर उन्हें जवाहरात के व्यापारिक क्षेत्रो मे स्वावलम्बी बनाने मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आपके सिखाये हुए कितने ही जौहरी लखपति नही बल्कि करोडपति भी बने हुए तथा देश विदेश मे उच्चकोटि के जवाहरात के व्यापारी के रूप मे प्रसिद्धि पा रहे हैं।

—सुरेन्द्रसिंह लोढा
सम्पादक, श्रमण भारती, आगरा

सादा जीवन, उच्च विचार

श्री राजरूपजी टाक पुरानी पीढी के कमठ सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्ता थे। जब से मैंने उन्हें देखा तब से वे आजन्म शुद्ध खादी ही पहनते थे। राष्ट्रीय काग्रेस के पक्के सक्रिय कार्यकर्ता थे। 'योग कमसु कौशलम्' का उन्हे प्रतीक कहा जा सकता है। वे अपने काय में अद्वितीय कुशल थे। उन्होने हजारो युवको को जवाहरात के काम मे योग्य बनाया। उन्होंने कभी भी अपने मुंह से अपनी बडाई नहीं की। उन्हे धनवान होने का घमण्ड नही था। सादा जीवन उच्च विचार का उन्हें प्रतीक कहा जा सकता है।

उनके निधन से मैंने तो अपना बडा भाई ही खोया परन्तु देश ने एक कमठ सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्ता खो दिया। जयपुर के जौहरी समाज से एक अद्वितीय कुशल गुरु सदैव के लिए विदा हो गया। उनका निधन विश्व के जाने माने जौहरियो के लिए अभाव पैदा कर गया।

—श्रीचन्द मेहता, जोधपुर

अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय

टाक साहब का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय अभिनन्दनीय रहेगा।

—आसकरण गुलेछा, मैलापुर, मद्रास

अद्वितीय कार्य

श्री राजरूप जी सा का व्यक्तित्व महान् था। उनमे देश प्रेम व शासनसेवा, समाजसेवा शिक्षा प्रेम आदि एक साथ बहुत से गुण विद्यमान थे और इसी से उन्होने सभी क्षेत्रो मे अद्वितीय काय किये थे। उन्होंने अपने कार्यों से समाज पर अमिट छाप छोडी है।

—कालूराम बाफना, बालाघाट

सच्चा सेवक

समाज का ही नहीं मानव मात्र का सच्चा सेवक हमारे बीच से उठ गया, जिसकी पूर्ति होना कठिन है।

—सुशीलचन्द्र लूणावत, भोपाल

सदा स्मरणीय

श्री राजरूप जी टांक सा. ने जो सेवायें समाज में समर्पित की है वे सदा स्मरणीय रहेगी।

—पुखराज सिंघी, सिरोही

संस्था–निर्माता

टांक साहब ने इस भव में कई आत्माओं का उत्थान किया, आजीविका की व्यवस्था की। अनेक संस्थाओं का निर्माण किया। वीर बालिका स्कूल का उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत है।

—गुरु विचक्षण विजयेन्द्र, टोंक

चहुँमुखी प्रतिभा

श्रीमान् टांक सा. का व्यक्तित्व चहुँमुखी प्रतिभा सम्पन्न था। उन्होने स्वतन्त्रता संग्राम मे जहां अभूतपूर्व योगदान दिया, वहां आजादी के पश्चात् भी जन-सेवा की। लोक-कल्याण मे सदैव तत्पर रहे।

—भंवरलाल, भीलवाड़ा

स्मृति हमेशा रहेगी

उनकी स्नेह, उदारता, मार्ग-दर्शन की स्मृति हमेशा बनी रहेगी।

—मूलचन्द भंसाली, कोटा

महान् हस्ती

जौहरियो मे व चितन करने वालो मे एक महान् हस्ती की कमी हो गई।

—मिलापचन्द गोलेछा, अहमदाबाद

महान् क्षति

श्री राजरूप जी के निधन से जैन समाज ही नही वरन् सभी के लिए महान् क्षति हुई है। वे मानव सहायक के प्रतीक थे।

—गौतमचन्द गोलेछा, टाटानगर

महान् आत्मा

वे महान् आत्मा थे। धन्धे मे उनका नाम विदेशो तक मे मशहूर था। समाजसेवा और धार्मिक कार्य मे वे हमेशा आगे रहे हैं।

—माणकचन्द भडारी, जोधपुर

कर्मनिष्ठ

श्री चाचा साहब कर्मनिष्ठ एव धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। परोपकार की भावना हर समय विद्यमान रहती थी।

—शिववल्लभ द्विवेदी, ब्यावर

अनमोल हीरा

हमारे खरतर गच्छ समाज ने एक अनमोल हीरा खो दिया, जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती।

—सेठ मगलचद चम्पालाल, ब्यावर

अमर हो गये

मेरा उनसे बहुत अच्छा सम्पर्क था। मैं उनके जीवन के विषय मे जितना जान पाया, मेरे हिसाब से वे अमर हो गये।

—माणकचद बेगाणी, बीकानेर

श्रेष्ठ शिक्षक

भारतवर्ष के जौहरी समाज ने एक श्रेष्ठ शिक्षक तथा सामाजिक नि स्वार्थ कार्यकर्ता खो दिया है।

—लालचन्द कोठारी, बीकानेर

सच्चे जौहरी

वे न केवल सच्चे जौहरी थे बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी खासकर नेत्रहीनो की शिक्षा के लिए बहुत अच्छा सहयोग कर रहे थे।

—विजयसिंह नरवत, दमकोर

रत्न चला गया

समाज का एक रत्न चला गया। समाज को बहुत चोट पड़ी है।

शान्तिलाल पारश्वकर, बड़ौवा

Father of Gems

He was a Father of gems and jewellery trade too. His memories and work will always be remembered by millions.

—Yeshwantlal Jwaveri, Bombay

Always Remembered

His work-enthusiastic nature and helping every man who comes in business will always be remembered by many jewellers.

—Suresh R. Kothari, Pondicheri

महान् पुरुष

आज जैन समाज ने एक बहुत ही बेशकीमती रत्न खो दिया है। ऐसे रत्न समाज को बिरले ही मिलते है। केवल जैन समाज ने ही नही समस्त देश से एक ऐसा प्रतिभाशाली महान् पुरुष उठ गया है, जिसकी पूर्ति होनी बहुत ही मुश्किल है। उनकी देश के लिए की गई सेवाएँ अक्षुण्ण हैं।

—पन्नालाल मूलचन्द बोथरा, बीकानेर

पूर्ण निष्ठावान्

उन्होंने तन, मन, धन से हमारे तीर्थ को समय-समय पर पूरा योगदान दिया। वे समाज-रत्न थे। उन्होंने अपने जीवन-काल में अपने समाज के हजारों बच्चो को रोजगार दिया। वे धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान थे।

—सोहनराज मेहता, जोधपुर

अमर हैं

राजरूप जी सा अमर हैं। जिनका जीवन लोगो की भलाई मे व्यतीत हुआ है। हजारो लडको को हीरे की उच्च शिक्षा दिला कर जीवन के मार्गदर्शन मे प्रवेश कराया है।

—लूणकरण कुन्दनमल मेहता, इन्दौर

आगे बढाया

उन्होंने जीवनपर्यन्त समाज की सेवा की। राजनीति मे आगे बढकर भाग लिया। देश की आजादी के लिए काम किया और व्यापार मे भी लोगो को आवश्यक शिक्षा देकर आगे बढाया।

—नाहटा, दिल्ली

रत्न व्यवसाय के द्वार सभी के लिए खोले

हमे रह-रह कर स्मरण हो आता है कि उन्होंने बिना किसी भेदभाव के जवाहरात व्यवसाय के द्वार सभी के लिए खोल दिए। इसे कभी गोपनीय रखने का प्रयास नही किया।

—चन्द्रकान्त, बम्बई

रत्न खो दिया

जौहरी समाज के प्रति आपकी सेवाओं को भुलाया नही जा सकता। आज इस समाज ने एक रत्न खो दिया है।

—धर्मनारायण कडेल, मद्रास

नाम ऊँचा किया

उन्होंने निष्काम भाव से धार्मिक, सामाजिक कार्य किये व व्यवसाय जगत् मे नाम ऊँचा किया है। वे सदा हमारी प्रेरणा के स्रोत रहेंगे।

—नौरतमल चपलोत, गुलाबपुरा

उच्च विचारक

उन जैसा श्रेष्ठ उच्च विचारक दानवीर, कृपालु, दूरदेशी, गाधीवादी व्यक्ति समाज के लिए गौरव था।

—मिलापचन्द जैन, कमलचन्द जैन, दिल्ली

बेमिसाल उदाहरण

सेठ सा. के कार्यों को एवं उच्च आदर्शों को कभी भुलाया नही जा सकता । सेठ सा. का शिष्य परिवार एक ऐसा बेमिसाल उदाहरण है कि यदि हर व्यक्ति इस तरह दूसरो को अपना हुनर सिखाने लग जावे तो देश का कल्याण हो जावे ।

मसीहा

वे धर्मात्मा, समाजसेवी, समाजरत्न एवं पीड़ितो के मसीहा थे ।

—सज्जनसिंह चौरडिया, रतलाम

उच्चकोटि के शिल्पी

स्वर्गीय राजरूप जी अत्यन्त उच्चकोटि के शिल्पी और कलाकार थे । उनके निधन के रूप में मात्र उनके परिवार ने ही नही, बल्कि समूचे देश ने एक बहुमूल्य रत्न खो दिया है । आशा है उनके द्वारा प्रशिक्षित सैकड़ों शिल्पकार उनकी परम्परा और ख्याति को जीवित रखेंगे ।

—हीरालाल चन्द्रकुमार सोमानी, कलकत्ता

अनमोल

श्री राजरूप जी ने देश और समाज के लिए जो सेवायें दी हैं वे अनमोल है । रत्न परीक्षा की जो शिक्षा उन्होने विद्यार्थियों को दी है, उससे उनका आर्थिक जीवन ही बदल गया है ।

—पारसमल भंडारी, सिवाना

श्रीमान् राजरूपजी टाक के देहावसान पर प्राप्त

संवेदना–सन्देश

(संस्थाओं की ओर से)

1 अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ, मालीवाड़ा, दिल्ली–6
2 श्री श्वेताम्बर जैन संघ ट्रस्ट, सतना (म० प्र०)
3 राजस्थान संस्कृत संसद, सरस सदन, गणगौरी बाजार, जयपुर
4 जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी (आई), जयपुर
5 श्री मुनि सुव्रत स्वामी जैन श्वेताम्बर देरासर ट्रस्ट, मालपुरा
6 राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस, राज० शाखा, जयपुर
7 'जय' साहित्य संसद, जयपुर
8 राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, जयपुर
9 सरदारशहर नागरिक परिषद्, जयपुर
10 रामचन्द्र श्रीप्रकाश, कानपुर
11 श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
12 जयपुर चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, जयपुर
13 तरुण समाज, जयपुर
14 श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
15 जैन युवा परिषद्, जयपुर
16 जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर
17 राजस्थान चैम्बर, जयपुर
18 राजस्थान रेडीमेड गारमेन्ट्स डीलर्स एसोसियेशन, जयपुर
19 भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर
20 स्वर्ण नूतन बिहार, पालीताणा
21 इण्डियन एयरलाइन्स, जयपुर
22 देहली ज्वेलर्स एसोसियेशन, देहली

पूज्य चाचा साहब के देहावसान पर दूर-दूर से संवेदना-सन्देश प्राप्त हुये, जो उनके व्यापक सम्पर्क, स्नेह भाव और बहु-आयामी व्यक्तित्व को प्रकट करते हैं ।

श्रीमान् अमरनाथ हांडा	कानपुर
,, प्रकाशचन्द मानमल	विलोरा
,, शिखरचन्दजी चौधरी	वम्बई
,, भगवानदास टण्डन	इलाहाबाद
,, गिरधारीलाल श्रीमाल	इन्दौर
,, हिम्मतसिंह बावेल	उदयपुर
,, आसकरण गोलेछा	मद्रास
,, गनपतसिंह	वहरोड़
श्रीमती अनोखीदेवी	वहरोड़
श्रीमान् हिम्मतलाल	खंभात
,, घनश्याम जवेरी	वम्बई
,, राजेन्द्र नाहटा	भोपाल
,, मोतीलालजी	बीकानेर
,, कर्नल भवानीसिंह	जयपुर
,, आसकरण कोठारी	गौरीपुर
,, जीतुभाई	अहमदाबाद
,, विमलचन्द श्रीमाल	पालीताना
,, सुरेन्द्र लुणिया	हैदराबाद
,, धीरेन्द्र दोशी	कलकत्ता
,, माणकचन्द वेताला	मद्रास
,, नेमीचन्द अमरचन्द चोपड़ा	धमतरी
,, बसन्तलालजी	बम्बई
,, भँवरलाल गोलेछा	रायपुर
,, सुदर्शन डांगी	कलकत्ता
,, महेन्द्रकुमार जैन	कलकत्ता

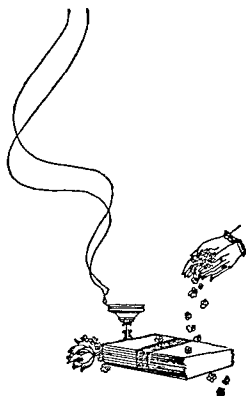
श्रीमान् निर्मलचन्द लोढा	कलकत्ता
,, रणजीतसिंह भाटिया	कलकत्ता
,, कुन्दनलाल लालुभाई	बम्बई
,, जयचन्दलाल चौरडिया	नागौर
,, जगन्नाथ भण्डारी	जोधपुर
,, सोनकरण मरोटी	दुग
,, आनन्दीलाल शोभाराम डोसी	महिदपुर
,, ध्वजाचन्द भण्डारी	जोधपुर
,, एम० जी० शाह	बम्बई
,, महावीरप्रसाद श्रीमाल	चिड़ावा
,, प्रकाशजी	बम्बई
श्रीमती इन्द्रजीत कौर	वनस्थली विद्यापीठ
श्रीमान् मोहनचन्द ढड्ढा	मद्रास
,, हेमन्तकुमार शेखावत	इन्दौर
,, कांतिलाल छोटेलाल	बम्बई
,, नेमकुमार जैन	जयपुर
राजमाता गायत्रीदेवी	जयपुर
श्रीमान् रामावतार	कलकत्ता
शाखा प्रबन्धक, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर	चाकसू
श्रीमान् राजेन्द्रकुमार ए० शाह	बम्बई
,, फतेहमल सुजानमल लोढा	टोंक
,, शिवकुमार	जयपुर
,, प्रद्युम्नसिंह	धौलपुर
,, पदमचन्द जैन	झुंझुनू
,, रायकुमार	कलकत्ता
राजेन्द्रकुमार शाह	बम्बई
,, मोनल, अतुल एम० कोठारी	बम्बई
,, राजेन्द्रकुमार ठाड्डा	बम्बई
,, मुकुन्दास गोकुलदास राठी	ब्यावर
,, बप्पालाल	बम्बई

प्रभा एण्ड आनन्द	बंगलौर
धीरज पुष्पा	बम्बई
श्रीमान् विनयचन्द, प्रकाशचन्द खवाड़	बम्बई
,, मगनलाल	बम्बई
,, जयसिंह लाल	बम्बई
,, बाबूलाल सी० मेहता	बम्बई
,, हीरालाल छगनलाल	बम्बई
किरन	बम्बई
श्रीमान् फकीरचन्द गाँधी	बम्बई
,, भगवानदास सेठिया	बाड़मेर
,, अरुण आर० मेहता	बम्बई
,, जवाहरलाल	नयी दिल्ली
,, देवेन्द्र कोठारी	झालावाड़
,, मदनसिंह राठौड़	निमागढ़
,, जी० एल० मेहता	कलकत्ता
,, दिलीप बाबूलाल	बम्बई
,, प्रवीण भाई	सूरत
,, सुधीन्द्र	कलकत्ता
,, डी० सी० चोपड़ा	रायपुर
,, इब्राहीम	लखनऊ
,, महेन्द्र भाई	कलकत्ता
,, सुरेन्द्रकुमार	अहमदाबाद
,, हस्तीमलजी गादिया	उज्जैन
,, इफजी ककूजी	जोधपुर
,, हंसराज	बड़ौदा
,, पन्नालाल संजयकुमार	छाजेड (विजयवाडा)
,, सत्येन्द्र चतुर्वेदी	अलवर
,, जमनादास पटेल	खंभात
,, डी० पी० राय	लखनऊ
,, कुशलसिंह	भागलपुर

श्रीमान् सुरेश भावसिंहजी पण्डा	पानीताना
,, सत्य भूपण	जम्मू
,, मानिक चन्द	मद्रास
,, पृथ्वीराज खूबचन्द	सागेरी
,, दीनु भाई	कलकत्ता
,, गज कुमार	बम्बई
,, जयन्ती भाई अमृतलाल भावेरी	बम्बई
,, नौपत राय श्रीमाल	झुन्झुनू
,, गोपीचन्द छुट्टन लाल जैन	जयपुर
,, रामनिवास	अजमेर
,, सीतनदास	बम्बई
,, रामसिंह	जयपुर
,, शंकरलाल रायसोनी	प्रतापगढ
,, जमनादास	ग्वालियर
,, राधेश्याम	लखनऊ
,, रतनलाल अग्रवाल	कानपुर
,, दीपक हुतीसिंह	अहमदाबाद
,, रमेश टण्डन	लखनऊ
,, पूनमचन्द श्रीप्रकाश	बम्बई
,, राज बहादुर	नयी दिल्ली
,, जगमोहन कपूर	नयी दिल्ली
,, महेन्द्र दोशी	मलाड
,, बी० आर० मेहता	कोटा
माधुरी एण्ड बिन्दु	मद्रास
मिलापचन्द्र रूपचन्द्र	मद्रास
श्रीमान् धर्मेन्द्र कुमार	बम्बई
,, दाऊ जी	चिरगाँव, बम्बई
,, मन्नालाल	बम्बई
,, वीरेन्द्र मुकीम	नागदा
,, सम्पत एण्ड मेहता	बम्बई

श्रीमान् दौलत राम जैन	माकडी
,, अमरचन्द झारझूड	ग्वालिया, वम्बई
,, के० के० दोपी	वम्बई
,, आतमचन्दजी	व्यावर
,, एस० एम० मेहता	मद्रास
,, एस० एम० पटेल	अहमदाबाद
,, प्यारेचन्द डांगी	मद्रास
,, कपूरचन्द्र श्रीमाल	हैदराबाद
,, जवाहरलालजी रावयान	देहली
,, मुकुलदास गोकुलदास	व्यावर
,, पारस भण्डारी	सिवाना
,, कान्तिलाल नेमचन्द	वम्वई
,, मोतीलाल कस्तूरीलाल	कलकत्ता
,, पन्नालाल नाहटा	दिल्ली
,, हीरालाल सोमानी	कलकत्ता
,, सज्जनसिह चोरड़िया	रतलाम
,, चन्द्रकान्त आनन्दकुमार	वम्बई
,, किशनलाल सीताराम	मद्रास
,, इन्द्रप्रस्थ जैम्स	दिल्ली
,, पारसमल धर्मचन्द	विलाड़ा
,, नौरतनमल चपलोत	गुलाबपुरा
,, लूणकरण मेहता	इन्दौर
जैम कम्पनी	कलकत्ता
वापा लाल भाई	कलकत्ता
लाल्स जैम्स एक्सपोर्ट	आगरा
धान्धिया ब्रदर्स	कलकत्ता
गौतम ब्रदर्स	बम्बई





ऐसे थे मेरे

दादाजी

यह समीचीन है कि पृथ्वी सूरमायुक्त है। सब गुण सम्पन्न पुरुषार्थी मानवीय सवेदानाओ के कारण सूरमा होते हैं। जन हितार्थ जन्मे मेरे दादाजी भी सूरमा ही थे।

"उदार चरितानाम् तू वसुधैव कुटुम्बकम्" भावना से आविभू त दादाजी ने धार्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक क्षेत्र म मानवीय सवेदनाओ का पूरा पूरा ध्यान रखा। प्रत्येक क्षेत्र मे दादाजी ने अपने सदाशयी, सहिष्णु, सवेदना और मानवीय दृष्टिकोण से अपनी छाप छोडी। जो भी मिला, आया और उनका अपना हो गया। सभी अपने आपको उनके निकट मानते थे।

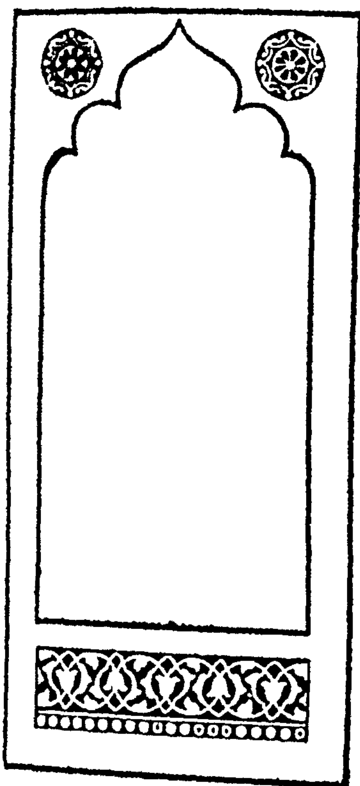
सौम्य स्वभावी रत्न पारखी दादाजी ने मानव सेवा मे परम आनन्दानुभूति पाई। क्षणभर के लिए भी कभी उनकी क्रुद्ध भावभगिमा दृष्टिगोचर नही हुई।

स्वयभू होकर भी कर्मवीर, जिज्ञासु भावना के प्रेरक थे। गाधी दर्शन से प्रभावित दादाजी मनुष्य मात्र की सेवा से ईश्वर की प्राप्ति सम्भव समझते थे। धर्म, जाति, मानवता के परम पुजारी की साक्षात् मूर्ति को कभी अडचन न डाल सकी। दानवीर की तरह उनकी सदाशयता सभी के लिए, सभी क्षेत्रो मे सुलभ थी। हम आपके कृत्य से गौरवान्वित हैं, ऋणी हैं।

मैं आपके पदचिह्नो का अनुसरण ही जीवन की साथकता समझूँगा। यही मेरी सुमन अभिलाषा उनके चरण-कमलो मे समर्पित है।

—दुष्यन्त टाक

□



श्री राजरूप टांक का समय-समय पर अभिनन्दन किया गया। न सिर्फ भारत में अपितु विदेश में भी आपको सम्मान स्वरूप प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये। स्मारिका के तीनों कवर पृष्ठों के अतिरिक्त दो अभिनन्दन-पत्र यहाँ अविकल रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं—

श्री राजरूपजी टाँक को विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा की गई सेवाओं के उपलक्ष में जयपुर के नागरिकों की ओर से

अभिनन्दन-पत्र

प्रिय पुरुष !

जयपुर के इतिहास में आज का दिन बहुत दिनों तक स्मरण किया जायेगा, जब यहाँ के हर वर्ग और हर श्रेणी के प्रमुख नागरिक अपने एक ऐसे नगर-बन्धु का सम्मान करने के लिए एकत्रित हुए हैं जो अपने मानवीय गुणों के कारण, और विगत तीस वर्षों से हर क्षेत्र में और हर समय में उत्साह पूर्वक सेवाकार्य के कारण, सारे नगर में परमप्रिय और परम प्रतिष्ठित है। आप इस समय किसी ऐसे पद पर आसीन नहीं हैं जो ऐसे सम्मान-समारोहों का अभ्यस्त होता है, फिर भी नगर के ऊंचे से ऊंचे पदासीन-व्यक्ति आज आपका अभिनन्दन कर रहे हैं, यह आपकी लोकप्रियता का ऐसा प्रमाण है जो स्वय सुस्पष्ट है।

पारखी पुरुष !

जयपुर के निर्माण के समय से अब तक के इतिहास में इस नगर की यह विशेषता रही है कि यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में प्रवीण एवं कुशल व्यक्ति इसके जन-जीवन को ऐसा जाज्वल्यमान करते रहे हैं कि इसका प्रकाश और प्रभाव देश के सब भागों में ही नहीं, विदेशों में भी, अनुभव किया जाता रहा है। इस दृष्टि से जिस क्षेत्र में इस नगर ने सबसे अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की वह है जवाहरात का उद्योग और व्यवसाय। मूल्य और गुण दोनों में इस सर्वश्रेष्ठ वस्तु व व्यापार का इस नगर में सर्वाधिक विकास हुआ, और यह यहाँ की परम प्रतिष्ठित परम्परा बन गयी। ऐसी सुस्थापित परम्परा को भी आपने नया जीवन, नया स्वरूप और नया विकास दिया।

परमार्थी पुरुष !

इस एक उपलब्धि के लिये ही आप इस नगर के गौरवशाली इतिहास में सदा गौरव के साथ याद किये जायेंगे, लेकिन इस नगर, और इस क्षेत्र के, सामाजिक जीवन का कोई अंग नहीं है, जिसे पिछले पच्चीस-तीस वर्षों में आपकी सर्व-सुलभ उदारता और सब प्रसिद्ध सरलता का लाभ नहीं मिला हो। आपके इन गुणों से जिन संस्थाओं और संगठनों ने अपने को अग्रसर और उन्नत किया उनमें राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक, व्यावसायिक तथा और अनेक क्षेत्रों की इतनी संस्थाएं हैं कि उनको एक जगह गिनाना एक प्रकार से इन वर्षों का पूरा इतिहास दुहराना हो जायेगा। इसकी आवश्यकता नहीं है, चूंकि आप स्वयं अपनी सहायता और सेवा के प्रयत्नों को परोक्ष रखने के प्रति अत्यन्त आग्रही रहे हैं और आज भी हम आपकी इस भावना का आदर करना चाहेंगे।

प्रेरक पुरुष !

आप उन विरले पुरुषों में हैं जिन्हें सब वर्गों तथा सब श्रेणियों के ही नहीं, सब पीढ़ियों के स्त्री-पुरुषों में काम करने, और सबको सहायता ही नहीं, प्रेरणा देने का सुयश प्राप्त हुआ है। व्यापारियों तथा व्यवसायियों के तो आप अग्रज बन ही गये हैं, कला-कारीगरी के क्षेत्र में भी आपका योगदान ऐसा रहा है कि कम से कम जवाहरात के सारे काम के क्षेत्र में तो सभी लोग आपको आदर और स्नेह से देखते हैं। इस क्षेत्र में एक ऐसी पीढ़ी को आपने अपने पैरों पर ऐसा खड़ा किया है कि इनमें से अनेक को विदेशों तक में प्रतिष्ठा प्राप्त है। महिला शिक्षा के माध्यम से आपने अपने प्रगतिशील विचारों को घर-घर में पहुंचाया है, और माताओं के माध्यम से अनेक घरों को प्रभावित किया है। आपकी शिष्य परम्परा अभी भी शाश्वत और सजीव है, यह सदा आपकी स्मृति को इसी प्रकार बनाये रखेगी। आपने जो कुछ अपने जीवन में अर्जित किया उसे दे देकर ही अपने जीवन को ऐसा बना लिया है कि इसे सहज ही उदाहरण और प्रेरक कहा जा सकता है।

टांक साहब !

हम आज यहां एकत्रित होकर आपकी ६४वीं वर्ष गांठ पर दीर्घ, सुखद और मंगल जीवन की उत्तरोत्तर वृद्धि की हार्दिक कामना करते हैं।

विमलचन्द सुराना प्रेमचन्द धाधिया

एवम्

शिष्य परिवार

दिनांक १२-१२-७०

हम हैं,

श्री राजरूप टांक अभिनन्दन समिति की ओर से

देवीशंकर तिवाड़ी — अध्यक्ष

वैद्य गोपालदत्त — मन्त्री

सच्चे रत्न-पारखी — बहुमुखी प्रतिभा के धनी — कर्मठ जन-सेवक — वात्सल्य मूर्ति

समाजरत्न श्री राजरूप टांक

की सेवा में

सविनय - सप्रेम - समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

श्रावक रत्न :

विश्ववात्सल्य के महान् प्रणेता भगवान महावीर के शासन मे जन्म पाकर आपने अपने कार्यो व सेवाओं से जो आदर्श प्रस्तुत किया है उससे सारा समाज गौरवान्वित हुआ है। जीवन के प्रारम्भिक काल से आज तक बरावर आप सब ही प्रकार के सेवा कार्यो में अग्रणी रहे है। आपका जीवन सेवा का प्रतिरूप बन चुका है। जैन धर्म में आपकी अटूट श्रद्धा रही है जप-तप-स्वाध्याय आदि की विभिन्न प्रवृत्तियाँ आज भी औरों के लिये अनुकरणीय बन रही है। जैन समाज आपके जीवन मे श्रद्धा-विवेक और कर्त्तव्य के सुन्दर समन्वय को पाकर आपको सुश्रावक के रूप मे मान्य करता रहा है।

परमार्थी पुरुष :

आप पूर्ण देशभक्त रहे है—जयपुर मे प्रजामण्डल के जन्मदाताओ में आपका मुख्य स्थान रहा है। गांधीवादी विचारधारा के प्रवल समर्थक साथ ही रचनात्मक कार्यो मे आपकी अनन्य निष्ठा आज भी युवको के लिये प्रेरणारूप है। शरीर से पूर्ण स्वस्थ न होते हुये भी प्राकृतिक प्रकोपों से पीड़ित (अकाल पीडित, अग्नि पीड़ित, बाढ़ पीड़ित) व्यक्तियों के लिये आप तुरन्त सेवा हेतु पहुंच जाते हैं। अभावग्रस्त लोगो के लिये आपका द्वार सदैव खुला है। आपने अनेक नेत्र केम्पो के माध्यम से रोगियों को दृष्टि प्रदान की है। नेत्रहीन व्यक्तियों के तो आप मसीहा हैं। जयपुर नेत्रहीन कल्याण संघ की संस्था के आप प्राण है। अनाथाश्रम के संस्थापक, साथ ही हरिजन कल्याण कार्य में अग्रसर है ही। गायो के प्रति आपकी निष्ठा अनुपम है। गौशाला संघ के प्रेरणास्रोत रहे हैं। जयपुर की रचनात्मक कार्य करने वाली शायद ही कोई ऐसी संस्था होगी जो आपसे सम्बन्धित न हो।

ज्ञान पीयूष :

शैक्षणिक क्षेत्र मे आपकी सेवाओ की तुलना करना भी कठिन है। आप द्वारा संचालित वीर बालिका महाविद्यालय व सम्बन्धित ज्ञान सस्थान आज जयपुर के लिये गौरव रूप बन चुके हैं। लगातार ५४ वर्ष से आप इस संस्था को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। जयपुर शहर की चारदिवारी में मध्यम वर्ग की वहिनो के शिक्षण के लिये यही एकमात्र महाविद्यालय स्तर की संस्था है। हजारों-हजार बालिकाये इस संस्था से लाभान्वित हो रही हैं।

वात्सल्य मूर्ति चाचा साहव :

बहिनो के व्यावहारिक शिक्षण के साथ भाइयो को व्यवहारकुशल व्यापारी बनाने में आपकी [illegible] परायणता और वात्सल्य भाव अमृत कुम्भ के सुमदृश्य बने है। जयपुर ही नहीं भारतवर्ष मे

अनेक स्थानों से आये सैकड़ों युवक आपके पास शिक्षण पाकर न केवल स्वावलम्बी बने हैं अपितु जवाहरात क्षेत्र में कीर्तिमान कायम कर चुके हैं। आप सच्चे कलापारखी हैं, आपने 'रत्न-परीक्षा' पुस्तक लिखी है जो अमेरिकी विश्वविद्यालयों में मान्य हो चुकी है। आज के मशीनी युग में भी रत्नों के परीक्षण में आपकी राय मान्य की जाती है। आपका संग्रहालय देश विदेश के प्रबुद्ध वर्ग के लिये आकर्षण की वस्तु बनी है।

आयुर्वेद चिकित्सा पारखी

रत्नों के माध्यम से आपने असाध्य रोगों के सफलतापूर्वक निदान किये हैं। साधु सतों के लिये आपका औषध केन्द्र सदैव खुला रहता है। आपने इस सम्बन्ध में अनेक नई खोजें भी की हैं। रोगियों के प्रति आपकी करुणा अनुपम है। भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति के आप प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

सात्विक प्रकृति के धनी

आपका सदैव काम में विश्वास रहा है नाम में नहीं। आपकी सदाशयता संस्थाओं को नव-जीवन प्रदान करती है। आप 'झुक जायेंगे पर टूटेंगे नहीं' के सिद्धान्त में सदैव आस्थावान रहे हैं। आपकी भाषा सदैव हित मितप्रिय रही है। आपके सरल स्वभाव व निष्काम सेवा से सभी प्रभावित रहे हैं। आपकी जीवनचर्या भी नियमित है। वस्तुतः आप प्राचीन संस्कृति व नवीनता के अनुपम मिश्रण हैं। टाक धर्मशाला आपकी ओर से समाज को भेंट की हुई सुन्दर संस्था है, यह केन्द्र स्थान में है, ग्रीष्म ऋतु में हजारों व्यक्ति यहाँ से जल प्राप्त करते हैं, महान् सेवा व पुण्य का कार्य आपकी प्रेरणा से चल रहा है।

जन-जन प्रिय

जयपुर का प्रत्येक नागरिक किसी न किसी रूप में आपके सम्पर्क में आया है, कुछ वर्ष पूर्व आपका नागरिक अभिनन्दन जयपुर का प्रमुख आयोजन बन चुका है। राजनीतिक क्षेत्र में आप गांधी-वादी व्यक्तित्व के रूप में—सामाजिक क्षेत्र में प्रमुख समाजसेवी के रूप में—शैक्षणिक क्षेत्र में सरस्वती के महान् उपासक के रूप में—अभावग्रस्त लोगों में मानवता के रक्षक के रूप में—कार्यकर्ताओं में नेतृत्व प्रदाता के रूप में एवं शिष्य परिवार में वात्सल्यदाता के रूप में आप सदैव देखे जा सकते हैं।

आपका यह सम्मान सत्य शिव सुन्दरम् के सुरम्य वातावरण के सृजन हेतु है। समाज ने आपसे बहुत कुछ चाहा है और प्राप्त भी किया है। आपकी समाज के प्रति मूक सेवायें सदैव प्रेरणा दायी बनी हैं और बन रही हैं। मानवता के परम पुजारी का अभिनन्दन कर सारा समाज आज गौरवान्वित हो रहा है।

विनीत

राजस्थान जैन सभा ● भारत जैन महा मण्डल ● भ० महावीर विकलांग सहायता समिति

रामलीला-ग्राउंड—महावीर जयन्ती १९८१

समाजसेवी श्री राजरूपजी टांक



श्री निर्मलकुमार शुक्ला
विपश्यना 'योगाचार्य'

जयपुर जैसी महानगरी में कतिपय महानुभाव ही ब्रह्म मुहूर्त की पुरवाई का आनन्द रामनिवास बाग मे उठाते रहे है, वे इस बात के साक्षी है कि किस तरह से सज्जनवृन्दों का एक काफिला प्रतिदिन ठहाकों एवं नित्य नये-नये स्मरणों के साथ बाग के परिवेश को सुशोभित करता था— उन्हीं के अगुवा श्री राजरूपजी टांक समय की नियम बद्धता से जुडे हुए अपनी सज्जनता एवं सरलता से भ्रमण प्रेमियों को सुवासित किये हुए थे। उनकी कार काफिले के पीछे-पीछे खाली चला करती थी। बाग के परिसर को पार करने के उपरान्त ही समाजसेवी श्री राजरूपजी उसका उपयोग करते थे।

तिमिर के इस घोर भौतिकवादी अन्धकार मे श्री राजरूपजी ऐसी दीपशिखा थे जिन्होने गांधीवादी नैतिक मूल्यों को न केवल जीवन मे आचरित किया वरन् महिला शिक्षा विकलांगों की सेवा एवं प्राकृतिक चिकित्सा के वे सजग हिमायती थे। बापूनगर स्थित प्राकृतिक चिकित्सालय से उनकी प्रगाढ़ता रही। भारतीय वेशभूषा से सुसज्जित, सुसम्पन्न जौहरी श्री टांक ने जवाहरात के व्यवसाय मे जयपुर के सैकड़ों बच्चों को प्रशिक्षित कर जवाहरात के व्यवसाय में उन्हें निःस्वार्थ भाव से प्रतिष्ठित रोजगार मे लगाया। आज भी गुरु शिष्य परम्परा से जवाहरात का प्रशिक्षण पाने वाले जौहरी जानते है कि श्री टांक साहब प्रशिक्षणार्थियो को चुनने में कितने पारखी थे।

नारी शिक्षा के क्षेत्र मे उन्होने वीर बालिका स्कूल एवं महाविद्यालय की स्थापना अपने स्वयं के निजी श्रम से की। प्रारम्भिक अवस्था मे तो महिला शिक्षिकाओ को उन्होने निजी तौर पर तैयार कर लड़कियों को पढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया, उसके फलस्वरूप उनके द्वारा लगाया गया वृक्ष पुष्पित होकर अपने सुगन्ध से सबको सुवासित कर सम्माननीय श्री राजरूपजी टांक के व्यक्तित्व को निहार रहा है। ○



ऐतिहासिक यादगार

जयपुर मुख्य रूप से 'जवाहरात व्यवसाय' के लिए विश्व विख्यात है। वर्तमान मे जवाहरात उद्योग को सर्वोच्च स्थान पर लाने का सारा श्रेय श्रीमान् राजरूपजी टाक को ही जाता है। आपने गुरु परम्परा का निर्वाह करते हुए, अथक परिश्रम व लगन से जवाहरात व्यवसायियो व शिल्पकारो को तराश कर विश्व मे इस उद्योग मे क्रान्तिकरी परिवर्तन किया, इस क्रातिकारी परिवर्तन को आगे बढाने के लिए "रत्न तथा आभूषण निर्यात सवर्धन परिषद्" वाणिज्य मत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित प्रथम "रत्न शिल्पी प्रशिक्षण विद्यालय" की स्थापना, उच्च स्तर पर उच्च तकनीक प्राप्त रत्न-शिल्पियो को तैयार करने के लिए की गई।

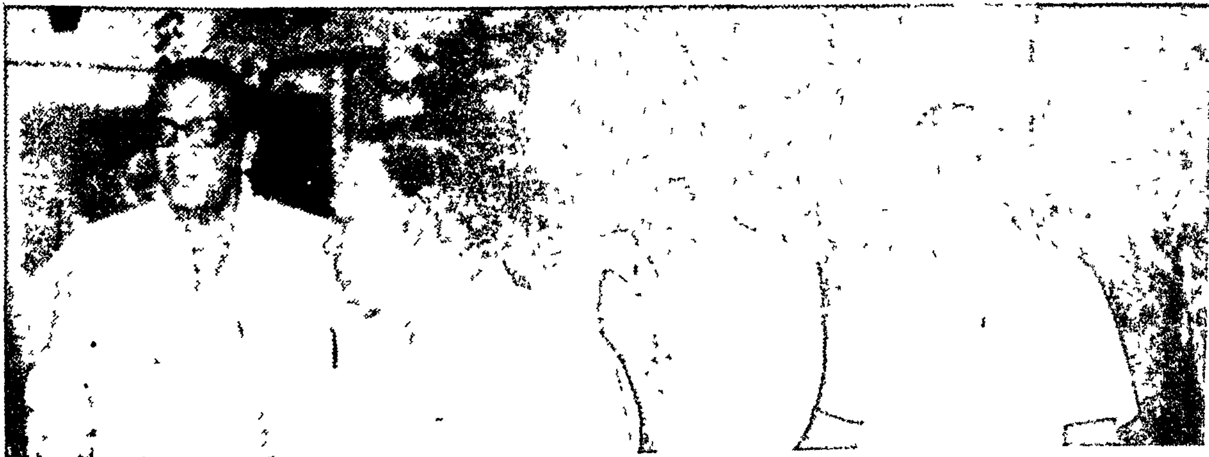
"रत्न-शिल्पी प्रशिक्षण विद्यालय" को आपकी सेवाओ का पूरा मौका मिला। वृद्धावस्था आन पर भी आपका मन जवाहरात उद्योग को एक कदम और आगे बढाने व विश्व मे उच्च तकनीक प्राप्त शिल्पकारो को तैयार करने का चिंतन व मथन चला, उसकी साकार रूप मे परिणती हुई" रत्न शिल्पी प्रशिक्षण विद्यालय मे, आपने उदार हृदय से शिल्पकारो को नई तकनीक से अवगत करवाया।

आपका जवाहरात शिक्षा जगत् मे सगठित रूप मे अन्तिम सफल ऐतिहासिक यादगार प्रयास रहा।

ताराचन्द जैन
प्रशिक्षक

सार्वजनिक श्रद्धांजलि सभा में—

अश्रुपूरित हृदयोद्गार



→ सुबोध विद्यालय के प्रांगण में आयोजित सभा में प्रवेश करते हुए माननीय मुख्य न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढ़ा एवं समारोह के आयोजक



← चाचा साहब को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुये माननीय मुख्य न्यायाधीश श्री गुमानमल लोढ़ा

इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा प्रगट किये गये विचार—

ज्ञान ज्योति के पावन पर्व ज्ञान पंचमी के दिन जयपुर नगरवासियों के मध्य से एक दिव्यात्मा रत्न [illegible] में विलीन हो गया। [illegible]

नागरिका एव पूज्य चाचा सा से जुड़ी अनेक सस्थाओ के सदस्यो एव पदाधिकारियो ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये ।

सभा का आरम्भ श्री हीराचन्दजी वैद ने शोक सतप्त वाणी मे कुछ इस प्रकार कहते हुए किया कि जन्म तो सभी का महोत्सव रूप होता है परन्तु ससार मे कुछ ऐसी भी हस्तियाँ होती हैं जिनकी मृत्यु भी महोत्सव बन जाया करती है ।

पूज्य चाचा सा युग पुरुष, करुणामूर्ति व पीडितो के मसीहा थे। आज हमारे मध्य वे भौतिक शरीर से विद्यमान नहीं हैं परन्तु उनके

और भी अधिक बढा दिया । सर्वाधिक नियात के कारण आपको तीन बार सम्मानित किया गया ।

'समाज रत्न' और 'समाज विभूषण' की उपाधि से सम्मानित चाचा साहब ने जिस क्षेत्र पर अपना वरद् हस्त रख दिया वह सदा-सदा के लिए सक्षम हो गया । ऐसे प्रात स्मरणीय परम पूज्य चाचा सा के प्रति जयपुर नगरवासियो ने श्रद्धा सुमन सजोकर—जो हार गूँथा है, उसमे विचार रूपी पुष्पो की लडी कुछ इस प्रकार है ।

श्री दौलतमल भडारी

मेरा श्री राजरूपजी टाक के साथ 70-72



श्रद्धाजलि सभा मे मच पर विशिष्ट व्यक्तित्व

सिद्धान्त हमारे पथ प्रदर्शक सिद्ध होंगे। आज से 63 वर्ष पूर्व महिला शिक्षा की समस्या को देखते हुए उन्होंने श्री वीर बालिका विद्यालय की स्थापना की। महात्मा गाधी की भाँति अपने सम्पूर्ण जीवन का पर सेवा हेतु समर्पित कर दिया।

अपने व्यवसाय को अन्तराष्ट्रीय गौरव प्रदान करने वाले महामना चाचा साहब लेखन एव ज्ञान के क्षेत्र म भी कुछ पीछे नहीं रहे। अमेरिका जैसे ख्याति प्राप्त स्थल से स्वर्ण पदक प्राप्त कर आपने जयपुर एव रत्न-व्यवसाय के गौरव को

साल से भी ज्यादा पुराना सम्बन्ध था। मैं और वे तीसरी, चौथी कक्षा मे लीलाधरजी की पाठ शाला मे पढते थे। उन्हें न केवल रत्न-व्यवसाय का ही पूर्ण ज्ञान था अपितु हर क्षेत्र मे वह ज्ञान के धनी थे। उनके साठोपरान्त समारोह मे मेरे द्वारा उनकी लिखी हुई पुस्तक का विमोचन करवाया गया। मुझे ऐसा लगता था कि वे न केवल रत्न पारखी ही थे अपितु उन्हें ज्योतिष शास्त्र का भी पूर्ण ज्ञान था। वे एक ऐसे निष्कलक अमूल्य मोती थे, जिनका ताज माणक का था तथा जिनकी हीरे जैसी पैनी दृष्टि थी। उन्होंने

बिना किसी भेदभाव के सभी लोगो को व्यवसाय के क्षेत्र मे पारंगत किया। वे कहा करते थे कि जो एक बार मेरे पास आ गया, उसकी रोजी-रोटी की व्यवस्था होकर ही रहेगी। आज उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जो कार्य वह अधूरे छोड़ गये हैं उन्हें हम पूरा करें।

श्री देवीशंकर तिवाड़ी

मेरा उनसे सम्पर्क लगभग 55 वर्ष पुराना था जबकि मैं एक मामूली सा वकील और वे मेरे मुवक्किल थे। धीरे-धीरे हम इतने निकट आते गये कि हम परस्पर गहरे मित्र बन गये। मैंने हर क्षेत्र में कार्य किया। क्या सामाजिक, क्या राजनैतिक, क्या शैक्षणिक, उन्होने हर क्षेत्र मे मेरा लगातार हर प्रकार का साथ दिया। समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के लिये जीता है परन्तु वे समाज के प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिये। आज महिला शिक्षा ही उन महामानव का जीवन्त स्मारक है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि आज हम उनके गुणो को धारण करें। उन्होने जिन व्रतों को अपने जीवन में धारण किया था हम उनकी अनुपालना करें।

श्री सिद्धराज ढढ्ढा

श्रीमान् राजरूपजी टांक से मेरा निकट का सम्पर्क था। वे वर्ग भेदों से ऊपर उठकर जीने वाले महामानव थे। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आज सैकड़ों हजारों के रूप में उनके शिष्य-परिवार यहाँ उपस्थित है। उनका एक बार जिनसे सम्पर्क हो जाता था, उनके लिए उनकी करुणा का स्रोत हमेशा-हमेशा के लिए फूट पड़ता था। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में समाज को समृद्ध बनाया। यह [illegible] है कि उनका [illegible] और [illegible] था [illegible] उनकी मृत्यु भी महोत्सव से कम नहीं है।

श्री देवेन्द्रराज मेहता
(महावीर विकलांग समिति)

मेरा उनसे परिचय एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे हुआ था। उनसे बढ़कर समाजसेवी मुझे आज कोई नजर नही आता। जिस संस्था से वे जुड जाया करते थे उसकी प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध हो जाया करती थी। एक बार विदेश मे यूनीसेफ संस्था की वार्ता मे मुझसे पूछा गया कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आपकी संस्था में लोगों को विश्वास कैसे हो जाता है—"मैंने उत्तर दिया—जहाँ श्रीमान् राजरूपजी टांक इतने वर्षो से इस संस्था के अध्यक्ष हैं वहाँ लोगों का इस संस्था पर विश्वास स्वतः हो जाता है।"

श्री तेजकरण डण्डिया

'यादगानी मौत उसकी होती है जिसका जमाना अफसोस करे', श्रीमान् राजरूपजी टांक की मृत्यु भी कुछ इसी प्रकार की थी। उन्होंने क्या शैक्षिक, क्या धार्मिक, क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक सभी क्षेत्रो मे अपना पूर्ण उत्साह दिखाया। उन्होंने सही अर्थों मे समाज में अपना जीवन जिया। समाज मे जो आज उनके चले जाने से अभाव पैदा हुआ है, वह अभाव अपूरणीय है।

श्रीमती डॉ. शान्ता भानावत
(प्राचार्या, श्री वीर बालिका महाविद्यालय)

सरलता, सादगी सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति पूज्य बाबा सा. का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। जिनमें प्रभुता [illegible] था। वह दूसरों की [illegible] [illegible] आया करते थे।

[illegible]

कोई ऐसी छात्रा तो नही जो अपनी आर्थिक स्थिति के कारण अध्ययन से वंचित रह जाये। साथ ही आर्थिक दृष्टि मे कमजोर छात्राओं की मदद करते समय वह बार बार सभी को सचेत करते हुए कहा करते थे कि कही किसी को इस बात का अहसास न हो कि उसकी मदद की जा रही है। ऐसे उस महामानव को भूल जाना भला कैसे सम्भव है ?

श्री उमरावमल चौरडिया
(फैडरेशन ऑफ राजस्थान)

कैसा अनूठा, कैसा अनोखा, कैसा मनोहारी व्यक्तित्व था, श्रीमान् राजरूपजी टांक का जिन्होंने सम्पूर्ण समाज को गरिमामय रूप प्रदान किया। जयपुर नगर का प्रत्येक मानव उनके गौरव की गरिमा से गौरवान्वित होकर उनके सदेशों की महक से महक उठा है। उनका जुझारू व्यक्तित्व ही हमारा पथ प्रदर्शक बने, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री कन्हैयालाल जैन (राजस्थान चैम्बर)

जिसका प्रेरणामय जीवन निबलो का सम्बल बन गया वह व्यक्ति कभी मर नहीं सकता है, मरकर भी वह अपने गुणो के कारण अमर है। उनका जीवन यशस्वी जीवन था। दुराग्रह, आपसी मनमुटाव को दूर करवाना उनके लिए अति सहज काय था। उनके व्यक्तित्व को अपने जीवन मे धारण करना ही उनके प्रति श्रद्धांजलि होगी।

श्री कपूरचन्द पाटनी

मृत्यु उसकी महान् कहलाई जाती है जिसम वह स्वय हँसता है और समाज रोता है। श्रीमान् राजरूपजी टांक की मृत्यु भी समाज के लिए कुछ इस प्रकार की थी। उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र मे निष्ठा के साथ काय किया। वे विकलांगो के पैर, अनाथो के नाथ, अधो की आँखें थे। उनके पास बैठते हुए कभी इस प्रकार का आभास नही होता था कि हम किसी प्रमुख रत्न व्यवसायी के पास बैठे हैं बल्कि अपने ही किसी परिवार के बुजुर्ग सदस्य के साथ मिलकर बैठे हो।

श्री कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी
(नवज्योति)

प्रजामण्डल के आदोलन के समय से मेरा उनका सम्पर्क था। वे एक स्वतन्त्रता सेनानी, देश भक्त, समाजसेवी, स्त्रीशिक्षा प्रेमी व समाज सुधारक के रूप में विद्यमान थे। उन्होंने कभी किसी को नुकसान नही पहुँचाया। वे बहुत लोकप्रिय थे। मुझे जयपुर मे रहते हुए कई वर्ष व्यतीत हो गये परन्तु मैंने आज तक किसी की मृत्यु पर इतनी मात्रा मे लोगो को एकत्रित होते हुए नही देखा।

श्री राजकुमार काला
(राजस्थान जैन सभा)

श्री राजरूपजी टांक के चले जाने से ऐसा लगता है मानो एक व्यक्ति नहीं अपितु समूची सस्था उठ गयी हो। मेरा उनसे घनिष्ठ सम्पर्क था। उनके पास जो कुछ होता वह लोगो को खुले हाथो से दिया करते थे। उनके अधूरे काय, उनकी अधूरी धारणा को पूरा करना ही उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

श्री मानसिहका (राजस्थान चैम्बर)

एक महान् सत, कर्मप्रेमी, धर्मनिष्ठ, रत्न पारखी, समाजसेवी की यादें इतिहास के रूप मे अमर हो गयी। उनके गुणो को अपनाना और उन्हे काय क्षेत्र मे परिणत करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव
(प्रधानाध्यापिका, श्री वीर बा उ मा विद्यालय, जयपुर)

जिन्होने विविध प्राचीरो को तोडकर अपन

करुणा के द्वार सभी के लिए खोल दिये, जिन्होने अपने जीवन से उन लोगो के जीवन को आलोकित किया जो कि अभावो के अंधेरे मे जी रहे थे, ऐसे महारत्न की मृत्यु हमारे लिए एक ऐसा सदमा है जिसे सहन करना नितान्त कठिन है। उनके प्राणों का उत्सर्ग हमारे लिए एक चुनौती है। हम उनके गुणों को अपना कर—उनके अधूरे स्वप्नो को पूरा करेगे तभी हम उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धाजलि व्यक्त कर पायेगे।

डॉ. नरेन्द्र भानावत

उत्तराध्ययन सूत्र में दिव्य सदेश देते हुए भ० महावीर ने कहा है कि—"जैसे सुई के साथ धागा होने पर सुई गुमती नही है ठीक उसी प्रकार जीवन के साथ श्रुत ज्ञान का सम्बन्ध होने पर श्रुत ज्ञान उसे भटकने नही देता।" श्रीमान् राजरूपजी टांक ने अपने जीवन मे इस युक्ति को पूर्णतः चरितार्थ किया था। वे आध्यात्मिक सवेदना के धनी तत्त्वान्वेषी थे। जीवन-रत्नाकर के मथनकर्ता थे। लौकिक रत्न ज्ञान के साथ-साथ आत्मोत्थान रूपी रत्न ज्ञान को भी उन्होने धारण किया। वे सही अर्थो मे भगवान् महावीर के सिद्धान्तो के समर्थक थे। उनके पास जो कुछ था उसे उन्होने मुक्त हस्त से दूसरो के लिए लुटाया।

श्री हरिश्चन्द्र बडेर

आपकी गद्दी को विलक्षण वरदान था। जिस व्यक्ति ने यदि थोड़े समय के लिए भी आपसे ज्ञान प्राप्त किया, वह अपने क्षेत्र मे पारंगत हो जाया करता था। उनका विनोदी स्वभाव था, जिसकी [illegible] सैकड़ों-सैकड़ों मुखो से आज मुखरित हो रही है। वह आज मर कर भी अमर है।

श्री मुहम्मद सईद खान (कौमी एकता)

राजस्थान उद्योग एवं जयपुर के विकास में उनका जबरदस्त हाथ था। वे बिना किसी शक के हर व्यक्ति की हर प्रकार से मदद किया करते थे। एक बार हकीम इजवी के परिवार मे शादी थी। यद्यपि वे अस्वस्थ थे, फिर भी अपने दोनों साहबानों के साथ लड़खड़ाते कदमों से उन्होने शादी मे प्रवेश किया। कौमी एकता जैसी संस्थाओं को उनका वरदहस्त प्राप्त हो जाने के कारण आज तक उन सस्थाओं पर आँच नही आई।

श्री सुभाष गंगाहर

उनके जीवन में भगवान् महावीर की दो वाणी देखने को मिली। प्रथम—महादान और दूसरी—उचित पात्र को दान। बड़े-से-बड़े दान को देते समय भी उनके मन में नाम की लिप्सा क्षणिक भी नही थी। वे जब तक जिये तब तक क्षमाशीलता, संवेदनशीलता को अपना कवच बनाकर रहे।

श्री चुन्नीलाल ललवानी
(पशु क्रूरता निवारण समिति)

उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यह होगी कि आज हम अपने हर सम्भव प्रयत्न से अभयदान एवं जीव दया के व्रत को धारण करे।

श्री भँवरलाल शर्मा (विधायक)

इतिहास का अध्ययन तो सभी किया करते हैं, परन्तु कुछ युग पुरुषो का चरित्र कुछ इतना अधिक अनुकरणीय होता है कि वे स्वयं इतिहास के अमिट पृष्ठ बन जाया करते हैं। श्रीमान् चाचा सा. का भी चरित्र एवं कृतित्व कुछ इतना विलक्षण था कि वे स्वयं इतिहास बन गये। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके गुणों को अपने जीवन मे उतारें।

श्री गुमानमल लोढ़ा (मुख्य न्यायाधीश)

चाचा सा. जैसे समाजसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता

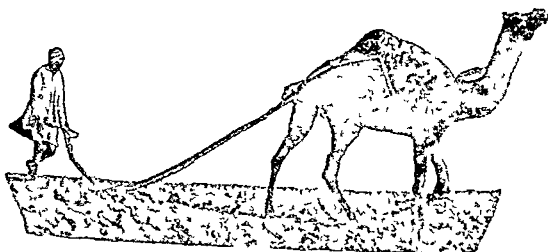
एव सज्जन पुरुष का योग समाज के लिए वरदान सिद्ध होता है । उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों एव गुणा को अपनायें तथा उनके कार्यों एव भावनाओ का क्रियान्वित रूप देन का प्रयास करें ।

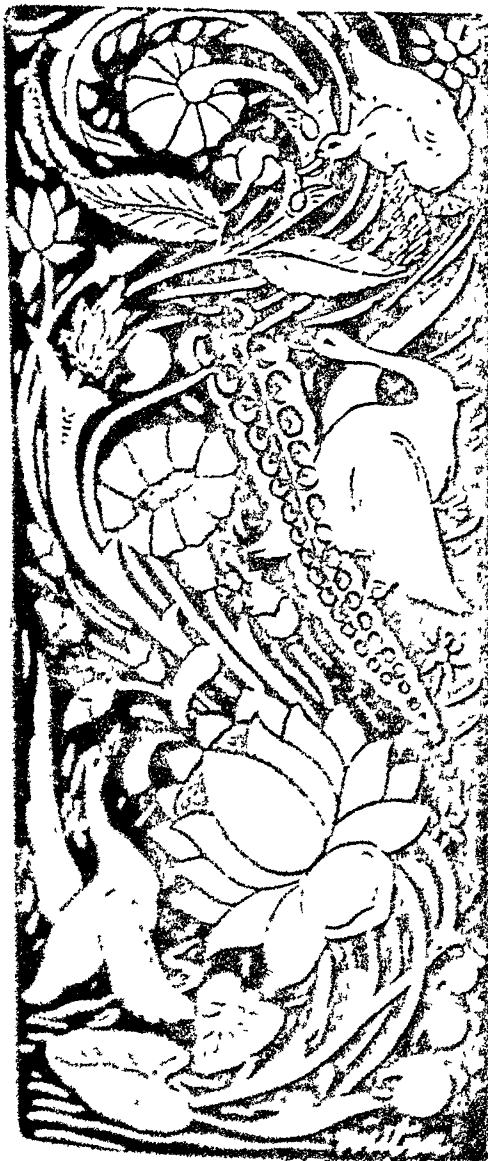
आभार प्रदशन

पूज्य चाचा सा के ज्यष्ठ पुत्र श्रीमान् दुलीचन्द टाक न अपने टाक परिवार की ओर से उन सभी सस्थाओ व अन्य गणमान्य लोगो तथा वक्ताओ के प्रति आभार प्रकट किया, जिन्हाने उनके प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित किये ।

इस श्रद्धाजलि सभा मे श्री दुलीचन्द साहब ने चाचा सा के कार्यों को सुचारु रूप स चलान हेतु 'मितावदेवी राजरूप ट्रस्ट' की स्थापना की घोषणा की । जिसका उपयोग समाज की पीडित, निधन व दुखी जनता के कल्याण हेतु होगा । आपके शिष्य परिवार की ओर स आपके अवशिष्ट कार्यों को गति देन हेतु एक और ट्रस्ट की स्थापना की घोषणा भी की गई जिसम समस्त शिष्य परिवार न स्व सामथ्य के अनुसार राशि देन की घोषणा की है । इसी भावाजलि के साथ हमारी ऐसी अभिभावना है कि ईश्वर उनकी दिवगत आत्मा को पूण शान्ति प्रदान करे । साथ ही उनके जीवनादश हमारे जीवन में युगों युगो तक पथ प्रदशक बनें ।

श्रद्धाजलि सभा का सचालन श्री राजरूप टाक के शिष्य श्री हीराचन्द वैद ने किया ।

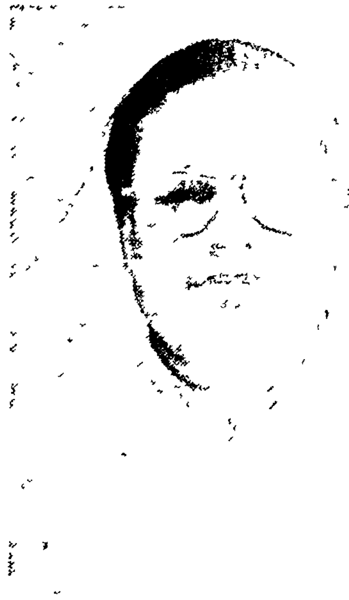




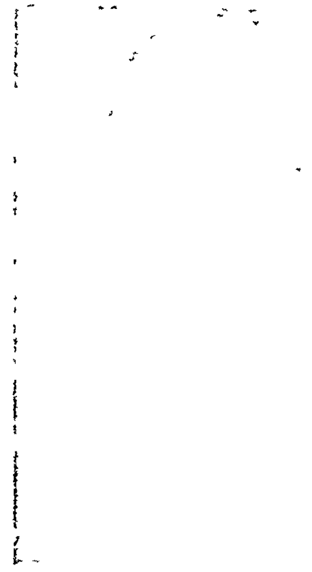
शिक्षण-संस्था

खण्ड

श्री वीर बालिका संचालक मण्डल पदाधिकारी



श्री विमलचन्द सुराना, अध्यक्ष



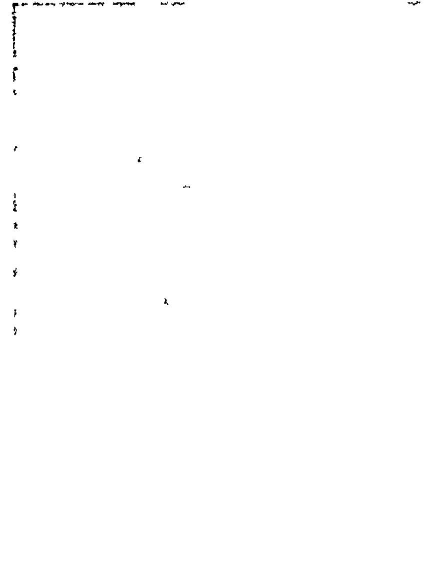
श्री पेमचन्द धांधिया, उपाध्यक्ष



श्री हीराचन्द वैद, मन्त्री



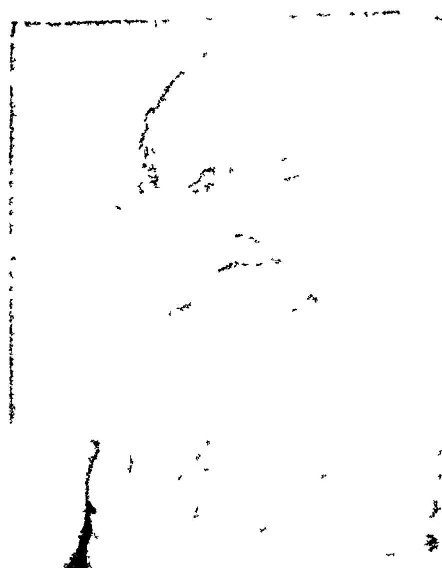
श्री दुलीचन्द टांक, संयुक्त मन्त्री



श्री महावीरप्रसाद श्रीमाल, कोषाध्यक्ष

डा. श्रीमती शान्ता भानावत
प्राचार्या
श्री वीर बालिका महाविद्यालय

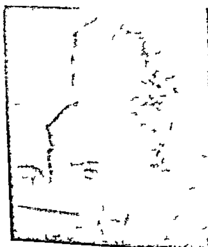




समय-समय पर महाविद्यालय मे पधारे हुए



श्री सत्यनारायण गायनका श्रीमती सत्यनारायण गायनका भट्टारक चारुकीर्ति मूडबिद्री डॉ राजेन्द्र शर्मा



डॉ कान्ता आहूजा



श्रीमती आर पी अग्रवाल



डॉ प्रतिभा जैन



श्रीमती उनियाल



डा क एस माथुर



डा एम सी खण्डलवाल



डा एम एल आसवाल



डॉ आर एन मि

विशिष्ट विद्वानों एवं अतिथियों द्वारा उद्बोधन



श्री विष्णु प्रभाकर | श्री मेघराज 'मुकुल' | श्री भगवतीप्रसाद बैरी | [illegible]



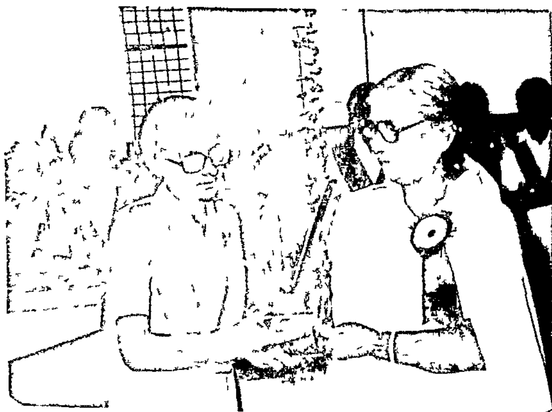
डॉ. महावीरराज गेलड़ा | श्री एन. के. सेठी | [illegible]



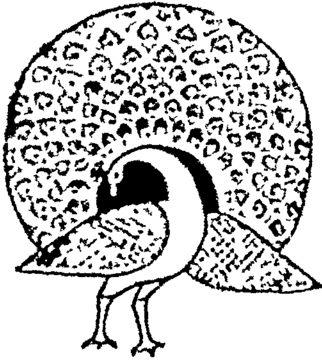
वाह रे सपूत !

दानवीर सेठ स्व श्री साहनलालजी दूगड ने श्री वीर बालिका विद्यालय भवन का क्रय कर सस्था का समर्पित कर दिया। कुछ वर्षों तक आप इस सस्था क अध्यक्ष भी रह।





माध्यमिक शिक्षा बाड की वष 1987 की कक्षा X वाणिज्य वग की वरीयता सूची में विद्यालय की छात्रा अंजु गायल का चतुथ स्थान प्राप्त करन पर विद्यालय की आर से सम्मानित करते हुय सयुक्त निदेशिका महिला शिक्षा सुश्री धी प्रदाजी।



• स्त्री–शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रेरणास्पद संस्था—

• उपेक्षित एवं अभावग्रस्त नारी वर्ग को स्वावलम्बी, सुसंस्कारी बनाना जिसका ध्येय—

श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय

श्री वीर बालिका उ. मा. विद्यालय जैन श्वेताम्बर समाज द्वारा संचालित महिला शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणीय संस्था है। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में जैन साध्वी श्री स्वर्ण श्री जी महाराज के कर कमलों से नैतिक संस्था के रूप मे 10-12 छात्राओ से वि. सं. 1982 में कार्तिक शुक्ल पक्ष की पचमी, मगलवार के दिन इस ज्ञान मन्दिर की स्थापना हुई। कर्मठ कार्यकर्ता और रचनात्मक दृष्टिकोण के धनी स्व. श्री राजरूप जी टांक साहब के नेतृत्व मे यह संस्था विकसित होकर आज गुलाबी नगरी जयपुर में श्रेष्ठ विद्यालय के रूप में शोभित है। इसके निर्माण मे आपका अभूतपूर्व योगदान रहा है। लगातार 50 वर्षो से जो स्नेह और आत्मीयता इस संस्था को मिली है उसी के परिणामस्वरूप आज यह संस्था उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँच सकी है। यह संस्था स्त्री शिक्षा के क्षेत्र मे एक प्रेरणास्पद संस्था रही है जिसने छात्राओं मे सरलता, सादगी, अनुशासन एवं उच्चादर्शों को आप्लावित कर उनके अज्ञान को दूर कर उनका शैक्षणिक तथा चारित्रिक विकास किया।

संस्था का उद्देश्य :

संस्कारशील एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा की व्यवस्था करने के साथ ही छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये हर सम्भव प्रयत्न करना संस्था का परम उद्देश्य रहा है। बालिकाओं को पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उनमें नैतिक शिक्षा, उदात्त भावनाएँ, पारस्परिक सहयोग, नियमितता, सौन्दर्य अभिव्यक्ति तथा खेलकूद की क्षमताओं का विकास करते हुए उनमें राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना है। केवल शिक्षा, शिक्षा के लिए न होकर व्यावहारिक ज्ञान एवं जीविको-पार्जन को ध्यान में रखते हुए कला, नृत्य, संगीत आदि के शिक्षण की भी व्यवस्था है। समय की मांग के अनुसार नवीन विषयों का समावेश किया जाना भी संस्था का लक्ष्य है। प्रारम्भ से ही विद्यालय का उद्देश्य समाज में उपेक्षित एवं अभावग्रस्त नारी वर्ग को शिक्षा द्वारा स्वावलम्बी एवं सुसंस्कारित बनाना रहा है। शिक्षा नैतिक मानदण्ड एवं सदव्यवहार का सूत्र बन सके, इस बात के लिये इस संस्था में सतत प्रयत्न किया जाता रहा है। [illegible] [illegible] के निर्देश में इस विद्यालय

एव सुसम्कारों का परिचय देती रही हैं।
त्या का जीवन अपना कर जैन शासन म
मज्जन श्री जी, श्री मणिप्रभा श्री जी,
ो जी एव हेम प्रज्ञाश्री जी प्रमुख हैं।

क्तियों, दानदाताओं एव शिक्षा शास्त्रियों
राज्य सरकार की सहायता 1946 से ही
ाम को देखते हुए यह सन्तोषजनक नहीं

टान समाज के गणमान्य व्यक्ति रहे हैं।
ा, स्व श्री राजमल जी सुराणा, स्व श्री
य श्री सिद्धराज जी ढड्ढा, श्री पूर्णचन्द्र
ाय परिवार कभी नहीं भुला सकता जिन्होंने

ा साहब के प्रमुख शिष्य श्री विमलचन्द जी
ा उपाध्यक्ष हैं। सूझ बूझ के धनी 40 वर्ष
रस वप स था के मत्री पद को सम्हाला।
, सयुक्त मन्त्री पद को स्वीकार किया व
महावीर प्रसाद जी श्रीमाल आसीन हुए।

परीक्षा परिणामों में निरन्तर प्रगति होती
यत होने के कारण छात्रा सख्या वर्तमान
ातिक कार्यक्रम, श्रेष्ठ अनुशासन, नियमित
विशेषतायें हैं। पिछले लगभग 10 वर्षों से
करते रहना भी विशिष्ट उपलब्धि है। मत
हा—

अणु गोयल न 90 4% अक प्राप्त कर बोर्ड की
-स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव-बढाया है।

,गणित सा ज्ञान, अग्रेजी, चित्रकला एव कार्यानुभव
तक इन्ही विषयो के साथ म सस्कृत, गृह-विज्ञान एव

संगीत विषय का भी अध्ययन कराया
साथ कला एवं वाणिज्य वर्ग का
छात्राओं की अभिरुचि एवं कार्यक्षे
विषयों का चयन किया गया है
शास्त्र, हिन्दी, बहीखाता, व्या
गया है। साथ ही सामान्य ज्ञ
की जाती है।

विद्यालय में छात्राओं
विद्यालय समय के बाद प्र
कराया जाता है—

(1) खो-खो (2

पुस्तकालय–वाचनालय

पुस्तकालय विद
मस्तिष्क की क्षमता पर
प्रवृत्तियों के सुसंचालन
ध्यान में रखते हुए विद्या
किया जाता रहा है।
विशेष ध्यान रखा जाता
निर्माण कल्याण पर वि
कक्ष भी स्थापित किया
की भी व्यवस्था है जि
और मासिक पत्र-पत्रि

छात्रा–सहायता :

जैन समाज
की शिक्षा अवरुद्ध
व्यवस्था प्रदान क

बुक बैंक :

समाज
स्थापना की गई।
किया जाता है।
35 छात्राएँ ला

विद्यालय गण

पुस्तक
जाती है। स
सम्पादन एवं

छात्रवृत्तिया

विद्यालय मे अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियो की व्यवस्था है। बोर्ड की परीक्षा मे श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम प्राप्त करके प्रथम 250 छात्र छात्राओ की वरीयता सूची मे स्थान प्राप्त करने वाली प्रतिभाशाली 8-10 छात्राओ को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त होती है। शान्तिनाथ चरिटेबिल ट्रस्ट द्वारा 9 छात्राओ को 3600/ रु की छात्रवृत्तिया प्रदान की गई।

शिक्षक वर्ग की ओर से भी प्रतिवर्ष प्रतिभाशाली एव जरूरतमन्द 4 छात्राओ को छात्रवृत्तिया प्रदान की जाती हैं। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार की ओर से मिलने वाली विभिन्न छात्रवृत्तियो जैसे—मृत राज्य कर्मचारी छात्रवृत्ति, ऋण छात्रवृत्ति, स्वतन्त्रता सैनानी एव भूतपूर्व सैनिक छात्रवृत्ति से छात्राए लाभान्वित होती हैं।

सदन व्यवस्था

हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी हमारे विद्यालय मे सदन व्यवस्था की परम्परा यथावत रूप से सफलतापूर्वक चल रही है। इन सदनो का उद्देश्य विद्यालय मे अनुशासन, सास्कृतिक, शैक्षणिक, विभिन्न गतिविधियों को सुचारू रूप से सचालित करना तथा विद्यालय के विकास मे सहयोग देना है। हर सदन के काय को चार-चार अध्यापिकाओ में विभक्त किया गया व एक शिक्षिका सदन की इन्चाज के रूप मे नियुक्त की गई। कक्षा 6 से लेकर 11 तक छात्राओ को चार सदनो मे विभक्त किया गया। इस प्रकार 15 जुलाई को विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने हेतु निम्न सदनो की स्थापना की गई—

मैत्रीय सदन—श्रीमती स्वर्ण भार्गव (प्रभारी)
पद्मिनी सदन—श्रीमती पुष्पा जैन (प्रभारी)
सरोजनी सदन—श्रीमती वीना कानूनगो (प्रभारी)
विचक्षण सदन—श्रीमती राजकुमारी सोनी (प्रभारी)

प्रत्येक सदन की निर्वाचित छात्रा मन्त्री प्रत्येक कक्षा मे से दो दो छात्राओ को अपने कार्य को सुव्यवस्थित रूप से करने हेतु सहायक के रूप मे चयन करती हैं। इस प्रकार सदन व्यवस्था द्वारा छात्राओ मे आत्म-निर्भरता, सहयोग, अनुशासन आदि की भावना का विकास किया जाता है।

गाईडिंग

हमारे विद्यालय मे 3 अक्टूबर, 1975 से गाईडिंग की व्यवस्था चली आ रही है। गाईडिंग का प्रमुख उद्देश्य छात्राओ म आत्म निर्भरता, सेवा भावना, मितव्ययता, पवित्र आचरण, सद्भावना, पारस्परिक प्रेम का विकास करना व उनमे सास्कृतिक आदान प्रदान द्वारा उनके मानसिक ज्ञान को विकसित करना है। विद्यालय का अपना एक बैंड भी है जो प्रमुख धार्मिक आयोजनो मे भाग लेता रहा है।

कार्यानुभव

आधुनिक समय म शिक्षा तथा रोजगार की एकरूपता होना आवश्यक होती है। विद्यालय स्तर पर कार्यानुभव विषय के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के साधारण उद्योग सीख कर बालिकाओं मे सामाजिक एव उत्पादक कार्यों में रुचि उत्पन्न होती है। श्रम के प्रति निष्ठा एव सकारात्मक रुझान विकसित होता है तथा परस्पर सहयोग से काय करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

विद्यालय में माध्यमिक स्तर पर सिलाई, कढ़ाई क्रोशियां, मिट्टी के खिलौने बनाना तथा चाक आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर के "समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा" विषय के अन्तर्गत विद्यालय पाठ्यक्रम मे अनेक प्रवृत्तियो का समावेश किया जाता है। अनुभव कार्य के क्षेत्र मे छात्राओ को साबुन, डिटरजेन्ट पाउडर, बाम, वेसलिन, शर्बत, टमाटर सॉस, आचार मुरब्बे आदि बनाना सिखाया जाता है।

बालिकाओ की रचनात्मक प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए गुड़िया बनाना, सुतली व डोरी का काम, रंगजीन का काम तथा अनुपयोगी सामग्री से साज सजावट की वस्तुएँ बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

शिविर का आयोजन .

इस वर्ष समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाजसेवा शिविर का आयोजन 15 मार्च से 19 मार्च तक किया गया। इसमें नवीं कक्षा की छात्राओं को राज्यो का प्रतिनिधित्व करते हुए, उन्हे आठ समूहों में विभक्त किया गया जिनके नाम निम्नलिखित हैं (1) जयसिंह (2) कालिदास, (3) डॉ० किचलू, (4) महात्मा गाधी, (5) नेहरू, (6) विश्वेसरैया, (7) रवीन्द्र नाथ टैगोर व (8) लाला लाजपतराय।

कैम्प के दौरान छात्राओ मे भावात्मक एव राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करने हेतु अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। अपने-अपने दल के अनुसार छात्राओ ने अपने राज्य की जलवायु, भौगोलिक स्थिति, रीतिरिवाज व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के अनुसार फाइलें तैयार की संचार के साधन, वाद्ययन्त्र, राज्य और राज्यों की राजधानियां, विटामिन, क्रिया और क्रिया के भेद, वृक्ष और प्रदूषण आदि कार्यों पर संकलन कार्य करवाया गया।

कैम्प के दौरान गैटोर की छत्रियां, कनकबाग, आमेर व खोल के हनुमानजी आदि स्थानो पर छात्राओं को शैक्षणिक भ्रमण हेतु ले जाया गया।

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां :

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्राओं का सर्वांगीण विकास करना है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विद्यालय मे विभिन्न प्रवृत्तिया यथा निबन्ध लेखन, वाद-विवाद, कविता प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तर, अन्त्याक्षरी, महान व्यक्तियो की जयन्तियां, नाटक, मूक अभिनय, विभिन्न वेशभूषा, नृत्य, चित्रकला प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है।

इस वर्ष श्री जैन श्वेताम्बर माध्यमिक विद्यालय द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता मे कुमारी मंजु गोयल प्रथम व निबन्ध प्रतियोगिता मे कुमारी निधि प्रथम रही। राजस्थान जैन सभा द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता मे कुमारी वन्दना शर्मा प्रथम रही। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा स्वरचित कविता प्रतियोगिता में कुमारी वन्दना शर्मा ने प्रथम स्थान व वाद-विवाद प्रतियोगिता मे कुमारी ज्योति ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इसी प्रकार [illegible] विभाग द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता मे कुमारी रेणु ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

रेडक्रास द्वारा आयोजित वाद-विवाद व निबन्ध प्रतियोगिता मे क्रमश कुमारी ज्योति व कुमारी वन्दना शर्मा प्रथम रही। इसी प्रकार जिला स्तर प्रतियोगिता में निबन्ध मे कु मीना मामनानी, चित्रकला मे कुमारी अनिता, एकाभिनय म कुमारी विजयलक्ष्मी प्रथम व विचित्र वेशभूषा में कुमारी आभा द्वितीय रही। भगवान महावीर की पावन जयन्ती के अवसर पर स्कूल मे आयोजित वाद विवाद तियोगिता में कुमारी नीतू व एकता प्रथम रही।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण :

समय की प्रगतिशीलता व व्यावसायिक उन्नयन को देखते हुए विद्यालय मे कम्प्यूटर शिक्षा का प्रशिक्षण आरम्भ किया गया है जिसमे लगभग 50 छात्रायें प्रशिक्षण प्राप्त कर 21वीं सदी की चुनौतियो को स्वीकार करने के योग्य बन रही हैं। कम्प्यूटर क्लास ग्रीष्मावकाश में भी छात्राओं के लिए उपलब्ध रहेगा।

शिक्षक सम्मान

संस्था केवल छात्राओं के सर्वांगीण विकास व उनके कल्याण हेतु ही चिन्तित नहीं है वरन् यहा कार्य करने वाली अध्यापिकाओं के प्रति सम्मानजनक व सहायता पूर्ण दृष्टिकोण अपनाया जाता है। संस्था में कार्यरत कर्मचारियो के लिए विशेष परिस्थिति मे आर्थिक सहयोग की योजना है। अध्यापिकाओं के विद्यालय से अवकाश ग्रहण करने के अवसर पर उनकी सेवाओं का भव्य समारोह मे अभिनन्दन तो किया ही जाता है, साथ ही एक अच्छी राशि भेंट रूप में भी प्रदान की जाती है।

श्री वीर बालिका सचालक मण्डल द्वारा इस उच्च मा० प्रा० विद्यालय के साथ ही महाविद्यालय का सचालन किया जाता है। इस प्रकार इस संस्था के माध्यम से शिशु से स्नातक स्तर तक के शिक्षण की व्यवस्था है। इस संस्था के माध्यम से आज मध्यम वर्गीय परिवारों की 3500 छात्रायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

संस्था का यह निश्चय है कि अर्थ के अभाव में किसी भी छात्रा के अध्ययन मे व्यवधान नहीं आने दिया जायेगा। वस्तुत यह संस्था माता सरस्वती व महिला शिक्षा के लिए समर्पित है।

इस प्रकार इन समस्त उपलब्धियो व सफलताओं के उपरान्त भी संस्था को एक बहुत बड़ी क्षति उठानी पडी है। संस्था के मन्त्री, पोषक एव संस्थापक परम आदरणीय श्रीमान् राजरूपजी टाक का निधन स्थापना दिवस के दिन हो गया। स्थापना दिवस एव ज्ञान पचमी के पावन पर्व पर आपके प्राणों का उत्सर्ग संस्था के लिए प्रेरणास्पद प्रसग बन गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूज्य चाचा साहब ने अपने आदर्शों सकल्पो, मूल्यो एव आकांक्षाओं को इस संस्था के साथ स्थायी रूप से जोड़ दिया है।

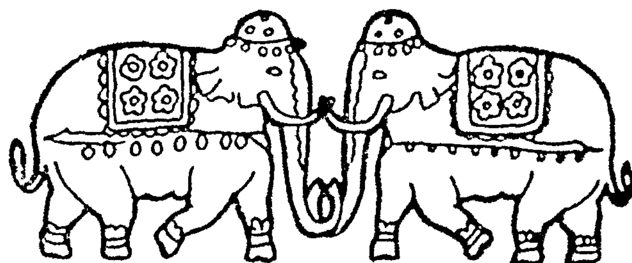
परम पिता परमात्मा स प्रार्थना है कि वह इस दिव्य विभूति की महान् आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करे तथा हमे वह शक्ति प्रदान करे कि आपके उच्च आदर्शों एव मानवीय मूल्यों का अनुकरण करते हुए विद्यालय और समाज के विकास में अपना योगदान कर सकें।

—उर्मिला श्रीवास्तव
प्रधानाध्यापिका

जैन साध्वी श्री स्वर्ण श्री जी म. सा. की प्रेरणा से संस्थापित शहर की चार-दीवारी में स्थित एक मात्र शिक्षा संस्था

श्री वीर बालिका महाविद्यालय

प्रगति-विवरण



श्री वीर बालिका महाविद्यालय शहर की चार दीवारी में स्थित एक मात्र बालिका महाविद्यालय है। इसका प्रारम्भ 1 अगस्त, 1974 से हुआ। यो तो श्री वीर बालिका विद्यालय के रूप मे इस शिक्षण संस्था का बीज वपन 63 वर्ष पूर्व जैन साध्वी श्री स्वर्ण श्री जी म. सा. की प्रेरणा से हुआ था। उसी पौधे ने पल्लवित, पुष्पित और विकसित होकर महाविद्यालय का रूप लिया है। इस शिक्षण संस्था मे शहर के मध्य रहने वाली मध्यमवर्गीय परिवार की 1250 छात्राएं कला एवं वाणिज्य संकाय में अध्ययन कर रही हैं। यह कॉलेज राजस्थान विश्वविद्यालय (अब अजमेर विश्वविद्यालय) से मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से इसे मूल अनुदान और विकास अनुदान प्राप्त हुआ है।

महाविद्यालय मे परीक्षा परिणाम अच्छा रखने के लिये हम सतत प्रयत्नशील रहते हैं। विभिन्न सत्रों मे छात्राओं की प्रवेश संख्या एवं परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहे :—

कला एवं वाणिज्य संकाय में छात्राओं की संख्या एवं परीक्षा परिणाम

कला संकाय—

सत्र	कक्षा	प्रवेश संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
1982–83	प्रथम वर्ष	184	77.0%
	द्वितीय वर्ष	118	76.0%
	तृतीय वर्ष	137	90.0%
1983–84	प्रथम वर्ष	203	77.0%
	द्वितीय वर्ष	143	76.0%
	तृतीय वर्ष	105	90.0%

1984-85	प्रथम वर्ष	230	87 0%
	द्वितीय वर्ष	141	92 0%
	तृतीय वर्ष	105	92 0%
1985-86	प्रथम वर्ष	257	90 5%
	द्वितीय वर्ष	168	87 8%
	तृतीय वर्ष	122	91 3%
1986-87	प्रथम वर्ष	247	89 9%
	द्वितीय वर्ष	189	94 0%
	तृतीय वर्ष	122	93 0%
1987-88	प्रथम वर्ष	242	प्रतीक्षित
	द्वितीय वर्ष	205	,,
	तृतीय वर्ष	155	,,

वाणिज्य सकाय—

सत्र	कक्षा	प्रवेश सख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
1982-83	प्रथम वर्ष	92	90%
1983-84	प्रथम वर्ष	77	91%
	द्वितीय वर्ष	85	73%
1984-85	प्रथम वर्ष	242	90%
	द्वितीय वर्ष	149	71%
	तृतीय वर्ष	59	87%
1985-86	प्रथम वर्ष	227	99%
	द्वितीय वर्ष	206	72%
	तृतीय वर्ष	106	91%
1986-87	प्रथम वर्ष	228	81%
	द्वितीय वर्ष	226	59%
	तृतीय वर्ष	172	94%
1987-88	प्रथम वर्ष	259	प्रतीक्षित
	द्वितीय वर्ष	209	,,
	तृतीय वर्ष	136	,

अध्ययन विषय —

महाविद्यालय में कला सकाय के अन्तर्गत सामान्य हिन्दी सामान्य अंग्रेजी, भारतीय सभ्यता एव सस्कृति का इतिहास इन तीन अनिवार्य विषयो के अतिरिक्त ऐच्छिक विषयो म हिन्दी साहित्य, सस्कृत, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, गृह विज्ञान, राजनीति शास्त्र विषयो का अध्ययन होता

है। वाणिज्य संकाय मे प्रथम वर्ष मे अनिवार्य विषयों में सामान्य हिन्दी, सामान्य अंग्रेजी एवं भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास अथवा अंग्रेजी टंकण एवं शीघ्रलिपि व द्वितीय एवं तृतीय वर्ष वाणिज्य में अनिवार्य विषयों मे ABST, EAFM, एव Bus. Adm. व वैकल्पिक विषयों मे विक्रयकला, अंग्रेजी स्टेनो टाईपिंग तथा C Q M विषयों का प्रावधान है।

स्वर्ण विचक्षण पुस्तकालय :—

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान की प्रेरक पूज्य गुरुवर्या स्व. साध्वी श्री स्वर्ण श्री जी और उनकी शिष्या जैन कोकिला प्रवर्तिनी साध्वी श्री विचक्षण श्री जी म. सा. के विलक्षण व्यक्तित्व को ध्यान में रख कर कॉलेज पुस्तकालय का नाम स्वर्ण विचक्षण पुस्तकालय रखा गया है।

महाविद्यालय पुस्तकालय मे विभिन्न विषयों की 10,000 पुस्तकें है। पुस्तकालय का विकास हो, इस दृष्टि से निरन्तर प्रयास जारी है। वर्तमान सत्र में आठवें विश्व पुस्तक मेले से करीबन 40,000/– रु. के संदर्भ ग्रंथ जिनमे हिन्दी विश्व कोश, हिन्दी शब्द सागर, हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, एनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका एव एनसाइक्लोपिडिया ऑफ सोशल साइंसेज तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ खरीदे गये हैं।

वाचनालय :—

संसार की नवीनतम घटनाओं, स्थितियो, विचारधाराओं, परिवर्तनो और उपलब्धियो से छात्रा समुदाय परिचित होता रहे, इसके लिये महाविद्यालय मे वाचनालय की व्यवस्था है। यहाँ विभिन्न विषयो से सम्बन्धित 57 पत्र-पत्रिकाएँ आती है।

बुक बैंक :—

पुस्तकालय के अन्तर्गत बुक बैंक की व्यवस्था है। इसके माध्यम से कॉलेज की जरूरतमंद तथा योग्य छात्राओं को पाठ्य पुस्तके निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। बुक बैंक को समृद्ध बनाने मे समाजसेवी संस्थाओं एव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सहयोग मिला है। विभिन्न सत्रों में पुस्तकों एव छात्राओं की संख्या इस प्रकार रही -

सत्र	बुक बैंक से सहयोग लेने वाली छात्राएँ	पुस्तक संख्या
1984–85	113	289
1985–86	100	298
1986–87	115	415
1987-88	85	290

छात्रा परिषद् :—

महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को सुचारु रूप से संचालित करने एवं उनमें छात्राओं को सहयोगी बनाने की दृष्टि से छात्रा परिषद का गठन कला एवं वाणिज्य संकाय में इस प्रकार किया गया —

1985–86 (कला संकाय) —

अध्यक्ष रश्मि सक्सेना, उपाध्यक्ष कुमुद तोतला, सचिव सुलक्षणा झा, [illegible] सांस्कृतिक सचिव हेमा चतुर्वेदी, कोषाध्यक्ष मंजीत कौर, क्रीड़ा सचिव सीमा शर्मा।

1986-87—

अध्यक्ष सविता शर्मा, उपाध्यक्ष आशारानी अग्रवाल, सचिव संगीता राणावत, सांस्कृतिक सचिव सुमन कावरा, क्रीडा सचिव मंजु भालानी ।

1987-88—

अध्यक्ष सुधा शर्मा उपाध्यक्ष मंजु पारीक, सचिव निशि सक्सेना, सह-सचिव कृपा पालडीवाल कोपाध्यक्ष इन्दु शर्मा, क्रीडा सचिव सुनीता मित्तल ।

1985-86 (वाणिज्य संकाय)—

अध्यक्ष कुमारी शोभा सक्सेना, उपाध्यक्ष मीना अजमेरा, सचिव अलका टाक, सह सचिव विनीता जन, कोपाध्यक्ष ज्योति धाधिया, कार्यकारिणी सदस्य संगीता मेहता, क्षमा अरोडा, मनोज विजय ।

1986-87—

अध्यक्ष सुश्री क्षमा अरोडा, उपाध्यक्ष रानी अजमेरा, सचिव अलका टाक, सह सचिव इन्द्रा दुगड, कोपाध्यक्ष वीना गनवानी ।

1987-88 —

अध्यक्ष अरुणा पवार, उपाध्यक्ष सजना पटोलिया, सचिव शिवानी सोलंकी, सह सचिव चंचल लता अग्रवाल, कोपाध्यक्ष तारा शर्मा ।

शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ —

महाविद्यालय मे छात्राओ की बौद्धिक प्रगति हेतु विशिष्ट विद्वाना के व्याख्यानो का आयोजन किया जाता है । महाविद्यालय म विभिन्न विषयो के विद्वानो को निमन्त्रित किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

	व्याख्यानदाता का नाम	विषय	दिनाक
1	श्री सत्यनारायण गोयनका विपश्यना आचाय, बम्बई	विपश्यना साधना और शिक्षा	
2	फादर मैथ्यू प्राचाय, सेण्ट जेवियर स्कूल, जयपुर	ईसा मसीह का जीवन दशन	20 12 84
3	श्री भीमराज कोठारी प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी, हागकाग	ईसाई धम मे सेवा भावना	20 12 84
4	डॉ नवीन कुमार वज रीडर, समाज शास्त्र विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	ईसा मसीह और जन समाज	20 12 84
5	श्री आई के शर्मा रीडर, अग्रेजी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	अग्रेजी व्याकरण	8 1 85

6. श्री ए. एल. शाह रीडर, अंग्रेजी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	अग्रेजी व्याकरण	9.1.85
7. डॉ. एस सी. सिंह रीडर, अंग्रेजी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	अंग्रेजी व्याकरण	10.1.85
8. सुश्री शारदा मिश्रा संगीत प्राध्यापिका महारानी कॉलेज, जयपुर	पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में संगीत की उपयोगिता	13.1.85
9. श्री भगवती प्रसाद बेरी भूतपूर्व न्यायाधिपति	महिलाएँ और कानून	18.1.85
10. श्री हरिशंकर शर्मा सहायक प्रोफेसर भूगोल राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	विश्व-मानचित्र	22.1.85
11. डॉ कान्ता आहूजा प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	सातवी पंचवर्षीय योजना	23.1.85
12. श्री महेन्द्र रायजादा प्राचार्य, गवर्नमेंट कॉलेज, डीग	हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल	25.1.85
13. श्री टी. सी. टिक्कीवाल सहायक प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	सामाजिक सर्वेक्षण	12.10.85
14. डॉ. प्रभुदत्त शर्मा प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	मानव अधिकार	10.12 85
15 आशीष सिन्हा एकेडेमिक एडिटर, N.C.E.R.T., दिल्ली	जनसंचार माध्यम	28.2.85
16. डॉ रामजीलाल जांगिड़ पाठ्यक्रम निदेशक, भारतीय भाषा पत्रकारिता पाठ्यक्रम, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली	पत्रकारिता और जन-जागरण	28.2.85
17. श्री मेघराज मुकुल प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार	भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्य	1.3.85

18	डॉ लक्ष्मी नारायण दुबे रीडर, हिन्दी विभाग सागर विश्वविद्यालय	हिन्दी साहित्य का आदिकाल	10 8 85
19	श्री विष्णु प्रभाकर प्रसिद्ध साहित्यकार, दिल्ली	साहित्य विश्लेषण, आवारा मसीहा के विशेष सदर्भ मे	16 9 85
20	डॉ सी एम जैन डीन पत्राचार अध्ययन संस्थान सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर	देश एव विदेश नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन	24 9 85
21	डॉ प्रतिभा जैन रीडर, इतिहास विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	स्वतन्त्रता सग्राम और गांधी दर्शन	
22	श्री एल आर खत्री रीडर, वाणिज्य विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	आयकर प्रणाली	10 1 86
23	डॉ एम एल ओसवाल रीडर, लेखा एव सांख्यिकी राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	लागत लेखांकन	22 1 86
24	डॉ डी सी जैन विभागाध्यक्ष, लेखा एव सांख्यिकी राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	अंकेक्षण	23 1 86
25	डॉ एम एल शर्मा प्रो पैथोलोजी विभाग सवाई मानसिंह चिकित्सालय, जयपुर	रक्तदान जीवनदान	28 2 86
26	श्री के सी बडेर प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी एव समाजसेवी, जयपुर	मानव अधिकार और समाज सेवा	1 3 86
27	डॉ आर एन सिंह निदेशक, पोद्दार प्रबन्ध संस्थान, जयपुर	प्रबन्ध व्यवस्था की उपयोगिता	30 9 86
28	डॉ एम सी खण्डेलवाल प्राचार्य कामर्स कॉलेज राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	वर्तमान मे प्रबन्ध व्यवस्था का महत्व	30 9 86
29	डॉ राजेन्द्र शर्मा अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	साहित्य और समाज	1 10 86

30.	चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी श्री जैनमठ, मूडबिद्री	चरित्र निर्माण मे नारी की भूमिका	10.11.86
31.	डॉ एम. डी. अग्रवाल रीडर, इ. ए. एफ. एम. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	सातवी पंचवर्षीय योजना	27.1.87
32.	डॉ एस. पी. जैन रीडर, राजनीति शास्त्र विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	न्यायपालिका की स्वतन्त्रता	4.2.87
33.	पंडित रविशंकर जी महाराज कलकत्ता	सुखी जीवन कैसे जिये ?	2.12.87
34.	श्री मनुभाई शाह विजिटिंग प्रोफेसर, आई. आई. एम. अहमदाबाद	उपभोक्ता संरक्षण	30.1.88
35	श्री मेहरचन्द धाधिया रत्न-व्यवसायी, जयपुर	जीवन में शिक्षा का महत्त्व	27.2.88
36.	डॉ महावीर राज गेलड़ा सयुक्त निदेशक, कॉलेज शिक्षा निदेशालय	स्त्री शिक्षा और समाज-निर्माण	27.2.88

शिक्षण शुल्क मुक्ति :—

महाविद्यालय मे अध्ययनरत आर्थिक दृष्टि से असमर्थ छात्राओं को शिक्षण शुल्क में भी राहत प्रदान की गई। सन् 83-84 मे 36 छात्राओं, 84-85 में 32 छात्राओ, 85-86 मे 32 छात्राओ, 86-87 मे 30 छात्राओं और 87-88 में 43 छात्राओं का शिक्षण शुल्क माफ किया गया।

आर्थिक सहायता :—

महाविद्यालय मे अध्ययनरत जरूरतमंद छात्राओं को श्री शान्तिनाथ जैन चेरिटेबल ट्रस्ट ने 85-86 में 10 छात्राओं को, 86-87 में 8, 87-88 में 9 छात्राओं को प्रति वर्ष 500 रु० प्रत्येक छात्रा को प्रदान किये गये। सत्र 87-88 मे भवरलाल श्रीमाल चेरिटेबल ट्रस्ट ने दो छात्राओं को प्रत्येक को 460 रु० की आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपलब्धियाँ :—

पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ छात्राओ में साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक रुचियों का विकास हो, इस दृष्टि से विभिन्न परिषदो के तत्वावधान में प्रति वर्ष निबन्ध, स्वरचित कहानी, कविता, आशुभाषण, वाद-विवाद, अल्पना, रंगोली, मेंहदी-मांडना, एकल नृत्य, गायन, विचित्र वेश-भूषा, समूह गान, मुहावरे एवं लोकोक्तियां आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। विगत वर्षों में प्रतियोगिताओ मे निबन्ध के विषय इस प्रकार रहे—

राष्ट्र निर्माण मे विद्यार्थियों का योगदान, कवि मुक्ति बोध, कथासम्राट प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, जैन धर्म का भारतीय संस्कृति एवं समाज पर प्रभाव, सम् [illegible]

कवि , श्रीमती इन्दिरा गांधी व्यक्तित्व एव कृतित्व, अनेकता मे एकता हिन्द की विशेषता, नागरिक प्रशासन सेना पर निर्भर होता जा रहा है, मेरा प्रिय साहित्यकार, हिन्दी कहानी का विकास, भारत मे बेरोजगारी एव जनसख्या वृद्धि ।

जयन्तियाँ —

महापुरुषो के जीवन मे प्रेरणा मिले, इस दृष्टि से महाविद्यालय मे ईसा मसीह, महात्मा गाधी, गुरु गोविन्दसिह, रानी लक्ष्मी बाई, श्रीमती इन्दिरा गाधी आदि जयन्तियाँ मनाई गई ।

अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिताएँ —

वाद विवाद प्रतियोगिताएँ—

महाविद्यालय मे जैन जागृति परिषद् के सहयोग से प्रति वर्ष अन्तर्महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता है ।

सत्र 84–85 मे 21-12-85 को महाविद्यालय मे 'नारी ही नारी का शोषण करती है' विषय पर अन्त महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयाजन किया गया । जिसमे जयपुर के कॉलेजो एव विश्वविद्यालय की 23 टीमो ने भाग लिया । चल वैजयन्ती पुरस्कार महारानी कॉलेज को गया । वीर बालिका महाविद्यालय की छात्रा कुमारी सुजाता झा तृतीय रही । इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे श्री मुश्ताक अहमद राकेश, निदेशक, आकाशवाणी जयपुर एव अध्यक्ष थी डॉ श्रीमती पवन सुराणा, अध्यक्ष, जमन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।

सत्र 86–87 मे 31 जनवरी, 87 को 'मानव से नही मशीन से ही भारत समृद्ध हो सकता है' विषय पर अन्त महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता म इसी महाविद्यालय की छात्रा कुमारी इन्द्रा दुगड, प्रथम वर्ष वाणिज्य और कुमारी ललिता शर्मा प्रथम वर्ष कला ने चल वैजयन्ती पुरस्कार प्राप्त किया परन्तु अतिथि सस्था होने के कारण यह पुरस्कार कनोडिया महिला महाविद्यालय को प्रदान किया गया । कुमारी इन्द्रा दुगड को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ । इसकी अध्यक्षता श्री उमरावमल ढढ्ढा, अध्यक्ष सुबोध शिक्षा समिति ने की तथा मुख्य अतिथि थी डॉ प्रतिभा जैन, रीडर, इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।

राज्य स्तरीय अन्तर्महाविद्यालय निबन्ध प्रतियोगिता —

सत्र 86–87 मे बढते हुए पर्यावरण प्रदूषण को ध्यान मे रखते हुए राज्य स्तरीय अन्तमहाविद्यालय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था 'पर्यावरण सुधार युग धर्म' । इस प्रतियोगिता मे पूरे राजस्थान से विद्यार्थियो ने भाग लिया । प्रथम पुरस्कार 151 रु०, द्वितीय पुरस्कार 131 रु०, तृतीय पुरस्कार 101 रु० एव पाच सात्वना पुरस्कार 51-51 रु० के प्रदान किये गये ।

महाविद्यालय की छात्राओ ने समय-समय पर अन्तमहाविद्यालय स्तर पर आयोजित साहित्यिक सास्कृतिक–कायक्रमो में भाग लिया, इसका विवरण इस प्रकार है—

1984–85

छात्रा का नाम	प्रतियोगिता का नाम	संस्था	स्थान
1. कु. कुसुम कावरा (तृतीय वर्ष कला) कु. निकहत फातिमा (तृतीय वर्ष कला)	वाद-विवाद प्र०	अग्रवाल कालेज	चल वैजयन्ती पु० कुसुम कावरा को व्यक्तिगत द्वितीय पुरस्कार
2. कु. मीना पालीवाल (प्र. व. वाणिज्य)	एकाभिनय	अग्रवाल कालेज	प्रथम स्थान
3. कु. अनिता चड्ढा कु. इन्द्रा पंजाबी (द्वितीय वर्ष कला)	विचित्र वेशभूषा	अग्रवाल कालेज	प्रथम स्थान
4. कु. कुसुम कावरा एवं साथी	समूहगान	अग्रवाल कालेज	द्वितीय स्थान
5. कु. सतोष शर्मा (तृतीय वर्ष कला)	संस्कृत गीत प्रतियोगिता	राजस्थान कालेज	सांत्वना पु०

1985–86

1. कु. सुजाता झा एवं कु. शारदा लालचदानी (तृतीय वर्ष कला)	वाद-विवाद प्रतियोगिता	दि. जैन संस्कृत कालेज	चल वैजयन्ती
2. कु. सुजाता झा एवं शारदा लालचदानी	वाद-विवाद प्रतियोगिता	सतगांड कालेज	चल वैजयन्ती
3. सुजाता झा	वाद-विवाद प्रतियोगिता	वीर बालिका कालेज	तृतीय
4. शारदा लालचदानी (तृतीय वर्ष कला)	वाद-विवाद प्रतियोगिता	जयपुर जेसीज	प्रथम स्थान

1986-87

1. इन्द्रा कुमार (प्र० व० वाणिज्य)	भाषण प्रतियोगिता	महिला समिति राज. वि. वि.	चल वैजयन्ती
2. मीनाक्षी शर्मा (प्र० व० वाणिज्य)	"	"	तृतीय पुरस्कार
3. कु. इन्द्रा कुमार	वाद-विवाद प्रतियोगिता	लायन्स क्लब	सांत्वना पु०
4. कु. इन्द्रा कुमार (प्र० व० वाणिज्य) एवं कु. मीनाक्षी शर्मा (प्र० व० कला)	वाद-विवाद प्रतियोगिता	वीर बालिका कन्या वि.	चल वैजयन्ती

1 कु. मनिता शर्मा (द्वितीय वर्ष कला)	वाद-विवाद प्रतियोगिता	जेसीज क्लब, जयपुर	द्वितीय स्थान
2 कु. इन्द्रा दुगड़ (द्वितीय वर्ष वाणिज्य)	वाद विवाद प्रतियोगिता	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जयपुर	प्रथम स्थान
3 कु. स्नेहलता शर्मा (द्वितीय वर्ष कला)	निबन्ध प्रतियोगिता	खण्डेलवाल वैश्य महाविद्यालय	प्रथम स्थान

पिकनिक —

अध्यापन कार्य के साथ-साथ छात्राओं के मनोरंजन के लिये पिकनिक का आयोजन भी किया जाता रहा है। कला एवं वाणिज्य संकाय में विभिन्न सत्रों में विभिन्न स्थानों पर पिकनिक का आयोजन किया गया।

84–85 में गोल के हनुमान जी

85–86 में त्रिवेणी, छापरवाड़ा

86–87 में कुशल बाग, बैराठ बाग

87–88 में नई का नाथ।

शैक्षणिक भ्रमण —

सत्र 1987–88 में महाविद्यालय की 47 छात्राओं का एक दल श्री राधामोहन लाल जी गुप्ता, प्रभारी वाणिज्य संकाय के नेतृत्व में 24 12 87 से 29 12 87 तक ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करने हेतु रवाना हुआ। इस दल ने राणकपुर, आबू देलवाड़ा मन्दिर, अचलगढ़, सनसेट पाइन्ट, नक्की झील, उदयपुर, चित्तौड़ आदि स्थानों का भ्रमण किया।

महाविद्यालय पत्रिका 'दिव्या' —

प्रत्येक शिक्षण संस्था में उसकी वार्षिक पत्रिका का अपना एक विशेष महत्व होता है। यह एक ऐसा दर्पण है जिसमें पूरी शिक्षण संस्था का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'दिव्या' है। वर्तमान सत्र में 'दिव्या' का अंक संस्था के मन्त्री श्रद्धेय श्री राजरूप जी टांक की स्मृति में श्रद्धांजलि स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया गया है।

खेलकूद —

खेलकूद भी शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। महाविद्यालय में इन्डोर गेम्स के रूप में टेबिल-टेनिस, बैडमिन्टन, शतरंज, कैरम आदि की व्यवस्था है।

योजना मंच —

छात्राओं में भावनाओं के प्रति अपेक्षित जागरूकता एवं क्रियान्विति के प्रति वांछित चेतना उत्पन्न करने हेतु महाविद्यालय में योजना मंच की एक इकाई सक्रिय रूप से सन् 1981–82 से कार्य

रत है। इस इकाई के तहत निबन्ध, सामान्य ज्ञान, प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, चार्टस्, मेसस्, बेकारी सामग्री से उपयोगी सामग्री का निर्माण आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इस इकाई के तहत विगत वर्षों मे निम्नलिखित सर्वे कार्य करवाये गये—

83–84 : कुण्डा ग्राम एक सर्वेक्षण (आमेर तहसील)।

84–85 : डेयरी विकास कार्यक्रमो के प्रभावों का मूल्याकन : आर्थिक एव सामाजिक सदर्भ मे।

85–86 : बगरू कस्बे के वस्त्र व्यवसाय के संदर्भ मे श्रमिको की समस्याओं का अध्ययन।

86–87 : बैंको की रोजगार योजनाएँ जीवन स्तर सुधारने मे कहां तक सहायक है? चौमू गांव के विशेष सदर्भ में।

87–88 : ग्रामीण क्षेत्र मे (पी॰एस॰सी॰एस॰) प्राथमिक कृषि सहकारी समिति की भूमिका (सांगानेर सहकारी समिति के विशेष सदर्भ मे)।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई :

महाविद्यालय मे 8–10–1980 से राष्ट्रीय सेवा योजना की एक इकाई कार्यरत है। प्रारम्भ मे इस इकाई मे 50 छात्राएं थी पर आज 168 छात्राएं कार्य कर रही है। इस इकाई का उद्देश्य छात्राओ मे परस्पर प्रेम, स्नेह, सौहार्द, श्रम के प्रति निष्ठा, स्वावलम्बन, सेवा, राष्ट्र-प्रेम आदि भावों को जाग्रत करना है। इस इकाई की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर, व्याख्याता संस्कृत विभाग, के नेतृत्व मे कार्यक्रम इस प्रकार सम्पन्न हुए :—

सत्र 83–84 मे नियमित गतिविधि के अन्तर्गत अभिरुचि कार्यशाला मे विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण दिये गये। बस्ती के निवासी उत्तम साहित्य पढ सके, इसके लिए चरित्र निर्माण से सम्बन्धित पुस्तके चल पुस्तकालय के माध्यम से वितरित की गयी। महाविद्यालय के सौन्दर्य मे विकास हेतु स्वच्छता, वार्निश आदि कार्य हुए तथा स्थान-स्थान पर महिला सम्मेलन आयोजित करके सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जिसमे गलता रोड, पूर्वी साइड गंगा बक्श का रास्ता, हरिजन छात्रावास के पास, जाट के कुए का रास्ता, चादपोल बाजार, सत्यसाई महाविद्यालय, जवाहरनगर, बजाजनगर, मजदूर नगर मुख्य स्थल थे। सास्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देने के साथ-साथ मेडिकल कालेज के पी. एस एम. विभाग द्वारा वहाँ के निवासियों का निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। अक्टूबर माह मे बाल-रश्मि सोनाटटी, में दस दिवसीय विशेष शिविर आयोजित किया गया। जिसमे छात्राओ ने कंकरीली जमीन खोदते हुए क्यारियां बनाते हुए 35 हजार पौधो की नर्सरी तैयार की। शिविर मे प्रातः काल गोटी ग्राम एवं आस-पास के क्षेत्रो मे प्रभात फेरी निकाली गई तथा वहीं पर ग्राम की वहां की समस्याओं एवं निराकरण के सुझाव से सम्बन्धित सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। विशेष रूप से गांव के निवासियों का स्वास्थ्य परीक्षण भी करवाया गया। एक दिवसीय शिविर के अन्तर्गत आमेर बालनाहरी मे कंटीली घास हटाते हुए पत्थर आदि हटाने का कार्य किया गया।

जून 83 मे कोयम्बटूर में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार मे 3 छात्राओं के साथ कार्यक्रम अधिकारी सुश्री सरोज कोचर ने भाग लिया।

सत्र 84-85 मे नियमित गतिविधि के अन्तगत त्योहारो के महत्त्व को समझाते हुए रक्षाबन्धन, स्वाधीनता दिवस, क्रिसमिस डे, लोहडी त्योहार, मकर सक्रान्ति, गणतन्त्र दिवस आदि के पर्वों पर उनसे सम्बन्धित कायक्रम आयोजित किये गये। रक्षा बन्धन के अवसर पर छात्राओ को राखी बनाने का प्रशिक्षण दिया तथा राखिया बनाकर विक्रय की, जिससे 1051 रु० की शुद्ध आय हुई जो छात्राओ के कल्याणाथ व्यय की गई। दीपावली के अवसर पर छात्राओ को मोमबत्ती, क्रिसमस डे एव नव वष के उपलक्ष्य मे छात्राओ को शुभकामना मे सम्बन्धित कार्ड बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। अभिरुचि कायशाला के अन्तगत छात्राओ को पेंटिंग, मोती के आभूषण, हस्तशिल्प से सम्बन्धित गृह सज्जा की सामग्री का निर्माण, कढाई एव मेहदी का प्रशिक्षण दिया गया। बैरवा बस्ती मे छात्राओ ने मेहदी लगाने का प्रशिक्षण दिया एव मेहदी लगाई। मोहनवाडी स्थित दादाबाडी मे 90 छात्राओ का दस दिवसीय विशेष शिविर लगाया गया। जिसमे छात्राओ ने कटीली घास, पत्थर आदि हटाकर 1 वग किलोमीटर का मैदान साफ किया। इसके अतिरिक्त 1000 मीटर लम्बी और 3 मीटर चौडी जमीन पर मिट्टी डालते हुए भूमि को समतल किया। इस शिविर के तहत बरवा बस्ती मे मोमबत्ती बनाने एव मोती के आभूषण का प्रशिक्षण देते हुए वहा का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण किया। बस्ती निवासियो के व्यावहारिक ज्ञान के विकासनाथ बस्ती मे विभिन्न विद्वानो के व्याख्यान आयोजित करवाये गये।

सत्र 85-86 मे 150 छात्राओ की इस इकाई के तहत जल महल मे लगी जल कुम्भी हटाने म जून जुलाई की भीषण गर्मी मे 40 छात्राओ द्वारा काय किया गया। राखी, मोती के आभूषण, मिट्टी के खिलौने, बेकार सामग्री से उपयोगी सामग्री निमाण आदि का छात्राओ को प्रशिक्षण दिया गया। सवाईमानसिह अस्पताल मे भर्ती छात्रा कु० सगीता उपाध्याय की किडनी के इलाज हेतु 500 रु० की राशि एकत्रित करके दी गई। 12 सदस्यो ने रक्तदान दिया एव 53 छात्राओ का रक्त ग्रुप परीक्षण करवाया गया। स्वतन्त्रता सेनानियो के जीवन पर भाषण, निबन्ध एव चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी। शिकारियो के मौहल्ले की महिलाओ से सम्पक करके उन्हे सस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा दी गयी।

सत्र 86-87 मे नियमित गतिविधि के अन्तगत सामुदायिक विकास काय, श्रम के प्रति निष्ठा, मानवीय गुणो का विकास आदि कार्यों को करते हुए 87 छात्राओ का एक विशेष शिविर मोहनवाडी मे आयाजित किया गया जिसमे छात्राओ ने श्रमदान कर तीन सौ फीट लम्बी कच्ची सडक का निर्माण किया। आसपास की बस्तिया मे साहित्यिक एव साम्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत किये, साथ ही महदी, मोती के आभूषण, साबुन, सफ आदि के निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया।

सत्र 87-88 मे इस इकाई के तहत प्रत्येक बृहस्पतिवार को विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमे सामाजिक कुरीतियो के निवारण म राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका, राष्ट्र विकास मे युवा वग की भूमिका, महिला विकास और एन एस एस, पर्यावरण सुधार, मानव धम, जीवन मे अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त, प्राथमिक चिकित्सा आदि विषयो पर विचार विनिमय किया गया।

इसी इकाई के तहत प्रतिदिन प्रात काल प्रायना सभा का आयोजन किया जाता है।

छात्राओं के लिये अभिरुचि कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मोती पुवाई, कार्ड बनाना, सिलाई, कढ़ाई, पर्स एवं थैले बनाने का कार्य सिखाया ।

दिनांक 12 जनवरी से 19 जनवरी तक सतसांई कालेज मे आयोजित सास्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया ।

दिनांक 13 फरवरी को अकाल राहत कार्यक्रम के तहत पशुओ के चारे के लिये 251/–रु० का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया ।

महाविद्यालय में अध्ययनरत अथवा भूतपूर्व 10 छात्राओ को स्वावलम्बी बनाने का लक्ष्य रहा ।

आभार-प्रदर्शन—

सस्था के कार्यों को सुचारु रूप से चलाने में मुझे संचालक मण्डल के सभी पदाधिकारियों, प्राध्यापिका बहिनों, बन्धुओं एव कार्यालय कर्मचारियो का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है। सबके प्रति बहुत-बहुत आभार ।

शिक्षण संस्था का महत्त्वपूर्ण अंग है हमारी छात्राएँ। प्रत्येक गतिविधि में इनके अनुशासित जीवन पद्धति से सस्था गौरवान्वित हुई है। अतः सभी छात्राएँ धन्यवाद की पात्र हैं। मैं सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती हूँ ।

यह सत्र जहाँ संस्था की उपर्युक्त विभिन्न उपलब्धियो को लेकर आया, वही इसी सत्र में हम संस्था के आद्य संस्थापक एवं मन्त्री श्री राजरूप जी टांक को खो बैठे। 27 अक्टूबर, 1987 को आपका असामयिक निधन हो गया। आप सदैव संस्था को तन-मन-धन से सींचते रहे। आपका पार्थिव शरीर अब हमारे बीच नही है पर आपकी प्रेरणा और वात्सल्य भाव हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। महाविद्यालय परिवार आपकी अनवरत रूप से की गई निष्काम सेवाओं के प्रति श्रद्धानत है।

श्री वीर बालिका शिक्षण संस्था का उद्देश्य नारी शक्ति को जागृत, विकसित और सुसंस्कारित बनाकर प्रगतिशील समाज के नव-निर्माण मे उसे सक्रिय और सजग बनाना है ।

इस उद्देश्य की प्राप्ति में आप सब तन-मन और धन से हमारे सहयोगी बनें, यही अभ्यर्थना है ।

—शान्ता भानावत
प्राचार्य

———

शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियो की सूची

श्री वीर बालिका महाविद्यालय, जयपुर

शैक्षणिक विभाग—

श्रीमती डॉ शान्ता भानावत, एम ए, पीएच डी, प्राचार्य

„ स्नेहलता वद, एम ए (समाज शास्त्र व हिन्दी), अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग

„ लक्ष्मी श्रीवास्तव, एम ए, अध्यक्ष, इतिहास विभाग

„ डॉ सरोज वर्मा, एम ए पीएच डी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सुश्री सराज काचर, एम ए, एम फिल, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

श्रीमती विमला शर्मा एम ए, एम फिल, अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग

„ सुनीला जैन, एम एस सी, अध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग

सुश्री मञ्जु जैन, एम ए अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग

श्रीमती डा कमलेश तिवाडी एम ए पीएच डी, व्याख्याता, इतिहास विभाग

„ हरजिन्दर कौर, एम ए, एम फिल अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

„ डा मुकुल सिंह, एम ए, पीएच डी, व्याख्याता, हिन्दी विभाग

„ इन्द्रा शर्मा एम ए, व्याख्याता, समाजशास्त्र विभाग

„ पुष्पलता जैन, एम एस सी, व्याख्याता, गृह विज्ञान विभाग

„ सविता किशोर, एम ए, एम फिल, व्याख्याता, राजनीति शास्त्र विभाग

„ रीता शर्मा एम ए व्याख्याता, इतिहास विभाग

श्री राधामोहनलाल गुप्ता, एम कॉम, एल एल बी शिक्षाशास्त्री, प्रभारी वाणिज्य सकाय

सुश्री शशि भार्गव, एम कॉम, व्याख्याता, व्यावसायिक प्रशासन

„ सुनी मित्तल, एम कॉम, एम ए (अर्थ शास्त्र) एम फिल, व्याख्याता, आ० प्र० एव वित्तीय प्रबंध

श्रीमती निशा भारिल्ल, एम कॉम, व्याख्याता लेखा एव व्यावसायिक सांख्यिकी

श्रीमती अन्जु कटारा, एम. कॉम, व्याख्याता, लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी
,, शारदा तिवाड़ी, एम. कॉम, व्याख्याता, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध
सुश्री ललिता शर्मा, एम. कॉम, व्याख्याता, व्यावसायिक प्रशासन
,, ज्योत्स्ना श्रीवास्तव, एम. कॉम, व्याख्याता, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध
,, नीति श्रीवास्तव, एम. कॉम, व्याख्याता, लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी
,, अलका जैन, एम. कॉम, व्याख्याता, व्यावसायिक प्रशासन

कार्यालय कर्मचारी—

श्रीमती सत्यवती शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष
,, डॉ. कोकिला जैन, वरिष्ठ लिपिक
श्री विमलकुमार जैन, वरिष्ठ लिपिक
,, राजेन्द्रप्रसाद वर्मा, कनिष्ठ लिपिक
,, राजेन्द्रसिंह गोलस, कनिष्ठ लिपिक
,, महेशकुमार व्यास, कनिष्ठ लिपिक

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी—

श्री श्यामसिंह राजावत, बुक लिफ्टर
,, धर्मचन्द बोहरा, दफ्तरी
,, रामगोपाल शर्मा, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
,, मोहनप्रसाद गुप्ता, चौकीदार
,, रामू मोरिया, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
,, सुभाषकुमार, ,, ,,
श्रीमती सुरजी बाई ,, ,,
,, कजोड़ी बाई ,, ,,
,, [illegible] ,, ,,
,, [illegible] ,, ,,
[illegible] बाई ,, ,,
,, [illegible] बाई, [illegible]

श्री वीर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय

हायर सैकेण्डरी विभाग

शैक्षणिक विभाग—

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव एम ए बी एड, प्रधानाचार्य

,, सुलक्षणा जन एम ए बी टी, व्याख्याता

,, स्वदेश नागिया एम ए डिप्लोमा आर्ट, व्याख्याता

,, राजकुमारी एम ए बी एड, व्याख्याता

,, शशिबाला शर्मा एम ए बी एड व्याख्याता

,, स्वर्ण भार्गव एम ए बी एड, व्याख्याता

,, रतना स्वरूप एम ए बी एड, कनिष्ठ व्याख्याता

,, नन्दूदेवी वर्मा बी म्यूजिक, कनिष्ठ व्याख्याता

,, पुष्पा जैन एम ए बी एड, कनिष्ठ व्याख्याता

,, उर्मिला कक्कड एम ए बी टी, कनिष्ठ व्याख्याता

श्री त्रिलोककुमार गुप्ता एम एस-सी, बी एड, कनिष्ठ व्याख्याता

श्रीमती निमला माथुर बी ए बी एड, सहायक अध्यापिका

,, मालतीलता जैन मैट्रिक, संस्कृत शास्त्री, सहायक अध्यापिका

,, पुष्पा श्रीवास्तव एम ए बी एड, सहायक अध्यापिका

,, वीना कानूनगो एम ए बी एड, सहायक अध्यापिका

, सुधा शुक्ला एम ए बी एड, सहायक अध्यापिका

,, शोभा सक्सेना बी एस सी, बी एड, सहायक अध्यापिका

श्री राजेन्द्रकुमार डागी, संगीत विशारद, तबला वादक, सहायक अध्यापक

सुश्री रजना यादव एम कॉम बी एड, कनिष्ठ व्याख्याता

" संगीता सोगानी एम कॉम, कनिष्ठ व्याख्याता

श्रीमती रेणू कुम्भट बी ए बी एड, सहायक अध्यापिका

सुश्री आभा सहाय बी एस-सी, सहायक अध्यापिका

श्रीमती अमिता भार्गव एम ए बी एड, सहायक अध्यापिका

,, कल्पना जैन बी एस सी, सहायक अध्यापिका

,, किरन बत्रा बी ए बी एड, सहायक अध्यापिका

श्री मालीराम शर्मा एम ए बी एस-सी बी एड, सहायक अध्यापक

श्रीमती नीना जैन बी. कॉम., सहायक अध्यापिका

सुश्री सुनीता बी. एस-सी. बी. एड., सहायक अध्यापिका

,, रश्मि सक्सेना एम. कॉम , सहायक अध्यापिका

कार्यालय कर्मचारी—

श्री नेमीचन्द सौगानी, इण्टर कॉमर्स, मुख्य लेखक

,, रामजीलाल शर्मा, हायर सैकेण्डरी, कनिष्ठ लिपिक

श्रीमती पद्मा भार्गव, बी. ए. लाइब्रेरी सर्टिफिकेट कोर्स, लाइब्रेरियन

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी—

श्री लल्लूलाल, चौकीदार

,, देवीलाल मिडिल, सेवक

श्रीमती धन्नी बाई, सेविका

,, केसर बाई ,,

,, स्वरूपी बाई ,,

,, धापा बाई ,,

,, शान्ता हरिजन, स्वीपर

श्री वीर बालिका प्राथमिक विद्यालय

प्राथमिक विभाग

शैक्षणिक विभाग—

श्रीमती पुष्पवती जैन, मैट्रिक प्री. यू., प्रधानाध्यापिका

,, सुधा सक्सेना, मैट्रिक, एस. टी. सी., सहायक अध्यापिका

,, सावित्री सक्सेना, मैट्रिक एस. टी. सी. सहायक अध्यापिका

सुश्री आशा [illegible], हायर सैकेण्डरी, एस. टी. सी., सहायक अध्यापिका

श्रीमती कमला शर्मा, बी. ए. बी. एड., सहायक अध्यापिका

,, सरोज मिश्रा, एम. ए. बी. एड., सहायक अध्यापिका

,, सरोज अग्रवाल, बी. ए. बी. एड., सहायक अध्यापिका

सुश्री [illegible], एम. ए. बी. एड., सहायक अध्यापिका

श्रीमती [illegible] शर्मा, एम. ए. बी. एड., एस. टी. सी. सहायक अध्यापिका

श्रीमती माधवी भार्गव, बी एस सी बी एड, सहायक अध्यापिका
,, पूनम सक्सेना, एम कॉम, बी एड, सहायक अध्यापिका
,, सविता भार्गव, एम ए बी एड, सहायक अध्यापिका
सुश्री कमलेश पावा, बी ए, एस टी सी, सहायक अध्यापिका
,, शिखा जैन, द्वितीय वर्ष वाणिज्य, सहायक अध्यापिका
,, मीना चौहान, एम ए, सहायक अध्यापिका
,, अन्नू मल्होत्रा, बी कॉम, सहायक अध्यापिका
श्रीमती पुष्पा निगोतिया, बी ए बी एड, सहायक अध्यापिका
,, कमला श्रीवास्तव, साहित्यरत्न, सहायक अध्यापिका

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी—

श्रीमती प्रेम सैन, सेविका
,, अनीता मण्डल, सेविका

श्री वीर बाल निकेतन

शिशु विभाग

शैक्षणिक विभाग—

सुश्री विमला चटर्जी, इण्टर माण्टेसरी मुख्याध्यापिका
श्रीमती सन्तोष जैन, मैट्रिक, सहायक अध्यापिका
सुश्री तारा बोहरा, मैट्रिक, सहायक अध्यापिका
श्रीमती ममता अग्रवाल, एम ए, सहायक अध्यापिका

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी—

श्रीमती कमला बाई, सेविका
,, नगीना बाई, सेविका

